

बागमती प्रदेश

पहिलो आवधिक योजना

(आर्थिक वर्ष २०७६/७७ - २०८०/८१)
(अन्तिम मस्यौदा)

प्रदेश नीति तथा योजना आयोग
हेटौंडा, नेपाल

विषय सूची

परिच्छेद - एक	1
परिचय	1
१.१ पृष्ठभूमि	1
१. संवैधानिक दिशानिर्देश	1
२. बदलिएको राजनैतिक परिवेश र प्रतिबद्धताहरू	2
३. विकासको बृहत् सन्दर्भ	2
४. आवधिक योजना तर्जुमाका पक्ष र आधारहरू	4
५. आवधिक योजना निर्माणको प्रक्रिया र विधि	4
६. आवधिक योजना निर्माणको परिवेश र सीमाहरू	5
परिच्छेद — दुई	7
प्रदेशको वर्तमान अवस्था	7
२.१ पृष्ठभूमी	7
२.२ भौगोलिक अवस्थिति	7
२.३ जनसङ्ख्या	7
२.४ प्रशासनिक अवस्था	8
२.५ भू-उपयोग अवस्था	8
२.६ आर्थिक क्षेत्रको स्थिति	8
२.७ संस्थागत उपस्थिति	9
२.८ भौतिक पूर्वाधार	10
२.९ सामाजिक क्षेत्रको स्थिति	11

परिच्छेद — तीन.....	13
दीर्घकालीन तथा समष्टिगत सोच, लक्ष्य, लगानी र श्रोतको बाँडफाँड.....	13
३.१ दीर्घकालीन सोच.....	13
१. पृष्ठभूमि.....	13
२. दीर्घकालीन सोचको आवश्यकता.....	13
३. दीर्घकालीन सोच.....	13
४. दीर्घकालीन सोचका प्रमुख क्षेत्रहरू.....	13
५. दीर्घकालीन सोचका प्रमुख परिमाणात्मक लक्ष्यहरू.....	14
३.२ समष्टिगत सोच र लक्ष्य.....	15
१. पृष्ठभूमि.....	15
२. अवसर र चुनौती.....	16
३. सोच.....	17
४. लक्ष्य.....	17
५. उद्देश्य.....	17
६. परिमाणात्मक लक्ष्य.....	17
७. विकासका मुख्य चालकहरू.....	22
८. प्रमुख रणनीतिहरू.....	24
३.३ आर्थिक वृद्धिदर, लगानी र प्रतिव्यक्ति आय.....	27
१. आर्थिक वृद्धिदर.....	27
२. कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा क्षेत्रगत मूल्य अभिवृद्धिको योगदान.....	29
३. सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात र कुल लगानी.....	30
४. लगानी संरचना.....	32
५. सार्वजनिक खर्च व्यहोर्ने स्रोत.....	33
६. प्रतिव्यक्ति आय.....	34
परिच्छेद—चार.....	36

प्रमुख आर्थिक क्षेत्र.....	36
४.१ आर्थिक नीतिहरू.....	36
१. पृष्ठभूमि	36
२. वस्तुगत स्थिति	36
३. समस्या र चुनौती	36
४. सम्भावना र अवसर.....	37
५. दीर्घकालीन सोच	37
६. लक्ष्य.....	37
७. उद्देश्य.....	37
८. रणनीति र कार्यनीति.....	37
९. प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	39
१०. अपेक्षित उपलब्धि.....	41
४.२ कृषि क्षेत्र	41
१. पृष्ठभूमि	41
२. वस्तुगत स्थिति	42
३. समस्या र चुनौती	43
४. सम्भावना र अवसर.....	43
५. दीर्घकालीन सोच	44
६. लक्ष्य.....	44
७. उद्देश्य.....	44
८. रणनीति र कार्यनीति.....	44
९. प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	47
१०. अपेक्षित उपलब्धि.....	49
४.३ उद्योग	49
१. पृष्ठभूमि	49
२. वस्तुगत स्थिति	50

३.	समस्या र चुनौती	50
४.	सम्भावना र अवसर.....	51
५.	दीर्घकालीन सोच	51
६.	लक्ष्य.....	51
७.	उद्देश्य.....	51
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	51
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	52
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	53
४.४	वाणिज्य तथा आपूर्ति क्षेत्र	53
१	पृष्ठभूमि	53
२	वस्तुगत स्थिति.....	54
३	समस्या र चुनौती	54
४	सम्भावना र अवसर.....	54
५	दीर्घकालीन सोच	55
६	लक्ष्य.....	55
७	उद्देश्य.....	55
८	रणनीति र कार्यनीति.....	55
९	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	56
१०	अपेक्षित उपलब्धि.....	56
४.५	पर्यटन क्षेत्र	56
१.	पृष्ठभूमि	56
२.	वस्तुगत स्थिति.....	56
३.	समस्या र चुनौती	57
४.	सम्भावना र अवसर.....	57
५.	दीर्घकालीन सोच	58
६.	लक्ष्य.....	58

७.	उद्देश्य.....	58
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	58
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	60
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	61
४.६	सहकारी क्षेत्र	61
१.	पृष्ठभूमि	61
२.	वस्तुगत स्थिति.....	61
३.	समस्या र चुनौती	62
४.	सम्भावना र अवसर.....	62
५.	दीर्घकालीन सोच	62
६.	लक्ष्य.....	63
७.	उद्देश्य.....	63
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	63
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	64
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	65
परिच्छेद— पाँच		66
सामाजिक क्षेत्र.....		66
५.१	शिक्षा	66
१.	पृष्ठभूमि	66
२.	वस्तुगत स्थिति.....	66
३.	समस्या र चुनौती	67
४.	सम्भावना र अवसर.....	67
५.	दीर्घकालीन सोच	68
६.	लक्ष्य.....	68
७.	उद्देश्य.....	68
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	68

९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	71
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	72
५.२	स्वास्थ्य, पोषण र जनसङ्ख्या.....	72
१.	पृष्ठभूमि	72
२.	वस्तुगत स्थिति.....	73
३.	समस्या र चुनौती	74
४.	सम्भावना र अवसर.....	74
५.	दीर्घकालीन सोच	75
६.	लक्ष्य.....	75
७.	उद्देश्य.....	75
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	75
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	79
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	81
५.३	लैङ्गिक समानता, सामाजिक समावेशीकरण र संरक्षण	81
१.	पृष्ठभूमि	81
२.	वस्तुगत स्थिति.....	81
३.	समस्या र चुनौती	82
४.	सम्भावना र अवसर.....	83
५.	दीर्घकालीन सोच	83
६.	लक्ष्य.....	83
७.	उद्देश्य.....	83
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	83
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	86
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	88
५.४	युवा तथा खेलकुद.....	88
१.	पृष्ठभूमि	88

२.	वस्तुगत स्थिति.....	89
३.	समस्या र चुनौती	89
४.	सम्भावना र अवसर.....	89
५.	दीर्घकालीन सोच	90
६.	लक्ष्य.....	90
७.	उद्देश्य.....	90
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	90
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	92
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	93
५.५	भाषा, संस्कृति र कला	94
१.	पृष्ठभूमि	94
२.	वस्तुगत स्थिति.....	94
३.	समस्या र चुनौती	95
४.	सम्भावना र अवसर.....	95
५.	दीर्घकालीन सोच	95
६.	लक्ष्य.....	95
७.	उद्देश्य.....	95
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	96
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	97
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	98
	परिच्छेद—छ.....	99
	शहरीकरण र पूर्वाधार विकास	99
१.	पृष्ठभूमि	99
२.	वस्तुगत स्थिति.....	99
३.	समस्या र चुनौती	103
४.	सम्भावना र अवसर.....	104

५.	दीर्घकालीन सोच	104
६.	लक्ष्य.....	105
७.	अपेक्षित उपलब्धि.....	120
परिच्छेद—सात.....		121
वन, वातावरण र विपद् व्यवस्थापन.....		121
७.१ वन व्यवस्थापन तथा जलाधार संरक्षण.....		121
१.	पृष्ठभूमि	121
२.	वस्तुगत स्थिति.....	121
३.	समस्या र चुनौती	122
४.	सम्भावना र अवसर.....	123
५.	दीर्घकालीन सोच	123
६.	लक्ष्य.....	123
७.	उद्देश्य.....	123
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	123
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	126
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	127
७.२ वातावरण प्रदूषण नियन्त्रण		127
१.	पृष्ठभूमि	127
२.	वस्तुगत स्थिति.....	128
३.	समस्या र चुनौती	128
४.	सम्भावना र अवसर.....	129
५.	दीर्घकालीन सोच	129
६.	लक्ष्य.....	129
७.	उद्देश्य.....	129
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	129
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	131

१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	132
७.३	जलवायु परिवर्तन अनुकूलन तथा न्यूनीकरण	132
१.	पृष्ठभूमि	132
२.	वस्तुगत स्थिति	133
३.	समस्या र चुनौती	133
४.	सम्भावना र अवसर.....	133
५.	दीर्घकालीन सोच	134
६.	लक्ष्य.....	134
७.	उद्देश्य.....	134
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	134
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	135
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	136
७.४	विपद् जोखिम व्यवस्थापन	137
१.	पृष्ठभूमि	137
२.	वस्तुगत स्थिति	137
३.	समस्या र चुनौती	137
४.	सम्भावना र अवसर.....	138
५.	दीर्घकालीन सोच	138
६.	लक्ष्य.....	138
७.	उद्देश्य.....	138
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	138
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	139
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	140
	परिच्छेद—आठ	141
	अन्तरसम्बन्धित क्षेत्र.....	141
८.१	श्रम तथा रोजगार.....	141



१.	पृष्ठभूमि	141
२.	वस्तुगत स्थिति	141
३.	समस्या र चुनौती	141
४.	सम्भावना र अवसर.....	142
५.	दीर्घकालीन सोच	142
६.	लक्ष्य.....	142
७.	उद्देश्य.....	142
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	142
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	143
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	144
८.२	गरिबी निवारण	144
१.	पृष्ठभूमि	144
२.	वस्तुगत स्थिति	144
३.	समस्या र चुनौती	145
४.	सम्भावना र अवसर.....	145
५.	दीर्घकालीन सोच	145
६.	लक्ष्य.....	145
७.	उद्देश्य.....	145
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	145
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	147
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	148
८.३	सुशासन.....	148
१.	पृष्ठभूमि	148
२.	वस्तुगत स्थिति	149
३.	समस्या र चुनौती	149
४.	सम्भावना र अवसर.....	149

५.	दीर्घकालीन सोच	150
६.	लक्ष्य.....	150
७.	उद्देश्य.....	150
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	150
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	153
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	154
८.४	सूचना तथा सञ्चार.....	154
१.	पृष्ठभूमि	154
२.	वस्तुगत स्थिति.....	155
३.	समस्या र चुनौती	155
४.	सम्भावना र अवसर.....	155
५.	दीर्घकालीन सोच	155
६.	लक्ष्य.....	155
७.	उद्देश्य.....	155
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	156
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	156
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	157
८.५	विज्ञान तथा प्रविधि	157
१.	पृष्ठभूमि	157
२.	वस्तुगत स्थिति.....	157
३.	समस्या र चुनौती	157
४.	सम्भावना र अवसर.....	158
५.	दीर्घकालीन सोच	158
६.	लक्ष्य.....	158
७.	उद्देश्य.....	158
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	158

९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	160
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	161
८.६	तथ्याङ्क प्रणाली, योजना प्रक्रिया एवम् अनुसन्धान.....	161
१.	पृष्ठभूमि	161
२.	वस्तुगत स्थिति.....	161
३.	समस्या र चुनौती	161
४.	सम्भावना र अवसर.....	162
५.	दीर्घकालीन सोच	162
६.	क्षेत्रगत लक्ष्य.....	162
७.	उद्देश्य.....	162
८.	रणनीति र कार्यनीति.....	162
९.	प्रमुख कार्यक्रमहरू.....	164
१०.	अपेक्षित उपलब्धि.....	164
परिच्छेद—नौ.....		166
नतिजा खाका.....		166
९.१	परिचय	166
९.२	नतिजा सूचक	144
९.२.१	समष्टिगत आर्थिक क्षेत्र.....	144
९.२.२	कृषि, पशुपन्छी तथा मत्स्य विकास.....	146
९.२.३	भूमि व्यवस्था	151
९.२.४	खाद्य सुरक्षा.....	153
९.२.५	उद्योग	154
९.२.६	खानी तथा उत्खनन	156
९.२.७	वाणिज्य तथा आपूर्ति.....	157
९.२.८	पर्यटन.....	157
९.२.९	सहकारी.....	160
९.२.१०	शिक्षा.....	161
९.२.११	स्वास्थ्य तथा पोषण	166

९.२.१२ जनसङ्ख्या र बसाइँसराइ.....	170
९.२.१३ लैङ्गिक समानता र महिला सशक्तिकरण.....	171
९.२.१४ सामाजिक समावेशीकरण.....	172
९.२.१५ सामाजिक सुरक्षा र संरक्षण.....	173
९.२.१६ ज्येष्ठ नागरिक.....	174
९.२.१७ अपाङ्गता भएका व्यक्ति.....	175
९.२.१८ बालबालिका तथा किशोर किशोरी.....	176
९.२.१९ युवा तथा खेलकुद.....	176
९.२.२० भाषा, कला, साहित्य र सम्पदा संरक्षण.....	178
९.२.२१ शहरीकरण, आवास तथा वस्ती विकास.....	179
९.२.२२ सडक तथा यातायात व्यवस्था.....	181
९.२.२३ जलविद्युत.....	183
९.२.२४ सिँचाइ.....	184
९.२.२५ खानेपानी तथा सरसफाइ.....	185
९.२.२६ प्रकोप व्यवस्थापन.....	186
९.२.२७ सौर्य तथा नवीकरणीय ऊर्जा.....	187
९.२.२८ वन तथा जैविक विविधता.....	188
९.२.२९ वातावरण र जलवायु परिवर्तन.....	191
९.२.३० विपद व्यवस्थापन.....	193
९.२.३१ श्रम तथा रोजगार.....	194
९.२.३२ गरिबी र असमानता न्युनिकरण.....	196
९.२.३३ सुशासन र क्षमता विकास.....	197
९.२.३४ मानव अधिकार, शान्ति सुरक्षा तथा सुव्यवस्था.....	200
९.२.३५ सूचना तथा सञ्चार.....	201
९.२.३६ विज्ञान तथा प्रविधि.....	202
९.२.३७ योजना प्रणाली, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन र तथ्याङ्क व्यवस्थापन.....	203

परिच्छेद - एक

परिचय

१.१ पृष्ठभूमि

१. संवैधानिक दिशानिर्देश

नेपालको संविधानले सबै किसिमका विभेदको अन्त्य गरी आर्थिक समानता, समृद्धि र सामाजिक न्याय सुनिश्चित गर्न समानुपातिक समावेशी र सहभागितामूलक सिद्धान्तका आधारमा समतामूलक समाजको निर्माण गर्दै दिगो शान्ति, सुशासन, विकास र समृद्धिको आकाङ्क्षा राखेको छ।

संविधानले केन्द्रिकृत एकात्मक शासन प्रणालीलाई विकेन्द्रिकृत गरी संघीय ढाँचामा रूपान्तरित गरेको छ। नेपालको शासकीय परम्परामा यो राजनीतिक, प्रशासनिक र वित्तीय शक्तिको युगान्तकारी निक्षेपण हो। संविधानले संघ, प्रदेश र स्थानीय तह गरी एकल र साझा अधिकारसहितका तीन तहको सरकारको व्यवस्था गरेको छ। तीन तहका सरकारको सम्बन्ध सहकारीता, सहअस्तित्व र समन्वयको सिद्धान्तमा आधारित हुने व्यवस्था संविधानमा स्पष्ट उल्लेख छ।

संविधानले नागरिकका मौलिक हकहरूको सुनिश्चितता गर्नुका साथै राज्य सञ्चालनका निर्देशक सिद्धान्त र विषय तथा क्षेत्रगत नीतिहरूको व्यवस्थासमेत गरेको छ। लोककल्याणकारी राज्यव्यवस्थाको स्थापना र शोषणरहित समाजको निर्माण गर्न राष्ट्रिय अर्थतन्त्रलाई आत्मनिर्भर, स्वतन्त्र, तथा उन्नतशील बनाउदै समाजवाद उन्मुख स्वतन्त्र र समृद्ध अर्थतन्त्रको विकास गर्ने राज्यको उद्देश्य रहेको छ। संविधानको विकाससम्बन्धी नीतिले सन्तुलित र समावेशी आर्थिक विकास, विकासका दृष्टिले पछाडि परेका क्षेत्रलाई प्राथमिकता, गुणस्तरीय तथा दिगो भौतिक पूर्वाधारको विकास, विपन्न नागरिकलाई प्राथमिकता दिंदै विकासको प्रतिफलको न्यायोचित वितरणको व्यवस्था गर्न मार्गनिर्देश गरेको छ। संविधानले सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रको सहभागिता र स्वतन्त्र विकासमार्फत् राष्ट्रिय अर्थतन्त्र सुदृढ गर्नसमेत निर्देशित गरेको छ।

संविधानले संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका सरकारको एकल र साझा गरी अधिकार र कार्यक्षेत्र व्यवस्थित गरेको छ। संघीय मन्त्रिपरिषद्ले संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको एकल तथा साझा अधिकार सूचीको थप विस्तृतीकरण गरेको छ। सोही आधारमा प्रदेश सरकार मन्त्रिपरिषद्को कार्यविभाजन नियमावलीसमेत पारित भएको छ।

संविधान बमोजिम प्रदेश सरकारले प्रदेशको शान्ति सुरक्षा लगायत क्षेत्रगत नीति, योजना र कार्यक्रम तर्जुमा, कार्यान्वयन, अनुगमन आदि कार्य गर्ने र तोकिएका कर र शुल्क उठाउने अधिकार राख्दछ। संविधानले संघीय सरकारले सङ्कलन गरेको राजस्व संघ, प्रदेश र स्थानीय तहमा न्यायोचित वितरण र हस्तान्तरण गर्न एउटा बेग्लै र स्वायत्त “राष्ट्रिय प्राकृतिक श्रोत तथा वित्तीय आयोग” को व्यवस्था गरेको छ। आयोगको सिफारिसमा राष्ट्रिय नीति र आवश्यकता, स्थानीय तहले पुऱ्याउनुपर्ने सेवा, राजस्व उठाउने सम्भाव्यता र क्षमता, विकास निर्माणमा गर्नुपर्ने सहयोग, प्रादेशिक असन्तुलन घटाउन र गरिबी र असमानता न्यूनीकरण गर्नका निम्ति आवश्यक श्रोत र साधनलाईसमेत ध्यानमा राखी केन्द्रबाट सोझै प्रदेश र स्थानीय तहमा चार किसिमका अनुदानसहितको वित्तीय हस्तान्तरण गर्ने व्यवस्था छ। केन्द्रबाट प्रदेश र स्थानीय तहमा समानीकरण अनुदान, ससर्त अनुदान, समपूरक अनुदान र विशेष अनुदान गरी चार किसिमका अनुदान दिने व्यवस्था छ। त्यसैगरी, प्रदेशले पनि स्थानीय तहलाई अनुदान दिने व्यवस्था संविधानमा छ।

संविधान बमोजिम प्रदेश सरकारले प्रदेशको विकासको दीर्घकालीन सोच र योजना तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गर्न सक्दछ। यसैगरी, अन्तरसरकारी वित्त व्यवस्थापन ऐन, २०७४ ले प्रदेश सरकारले सार्वजनिक खर्चको विवरण प्रस्तुत गर्दा

तीन आर्थिक वर्षको प्रक्षेपणसहितको मध्यमकालीन खर्च संरचनासमेत तर्जुमा गर्न अनिवार्य व्यवस्था गरेको छ। यस परिप्रेक्षमा, प्रदेश सरकारले पहिलो आवधिक योजना तर्जुमा गरेको छ।

२. बदलिएको राजनैतिक परिवेश र प्रतिबद्धताहरू

संघीय संरचना अनुरूप भएको पहिलो निर्वाचनबाट निर्वाचित वर्तमान प्रदेश सरकारका लागि संविधान बमोजिम समाजवाद उन्मुख जनमुखी आर्थिक, सामाजिक र सांस्कृतिक रूपान्तरणका दिशामा अघि बढ्ने यो एउटा ऐतिहासिक अवसर हो। राष्ट्रिय तहमा लामो समयदेखिको राजनैतिक अन्यायको अन्त्य भएको छ। प्रदेशको विशिष्टता र आवश्यकताका आधारमा तीव्र र समावेशी आर्थिक विकास र सामाजिक न्यायसहितको “समृद्ध नेपाल; सुखी नेपाली” को नारालाई व्यवहारमा क्रमशः रूपान्तरित गर्दै जाने कार्य नै प्रदेश सरकारको प्राथमिक एजेण्डा रहेको छ। जनतासँग गरिएका प्रतिबद्धताहरू पूरा गर्नु प्रदेश सरकारको दायित्व भएकोले यस आवधिक योजनामा तीनै प्रतिबद्धताहरूलाई व्यवहारिक कार्यान्वयनको बाटोतिर लैजाने प्रयत्न गरिएको छ। यसका साथै, सन् २०३० सम्ममा दिगो विकास लक्ष्य हासिल गर्ने नेपालको प्रतिबद्धतालाई प्रदेश तहमा आत्मसात र स्थानीयकरण गर्ने प्रयास गरिएको छ।

प्रदेशबाट निरक्षरता उन्मूलन गर्ने, आधारभूत शिक्षालाई निःशुल्क र सर्वव्यापी बनाउने, प्राविधिक र व्यवसायिक शिक्षामा सबैको पहुँच बढाउने; आधारभूत स्वास्थ्य सेवालालाई समावेशी, सुलभ, निःशुल्क र गुणस्तरीय तुल्याउने; स्तरीय शहरी पूर्वाधार र अन्तरजिल्ला सडक सञ्जाललाई स्तरीकरण गर्ने; तुलनात्मक लाभ भएका कृषिमा आत्मनिर्भर हुने, प्राङ्गारिक खेतीको प्रवर्द्धन गर्ने; आधुनिक औद्योगिक क्षेत्रको निर्माण गर्ने; ठूला तथा मध्यम खालका जलविद्युत परियोजनाहरूको विस्तार गर्ने; प्राकृतिक, जैविक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक पर्यटकीय स्थलको संरक्षण गर्ने र विद्यमान पर्यटकीय क्षेत्रहरूको प्रवर्द्धनको साथसाथै नयाँ पर्यटकीय गन्तव्यहरूको विस्तार गर्ने; चुरे क्षेत्रको संरक्षण गर्ने, वन र त्यसको जैविक विविधताको संरक्षण हुनेगरी वनमा आधारित उद्यमहरूको विस्तार गर्ने र समुदायमा आधारित वन व्यवस्थापनका साथै पर्यावरणको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्ने; उत्पादन, सेवा र वितरणमा सहकारीको संलग्नता वृद्धि गर्ने; प्राविधिक युवा जनशक्तिको विकास गर्ने, अनुसन्धान र सूचना प्रविधिमा मानव संसाधन विकास गर्ने; प्रादेशिक मार्गाचित्रसहितको शहरी र ग्रामीण विकासलाई निजी क्षेत्रसमेतको संलग्नतामा प्रोत्साहन गर्ने लगायतका प्रतिबद्धताहरू निर्वाचनमा सहभागी राजनीतिक दलहरूको चुनावी घोषणापत्रमा समावेश छन्।

माथिका प्रतिबद्धताहरूको अन्तर्यमा निरपेक्ष गरिबीलाई न्यूनतम विन्दुमा पुऱ्याउनुका साथै, रोजगारीको प्रवर्द्धन, वातावरणमैत्री पूर्वाधार, पर्यटन, औद्योगिक र कृषि विकास, साना-मझौला उद्यम, विशिष्टीकृत सेवा र मानव संसाधन विकास तथा सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र जस्ता प्रदेशका तुलनात्मक लाभका क्षेत्रहरूको प्रवर्द्धन र विस्तार र संविधानले प्रत्याभूत गरेका आधारभूत स्वास्थ्य र शिक्षा तथा अन्य सामाजिक सेवामा सबैको सहज पहुँचका साथै लैङ्गिक समानता र सामाजिक समावेशीकरणको सिद्धान्तलाई व्यवहारमा कार्यान्वयन गर्नेजस्ता विषयहरू रहेकाले यी विषयलाईसमेत समावेश गरिएको छ।

३. विकासको बृहत् सन्दर्भ

विगत दशकहरूमा नेपालको आर्थिक वृद्धि दर अपेक्षाकृत कम रहेको र गएको दुई दशकमा सरदर चार प्रतिशत छ। यातायात, सञ्चार, शिक्षा, स्वास्थ्य र व्यापार क्षेत्रको योगदानमा तीव्र वृद्धि देखिएको छ भने कृषि र उद्योगको अर्थतन्त्रमा योगदान घटेको छ। देशको स्थलीय अर्थतन्त्रमा जनसाङ्ख्यिक लाभको स्थितिले गर्दा आश्रित जनसङ्ख्याको तुलनामा श्रम-सक्षम जनसङ्ख्याको अनुपात बढेको छ। जनसाङ्ख्यिक सङ्क्रमण लगायतका अन्य कारणले केही पहाडी जिल्लाहरूको जनसङ्ख्या घटेको छ। तर, कृषि क्षेत्रबाट बाहिरिएको श्रम शक्तिको तुलनामा रोजगारीको विस्तार भएको छैन। यसको प्रभाव

बसाइँसराइको प्रवृत्तिमा देखिएको छ। पारम्परिक आन्तरिक (खास गरी पहाडबाट तराईतिरको) बसाइँसराइको गति घटेको छैन। सेवा, सुरक्षा र रोजगारीको खोजीमा शहर केन्द्रित बसाइँसराइ बढेको छ। संस्थागत सकृयताको अभावमा अनियन्त्रित भू-उपयोग र योजनाविहीन शहरीकरण अपवादभन्दा प्रवृत्तिका रूपमा देखापरेको छ। देशभित्र रोजगारी सिर्जना नहुँदा श्रम रोजगारीको खोजीमा बाह्य बसाइँसराइको गन्तव्य फेरिएको छ। यसको गति तीव्र छ। बढ्दो यातायातको सञ्जालले सेवा, उपभोग र जनसङ्ख्याको गतिशीलता बढाएको छ। बढ्दो उपभोग र मागले आयात बढाएको छ। तर निर्यातको स्थितिमा सुधार र आयात प्रतिस्थापनमा तीव्रता आउन सकेको छैन। विगत दशकमा नेपालका दुवै छिमेकीहरूको आर्थिक वृद्धि सापेक्षिक तीव्र रहेको छ तर त्यसबाट नेपालले लाभ लिन सकेको छैन।

जनसाङ्ख्यिक लाभको अवस्था अर्को साढे दुई दशक मात्र रहने देखिन्छ। त्यसको फाइदा लिने समय सीमित छ। पहाडी सम्पदा खासगरी जलश्रोत, जैविक विविधता, पर्यटन, स्थल विशेषका विशिष्टीकृत खेती, जडिबुटी, वन, खानी आदिको विकासमा देखिएको जटिलताको कारण पहाडमै जनसङ्ख्या आकर्षित हुने आधार बनिसकेको छैन। उक्त आधार नबनेसम्म पहाडी र ग्रामीण क्षेत्रबाट अन्यत्र हुने बसाइँसराइको गतिलाई रोक्न सकिँदैन। गुणस्तरीय पूर्वाधार, सबल ग्रामीण र शहरी अन्तरसम्बन्ध, नियोजित शहरी विस्तार र गैरकृषि उत्पादनशील रोजगारीको सिर्जनाजस्ता आधारले शहरीकरणको बढ्दो प्रवृत्तिलाई मार्गदर्शन गर्न सकिन्छ। विकासको यो व्यापक सन्दर्भले प्रदेशका चुनौती र सम्भावनालाई पनि प्रतिबिम्बित गर्छ। प्रदेश विकासको उद्देश्य जनसाङ्ख्यिक लाभको फाइदा लिने, बसाइँसराइको प्रवृत्तिलाई प्रभावित गर्ने र शहरीकरण र रोजगारीको विस्तारलाई सकारात्मक दिशामा निर्देशित गर्न सक्नुपर्छ। यो आवधिक योजना सोही दिशातर्फ उन्मुख छ।

राष्ट्रिय योजना आयोगले “समृद्ध नेपाल; सुखी नेपाली” को दीर्घकालीन राष्ट्रिय सोच लिएर “समुन्नत, स्वाधीन र समाजवाद उन्मुख अर्थतन्त्रसहितको समान अवसर प्राप्त, स्वस्थ, शिक्षित, मर्यादित र उच्च जीवनस्तर भएका सुखी नागरिक बसोबास गर्ने मुलुक”को परिकल्पना गरेको छ। उक्त दीर्घकालीन सोचले सर्वसुलभ आधुनिक पूर्वाधार एवम् सघन अन्तरआबद्धता; मानव पूँजी निर्माण तथा सम्भावनाको पूर्ण उपयोग; उच्च र दिगो उत्पादन तथा उत्पादकत्व तथा उच्च र समतामूलक राष्ट्रिय आय गरी समृद्धिका चार र परिष्कृत तथा मर्यादित जीवन; सुरक्षित, सभ्य र न्यायपूर्ण समाज; सुशासन; सबल लोकतन्त्र र राष्ट्रिय एकता, सुरक्षा र सम्मान गरी सुखका ६ गरी जम्मा १० वटा दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य तय गरेको छ। यसले आर्थिक वृद्धि; स्वास्थ्य सेवा र शिक्षाको सुनिश्चिता; अन्तरआबद्धता एवम् दिगो शहर/बस्ती विकास; उत्पादन र उत्पादकत्वमा अभिवृद्धि; सामाजिक सुरक्षा र संरक्षण; गरिबी निवारण र न्यायपूर्ण समाज निर्माण; प्राकृतिक स्रोतको संरक्षण, परिचालन र उत्पादनशीलताको विकास तथा सार्वजनिक सेवाको सुदृढीकरण, प्रादेशिक सन्तुलन र राष्ट्रिय एकताको सम्बर्धन गर्ने लगायतका ८ वटा राष्ट्रिय रणनीति तय गरेको छ भने गुणस्तरीय एकीकृत यातायात प्रणाली, सूचना प्रविधि तथा सञ्चार पूर्वाधार र बृहत सञ्जालीकरण; गुणस्तरीय मानव पूँजी निर्माण, उद्यमशील कार्य संस्कृति विकास र सम्भावनाको पूर्ण उपयोग; जल विद्युत उत्पादन वृद्धि र हरित अर्थतन्त्र प्रवर्द्धन; उत्पादन, उत्पादकत्व र प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता अभिवृद्धि; गुणस्तरीय पर्यटन सेवाको विकास र विस्तार; आधुनिक, दिगो र व्यवस्थित शहरीकरण, आवास र बस्ती विकास; प्रादेशिक र स्थानीय अर्थतन्त्रको विकास र सुदृढीकरण तथा औपचारिक क्षेत्रको विस्तार; सामाजिक संरक्षण र सुरक्षाको प्रत्याभूति तथा शासकीय सुधार र सुशासन अभिवृद्धि गरी ९ वटा क्षेत्रलाई रूपान्तरणका प्रमुख सम्बाहक भनी पहिचानसमेत गरेको छ। नेपाल सरकारको विकासको सोच, लक्ष्य, उद्देश्य तथा रणनीति प्राप्तिमा प्रदेश सरकारबाट समन्वय, सहकार्य र सहयोगी निर्वाह गरी नीति तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन र विकास निर्माणको कार्य हुने नेपाल सरकारले अपेक्षा गरेको छ। त्यसैगरी, सुशासन, शान्ति सुरक्षा, रोजगारी अभिवृद्धि एवम् सार्वजनिक सेवा प्रवाहमा गुणस्तर र प्रभावकारिता अभिवृद्धि गर्न प्रदेश तहले प्रमुख भूमिका निर्वाह गर्ने अपेक्षा पनि नेपाल सरकारले गरेको छ। यसले प्रदेशको विकासको सोचलाई मार्गनिर्देश गर्दछ।

४. आवधिक योजना तर्जुमाका पक्ष र आधारहरू

नेपालको संविधानले प्रदेश सरकारलाई प्रदेशको विकासको प्रमुख वाहकका रूपमा स्थापित गरेको छ। यसका चार महत्वपूर्ण पक्ष छन्। पहिलो, प्रदेशको आफ्नै अधिकार र दायित्वभिन्न पर्ने विकासका विषयहरू। दोश्रो, प्रदेशलाई प्रभाव पार्ने संघीय नीति, योजना र कार्यक्रम र प्रदेशको योजना बारे मार्गनिर्देश। तेश्रो, स्थानीय तहको विकासमा प्रदेशले गर्नुपर्ने सहजीकरण र चौथो, नेपालले अनुमोदन गरेका विकाससम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय प्रतिबद्धताहरू खास गरी सन् २०३० सम्ममा सबै देश, सबै क्षेत्र अनि समुदायहरूले हासिल गर्ने प्रतिबद्धता जनाएका दिगो विकासका लक्ष्यहरूलाई स्थानीयकरण गर्नुपर्ने जिम्मेवारी।

संक्षेपमा, संविधानका निर्देशक सिद्धान्त र नीतिहरू, संघीय मन्त्रिपरिषदबाट स्वीकृत संघ, प्रदेश र स्थानीय तहको एकल तथा साझा अधिकार सूचीको कार्य विस्तृतीकरण, राष्ट्रिय योजना आयोगले तयार गरेको “समृद्ध नेपाल, सुखी नेपाली”को लागि नेपालको दीर्घकालीन सोच, दिगो विकास लक्ष्य र यी सबैमा अन्तर्निहित समावेशीकरण, लैङ्गिक समता, सामाजिक विभेद र वञ्चितको अन्त्य, वातावरणीय सन्तुलन, हरित विकास, विकासमा क्षेत्रीय सन्तुलन, दिगो र सहभागितात्मक विकास, सुशासन आदि पक्षहरूलाई यो आवधिक योजनाको आवधिक योजना तर्जुमाका आधारहरूका रूपमा अङ्गिकार गरिएको छ। साथै प्रदेश सरकारका विगतका नीति तथा कार्यक्रम र प्रदेशबाट जारी भएका ऐन, कानून, नियम र निर्देशिकाहरूलाई पनि आधारका रूपमा लिइएको छ।

५. आवधिक योजना निर्माणको प्रक्रिया र विधि

आवधिक योजनाको तर्जुमा दुई चरणमा गरी सम्पन्न गरिएको छ। पहिलो चरणमा आधारपत्रको तर्जुमा र दोश्रो चरणमा नतिजा खाकासहितको पूर्ण योजना तयार गरिएको छ। आधारपत्रको तर्जुमाका लागि तीन तहका प्रक्रिया अवलम्बन गरिएको थियो। सर्वप्रथम, आधारपत्रको रूपरेखाको प्रस्ताव र त्यसको परिमार्जन र अभिमुखीकरण गरिएको थियो। यस चरणमा प्रदेश मन्त्रिपरिषद् र प्रदेश संसदका सभामुख र विषयगत समितिका सभापति र सांसद तथा मन्त्रालयका सचिवहरूलाई आवधिक योजना निर्माणको अवधारणा र प्रारम्भिक रूपरेखासहितको कार्यपत्रको प्रस्तुति र अभिमुखीकरण गरिएको थियो। उक्त कार्यक्रमहरूबाट प्राप्त सुझावहरूका आधारमा आधारपत्रको रूपरेखाको सामान्य परिमार्जन गरिएको थियो। दोश्रोमा, विषयगत मन्त्रालयहरूमा आधारपत्र निर्माणसम्बन्धी अभिमुखीकरण र प्रारम्भिक खाका बनाउने काम गरिएको थियो। यसले आवधिक योजना तर्जुमामा मन्त्रालयहरूको संलग्नता सुनिश्चित गर्न र भइरहेको सोचलाई आत्मसात गर्न मद्दत पुगेको छ। तेश्रोमा, प्रदेश नीति तथा योजना आयोगबाट प्रकाशित प्रदेशको वस्तुस्थिति विवरणमा समावेश गरिएका र अन्य श्रोतबाट उपलब्ध तथ्याङ्कको अध्ययनका आधारमा समष्टि र क्षेत्रगत वस्तुगत स्थिति, समस्या, अवसर र चुनौतीहरूको प्रारम्भिक विश्लेषण र रणनीतिक महत्वका विषयहरूको पहिचान गरिएको थियो। यी तीन प्रक्रियाबाट प्राप्त सूचना र सुझावहरूका आधारमा आधारपत्रको रूपरेखालाई आवश्यक परिमार्जन गरी विज्ञहरू, विशेषज्ञता राख्ने संघीय र अन्य तहका पदाधिकारीहरू र स्वतन्त्र विशेषज्ञहरूको राय र पृष्ठपोषण प्राप्त गर्न हेटौँडामा सोच निर्माण कार्यशालाको परियोजना गरी प्रस्तुत गरिएको थियो। उक्त कार्यशालाबाट प्रदेशको विकासको समष्टि र क्षेत्रगत सोच, उद्देश्य र लक्ष्यहरूको निर्धारण गर्नका लागि सुझावहरू प्राप्त भएका थिए। उक्त कार्यशालामा माननीय मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रीहरू, माननीय सांसदहरू, मन्त्रालयका सचिवहरू तथा कर्मचारीहरू, स्थानीय तहका पदाधिकारीहरू तथा निजी क्षेत्र र नागरिक समाज लगायतका प्रतिनिधिहरूको उपस्थिति थियो। प्रदेशको सबै जिल्लाहरूको सहभागिता हुनेगरी सोही प्रकारको कार्यशालाहरू जिरी, पनौती, भरतपुर, विदुर र जावलाखेलमा पनि परियोजना गरिएका थिए। उक्त कार्यशालाहरूबाट प्राप्त सुझावहरूलाई आधारपत्रमा समावेश गरिएको थियो। यसरी विभिन्न क्षेत्रबाट आएका पृष्ठपोषणका आधारमा थप विमर्श र विश्लेषण गरी तयार पारिएको आधारपत्रको

मस्यौदालाई प्रदेश नीति तथा योजना आयोगद्वारा पुनः प्रदेश मन्त्रालयहरूको प्रतिक्रियाका लागि प्रस्तुत गरिएको थियो। मन्त्रालयहरूबाट प्राप्त सुझावहरू समावेश गरी २०७५ पौष १३ गते सर्वसाधारण र सरोकारवालाहरूको जानकारी र सुझावका लागि आधारपत्रको सार्वजनिक गरिएको थियो। आधारपत्रलाई अन्तिम रूप दिनका लागि माननीय मुख्यमन्त्री तथा प्रदेश नीति तथा योजना आयोगको अध्यक्ष श्री डोरमणी पौडेल ज्यूको अध्यक्षतामा मिति २०७५।०९।३० मा बसेको आयोगको बैठकले आयोगको उपाध्यक्षको अध्यक्षतामा आयोगको सदस्य, सबै मन्त्रालयका सचिवहरू र आयोगको सचिव सम्मिलित आवधिक योजना तर्जुमा समिति गठन गरी मन्त्रालयहरूबाट पुनः विषयगत सुझाव माग गरी प्राप्त सुभावसमेतलाई ध्यानमा राखी आधारपत्रलाई परिमार्जन गरी प्रदेश मन्त्रपरिषद्को मिति २०७५।११।०५ मा बसेको बैठकले आवधिक योजनाको आधारपत्रलाई स्वीकृत गरेको थियो।

आवधिक योजना निर्माणको दोश्रो चरणमा आधारपत्रको आधारमा नतिजा खाकासहितको पूर्ण योजना तर्जुमाका लागि नतिजा खाकाको प्रारम्भिक रूपरेखाको तयार, प्रदेश विकासका प्रमुख चालकहरूका सम्बन्धमा विज्ञहरूसँग छलफल र राष्ट्रिय योजना आयोगले तयार पारेको पन्ध्रौं आवधिक योजनासँग प्रदेश योजनाको तादात्म्यता कायम गरी तीन तहको प्रकृया अवलम्बन गरिएको थियो।

सर्वप्रथम, नतिजा खाकाको प्रारम्भिक रूपरेखाको तयार गर्नका लागि सबै मन्त्रालयहरूमा एक/एक दिने नतिजा खाका सम्बन्धी अभिमुखीकरण गरिएको थियो। सो सम्बन्धमा प्रदेश सभाका सदस्यहरूसँग पनि एक अन्तरक्रिया गरिएको थियो। उक्त अभिमुखीकरणहरूमा नतिजा खाकाको ढाँचाका साथै समष्टिगत रणनीतिहरू, प्रदेश विकासका प्रमुख चालकहरू, दिगो विकासका लक्ष्यहरू र अल्पविकसित देशबाट विकासोन्मुख देशको रूपमा हुने रूपान्तरणका आधारहरूका सम्बन्धमासमेत छलफल गरिएको थियो। उक्त अभिमुखीकरण पश्चात मन्त्रालयहरूसँग छुट्टै बसी नतिजा खाकाको प्रारम्भिक रूपरेखा तर्जुमा गरिएको थियो। दोश्रोमा, प्रदेश विकास प्रमुख चालकहरूका सम्बन्धमा थप सुझावहरू प्राप्त गर्नको लागि सम्बन्धित विषयका विज्ञहरूसँग एक दिवसीय अन्तरक्रिया गरिएको थियो। सो अन्तरक्रियाबाट प्राप्त सुझावहरूलाई समावेश गरी विकासका चालकहरूलाई थप विस्तृतीकरण गरिएको थियो। र तेश्रोमा, राष्ट्रिय योजनासँग प्रदेश योजनाको तादात्म्यता कायम गर्नका लागि पन्ध्रौं योजनाका प्राथमिकताहरू, त्यसले प्रयोग गरेको नतिजा खाकाको ढाँचा र त्यसमा समावेश भएका प्रमुख विषयहरूका सम्बन्धमा राष्ट्रिय योजनाका माननीय उपाध्यक्ष, प्रदेश मामिला हेर्ने माननीय सदस्य र आयोगमा विज्ञ कर्मचारीहरूबाट अन्तरक्रिया र सहकार्य गरिएको थियो। यसबाट प्राप्त सुझाव र टिप्पणीहरूलाई ध्यानमा राखी आवधिक योजनालाई परिमार्जन गरिएको थियो। परिमार्जित योजनालाई प्रदेश विकास परिषदमा छलफलको लागि प्रस्तुत गरिएको थियो। प्रदेश विकास परिषदबाट प्राप्त सुझावहरूसमेतलाई समावेश गरी योजनालाई प्रदेश मन्त्रपरिषद्को बैठकबाट अनुमोदन गरिएको थियो।

६. आवधिक योजना निर्माणको परिवेश र सीमाहरू

संघीय शासन प्रणाली नेपालका निम्ति नौलो अभ्यास हो। मुलुक अहिले संघीयता कार्यान्वयनको सङ्क्रमणकालमै छ। यो क्रम केही काल रहने नै देखिन्छ। सङ्क्रमण कालसँग जोडिएका केही चुनौतीहरू छन्। यसमध्ये एउटा चुनौती अन्तरसरकारी समन्वय र कार्यान्वयनसँग सम्बन्धित छ। संघीय सरकारमै समस्तरका एकाइहरूबीच समन्वयको समस्या छ। संघीय निकायबाट संघीयता कार्यान्वयनका सम्बन्धमा आवश्यक कतिपय कामहरू हुन बाँकी नै छन्। दोश्रो चुनौती प्रदेश र स्थानीय शासन पद्धति र प्रकृयासँग सम्बन्धित छ। प्रदेश र स्थानीय तहलाई प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन गर्नका लागि आवश्यक कतिपय व्यवस्थापकीय र कानुनी प्रावधानहरू निर्माण हुँदैछन्। यसले गर्दा प्रादेशिक र स्थानीय शासन पद्धति, नियमन र प्रशासनिक प्रकृयाबारे स्पष्टता आउन बाँकी रहेको छ। तेश्रो चुनौती प्रदेश र स्थानीय तहको संस्थागत क्षमता

विकाससँग सम्बन्धित छ। कर्मचारीको उपयुक्त सङ्ख्याको निक्कौँ र क्षमता विकासका कार्यहरू हुँदैछन्। चौथो चुनौती प्रदेश र स्थानीय तहका जनप्रतिनिधिहरूको सशक्तीकरणसँग सम्बन्धित छ। जनताको चाहना अनुसार जनप्रतिनिधिहरूले आफ्नो भूमिका र संवैधानिक दायित्व निर्वाह गर्न जरूरी हुन्छ। पाँचौँ चुनौती स्थानीय सहभागिता र जवाफदेहितासँग सम्बन्धित छ। खास गरेर स्थानीय तहमा चुनिएका प्रतिनिधि तथा सर्वसाधारण र नागरिक समाजबीचको सम्बन्धमा स्पष्ट हुन र जनताप्रतिको जवाबदेहिता स्थापित गर्ने माध्यमहरू संस्थागत हुँदैछन्।

अर्थ-राजनीतिक हिसाबले मुलुक अहिले संघीयतामा प्रवेश गरेको छ तर संघीय ढाँचा पूर्णतः कार्यान्वयन हुने क्रममै छ। यसैगरी, संघ, प्रदेश र स्थानीय तहका साझा अधिकारसम्बन्धी व्यवस्थाहरू विस्तृतीकरण भइसकेको भए पनि सो स्पष्ट पारिने क्रममा छ। आवश्यक कानूनहरू निर्माण भइरहेका छन्। वित्तीय हस्तान्तरण लगायतका क्षेत्रमा काम गर्ने राष्ट्रिय प्राकृतिक श्रोत तथा वित्तीय आयोगले भर्खरै काम थाल्दैछ। प्रदेश विकासमा सहकारी र निजी क्षेत्रको भूमिका पनि स्पष्ट हुँदै जाने क्रममा छ। त्यस्तैगरी, नागरिक समाज र गैरसरकारी क्षेत्रको अपेक्षित भूमिका पनि स्पष्ट हुन जरूरी छ। यसैगरी, दातृ निकायहरूले प्रदेश विकासमा खेल्न सक्ने भूमिकाका बारेमा पनि नीतिगत स्पष्टता हुन आवश्यक छ। निश्चय पनि, राष्ट्रिय विकासको सोच र रणनीतिले प्रदेशको विकासको सोचलाई प्रभाव पार्दछ। संघीय ढाँचा अनुसारको राष्ट्रिय विकासको रणनीति पन्ध्रौँ योजनाले दिएको छ। त्यसको कार्यान्वयन भर्खरै शुरू हुँदैछ।

उपलब्ध राष्ट्रिय र जिल्ला तहका तथ्याङ्क नै अहिले सूचनाका मुख्य आधार हुन्। तर अधिकांश तथ्याङ्क अध्यावधिक छैनन्। कुल जनसङ्ख्या, जनसङ्ख्याको गतिशीलता, शहरीकरण र बसाइँसराइको प्रवृत्तिजस्ता कतिपय महत्वपूर्ण तथ्याङ्कहरू ८ वर्ष पुराना भइसकेका छन्। राष्ट्रियस्तरका धेरै तथ्याङ्कहरू पुरानो विकास क्षेत्रको अवधारणामा सङ्कलित छन्। वृहत् अर्थतन्त्र (म्याक्रो ईकोनोमी)सम्बन्धी तथ्याङ्क प्रदेश वा तल्लो तहमा संग्रह र विश्लेषण हुन सकेको छैन। हालसम्म प्रदेश तहमा प्रदेशको विकास योजना तर्जुमा गर्न आवश्यक तथ्याङ्क सङ्कलन, संग्रह, विश्लेषण र व्यवस्थापनको व्यवस्थित प्रणालीको विकास भई सकेको छैन।

त्यस्तै, दिगो विकास लक्ष्य प्राप्तिलाई समष्टि र क्षेत्रगत नीतिहरूमा आत्मसात गरिएको भए पनि प्रदेशको विद्यमान स्थितिबारे आधार तथ्याङ्क स्थापित गरिने क्रममै छ। माथि उल्लेखित कारणहरूले गर्दा आवधिक योजना तर्जुमामा धेरै तथ्याङ्कीय र व्यवहारिक सीमाहरू हुनुका साथै कार्यान्वयनमा केही जटिलतासमेत आउन सक्दछ।

यो आवधिक योजनाले प्रदेशको समृद्धि र विकासको दीर्घकालीन सोच, उद्देश्य, रणनीति, कार्यनीति र प्राथमिकताको मार्गचित्र प्रस्तुत गर्दछ। यो आवधिक योजना पाँच वर्षका लागि निर्माण गरिएको भए पनि यसको दीर्घकालीन सोच समृद्ध नेपाल: सुखी नेपालीको दीर्घकालीन सोचसँग तादात्म्यता कायम हुनेगरी तयार गरिएको छ। योजनाको समष्टिगत सोचको परिकल्पना पाँच वर्षभन्दा बढी अवधिको रहेको छ। यही परिकल्पनाको आधारमा लक्ष्य र उद्देश्यको तय गरिएको छ। यस आवधिक योजनामा उल्लेखित समष्टि र क्षेत्रगत सोच, लक्ष्य र उद्देश्य स्थलगत कार्यशालाहरूमा गरिएको सामूहिक छलफलको निचोड हो। रणनीतिको तर्जुमा ५ वर्षभन्दा बढीको समयावधिलाई ध्यानमा राखेर गरिएको भएतापनि कार्यान्वयन गर्ने नीतिहरू भने ५ वर्षको अवधिका लागि मात्र हुन्।

परिच्छेद — दुई

प्रदेशको वर्तमान अवस्था

२.१ पृष्ठभूमी

संविधानसभाबाट २०७२ सालमा जारी भएको नेपालको संविधानले नेपालमा रहेको केन्द्रिकृत एकात्मक शासन प्रणालीलाई विकेन्द्रिकृत गरी संघीय ढाँचामा रूपान्तरित नेपाललाई सात प्रदेशमा विभाजन गरेको छ। नेपालको संविधानको अनुसूची ४ मा जनकपुर अञ्चलका ३ जिल्ला (दोलखा, रामेछाप र सिन्धुली), वागमती अञ्चलका ८ जिल्ला (रसुवा, नुवाकोट, धादिङ, सिन्धुपाल्चोक, काभ्रेपलाञ्चोक, भक्तपुर, ललितपुर र काठमाडौं) तथा नारायणी अञ्चलका २ जिल्ला (मकवानपुर र चितवन) गरी जम्मा १३ जिल्लालाई समेटि बागमती प्रदेश कायम गरेको छ। नेपालमा तीन तहको निर्वाचन सम्पन्न भई तीनै तहका सरकार क्रियाशिल भई सकेका छन्। तीन तहका सरकारका आ-आफना काम र साझा कामको व्यवस्था पनि संविधानले नै गरेको छ।

२.२ भौगोलिक अवस्थिति

यस प्रदेशको कुल क्षेत्रफल २०,३०० वर्ग कि.मी. रहेको छ जुन नेपालको कुल क्षेत्रफल १,४७,१८१ वर्ग कि.मी.को १३.७९ प्रतिशत हुन आउँछ। यो प्रदेश समुन्द्र सतहदेखि १४१ मिटरमा रहेको चितवनको गोलाघाटदेखि रसुवा जिल्लाको ७,२४५ मिटरको उचाइमा रहेको लाडटाङ लिरूङ हिमालसम्म फैलिएको छ। नेपालको प्रामाणिक समयको आधारस्तम्भ मानिएको गौरीशंकर हिमाल यसै प्रदेशमा पर्दछ। यस प्रदेशमा ५ हजार मिटरभन्दा माथिका ६१ वटा हिमचुराहरू पर्दछन्। नापी विभागका अनुसार यो प्रदेश २६ डिग्री ५५ मिनट उत्तरी अक्षांशदेखि २८ डिग्री २३ मिनट उत्तरी अक्षांससम्म र ८३ डिग्री ५५ मिनट पूर्वी देशान्तरदेखि ८६ डिग्री ३४ मिनट पूर्वी देशान्तरसम्म फैलिएको छ।

२.३ जनसङ्ख्या

नेपालको पछिल्लो जनगणना २०६८ अनुसार यस प्रदेशमा संस्थागत जनसङ्ख्यासहित १२,७०,९७९ घरपरिवारमा ५५,२९,४५२ जनसङ्ख्या (महिला २७,८१,८१९ र पुरुष २७,४७,६३२) रहेका छन्। यो नेपालको कुल जनसङ्ख्याको २०.८७ प्रतिशत हो। २०५८ र २०६८ सालको बीचमा यस प्रदेशको औसत जनसङ्ख्या बृद्धिदर १.९१ प्रतिशत रहेको छ। सबैभन्दा वढी जनसङ्ख्या बृद्धिदर काठमाण्डौंमा रहेको छ भने रामेछाप, दोलखा, सिन्धुपाल्चोक, काभ्रेपलाञ्चोक, रसुवा, नुवाकोट र धादिङको जनसङ्ख्या बृद्धि दर नकारात्मक रहेको छ। यस प्रदेशको औसत जनघनत्व प्रति वर्ग कि.मि. २७२ जना रहेको छ जबकी काठमाडौंको जनघनत्व ४४१६ जना र सबभन्दा कम रसुवाका जम्मा २८ जना रहेको छ। नेपालको श्रम सर्वेक्षण २०१७/१८ का अनुसार आन्तरिक बसाइ सराइको अवस्था अध्ययन गर्दा नेपालको बसाइ सराइ दर ३६ प्रतिशत (पुरुष २३.४ र महिला ४७.४) र यस प्रदेशको ४०.३ प्रतिशत (पुरुष ५४.३ र महिला ४७.३) रहेको देखिन्छ।

स्थानीय तहमा जनघनत्वका दृष्टिले सबभन्दा बढि काठमाडौं महानगरपालिकाको १९७२६ जना प्रति वर्ग कि.मी र अन्तिम स्थानमा गोसाईकुण्ड गाउँपालिकाको जनघनत्व ७ जना रहेको छ। यस प्रदेशका ७२.५७ प्रतिशत जनसङ्ख्या सहरमा र २७.४३ प्रतिशत जनता गाउँमा बस्ने गरेका छन्। यस प्रदेशमा मुख्यत तामाङ २०.४२ प्रतिशत, पहाडी ब्राह्मण १८.२८, क्षेत्री १७.२८ र नेवार १६.९२ प्रतिशत जातजाती बस्ने गरेका छन्।

२.४ प्रशासनिक अवस्था

प्रशासनिक हिसावले यस प्रदेशलाई १३ जिल्ला र सो अन्तर्गत ३ महानगरपालिका, १ उपमहानगरपालिका, ४१ नगरपालिका र ७४ गाउँपालिका गरी ११९ स्थानीय तह र १,१२१ वडामा विभाजन गरिएको छ । रसुवामा एउटा पनि नगरपालिका छैन भने काठमाडौं र भक्तपुरमा एउटा पनि गाउँपालिका छैन । त्यस्तै गरी यस प्रदेशमा प्रतिनिधि सभा सदस्यको लागि ३३ निर्वाचन क्षेत्र र प्रदेश सभा सदस्य निर्वाचनको लागि ६६ निर्वाचन क्षेत्र कायम गरिएको छ ।

२.५ भू-उपयोग अवस्था

यस प्रदेशमा रहेको कुल भूभागमा खेती भएको जमिन २४.३४ प्रतिशत, वन ५३.७३ प्रतिशत, झाडी/बुट्यान ७.५७ प्रतिशत, निर्माण भएको जमिन ०.१३ प्रतिशत, खुला जमिन ११.४ प्रतिशत, हिमनदी/हिमताल ०.३६ प्रतिशत, ताल पोखरी ०.०२ प्रतिशत, बालुवा ०.५५ प्रतिशत र जल क्षेत्र १.९३ प्रतिशत रहेको छ । नेपालमा रहेका १२ वटा राष्ट्रिय निकुञ्ज मध्ये चितवन, लाङटाङ, शिवपुरी नागार्जुन र पर्सा (केही भाग) गरी ४ वटा तथा गौरीशंकर संरक्षित क्षेत्र यस प्रदेशमा पर्दछन् ।

२.६ आर्थिक क्षेत्रको स्थिति

क. कृषि

यस प्रदेशको कुल क्षेत्रफलको करिब १७ प्रतिशत अर्थात ३ लाख ४३ हजार २ सय ७४ हेक्टर जमिन खेतीयोग्य छ र सो मध्ये ७३ प्रतिशत क्षेत्रफलमा मात्र खेति गरिएको छ । यस प्रदेशको प्रमुख खाद्यान्न वालीमा मकै, धान, गहुँ, कोदो, फापर, जौ आदि रहेका छन् भने कृषिजन्य नगदे वालीतर्फ तोरी, सस्युँ, आलु, अलैची, अदुवा, बेसार, खुर्सानी, बेसार, विभिन्न जातका दलहन र कफि रहेका छन् भने पशुपंक्षी जन्य उत्पादनमा माछा, मासु, अण्डा, दुध, दुग्ध उत्पादन र मह रहेका छन् ।

कृषि क्षेत्रको विकासको लागि कृषि उत्पादनको स्थानीय अवस्थालाई विश्लेषण गरी नेपालका जिल्लाहरूमा १०५ जोन र १२२ सुपर जोनको रूपमा विकसित गरिएको छ । यी मध्ये यस प्रदेशमा १८ जोन र २ सुपर जोन रहेका छन् । सिन्धुलीलाई जुनार र काभ्रेपलाञ्चोकलाई आलुको सुपार जोन घोषणा गरिएको छ । यस प्रदेश अन्तर्गतका जिल्लाहरूमा हुने कृषि उत्पादन अनुसार विभिन्न जिल्लाहरू जुनार, आलु, किवी, वाखा, मकै/मकै बिउ, तरकारी, धान, मौरी र केरा जोनको रूपमा रहेका छन् ।

कृषि क्षेत्रको विकासको लागि अनुसन्धान गर्ने राष्ट्रिय कृषि अनुसन्धान परिषद् यसै प्रदेशमा रहेको छ । यस अन्तर्गत काठमाडौं उपत्यकामा विभिन्न महाशाखा रहेका छन् । चितवनमा राष्ट्रिय मकै वाली अनुसन्धान कार्यक्रम र राष्ट्रिय गाई अनुसन्धान कार्यक्रम रहेका छन् । दोलखामा पहाडी वाली अनुसन्धान कार्यक्रम रहेको छ । रसुवामा चरन तथा घाँसे वाली अनुसन्धान केन्द्र र रेन्वो ट्राउट मत्स्य अनुसन्धान केन्द्र रहेका छन् भने नुवाकोटमा मत्स्य अनुसन्धान केन्द्र रहेको छ ।

ख. उद्योग

आ.व.२०७४/०७५ सम्ममा उद्योग विभागमा दर्ता भएका ठूला, मझौला र साना उद्योगहरूको सख्या ७,५२९ मध्ये यस प्रदेशमा ५०९८ छ यस प्रदेशको उद्योग क्षेत्रको रोजगारीको हिस्सा ६०.८६ प्रतिशत रहेको छ ।

राष्ट्रिय आर्थिक गणनाको प्रतिवेदन अनुसार यस प्रदेशमा २ लाख ८२ हजार ९ सय २० व्यवसायिक प्रतिष्ठानहरू रहेका छन् जसमा कूल १२ लाख १८ हजार ४ सय ९७ नब्बे जना व्यक्तिहरू संलग्न छन् । संलग्न जनशक्तिमध्ये ७ लाख ३१ हजार ७ सय ८३ जना पुरुष (६०.०६ प्रतिशत) र ४ लाख ८६ हजार ७ सय १४ जना महिला (३९.९४ प्रतिशत) रहेका छन् ।

यस प्रदेशमा ४ वटा औद्योगिक क्षेत्रहरू सञ्चालनमा रहेका छन् । उक्त औद्योगिक क्षेत्रहरूको विवरण तालिका २.६.१ मा छ ।

तालिका २.६.१: सञ्चालनमा रहेका औद्योगिक क्षेत्रहरू

क्र.सं.	औद्योगिक क्षेत्र	क्षेत्रफल रोपनी	स्थापना भएको वर्ष	सञ्चालनमा रहेका उद्योगहरू	रोजगारी संख्या	अवस्थित जिल्ला
१	बालाजु	६७०	२०१७	९७	३५०६	काठमाण्डौ
२	पाटन	२९३	२०२०	१०२	१५८६	ललितपुर
३	हेटौंडा	२८२९	२०२०	६३	२४२५	मकवानपुर
४	भक्तपुर	७२	२०३६	३५	८२५	भक्तपुर

ग. खनिज पदार्थ

यस प्रदेशमा रहेका पहाडी जिल्लाहरूमा विभिन्न किसिमका खानी तथा खनिज जन्य पदार्थ प्रचुर मात्रामा रहेका छन् । सरकारले नीजि क्षेत्रलाई दिएको १२६ वटा खानी उत्खनन अनुमतिमध्ये यस प्रदेशमा ४५ वटा खानी रहेको देखिन्छ । यस प्रदेशमा आइरन, कपर, जिंक एण्ड लिड ओरेज, युरेनियम, कोवाल्ट, निकेल, सुन, चादी, टिन, चुनढुंगा, रोडा ढुंगा, डोलोमाइट, म्याग्नेसाइट, मेथाइल ग्यास, जेमस्टोन, बेरील एक्रोम्यारिन आदि पाइन्छन् ।

घ. पर्यटन

मन्दिरै मन्दिरको शहरको रूपमा परिचित काठमाण्डौं शहर यसै प्रदेशमा पर्दछ । यो प्रदेश आन्तरिक तथा बाह्य पर्यटकको दृष्टिले अग्रस्थानमा रहेको छ । विश्व सम्पदा सूचीमा सूचीकृत ६३० वटा सम्पदामध्ये १० वटा नेपालमा पर्दछन् भने ती मध्ये हनुमान ढोका दरवार क्षेत्र, पाटन दरवार क्षेत्र, भक्तपुर दरवार क्षेत्र, चाँगुनारायण मन्दिर, पशुपति मन्दिर क्षेत्र, स्वयम्भुनाथ स्तुपा, बौद्धनाथ महाचैत्य र चितवन राष्ट्रिय निकुञ्ज गरी जम्मा ८ वटा सम्पदा यसै प्रदेश पर्दछन् । काठमाडौं पछिको पर्यटकको लागि गन्तव्यस्थल चितवन हो । यस प्रदेशमा रहेका विभिन्न जिल्लाहरूमा गरी ३८२२० वेड क्षमता सहितका ११३२ होटल छन् भने १९७ भन्दा बढि होमस्टेहरूको व्यवस्था छ । यस प्रदेशमा मुख्य गरी २२ वटा पदयात्रा स्थलहरू रहेका छन् ।

ङ. श्रम तथा रोजगारी

नेपाल श्रमशक्ति सर्वेक्षण २०७४/७५ अनुसार नेपालमा बेरोजगारी दर ११.४ प्रतिशत, रोजगारी जनसङ्ख्याको अनुपात ३४.२ र श्रम शक्ति सहभागिता दर ३८.५ प्रतिशत रहेकोमा यस प्रदेशमा बेरोजगारी दर ७ प्रतिशत, रोजगारीमा जनसङ्ख्याको अनुपात ४३.८ प्रतिशत र श्रमशक्ति सहभागिता दर ४७ प्रतिशत रहेको छ । जसमध्येमा महिला ७.२ र पुरुष ६.९ प्रतिशत बेरोजगार छन् । रोजगार र जनसङ्ख्याको अनुपातका दृष्टिले महिला ३२.७ र पुरुष ५५.६ प्रतिशत छ । श्रम शक्ति सहभागिता दरको आधारमा महिला ३५.२ प्रतिशत र पुरुष ५९.७ प्रतिशत रहेको छ ।

नेपालमा औपचारिक क्षेत्रमा ३७.८ प्रतिशत रोजगारी रहेको देखिँदा यस प्रदेशमा ४८.२ प्रतिशत देखिन्छ । यसैगरी अनौपचारिक क्षेत्रमा रोजगारी नेपालभरमा ६२.२ प्रतिशत रहेका छन् भने बागमती प्रदेश मा ५१.८ प्रतिशत रहेको पाइन्छ । नेपालमा औपचारिक रोजगारी १५.४ प्रतिशत र अनौपचारिक रोजगारी ८४.६ प्रतिशत रहेको छ भने यस प्रदेशमा औपचारिक रोजगारी १९.४ प्रतिशत र अनौपचारिक रोजगारी ८०.६ प्रतिशत रहेको अवस्था देखिन्छ ।

मासिक आयको दृष्टिकोणले नेपालका तल्लो पाँच प्रतिशत जनताको मासिक आय रु. ६,०००।- र यस प्रदेशको रु. ७,०००।- देखिन्छ भने नेपालका माथिल्लो ५ प्रतिशत जनताको मासिक आय रु. ३५,०००।- र यस प्रदेशको रु. ३६,५००।-देखिन्छ । यसले गर्दा यो प्रदेश राष्ट्रिय औसतभन्दा माथि नै रहेको देखिन्छ ।

२.७ संस्थागत उपस्थिति

क. सहकारी

यस प्रदेशमा ११,५७७ वटा सहकारी संस्थाहरू सञ्चालनमा रहेका छन्। यो नेपालको सहकारी संस्था ३४,५१२ मध्येको ३३.५ प्रतिशत हुन आउँछ जुन हिस्सा अन्य प्रदेशको तुलनामा सबैभन्दा बढी हो। यस प्रदेशमा रहेका सहकारी संस्थाहरूमध्ये सबभन्दा बढी (३३.५ प्रतिशत) काठमाडौंमा र सबभन्दा कम (१.५ प्रतिशत) रसुवामा रहेका छन् ।

सहकारी संस्थाको कार्य प्रकृति अनुसार यस प्रदेशमा बचत तथा ऋणका ६०७१ वटा, बहुउद्देश्यीय १४९२ वटा, कृषिका २३०१ वटा, दुधका ७७३ वटा, उपभोक्ताका २६७ वटा, विद्युतका ५१ वटा, तरकारी तथा फलफुलका ८५ वटा, चियाका १५ वटा, कफिका ५४ वटा, जडिवुटीका ६६ वटा, मौरी पालनका २१ वटा, सञ्चारका ४२ वटा, स्वास्थ्यका ५१ वटा, जुनारका ४४ वटा र अन्य २४४ वटा सहकारी संस्थाहरू रहेका छन्। यी मध्ये २५५१ सहकारी संस्थाको अनुगमन गर्ने कार्य क्षेत्र प्रदेश सरकार अन्तर्गत रहेको छ ।

ख. बैंक तथा वित्तीय क्षेत्र

यस प्रदेशमा नेपाल राष्ट्र बैंकको केन्द्रिय कार्यालय रहनुको साथै विभिन्न वर्गका वाणिज्य बैंक, विकास बैंक तथा वित्तीय संस्था गरी जम्मा १३०० रहेका छन्। प्रदेशका २ वटा बाहेक बाँकी सबै स्थानीय तहमा बैंकिङ्ग सेवा पुगेको छ। एक शाखाले सरदर ४२५३ जनालाई बैंकिङ्ग सेवा उपलब्ध पुर्याएका छन्।

२.८ भौतिक पूर्वाधार

क. सडक तथा यातायात पूर्वाधार

यस प्रदेशका सबै जिल्लामा सडक यातायात पुगेको छ। यस प्रदेशमा २०७५/७६ सम्ममा १७,३८८.१९ कि.मी. सडक निर्माण भई सकेको छ जसमध्ये कालोपत्रे २६९३.८५ कि.मी., ग्राभेल सडक ३०७८.६६ कि.मी. र माटे सडक ११६०७.६७ कि.मी. छ । रूबी भ्याली र महाभारत गाउँपालिका व्यवस्थित सडक सञ्जालसँग जोडिन बाँकी रहेका स्थानीय तह हुन।

हवाई यातायाततर्फ काठमाडौं, चितवन र रामेछापमा रहेका तीन वटा एयरपोर्टहरू सञ्चालनमा रहेका छन् भने सञ्चालनमा नरहेकामा हवाई मैदान चितवनको मेघौली, दोलखाको जिरी र रसुवाको लाडटाड हुन्। यस प्रदेश भित्र रहेका हवाई मैदानबाट प्रदेश स्तरमा समेत आन्तरिक उडानको व्यवस्था मिलाई यातायातलाई सहज बनाउन सकिने सम्भावना रहेको छ ।

यस प्रदेशमा रहेका १३ जिल्लामा गरी १३१७ वटा झोलुङ्गे पुल रहेका छन् । यसमध्ये सबभन्दा बढि दोलखामा १६८ वटा र सबभन्दा कम भक्तपुरमा १३ वटा रहेका छन् ।

ख. जलविद्युत

नेपालको पहिलो जलविद्युत योजना फर्पिङ यसै प्रदेशमा अवस्थित छ । विद्युत विकास विभागका अनुसार २०७५ बैशाख १२ गतेसम्ममा कुल १००६.८ मेगावाट विद्युत उत्पादन मध्ये यस प्रदेशमा ३४०.३ मेगावाट छ । यस प्रदेशमा २३२६.६ मेगावाट विद्युत निर्माणधिन अवस्थामा रहेको छ । यस प्रदेशको ६२ प्रतिशत परिवारले बत्तीको लागि बिजुलीको प्रयोग छन् भने ३८ प्रतिशत घरधुरीमा बिजुली पुऱ्याउन बाँकी रहेको देखिन्छ ।

ग. सिँचाई

यस प्रदेशमा कृषि योग्य भूमीमा सिचाईका लागि ठूला ठूला नहरको व्यवस्था भई नसकेको अवस्था छ । यद्यपि चितवन जिल्लाको भरतपुरको केही भागमा सिचाईको लागि नहरको व्यवस्था छ । धेरै पहाडी भूभाग भएकोले यस प्रदेशमा रहेका खेतियोग्य जमिनमा स्थानीय स्तरमा रहेका पानीको स्रोतको व्यवस्थापनबाट कुलोको माध्यमबाट सिचाईको व्यवस्था मिलाइएको छ । नुवाकोटको सदरमुकाम क्षेत्र लगायतका अन्य केही क्षेत्रमा लिफ्ट सिचाईको लागि सम्भावना रहेको छ ।

घ. खानेपानी तथा सरसफाई

राष्ट्रियस्तरमा खानेपानी सेवा ८६.४५ प्रतिशत र सरसफाई सेवा ८१.९५ प्रतिशत घरधुरीमा पुगेको छ । प्रदेशमा ६७.२ प्रतिशत घरधुरीमा पाइप जडित वा धाराको पानी पुगेको छ । २०६८ को जनगणना अनुसार प्रदेशमा ८२.८ प्रतिशत घरधुरीमा शौचालयको सुविधा पुगेको देखिन्छ भने पछिल्लो प्रशासनिक अभिलेख (एडमीन डेटा) अनुसार ९५ प्रतिशतभन्दा बढी घरधुरीमा शौचालय सुविधा पुगिसकेको छ । सोको आधारमा यस प्रदेशलाई खुल्ला दिशामुक्त प्रदेश घोषणा गरिसकिएको छ । यस प्रदेशमा रहेका मुख्य राजमार्ग र सडक वस विसौनीमा सार्वजनिक सौचालयको व्यवस्था मिलाई सरसफाइमा विशेष ध्यान पुर्याउने काम भएको छ ।

ङ. आवासको स्थिति

यस प्रदेशमा रहेका जनसंख्यामध्ये ८,६०,६०३ परिवार आफ्नै स्वामित्वको घरमा बस्ने गरेका छन् भने ३,७८,४०४ परिवार भाडाको घरमा बस्छन् । यस प्रदेशको ५,८७,७१८ परिवार माटो जडित इटा ढुंगाको घरमा बस्ने गरेका छन् । त्यसैगरी सिमेन्ट जडित इटा ढुंगाको घरमा बस्ने संख्या २,९१,०१९ रहेको छ । ढलान पिलर सहितको घरमा बस्ने परिवार संख्या २,६९,०३२ रहेको छ ।

च. सञ्चार

२०६८ को राष्ट्रिय जनगणना अनुसार यस प्रदेशका ६२.४८ प्रतिशतले कम्प्युटर, ६९.९७ प्रतिशतले इण्टरनेट, ५२.९८ प्रतिशतले टेलिफोन र २७.५६ प्रतिशत जनताले मोबाइल फोनको प्रयोग गर्छन् । हालको अवस्थामा सबै स्थानीय तहसम्म मोबाइल फोन र इण्टरनेट सेवा पुगिसकेको छ ।

२.९ सामाजिक क्षेत्रको स्थिति

क. शिक्षा

प्रदेशको साक्षरता दर ७४.८५ प्रतिशत रहेको छ । पुरुष साक्षरता ८२.८२ र महिला साक्षरता ६७.०४ प्रतिशत रहेको छ । यस प्रदेश अन्तर्गतका ११ जिल्लालाई पूर्ण साक्षर जिल्ला घोषणा गरिएको छ भने काठमाडौं र काभ्रेपलाञ्चोकलाई पूर्ण साक्षर घोषणा गर्न बाँकी छ । २०७५ को तथ्याङ्क अनुसार यस प्रदेशमा सञ्चालन भएका ६९१९ विद्यालयमध्ये आधारभूत तह (१-५) मा ६८२१, आधारभूत (१-८) मा ६८५९ र माध्यमिक तह (९-१०) मा २८०८ र माध्यमिक तह (९-१२) मा २८७२ रहेका छन् । यसैगरी उच्च शिक्षातर्फ ४ वटा विश्वविद्यालय (त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाडौं विश्वविद्यालय, कृषि तथा वन विश्वविद्यालय र नेपाल खुला विश्वविद्यालय) अन्तर्गत ६१२ क्याम्पस र २ वटा स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठान रहेका छन् ।

ख. स्वास्थ्य

यस प्रदेशमा सरकारी स्तरमा २७ अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र ४३, स्वास्थ्य चौकी ६४४, सहरी स्वास्थ्य केन्द्र १३९, सामुदायिक स्वास्थ्य इकाइ ११४ साथै निजी, गैरसरकारी तथा सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा प्रदायकहरू गरी जम्मा २५४४ स्वास्थ्य संस्थाले स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध गराइरहेका छन्।

ग. धार्मिक स्थल तथा गढीहरू

यस प्रदेशमा रहेको मुख्य मुख्य धार्मिक स्थलहरूमा पशुपतिनाथ, स्वयम्भूनाथ, बौद्धनाथ, चाँगुनारायण, बुढानीलकण्ठ, दक्षिणकाली, गोसाइकुण्ड, कालिञ्चोक भगवती, भीमेश्वर मन्दिर, पलाञ्चोक भगवती, देवघाट, नमोबुद्ध आदि रहेका छन् । यस प्रदेशमा रहेको मुख्य मुख्य गढीहरूमा मकवानपुर गढी, सिन्धुलीगढी, रसुवागढी, चिसापानी गढी, हरिहरपुरगढी, उपरदाङगढी, टाउको कटियागढी र घले गढी रहेका छन् ।

घ. लैङ्गिक समता र महिला सशक्तिकरण

जनसंख्या तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण २०७३ (सन् २०१६) का अनुसार यस प्रदेशमा १५ देखि ४९ वर्षका ५८.६ प्रतिशत महिलाले मात्र आफ्नो कमाई आफै खर्च गर्न सक्ने निर्णय गर्ने अवस्था रहेको छ। पछिल्लो जनगणना अनुसार प्रदेशका गाउँपालिका, नगरपालिका, महानगर/उपमहानगरपालिकाहरूमा क्रमशः १२.३७, २१.८६ र २५.१८ प्रतिशत परिवारमा महिलाको जमिनमा स्वामित्व रहेको देखिन्छ भने प्रदेशमा २०.६२ प्रतिशत महिलाको जमिनमा स्वामित्व भएको देखिन्छ। त्यसैगरी, उक्त स्थानीय तहहरूमा क्रमशः ६.०७, १२.३० र १५.३४ प्रतिशत परिवारमा महिलाको घरमा स्वामित्व रहेको देखिन्छ भने प्रदेशमा १५.३४ प्रतिशत महिलाको घरमा स्वामित्व रहेको देखिन्छ।

परिच्छेद — तीन

दीर्घकालीन तथा समष्टिगत सोच, लक्ष्य, लगानी र श्रोतको बाँडफाँड

३.१ दीर्घकालीन सोच

१. पृष्ठभूमि

लामो समयको राजनीतिक संघर्षबाट नेपालमा संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्र स्थापना भएको छ। संविधानले निर्दिष्ट गरे बमोजिम लोकतान्त्रिक मूल्य र मान्यतामा आधारित समाजवाद उन्मुख राजनीतिक र आर्थिक प्रणालीको अवलम्बनबाट उच्चस्तरको जीवनयापन गर्ने मानिसहरू बसोबास गर्ने मूलुकको रूपमा नेपाललाई चिनाउन आवश्यक छ। यो गन्तव्यमा पुग्नको लागि योजनाबद्ध विकासको अवधारणालाई आत्मसात गर्न आवश्यक छ। यही आवश्यकतालाई महसुस गरी संघीय सरकारले नेपालको दीर्घकालीन सोच, २१०० तर्जुमा गरिसकेको छ। उक्त सोच हासिल हुनेगरी प्रादेशिक विशेषता र प्राथमिकता झल्किने गरी प्रदेश सरकारहरूले पनि प्रादेशिक विकासको दीर्घकालीन सोच तयार गरी आफ्ना सबै विकास प्रयासहरू सोही दिशातर्फ लक्षित हुनु पर्छ भन्ने कुरामा दुईमत देखिनदैन। यही तथ्यलाई मध्यनजर गरी यस प्रदेशले पनि लामो छलफल र कृयाबाट प्रदेशको विकासको दीर्घकालीन सोच तर्जुमा गरेको छ।

२. दीर्घकालीन सोचको आवश्यकता

प्रदेश सरकारले मूलतः तीनवटा कारणले दीर्घकालीन सोच तयार गरेको हो। पहिलो, संविधानले परिकल्पना गरेको गन्तव्यमा पुग्नको लागि अल्पकालीन सोच र योजनाहरूमात्र पर्याप्त हुँदैनन्। यसका लागि वार्षिक, आवधिक र अन्य योजनाहरूलाई एउटा स्पष्ट सोच र मार्गचित्रद्वारा निर्देशित गर्न आवश्यक हुन्छ। प्रदेशको दीर्घकालीन सोचले यही आवश्यकतालाई पूरा गर्दछ। दोश्रो, संघीय सरकारले नेपालको विकासको दीर्घकालीन सोच, २१०० सार्वजनिक गरिसकेको छ। उक्त सोचलाई प्रदेश सरकार र स्थानीय तहले पनि आत्मसात गर्न आवश्यक छ। तर, प्रादेशिक आवश्यकता, विशेषता र क्षमतालाई प्रदेश सरकारले विर्सन सक्दैन। प्रदेश सरकारको दीर्घकालीन सोचले यी कुराहरूलाई समायोजन गरी संघीय सरकारको दीर्घकालीन सोच प्राप्त गर्न प्रदेश सरकारलाई मार्गचित्र प्रस्तुत गर्दछ। तेश्रो, प्रदेश सरकारको अभ्यास नेपालको लागि नयाँ अभ्यास हो। यसलाई सफल बनाउनको लागि उपलब्ध साधन र स्रोतहरूको होसियारीपूर्वक व्यवस्थापन गर्न आवश्यक छ। यस कार्यमा प्रदेश सरकारको दीर्घकालीन सोचले मार्गनिर्देश प्रदान गर्दछ।

३. दीर्घकालीन सोच

“सुसंस्कृत र सुखी जनता; समाजवाद उन्मुख समृद्ध प्रदेश”

४. दीर्घकालीन सोचका प्रमुख क्षेत्रहरू

संघीय सरकारको दीर्घकालीन सोचका प्रमुख क्षेत्रहरूसमेतलाई आत्मसात गरी प्रदेश सरकारको दीर्घकालीन सोचले १२ वटा प्रमुख क्षेत्रहरू पहिचान गरेको छ। थप विवरण तालिका ३.१.१ मा प्रस्तुत छ।

तालिका ३.१.१: दीर्घकालीन सोचका प्रमुख क्षेत्रहरू

१. सुसंस्कार	२. सुख	३. समृद्धि
१.१ सम्पदाहरूको संरक्षण र	२.१ स्वस्थ र सन्तुलित	३.१ सर्वसुलभ आधुनिक

विकास	पर्यावरण	एवम् सघन अन्तर आबद्धता
१.२ भाषा, कला, संस्कृति र साहित्यको संरक्षण र विकास	२.२ सुशासन	३.२ मानव पूँजी तथा सम्भावनाको पूर्ण उपयोग
१.३ परिष्कृत तथा मर्यादित जीवन	२.३ सबल लोकतन्त्र	३.३ उच्च र दिगो उत्पादन तथा उत्पादकत्व
१.४ सुरक्षित, सभ्य र न्यायपूर्ण समाज	२.४ राष्ट्रिय एकता, सुरक्षा र सम्मान	३.४ उच्च र समतामूलक राष्ट्रिय आय

५. दीर्घकालीन सोचका प्रमुख परिमाणात्मक लक्ष्यहरू

संघीय सरकारको दीर्घकालीन सोचका प्रमुख परिमाणात्मक लक्ष्यहरूसँग तादात्म्यता कायम हुनेगरी प्रदेश सरकारको दीर्घकालीन सोचको प्रमुख परिमाणात्मक लक्ष्यहरू निर्धारण गरिएका छन्। थप विवरण तालिका ३.१.२ मा प्रस्तुत छ।

तालिका ३.१.२: दीर्घकालीन प्रमुख लक्ष्यहरू

क्र. सं.	प्रादेशिक लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक	एकाई	नेपाल*		बागमती प्रदेश	
			आ.व. २०७४/७५ को यथार्थ	आ.व. २१००/०१ को लक्ष्य	आ.व. २०७५/७६ को यथार्थ	आ.व. २१००/०१ को लक्ष्य
१	आर्थिक वृद्धिदर (औसत)	प्रतिशत	६.८	१०.५	७.५	१२
२	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा कृषि तथा वन क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत	२७.०	९	१३	७.५
३	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा उद्योग क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत	१५.२	३०	१२.६	२५
४	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा सेवा क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत	५७.८	६१	७४.४	६७.५
५	प्रतिव्यक्ति आय	अ. डलर	१,०४७	१२,१००		
६	निरपेक्ष गरिवीको रेखामुनि रहेको जनसङ्ख्या	प्रतिशत	१८.७	०	१५.३	०
७	बहुआयामिक गरिवीमा रहेको जनसङ्ख्या	प्रतिशत	२८.६	३	१२.२	२
८	आम्दानीमा माथिल्लो १० र तल्लो ४० प्रतिशत जनसङ्ख्याको अनुपात (Palma Ratio)	प्रतिशत	१.३	१.१	१.४५#	१.३
९	सम्पत्तिमा आधारित जिनी गुणक (Ginni Coefficient)	प्रतिशत	०.३१	०.२५	०.३५#	०.२९
१०	श्रम सहभागिता दर (१५ वर्ष माथि)	प्रतिशत	३८.५	७२		७५
११	बेरोजगारी दर	प्रतिशत	११.४	३	७.२#	२
१२	रोजगारीमा औपचारिक क्षेत्रको हिस्सा	प्रतिशत	३६.५	७०		६०
१३	जलविद्युत तथा नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन (जडित क्षमता)	मेगावाट	१,०७४	४०,०००		५०००

क्र. सं.	प्रादेशिक लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक	एकाई	नेपाल*		बागमती प्रदेश	
			आ.व. २०७४/७५ को यथार्थ	आ.व. २१००/०१ को लक्ष्य	आ.व. २०७५/७६ को यथार्थ	आ.व. २१००/०१ को लक्ष्य
१४	विद्युतमा पहुँच प्राप्त परिवार	प्रतिशत	९०.७	१००		१००
१५	प्रतिव्यक्ति विद्युत उपभोग	कि.वा./घण्टा	१९८	३,५००		४,५००
१६	३० मिनेटसम्मको दुरीमा यातायात पहुँच भएको परिवार	प्रतिशत	७८.९	९९		९९
१७	राष्ट्रिय र प्रादेशिक लोकमार्ग	कि.मी.	६,९७९	३३,०००		७०००
१८	द्रुत मार्ग (भूमिगत मार्गसमेत)	कि.मी.	०	२,०००		५००
१९	रेलमार्ग	कि.मी.	४२	२,२००		३००
२०	इन्टरनेट प्रयोगकर्ता (कुल जनसङ्ख्यामा)	प्रतिशत	५५.४	१००		१००
२१	अपेक्षित आय (जन्म हुँदाको)	वर्ष	६९.७	८०	६९.७	८५
२२	मातृ मृत्युदर (प्रतिलाख जीवित जन्ममा)	जना	२३९	२०		१०
२३	५ वर्षमुनिको बाल मृत्युदर (प्रतिहजार जीवित जन्ममा)	जना	३९	८		४
२४	५ वर्षमुनिका कम तौल भएका बालबालिका	जना	२७	२		१
२५	साक्षरता दर (१५ वर्ष माथि)	प्रतिशत	५८	९८		९९
२६	माध्यमिक तह (९-१२)मा खुद भर्नादर	प्रतिशत	४३.९	९५	५१	९८
२७	उच्च शिक्षामा कुल भर्नादर	प्रतिशत	९.५	४०		५०
२८	उच्च मध्यम स्तरको खानेपानी सुविधा पुगेको जनसङ्ख्या	प्रतिशत	२०	९५		९७
२९	आधारभूत सामाजिक सुरक्षामा आवद्ध जनसङ्ख्या	प्रतिशत	१७	१००		१००
३०	लैङ्गिक विकास सूचकाङ्क	सूचकाङ्क	०.९२५	१		१
३१	मानव विकास सूचकाङ्क	सूचकाङ्क	०.५७४	०.७६०		०.८२०

स्रोत: *पन्ध्रौँ योजनाको आधार पत्र, राष्ट्रिय योजना आयोग

नेपाल जनसाङ्ख्यिक तथा स्वास्थ्य सर्वेक्षण, २०१६ (वि.स. २०७३)

३.२ समष्टिगत सोच र लक्ष्य

१. पृष्ठभूमि

प्रदेशको अहिलेको वस्तुस्थितिले दर्शाउने सकारात्मक पक्षहरूलाई सुदृढ गर्दै समाजवाद उन्मुख समृद्धिको दिशातर्फ बढ्न समष्टिगत र क्षेत्रगत विकासका आधारहरूको निर्माण गर्नु नै यसको प्रमुख उद्देश्य हो। संविधानले निर्दिष्ट गरे अनुसार सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रको सहकार्यद्वारा फराकिलो, समावेशी र उच्च आर्थिक वृद्धि हासिल गर्दै नागरिकका आर्थिक र सामाजिक विकासका आकांक्षा पूरा गर्नेतर्फ नै यो आवधिक योजना केन्द्रित छ।

२. अवसर र चुनौती

ऐतिहासिक कालदेखि नै काठमाण्डौ उपत्यका नेपाल मण्डल र नेपाली सभ्यताकै विशिष्ट केन्द्र र नेपालको मुटुको रूपमा स्थापित छ। नेपालको सबैभन्दा प्राचीन वसोवासको क्षेत्रमध्ये रहेको काठमाण्डौ उपत्यका नेपालको राजधानी भएका कारणले गर्दा ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक र सांस्कृतिक र सापेक्षिक हिसाबले यो प्रदेश नेपालको सबैभन्दा समृद्ध, पूर्वाधारयुक्त, वैभवयुक्त र गतिशील प्रदेश हो। नेपालको सबैभन्दा बढी जनसङ्ख्या र शहरीकरण यहीं छ। मुलुकको एक तिहाइ गार्हस्थ्य उत्पादन, एक तिहाइ औद्योगिक प्रतिष्ठान र आधाभन्दा बढी राजस्व यहीं प्रदेशबाट उठने गरेको छ। यो प्रदेश मानव विकास सूचकाङ्क र प्रतिव्यक्ति आयमा पनि अग्रणी छ। सबैभन्दा धेरै विश्वसम्पदा र ऐतिहासिक धरोहर र नेपाल चिनाउने ऐतिहासिक वास्तुकला पनि यहीं छन। नेपालमा आउने प्रायः सबै विदेशी पर्यटकको पहिलो गन्तव्य पनि यही हो।

काठमाण्डौ उपत्यकामा केन्द्रित स्थलीय अर्थतन्त्रको फाइदा समग्र प्रदेशले नै लिन सक्ने प्रशस्त सम्भावना छ। पूँजी परिचालनको सापेक्षिक सहजता, वित्तीय र व्यवस्थापन सेवाहरूमा दक्षता, अधिकांश कृषि र औद्योगिक उत्पादनका लागि बजारको सहज पहुँच, ऊर्जाको सापेक्षिक उपलब्धता, शिक्षा, स्वास्थ्य र अन्य क्षेत्रमा विशिष्ट जनशक्ति र मानव संसाधनको उपस्थिति उपत्यकाको विकासका निमित्त मात्र नभएर उत्पादन र सेवाको स्थलीय विविधीकरणका निमित्त सहयोगी हुन सक्छन्। सूचना प्रविधिका नवीनतम् प्रवर्तन केन्द्रहरू र जनशक्तिको उत्पादन र प्राचुर्यताले गर्दा विद्युतीय सञ्चारमा समग्र प्रदेशले नै सहजै फड्को मार्न सक्ने अवस्थामा छ। केन्द्रिकृत भए पनि पर्यटनको आधारभूत पूर्वाधार उपत्यकामा विकसित छ। यसबाट पाठ सिक्दै गुणस्तरमा वृद्धि, पर्यटनमा विशिष्टीकरण र स्थलीय विविधीकरण गर्न प्रदेशकै निमित्त धेरै सहज हुन सक्छ। दुई विशाल छिमेकी भारत र चीन जोड्ने यो प्रदेशमा विद्यमान राजमार्ग (र भविष्यमा सम्भाव्य रेल र सुरुडमार्ग आदि) ले गर्दा द्विपक्षीय व्यापार र विशिष्टीकृत कृषि उत्पादन र निर्यात उद्योगका निमित्त बजार सम्बन्ध सहजै स्थापित हुन सक्छ।

काठमाण्डौ उपत्यका नेवार जातिको ऐतिहासिक वसोवास र सभ्यताको क्षेत्र हो भने समग्र महाभारत पर्वत र हिमाली भेग मुख्यतः तामाङहरूको ऐतिहासिक वसोवासको क्षेत्र हो। यसका साथै अन्य विविध पहिचान र संस्कृतिका जातजातिहरूको यो प्रदेशमा वसोवास छ। जातीय र सांस्कृतिक विविधताका साथै विभेदको व्यवस्थापन पनि यो प्रदेशको चुनौती हो।

विकासका दृष्टिले भने सबैभन्दा ठूलो चुनौती काठमाण्डौ उपत्यका र प्रदेशका अन्य भागबीचको विषम असमानता नै हो। प्रदेशभित्र प्रायः सबैजसो सामाजिक, आर्थिक, वित्तीय र भौतिक पूर्वाधारका आधारभूत सूचकहरूमा विषम असमानता छ। उत्तरी धादिङ, रसुवा, सिन्धुपाल्चोक, दक्षिण काभ्रे र दक्षिण ललितपुर यो विषमताका केही उदाहरण मात्र हुन्। यो प्रदेश खाद्यान्न सुरक्षा, उत्पादन र उत्पादकत्वका हिसाबले पनि जोखिममा छ। महाभारत र हिमाली क्षेत्रमा गरिवीको अनुपात सापेक्षिक बढी छ, शहरी गरिवी कम रहे पनि बढ्दो छ। आयात माथिको निर्भरता बढ्दो छ। उपत्यकामा जनसाङ्ख्यिक र शहरी चाप तीव्र छ र बढ्दो छ। यसले उपत्यकाको जनभार क्षमतामा नकारात्मक प्रभाव पारेको छ। केन्द्रिकृत स्थलीय अर्थतन्त्रले गर्दा उपत्यकामा वातावरणीय प्रभाव पार्ने उद्योगहरूको आकर्षण बढी छ। यसका कारण स्थलीय विविधीकरणको आवश्यकता टड्कारो छ। शासकीय प्रणाली र सार्वजनिक र निजीसहित समग्र उत्पादन र सेवा क्षेत्रमा आधुनिक प्रविधिको अपेक्षित प्रयोग हुन सकिरहेको छैन। फलस्वरूप सेवाप्रवाह सहज, सरल र सुगम हुन सकेको छैन।

काठमाण्डौ उपत्यका र चितवन जिल्ला लगायतका प्रायः सबै मुख्य शहरहरूमा जल, जमिन र वायु प्रदूषण बढ्दो र वातावरणीय हासको गति तीव्र छ। शहरी पूर्वाधार पूर्णतः अपर्याप्त हुनुका साथै गुणस्तर न्यून छन्। अन्तरशहरी द्रुत र सुगम यातायात प्रणालीको सर्वथा अभाव छ। भू-उपयोग र आवासको समस्याले विकराल रूप लिन लागि सकेको छ। ग्रामीण जनजीविका कृषिमा आश्रित छ। तर कृषि भूमिको दुरुपयोग बढ्दो छ। कृषिको आधुनिकीकरण र जीविकाको विविधीकरणका

चुनौतीहरू जटिल हुँदैछन्। बहुसङ्ख्यक साना किसान कृषि पेसाबाट पलायन हुँदैछन्। शहरी र ग्रामीण दुवै क्षेत्रमा आयमूलक रोजगारीको विस्तार अपेक्षित रूपमा हुन सकिरहेको छैन। फलस्वरूप अप्रिय भएपनि श्रम बसाइँसराइको आकर्षण बलियो छ। प्राकृतिक विपद्को उच्च जोखिम क्षेत्र भए पनि विपद्को संस्थागत तयारी र व्यवस्थापनमा निकै अपूर्णता छ। प्रदेशको विकास योजनाले यी सबै चुनौतीहरूको सम्बोधन गर्नुपर्ने अवस्था छ।

३. सोच

“संस्कृति, कृषि, उद्योग, पर्यटन, मानव पूँजी र पूर्वाधार; सुसंस्कृत, सुखी र समृद्ध प्रदेशको आधार”

४. लक्ष्य

सामाजिक न्यायसहितको उच्च, दिगो र फराकिलो आर्थिक वृद्धिदर हासिल गर्दै जीवनस्तरमा सुधार ल्याउने।

५. उद्देश्य

दक्ष मानव पूँजीको विकास गरी प्राकृतिक र सांस्कृतिक सम्पदाको दिगो उपयोगबाट रोजगारी सिर्जना, व्यवस्थित शहरीकरण र भौतिक पूर्वाधार विकास, पर्यावरणीय सन्तुलन, लैङ्गिक समता र सामाजिक समावेशीकरणको माध्यमबाट सामाजिक न्यायसहितको उच्च, दिगो र फराकिलो आर्थिक वृद्धिदर हासिल गर्ने सबल आधार तयार गर्नु।

६. परिमाणात्मक लक्ष्य

प्रदेशको प्रथम पञ्चवर्षीय योजनाका मुख्य आर्थिक, सामाजिक र भौतिक परिमाणात्मक लक्ष्यहरू तालिका ३.२.१, ३.२.२ र ३.२.३ मा छ।

तालिका ३.२.१ : सुसंस्कारका लक्ष्य, गन्तव्य र सूचकहरू

क्र.सं.	लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक	एकाई	नेपाल*		बागमती प्रदेश	
			०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य	०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य
१	सम्पदाहरूको संरक्षण र विकास					
१.१	संरक्षण र विकास गरिएका ऐतिहासिक, धार्मिक र पुरातात्विक सम्पदाहरू	सङ्ख्या				
२	भाषा, कला, संस्कृति र साहित्यको संरक्षण र विकास					
२.१	भाषाको संरक्षण र विकास					
२.१.१	आधारभूत तहको पाठ्यक्रम तयार भएका मातृभाषाहरू	सङ्ख्या				
२.१.२	मातृभाषामा आधारभूत शिक्षा लिइरहेका बालबालिकाको हिस्सा (अध्ययनरत कुल बालबालिकामा)	प्रतिशत				
२.१.३	नेपाली बाहेकका राष्ट्रभाषामा प्रकाशित पत्रपत्रिका	सङ्ख्या				
२.१.४	नेपाली बाहेकका राष्ट्रभाषामा प्रकाशित पुस्तकहरू	सङ्ख्या				
२.१.५	संरक्षित लिपिहरू	सङ्ख्या				

क्र.सं	लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक	एकाई	नेपाल*		बागमती प्रदेश	
			०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य	०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य
२.२	लोक कलाको संरक्षण र विकास					
२.२.२	संरक्षित परम्परागत लोकनृत्यहरू					
२.२.३	संरक्षित परम्परागत लोकगीतहरू					
२.२.४	संरक्षित लोकबाजाहरू					
२.२.५	जातीय शैली झल्कने भवनहरू					
२.२.६	नेपाली शैली झल्कने भवनहरू					
२.३	लोक संस्कृतिको संरक्षण र विकास					
२.३.१	संरक्षित परम्परागत जात्रा तथा मेलाहरू	सङ्ख्या				
२.३.२	जातीय र सांस्कृतिक संग्रहालयहरू	सङ्ख्या				५
२.४	लोक साहित्यको संरक्षण र विकास					
२.४.१	भाषा तथा साहित्य सङ्ग्रहालय					१
३	परिष्कृत तथा मर्यादित जीवन					
३.१	नागरिक स्वस्थता तथा सन्तुष्टि					
३.१.१	५ वर्ष मुनिको कम तौल भएका बालबालिका	प्रतिशत	२७	१३.३		७
३.१.२	मानव विकास सूचकाङ्क	सूचकाङ्क	०.५७४	०.६२४		०.६५०
३.१.३	नागरिक सन्तुष्टिको अनुभूति सूचकाङ्क	सूचकाङ्क	४.७	५.१		५.७
३.१.४	बहुआयामिक गरिवीमा रहेको जनसङ्ख्या	प्रतिशत	२९.६	१३	१२.२	९.०
३.२	सुरक्षित तथा सुविधा सम्पन्न आवास					
३.२.१	सुरक्षित (भवन आचार संहिताको मापदण्ड बमोजिम निर्मित) आवासमा बसोबास गर्ने जनसङ्ख्या	प्रतिशत	३७.८	६०		७०
३.२.२	फलस भएको शौचालय सुविधा भएको परिवार	प्रतिशत			६६.९९	८०
३.२.३	उच्च मध्यम स्तरको खानेपानी सुविधा पुगेको जनसङ्ख्या	प्रतिशत				
३.३	भौतिक तथा आधुनिक सम्पत्ति माथिको समतामूलक पहुँच वा स्वामित्व					
३.३.१	आफ्नै स्वामित्वको आवासमा बसोबास गर्ने परिवार	प्रतिशत	८५.३	८९	६७.८१	७०
३.३.२	सार्वजनिक धितोपत्रमा लगानी गर्ने जनसङ्ख्या	प्रतिशत	४.४	२०		२५
३.३.३	लैङ्गिक विकास सूचकाङ्क	प्रतिशत	०.९२५	०.९६३		०.९७६
४	सुरक्षित, सभ्य र न्यायपूर्ण समाज					
४.१	विभेद, हिंसा र अपराधमुक्त समाज					
४.१.१	जीवनकालमा शारिरिक वा मानसिक वा यौन हिंसा पीडित महिला	प्रतिशत	२६.३	१३	२५.९	१२.८
४.१.२	दर्ता भएका लैङ्गिक हिंसा लगायतका अपराधका घटना र अनुसन्धानको अनुपात	प्रतिशत	८६.७	१००	८७.२	१००
४.२	सामाजिक सांस्कृतिक विविधता					
४.२.१	मातृभाषामा पठन पाठन हुने विद्यालय	सङ्ख्या	२७०	३२४	५	८

क्र.सं	लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक	एकाई	नेपाल*		बागमती प्रदेश	
			०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य	०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य
४.३	सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षण					
४.३.१	राष्ट्रिय बजेटमा सामाजिक सुरक्षा खर्च	प्रतिशत	२६.३	१३		
४.३.२	प्रदेशको बजेटमा सामाजिक सुरक्षा खर्च(सरक्षित आवास, वृद्धाश्रम, बाल गृह, सुधार गृह आदिमा भएको खर्च)	प्रतिशत				
४.३.३	आधारभूत सामाजिक सुरक्षामा आवद्ध जनसङ्ख्या	प्रतिशत	१७	६०	४१.०	७५.०
४.३.४	स्वास्थ्य विमामा आवद्ध जनसङ्ख्या	प्रतिशत	३.५	६०	४.८	६१
४.३.५	उद्धार गर्नुपर्ने अवस्थामा रहेका सहयोगापेक्षी सडक मानव	सङ्ख्या			३५०	५०
४.३.६	उद्धार गरिएका सहयोगापेक्षी सडक मानव	सङ्ख्या				थप ३५०

स्रोत: * पन्ध्रौं योजनाको आधारपत्र, राष्ट्रिय योजना आयोग

तालिका ३.२.२ : सुखका लक्ष्य, गन्तव्य र सूचकहरू

क्र.सं	लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक	एकाई	नेपाल*		बागमती प्रदेश	
			०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य	०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य
१	स्वस्थ र सन्तुलित पर्यावरण					
१.१	<i>प्रदुषणमुक्त र स्वच्छ वातावरण</i>					
१.१.१	वायु प्रदुषणको औसत मात्रा (पीपीएम २.५)	माइक्रोग्राम प्रति घनमिटर	५३	४०		४५
१.२	<i>जैविक विविधता संरक्षण र पर्यावरणीय सन्तुलन</i>					
१.२.१	लोपोन्मुख, सङ्कटापन्न र जोखिममा परेका प्रजाति/वनस्पति संरक्षण	सङ्ख्या	५८९	५८९		
१.३	<i>जलवायु परिवर्तन अनुकूलनशीलता</i>					
१.३.१	अनुकूलन योजना तयार भई कार्यान्वयन भएका स्थानीय तह	सङ्ख्या	२१७	५५०		११९
१.४	<i>विपद उत्थानशील समाज र अर्थतन्त्र</i>					
१.४.१	विपद्का घटनाबाट प्रभावित जनसङ्ख्या	प्रति हजार	१९.५	५		४
१.४.२	विपद्का घटनाबाट मृत्यु हुने सङ्ख्या	प्रति लाख	१.७	१.०९		१
२	सुशासन					
२.१	<i>कानुनी शासन</i>					
२.१.१	कानुनी शासन सुचकाङ्क	सुचकाङ्क	०.५३	०.५८		०.६०
२.२	<i>सामाजिक सदाचार, पारदर्शिता र जवाफदेहिता</i>					
२.२.१	भ्रष्टाचार अनुभूति सूचकाङ्क	सुचकाङ्क	३१	४१		४५
२.२.२	'हेलो सरकार' मा प्राप्त उजुरी फछ्यौट	प्रतिशत	४८.१३	९८		
२.२.२	मुख्यमन्त्री कार्यालयमा प्राप्त उजुरी फछ्यौट	प्रतिशत				९०

क्र.सं	लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक	एकाई	नेपाल*		बागमती प्रदेश	
			०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य	०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य
३	सबल लोकतन्त्र					
३.१	<i>लैङ्गिक सहभागिता</i>					
३.१.१	प्रदेश सभामा महिला प्रतिनिधिको सहभागिता	प्रतिशत			३४	३८
३.१.२	प्रदेश कार्यपालिकामा महिलाको सहभागिता	प्रतिशत			०	३३
३.१.२	स्थानीय तहमा महिला प्रतिनिधिको सहभागिता	प्रतिशत			४४.५२	४६
३.१.४	स्थानीय तहको कार्यपालिकामा महिला प्रतिनिधिको सहभागिता	प्रतिशत			८.८४	१०
३.४.५	प्रादेशिक आयोगहरूमा महिलाको सहभागिता	प्रतिशत			२५	३३
३.४.६	प्रदेश मातहतका राष्ट्र सेवकहरूमा महिलाको हिस्सा	प्रतिशत				
३.२	<i>समावेशिता</i>					
३.२.१	प्रदेश सभामा दलित समुदायको सहभागिता	प्रतिशत			०.९१	२
३.२.२	प्रदेश सभामा आदिवासी जनजाति लगायतका समुदायको सहभागिता	प्रतिशत			५०.९१	५२
३.२.३	प्रदेश कार्यपालिकामा महिला, दलित, आदिवासी जनजाति लगायतका समुदायको सहभागिता	प्रतिशत				
३.२.४	स्थानीय तहमा दलित समुदायको सहभागिता	प्रतिशत				
३.२.५	स्थानीय तहको कार्यपालिकामा महिलाको सहभागिता	प्रतिशत				
३.२.६	स्थानीय तहका राष्ट्र सेवकहरूमा दलित, आदिवासी जनजाति लगायतका समुदायको हिस्सा	प्रतिशत				
४	राष्ट्रिय एकता, सुरक्षा र सम्मान					
४.१	<i>नेपालीत्वको उच्च भावना</i>					
४.१.१	राष्ट्रिय परिचयपत्र प्राप्त गरेका नेपाली नागरिक	प्रतिशत		१००		१००
४.२	<i>मानव तथा अन्य सुरक्षा</i>					
४.२.१	५ वर्षमुनिका बालबालिकाको जन्म दर्ता	प्रतिशत	५६	१००	६३.७	१००
४.२.२	आधारभूत खाद्य सुरक्षाको स्थितिमा रहेका परिवार	प्रतिशत	४८.२	८०	५५	८५
४.३	<i>अत्यावश्यक वस्तु र सेवामा आत्मनिर्भरता</i>					
४.३.१	कुल आयातमा अत्यावश्यक वस्तु (कृषि उपज, जीवजन्तु र खाद्य पदार्थ) को अंश	प्रतिशत	१४.७	५		७

तालिका ३.२.३ : समृद्धिका लक्ष्य, गन्तव्य र सूचकहरू

क्र.सं	लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक	एकाई	नेपाल*		बागमती प्रदेश	
			०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य	०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य
१	उच्च र समतामूलक राष्ट्रिय आय					

क्र.सं	लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक	एकाई	नेपाल*		बागमती प्रदेश	
			०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य	०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य
१.१	औद्योगिक राष्ट्रको स्तरको उच्च आय					
१.१.१	आर्थिक वृद्धिदर	प्रतिशत	६.८	१०.३	७.५	११.३
१.१.२	प्रतिव्यक्ति कुल राष्ट्रिय आय/ प्रतिव्यक्ति आय	अ. डलर	१,०४७	१,५९५	१९४६	३०८७
१.२	गरिवीको अन्त्य					
१.२.१	गरिवीको रेखामुनी रहेको जनसङ्ख्या (निरपेक्ष गरिवी)	प्रतिशत	१८.७	११	१५.३	१०
१.३	राष्ट्रिय आम्दानीमा तल्लो ४० प्रतिशत जनसङ्ख्याको हिस्सा					
१.३.१	आम्दानीमा माथिल्लो १० र तल्लो ४० प्रतिशत जनसङ्ख्याको अनुपात (Palma Ratio)	अनुपात	१.३	१.२५	१.४५	१.३
१.३.२	सम्पत्तिमा आधारित जिनी गुणक (Ginni Coefficient)	गुणक	०.३१	०.२५	०.३५	०.३
२	मानव पूँजी निर्माण र सम्भावनाको पूर्ण उपयोग					
२.१	स्वस्थ र लामो आयु भएका नेपाली					
२.१.१	अपेक्षित आय (जन्म हुँदाको)	वर्ष	६९.७	७२	६९.७	७३
२.१.२	मातृ मृत्युदर (प्रति लाख जीवित जन्ममा)	सङ्ख्या	२३९	९९		७०
२.१.३	५ वर्ष मुनिको बाल मृत्युदर (प्रति हजार जीवित जन्ममा)	सङ्ख्या	३९	२४	३६	१८
२.२	गुणस्तरीय, रोजगारमूलक तथा जीवनोपयोगी शिक्षा प्राप्त नागरिक					
२.२.१	साक्षरता दर (१५ वर्ष माथि)	प्रतिशत	५८	९०	६९	९८
२.२.१	युवा साक्षरता दर (१५-२४ वर्ष)	प्रतिशत	८५	९९	९३	९९
२.२.३	आधारभूत तह (१-८)मा खुद भर्नादर	प्रतिशत	९२.३	९९.५	९४.७	९९.६
२.२.४	माध्यमिक तह (९-१२)मा खुद भर्नादर	प्रतिशत	४३.९	६५	५१	८०
२.२.५	उच्च शिक्षामा कुल भर्नादर	प्रतिशत	९.५	२२	२२.७	२५
२.२.६	काम गर्ने उमेर समूहका प्राविधिक र व्यवसायिक क्षेत्रमा तालिमप्राप्त जनसङ्ख्या	प्रतिशत	२५	६०		६५
२.३	उत्पादनशील र मर्यादित रोजगारी					
२.३.१	श्रम सहभागिता दर (१५ वर्ष माथि)	प्रतिशत	३८.५	४८.५		६०
२.३.२	बेरोजगारी दर	प्रतिशत	११.४	६	७	५
२.३.३	रोजगारीमा औपचारिक क्षेत्रको हिस्सा	प्रतिशत	३६.५	५०	४७.१	६०
३	सर्वसुलभ आधुनिक पूर्वाधार एवम् सघन आबद्धता					
३.१	सर्वसुलभ, सुरक्षित र आधुनिक यातायात					
३.१.१	राष्ट्रिय र प्रादेशिक लोकमार्ग (स्तर्रोन्नति/कालोपत्रे)	कि.मी.	६,९७९	१५,०००		
३.१.२	द्रुत लोकमार्ग (भूमिगत मार्गसमेत)	कि.मी.	०	७६		१३०
३.१.३	रेलमार्ग	कि.मी.	४२	२००	०	५०
३.२	पूर्वाधार पहुँच तथा आबद्धता					

क्र.सं	लक्ष्य, गन्तव्य र सूचक	एकाई	नेपाल*		बागमती प्रदेश	
			०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य	०७५/७६ को स्थिति	२०८०/८१ को लक्ष्य
३.२.१	३० मिनेटसम्मको दुरीमा यातायात पहुँच भएको परिवार	प्रतिशत	७८.९	९५		९७
३.२.२	विद्युतमा पहुँच प्राप्त परिवार	प्रतिशत	९०.७	९९	९८.२	१००
३.२.३	आधारभूत खानेपानी सुविधा पुगेको जनसङ्ख्या	प्रतिशत	८८	९९	९४.१	१००
३.२.४	उच्च मध्यम स्तरको खानेपानी सुविधा पुगेको जनसङ्ख्या	प्रतिशत	२०	४०		५०
३.२.५	इन्टरनेट प्रयोगकर्ता (कुल जनसङ्ख्यामा)	प्रतिशत	५५.४	८०	५५.५	९०
४	उच्च र दिगो उत्पादन तथा उत्पादकत्व					
४.१	<i>अर्थतन्त्रमा क्षेत्रगत योगदान</i>					
४.१.१	प्राथमिक क्षेत्र (कृषि, वन र खानी)	प्रतिशत	२७.६	२३	१३	१०.३
४.१.२	द्वितीय क्षेत्र (उत्पादनमुलक उद्योग, विद्युत, ग्यास र पानी तथा निर्माण)	प्रतिशत	१४.४	१८.१	१२.६	१५.४
४.१.३	तृतीय क्षेत्र (सेवा)	प्रतिशत	५७.८	५८.९	७४.४	७४.३
४.२	<i>स्वच्छ ऊर्जाको उत्पादन तथा उपभोग</i>					
४.२.१	जलविद्युत उत्पादन (जडित क्षमता)	मेगावाट	१,०२०	५,०००	४८१.२	२,०००
४.२.२	प्रतिव्यक्ति विद्युत उपभोग	किलोवाट/घण्टा	१९८	७००		९००
४.२.३	ऊर्जा उपभोगमा नवीकरणीय ऊर्जाको हिस्सा	प्रतिशत	५	१२		१५
४.३	<i>व्यापार सन्तुलन</i>					
४.३.१	वस्तु तथा सेवाको निर्यात (कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा)	अनुपात	९	१५.७		
४.३.२	वस्तु तथा सेवाको आयात (कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा)	प्रतिशत	५०.८	५१		
४.४	<i>राष्ट्रिय तथा क्षेत्रगत उत्पादकत्व</i>					
४.४.१	श्रम उत्पादकत्व	रु. हजारमा	१८४.६	२७६	२०५.९	३०७.९
४.४.२	कृषि उत्पादकत्व	मेट्रिक टन प्रति हेक्टर	२.९७	४		५

स्रोत: * पन्ध्रौं योजनाको आधारपत्र, राष्ट्रिय योजना आयोग

७. विकासका मुख्य चालकहरू

प्रदेशको विकासका मुख्य चालक वा उत्प्रेरकहरू देहाय बमोजिम छन् :

- गुणस्तरीय ग्रामीण तथा शहरी पूर्वाधार (सडक, खानेपानी, बिजुली, विद्युतीय सञ्चार प्रविधि)
- कृषिको व्यवसायीकरण, कृषिलाई उद्यमका रूपमा विकास र जैविक कृषिको प्रवर्द्धन र विस्तार (विशिष्टीकृत कृषि),
- विशिष्टीकृत सेवा र मानव पूँजीको विकास,
- उद्योग (ठूला, मझौला, साना, घरेलु र लघु उद्यम)

- सम्पदामैत्री गुणस्तरीय पर्यटन।
- सामाजिक-सांस्कृतिक विकास

यी चालकहरूका सम्बन्धमा संक्षिप्त विवरण तल प्रस्तुत गरिएको छ भने बाँकी विवरण सम्बन्धित परिच्छेदहरूमा दिइएको छ।

क. गुणस्तरीय ग्रामीण तथा शहरी पूर्वाधार

यस उत्प्रेरकले बजार र सेवामा सहज पहुँच, पूर्वाधारयुक्त व्यवस्थित बस्ती विकास र शहरीकरणका माध्यमबाट अर्थतन्त्रलाई गतिशील तुल्याउने र कृषिबाट गैरकृषि क्षेत्रमा श्रमको माग बढाउँछ र उत्पादन र वितरण लागतमा कमी ल्याउँछ। गुणस्तरीय ग्रामीण पूर्वाधारको विकासले ग्रामीण अर्थतन्त्रको विकास, सेवा सुविधामा पहुँच, ग्रामीण पर्यटनको विकास, गाउँ र शहरको अन्तरसम्बन्धको विकासलाई बलियो बनाउँदछ। यसले गाउँबाट शहरतिर हुने बसाईसराइलाई समेत कमी ल्याउन मद्दत गर्दछ।

ख. विशिष्टीकृत कृषि

यस उत्प्रेरकले खासगरी कृषिको विशिष्टीकरण गर्दै उत्पादन र रोजगारीका उपायहरू ग्रामीण क्षेत्रमा विस्तार गर्नुका साथै साना किसान उन्मुख सहकारीका माध्यमबाट गरिबी न्यूनीकरण, ग्रामीण श्रमको आयमूलक उपयोग, खाद्यान्न सुरक्षा र आयात प्रतिस्थापनमा मद्दत गर्दछ। तुलनात्मक लाभ भएका कृषि तथा पशुपंक्षीजन्य उत्पादनतर्फ युवा वर्गलाई आकर्षित गर्ने र विचौलियाको अन्त्य गरी कृषकलाई बढी लाभ पुऱ्याउन मद्दत गर्दछ।

ग. विशिष्टीकृत सेवा र मानव पूँजीको विकास

यसले विद्यमान विशिष्टीकृत सेवा र मध्यम र उच्चस्तरको मानव संसाधनको तुलनात्मक लाभलाई विस्तारित गर्छ, उत्पादकत्व बढाउँछ, र प्रदेशलाई मात्र नभई राष्ट्रलाई नै चाहिने जनशक्ति आपूर्ति गर्छ। तसर्थ, विशिष्टीकृत सेवा र मानव पूँजी विकास गरी उपलब्ध सम्भावनाहरूको अधिकतम उपयोगमा ध्यान दिनु पर्ने देखिन्छ।

घ. उद्योग

यसले तुलनात्मक लाभ भएका कृषि र गैरकृषि उद्योग र त्यसका माध्यमबाट रोजगारी र निर्यात प्रवर्द्धन गर्छ। यसका लागि बजारको माग, स्थानीय स्रोतको उपलब्धता र तुलनात्मक लाभ भएका क्षेत्रहरूमा लघु उद्यम देखि सिमेन्ट र जलविद्युत लगायतका क्षेत्रमा ठूला उद्योगहरूको स्थापना र सञ्चालनका लागि नीतिगत सुधार र गुणस्तरीय पूर्वाधारहरूको विकासमा जोड दिनु पर्ने हुन्छ। उद्योगहरूको प्रवर्द्धनको लागि उत्पादन लागत कम गर्ने उपायसहितको एकीकृत प्रोत्साहनका कार्यहरूमा जोड दिनु पर्ने हुन्छ।

ङ. सम्पदामैत्री गुणस्तरीय पर्यटन

यस उत्प्रेरकले देशकै तुलनात्मक लाभ भएका प्राकृतिक र गैर प्राकृतिक सम्पदाहरूको संरक्षण र विकासद्वारा पर्यटकलाई आकर्षित गरी आय र रोजगारी विस्तार गर्छ। पर्यटकको रूपमा विदेश भ्रमणमा जाने अधिकांश नेपाली यही प्रदेशका रहेको देखिन्छ। बैदेशिक पर्यटन र आन्तरिक पर्यटनको बढ्दो प्रवृत्ति समेतलाई ध्यानमा राखी उपलब्ध प्राकृतिक सम्पदाहरूको संरक्षण र अधिकतम उपयोग तथा धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक र पुरातात्विक महत्वका सम्पदाहरूको संरक्षण र विकासद्वारा पर्यटन गन्तव्य, वस्तु र सेवाको विस्तार गरी गुणस्तरीय पर्यटन प्रवर्द्धनमा ध्यान दिनु पर्ने देखिन्छ।

च. सामाजिक-सांस्कृतिक विकास

यस उत्प्रेरकले प्रदेशको धरोहरको रूपमा रहेका ऐतिहासिक, धार्मिक, पुरातात्विक र सांस्कृतिक सम्पदाहरूको संरक्षण र विकास, सामाजिक न्यायमा आधारित विकास, समावेशिता, भाषा, कला, संस्कृति र साहित्यको संरक्षण र विकास

मार्फत् सामाजिक-सांस्कृतिक सहिष्णुता र बन्धुत्वको वातावरण निर्माण गरी प्रदेशलाई सुसंस्कृत प्रदेशको रूपमा स्थापित गर्न मद्दत गर्दछ।

यी उत्प्रेरकहरू एकअर्कासँग आबद्ध पनि छन् र विकासका क्रममा एक अर्कालाई आपूर्ति र मागको श्रृजनाद्वारा सबल पनि बनाउँछन्। शासन प्रणाली परिणाममुखी र सशक्त नभै योजनाका लक्ष्यहरू प्राप्त हुन सक्दैन। यसका लागि शासकीय सुधार, क्षमता विकास र वृत्ति विकासका उपायहरूको प्रभावकारी कार्यान्वयन हुन जरुरी छ। त्यसैगरी, विकासका सबै प्रयासहरू वातावरणमैत्री बनाउन सकिएन भने तत्काल र भविष्यमा आउन सक्ने चुनौतिहरूको सामना गर्न सकिदैन। विकासले विनाश निम्त्याउनु हुँदैन भन्ने कुरामा सजक हुन आवश्यक छ। संक्षेपमा, यी ६ उत्प्रेरकहरू सुशासन र वातावरणमैत्री विकासको आधारमा मात्र प्रभावकारी हुन सक्छन् भन्ने कुरालाई विर्सन सकिदैन।

८. प्रमुख रणनीतिहरू

आवधिक योजनाका ९ वटा प्रमुख रणनीतिहरू रहेका छन्। पहिलो चार रणनीतिहरूले आवधिक योजनाले कुन कुरामा बढी ध्यान केन्द्रित गरेको छ भन्ने कुरा दर्साउँछ भने पछिल्लो पाँच रणनीतिहरूले आवधिक योजनाको कार्यान्वयन कसरी हुनेछ भन्ने कुरा दर्साउँछ।

क. गुणस्तरीय पूर्वाधारमा जोड दिने

प्रदेशका १३ जिल्लामध्ये काठमाण्डौं उपत्यकाका तीन जिल्ला काठमाण्डौं, ललितपुर र भक्तपुर तथा भित्री मधेशका ३ जिल्ला चितवन, मकवानपुर र सिन्धुली गरी ६ जिल्लाको जनसङ्ख्या वृद्धिदर सराकारत्मक छ भने बाँकी ७ जिल्लाको जनसङ्ख्या वृद्धि दर नकारात्मक छ। त्यसैगरी, गाउँपालिकाहरूले प्रदेशको कुल भूभागको करिब ७० प्रतिशत भूभाग ओगटेको छ जहाँ प्रदेशको करिब २७ प्रतिशत जनसङ्ख्याको बसोबास छ। नगरपालिकाहरू (महानगरपालिका र उपमहानगरपालिका बाहेक)ले प्रदेशको कुल भूभागको करिब २६ प्रतिशत भूभाग ओगटेको छ जहाँ प्रदेशको करिब ४२ प्रतिशत जनसङ्ख्याको बसोबास छ। तीन महानगरपालिका र एक उपमहानगरपालिकाले प्रदेशको कुल भूभागको करिब ४ प्रतिशत भूभाग ओगटेको छ तर यहाँ प्रदेशको करिब ३१ प्रतिशत जनसङ्ख्याको बसोबास रहेको छ। जनसङ्ख्या नकारात्मक रहेका जिल्लाहरू र गाउँपालिकाहरूमा आवश्यक पूर्वाधारहरू नहुनु र भएका पूर्वाधारहरू पनि गुणस्तरहीन हुनुका कारणले बाह्य बसाईसराइले तिब्रता पाएको देखिन्छ। अर्कोतर्फ बढ्दो जनसङ्ख्याको चाप र अपर्याप्त पूर्वाधारका कारण शहरी क्षेत्र अस्तव्यस्त बन्दै गएको छ। यही तथ्यलाई मनन् गरी गुणस्तरीय ग्रामीण र शहरी पूर्वाधारको विकासमा जोड दिइनेछ।

ख. उत्पादन वृद्धि गर्ने

नेपालको अन्तरष्ट्रिय व्यापार घाटा बढ्दै गएको छ। कुल आयातित कृषि र गैरकृषि वस्तुको मुख्य उपभोग केन्द्र यही प्रदेश रहेको छ। कुखरा र दुधजन्य उत्पादन बाहेक अन्य कृषिजन्य उत्पादनको लागि यो प्रदेश अन्य प्रदेश र विदेशमा भर पर्नु परेको छ। यस प्रदेशमा चारवटा औद्योगिक क्षेत्रहरू रहेको भएता पनि अधिकांश औद्योगिक वस्तुको लागि आयातमा गर्नु परेको छ। यस तथ्यलाई मध्यनजर गरी आन्तरिक माग धान्न र तुलनात्मक लाभका क्षेत्रमा निर्यात बढाई बढ्दो व्यापार घाटा कम गर्नको लागि कृषि र औद्योगिक वस्तुको उत्पादन बढ्दि गर्नेतर्फ सरकारको लगानी केन्द्रित गरिनेछ।

ग. मानवीय क्षमताको विकास र सम्भावनाको उपयोग गर्ने

प्रदेशको कुल साक्षरता दर ७४.९ रहेको छ। साक्षर नागरिकहरूमध्ये ६३.३२ प्रतिशतको शैक्षिक उपलब्धि एसएलसी/एसईई भन्दा मुनी रहेको छ। गाउँपालिका, नगरपालिका, महानगर/ उपमहानगरपालिकाहरूको हकमा भने कुल साक्षर जनसङ्ख्याको क्रमशः ८२.१६ प्रतिशत, ६४.५० र ४८.०२ प्रतिशतको शैक्षिक उपलब्धि एसएलसी/एसईई भन्दा

मुनी रहेको छ। यस तथ्याङ्कले जनसङ्ख्याको ठूलो हिस्साको उत्पादन क्षमता कमजोर रहेको र बढी आम्दानी दिने काममा उनीहरूको पहुँच नपुगेको देखाउँछ। समृद्धिको लागि रोजगारीमा पहुँच पुऱ्याउन जनशक्तिको उत्पादन क्षमता बढाउनुको विकल्प रहेको देखिदैन। तसर्थ, बजारको माग बमोजिम प्राविधिक र व्यवसायिक शिक्षाको प्रवर्द्धन, सूचना प्रविधिको विकास, नव प्रवर्द्धन, सिपमुलक तालिमहरूको व्यवस्था र माध्यमिक तहसम्मको शिक्षामा पहुँच बृद्धि गरी मानवीय क्षमताको विकास गरी उपलब्ध सबै सम्भावनाहरूको पहिचान गरी अधिकतम उपयोग गरिनेछ।

घ. पर्यटन गन्तव्य, वस्तु र सेवाको विविधिकरण गर्ने

पर्यटनको प्रचुर सम्भावना भएतापनि यस प्रदेशको पर्यटन हिमाली क्षेत्रको ट्रेकिङ, मठमन्दिर र निकुञ्जमा आश्रित रहेको देखिन्छ। पर्यटकहरूको बसाई अवधि र खर्च बढ्न सकेको देखिदैन। बढी खर्च गर्ने पर्यटकहरूलाई आकर्षित गर्न सकिएको छैन। विदेशी पर्यटकले नेपालमा गरेको खर्चभन्दा नेपालीले पर्यटकको रूपमा विदेशमा गई गरेको खर्च बढी हुन पुगेको छ। यस तथ्यलाई मनन गरी उच्चस्थल (हाइअल्टिच्युड) खेल पर्यटन, साहसिक खेल पर्यटन, कृषिमा आधारित पर्यटन, सम्पदामा आधारित पर्यटन र उच्च मूल्यको पर्यटन प्रवर्द्धनलगायतका पर्यटकीय गन्तव्य, वस्तु र सेवाको विविधिकरण गरी पर्यटनको विकासको लागि लगानी केन्द्रित गरिनेछ।

ड. समन्वय र सहकार्य गर्ने

आवधिक योजनाले प्रक्षेपण गरेको कुल लगानीमध्ये ३२.३ प्रतिशत लगानीमात्र सार्वजनिक क्षेत्रबाट हुने र बाँकी लगानी निजी क्षेत्र, सहकारी र अन्य क्षेत्रबाट हुने अनुमान गरिएको छ। गैरराज्य पक्षबाट हुने लगानीमध्ये ६१.९ प्रतिशत लगानी निजी क्षेत्रबाट र ५.८ प्रतिशत लगानी सहकारी र अन्य क्षेत्रबाट हुने अपेक्षा गरिएको छ। लगानी प्रवर्द्धन गर्न प्रदेश सरकारले संघीय र स्थानीय सरकार, निजी क्षेत्र, सहकारी, सामुदायिक संस्था र विकास साझेदारहरूसँग समन्वय र सहकार्य गर्न आवश्यक छ। यसबाट लगानीको लागि अनुकूल वातावरण निर्माण भई लगानी प्रवर्द्धन हुन सक्दछ। अनुकूल वातावरण निर्माणको लागि प्रदेश सरकारले आवश्यकता अनुसार साझा संयन्त्रहरू बनाउने, त्यसमा नियमित सम्वाद गर्ने र उत्पन्न समस्याहरू हल गर्दै जाने कार्य गर्न सक्दछ। लगानीको लागि अनुकूल वातावरण बनेपछि निजी क्षेत्र बढी आकर्षित र प्रभावकारी हुने क्षेत्रमा निजी क्षेत्रलाई, सहकारी र अन्य क्षेत्र बढी आकर्षित र प्रभावकारी हुने क्षेत्रमा सहकारी क्षेत्रलाई र अन्य क्षेत्रलाई लगानीको पहिलो अवसर प्रदान गरिनेछ। निजी क्षेत्र, सहकारी र अन्य आकर्षित नभएका क्षेत्रहरूमा भने प्रदेश सरकारले संघीय सरकार, स्थानीय सरकार र विकास साझेदारहरूसँगको सहकार्यमा आफ्नो लगानी प्रवाह गर्नेछ।

च. रणनीतिक महत्वका परियोजना र कार्यक्रममा लगानी केन्द्रित गर्ने

लगानीलाई धेरै क्षेत्र र साना परियोजना र कार्यक्रमहरूमा विकेन्द्रित गरेर प्रदेश सरकारले आफ्नो महत्तालाई स्थापित गर्न सक्दैन। त्यसैले, प्रदेशको विकासमा महत्वपूर्ण र रणनीतिक योगदान गर्ने खालका परियोजना र कार्यक्रमहरूमा लगानी केन्द्रित गर्न आवश्यक छ। प्रदेशको सन्तुलित र दिगो विकासको जग बसाल्ने, सहज पहुँच स्थापित गर्ने, सामाजिक-आर्थिक क्रियाकलापहरूलाई गतिशिलता प्रदान गर्ने, उत्पादन र उत्पादकत्वमा बृद्धि गर्ने, रोजगारीका अवसरहरू सिर्जना गर्ने, बजार विस्तार गर्ने र स्थानीय जनतालाई आधारभूत सेवा र सुविधा प्रदान गर्ने खालका ठूला परियोजना र कार्यक्रमहरूमा प्रदेशको लगानी केन्द्रित गरिनेछ।

छ. शासन प्रणालीलाई नतिजामुखी बनाउने

शासन प्रणालीलाई नतिजामुखी नबनाएसम्म जन अपेक्षा पूरा गर्न सकिदैन। तसर्थ, शासन प्रणालीलाई नतिजामुखी बनाउनको लागि निम्न सुधारहरू गरिनेछः

i. नतिजामुखी प्रकृयाको अवलम्बन: सरकारले आफ्नो कार्यसम्पादन निश्चित विधिमा रहेर गर्नु पर्छ भन्ने कुरामा दुईमत

छैन तर सरकारको मुख्य काम नै जनता अपेक्षाको सम्बोधन गर्नु हो भन्ने कुरालाई विर्सनु पनि हुँदैन। तसर्थ, सरकारको विद्यमान नीति, ऐन र कार्यविधि आदिको समीक्षा गरी प्रकृयागत जटिलतामा सरलीकृत गरी नतिजामुखी बनाइनेछ।

- ii. नतिजामुखी पुरस्कार प्रणालीको विकास गर्ने: राष्ट्र सेवक कर्मचारीहरूलाई पुरस्कृत गर्ने वर्तमान पुरस्कार प्रणालीले सिर्जना गरेका नकारात्मक असरहरूलाई कम गर्न नतिजामुखी पुरस्कार प्रणालीलाई संस्थागत गरिनेछ। यस अन्तर्गत तोकिएको लक्ष्यभन्दा बढी नतिजा हासिल गर्ने सबै राष्ट्रसेवक कर्मचारीहरूलाई उनीहरूको योगदानको आधारमा वृत्ति विकास, पुरस्कृत र सम्मानित गरिनेछ।
- iii. क्षमता विकास: जनअपेक्षा अनुरूप कार्य गर्न सरकारको कार्यसम्पादन क्षमतामा सुधार ल्याउनु पर्छ भन्ने कुरालाई ध्यानमा राखी राजनीतिक नेतृत्व, जनप्रतिनिधि, राष्ट्र सेवक कर्मचारी र सरकारसँग सहकार्य गर्ने सरोकारवालाहरूको क्षमता विकास गरिनेछ। यसका अतिरिक्त सार्वजनिक निकायहरूको संस्थागत सुदृढीकरणमा पनि विशेष ध्यान दिइनेछ।
- iv. लागत प्रभावकारिता जोड दिने: सरकारले सम्पादन गर्ने कार्य र यसका संरचनाहरू लागत प्रभावकारी हुनुपर्छ भन्ने मान्यतालाई आत्मसात गरी सरकारद्वारा सञ्चालित परियोजना र कार्यक्रमहरूमा भएको लगानीसँग त्यसले दिएको प्रतिफलको तुलना गरिनेछ। नकारात्मक प्रतिफल दिने परियोजना र कार्यक्रमहरू गरिने लगानीलाई दुरुत्साहित गरी तुलनात्मक रूपले बढी प्रतिफल दिने परियोजना र कार्यक्रमहरूमा लगानी प्रवाहित गरिनेछ। त्यसैगरी, सरकारी संरचना र संयन्त्रहरूमा भएको लगानीसँग तिनीहरूले दिएको प्रतिफलको पनि तुलना गरिनेछ। नकारात्मक प्रतिफल दिने संरचना र संयन्त्रहरूलाई पुनःसंरचना गर्ने वा उपयुक्त नयाँ विकल्पमा जानेतर्फ ध्यान दिइनेछ।

ज. अनुसन्धान र विकासमा जोड दिने

संघीय शासन प्रणाली अन्तर्गत प्रदेश र स्थानीय सरकारको अभ्यास नेपालको लागि नयाँ भएकोले यसमा कमजोरीहरू हुन सक्ने सम्भावनाहरू रहन्छ। अर्कोतर्फ राज्यका नीति, कानून र योजनाहरू वास्तविक धरातलको आधारमा तय भए कि भएनन्, तिनीहरूको कार्यान्वयन कति प्रभावकारी भए वा भएनन्, अन्तर्राष्ट्रिय क्षेत्रमा भएका अनुसरणयोग्य अभ्यासहरू नेपालमा सतर्कतापूर्वक अनुसरण भए कि भएनन्, नेपालको आवश्यकता अनुसार शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, पर्यटन, वातावरण संरक्षण र विज्ञान तथा प्रविधिका अन्य क्षेत्रमा नव प्रवर्तनहरूलाई संस्थागत गरी उत्पादन र उत्पादकत्वको वृद्धि, रोजगारी सिर्जना र आय वृद्धिमा योगदान गरियो कि गरिएन भन्ने कुरामा त्यति जोड दिएको देखिदैन। यही तथ्यलाई मध्यनजर गरी प्राथमिकताका क्षेत्रहरू निर्धारण गरी अनुसन्धान र विकासमा जोड दिइनेछ। यसका लागि आवश्यक स्पष्ट कार्यविवरणसहितको संस्थागत संरचनाको निर्माण र क्षमता विकास गरिनेछ।

झ. नागरिकको दायित्व निर्वाहमा जोड दिने

विकासको गतिलाई तीव्रता दिन र त्यसको स्थायीत्वको लागि आम नागरिकले पनि आफ्नो दायित्व निर्वाह गर्न आवश्यक छ भन्ने कुरालाई आत्मसात गरी विकास प्रकृत्यामा सकारात्मक सोचका साथ सहभागी हुन, स्थानीय विवादलाई रचनात्मक रूपमा समाधान गर्न, बनेका संरचनाहरूको सुरक्षा गर्न, राज्यका निकायहरूमा नागरिकहरूको निगरानी र रचनात्मक भूमिकालाई बढाउन, सामाजिक आर्थिक हिसाबले पछाडि परेका वर्गलाई विकासको मूल प्रवाहमा ल्याउन र राज्यले दिने सेवा सुविधामा उनीहरूको पहुँचलाई बढाउन आम नागरिकहरूको रचनात्मक भूमिका बढाउन जोड दिइनेछ।

३.३ आर्थिक वृद्धिदर, लगानी र प्रतिव्यक्ति आय

१. आर्थिक वृद्धिदर

आधार वर्ष २०७५/७६मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा कृषि तथा वन क्षेत्रको मूल्य अभिवृद्धि दर ६.२ प्रतिशत र मत्स्यपालनको ७.६ प्रतिशत गरी समग्रमा कृषि क्षेत्रको मूल्य अभिवृद्धि दर ६.२ प्रतिशत रहेको देखिन्छ। कृषि क्षेत्रको उत्पादन बढेपनि कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा गैरकृषि क्षेत्रको योगदानमा हुने वृद्धिका कारण योजनाको अन्तिम वर्ष ०८०/८१ मा कृषि तथा वन क्षेत्रको मूल्य अभिवृद्धि ६.२ प्रतिशतबाट घटेर ५.६ प्रतिशतमा पुग्ने र योजना अवधिको औसत ५.२ प्रतिशत हुने अनुमान गरिएको छ। मत्स्यपालनको मूल्य अभिवृद्धि भने ७.६ प्रतिशतबाट बढेर योजनाको अन्तिम वर्षमा १३ प्रतिशत पुग्ने र योजनाको औसत मूल्य अभिवृद्धि १२.९ प्रतिशत हुने अनुमान गरिएको छ। कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा समग्र कृषि क्षेत्रको मूल्य अभिवृद्धि दर भने ६.२ प्रतिशतबाट घटेर योजनाको अन्तिम वर्ष ५.७ प्रतिशतमा पुग्ने र योजनाको औसत ५.३ प्रतिशत हुने अनुमान गरिएको छ।

आधार वर्ष २०७५/७६मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा उद्योग क्षेत्रको मूल्य अभिवृद्धि दर ८.० प्रतिशत र सेवा क्षेत्रको ६.९ प्रतिशत रहेको देखिन्छ। योजना अवधिमा उद्योग क्षेत्रको योगदान बढ्दै गई योजनाको अन्तिम वर्ष ०८०/८१ मा उद्योगको मूल्य अभिवृद्धि १४.९ प्रतिशतमा पुग्ने र योजना अवधिको औसत पनि १४.९ प्रतिशत नै हुने अनुमान गरिएको छ। आ.व. ०७७/७८ मा तामाकोशी लगायतका जलविद्युत परियोजनाहरूको उत्पादन शुरू हुने कारणले उद्योग क्षेत्रको योगदान अन्य आ.व.को तुलनामा बढी हुने अनुमान गरिएको छ। सेवा क्षेत्रको मूल्य अभिवृद्धि दर भने ६.९ प्रतिशतबाट बढेर योजनाको अन्तिम वर्षमा ११.० प्रतिशत पुग्ने र योजनाको औसत १०.४ प्रतिशत हुने अनुमान गरिएको छ।

आधार वर्ष २०७५/७६मा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको वृद्धि दर आधारभूत मूल्यमा ७ प्रतिशत र उत्पादकको मूल्यमा ७.५ प्रतिशत रहेको छ। योजना अवधिमा आधारभूत मूल्य र उत्पादकको मूल्य दुवैमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको वृद्धि दर बढ्दै जाने अनुमान गरिएको छ। आधारभूत मूल्यमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको वृद्धि दर योजनाको अन्तिम वर्षमा ११.२ प्रतिशत र औसत वृद्धि दर १०.६ प्रतिशत हुने अनुमान गरिएको छ। त्यसैगरी, उत्पादकको मूल्यमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको वृद्धिदर योजनाको अन्तिम वर्ष ११.७ प्रतिशत र औसत वृद्धिदर ११.३ प्रतिशत हुने अनुमान गरिएको छ। थप विवरण तालिका ३.३.१ र ३.३.२ मा छ।

तालिका ३.३.१: कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा क्षेत्रगत मूल्य अभिवृद्धि दर (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

क्र.सं.	क्षेत्रहरू	आधार वर्ष २०७५/७६	पहिलो योजना					योजनाको औसत
			२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	
१.	कृषि	६.२	४.६	४.९	५.६	५.७	५.७	५.३
१.१	कृषि तथा वन	६.२	४.६	४.९	५.५	५.६	५.६	५.२
१.२	मत्स्यपालन	७.६	१०.५	१३.०	१४.०	१४.५	१३.०	१२.९
२.	गैरकृषि							
२.१	उद्योग	८.०	१३.८	१९.०	१४.१	१३.१	१४.९	१४.९
२.१.२	खानी तथा भू-गर्भ	९.६	१३.०	१५.०	१६.५	१७.०	१७.०	१५.६
२.१.२	उद्योग	५.९	११.५	१३.०	१३.०	१२.०	१४.०	१२.७

क्र.सं.	क्षेत्रहरू	आधार वर्ष २०७५/७६	पहिलो योजना					योजनाको औषत
			२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	
२.१.३	विद्युत्, ग्यास तथा पानी	११.८	३५.०	७०.०	२२.०	२१.०	२२.०	३०.१
२.१.४	निर्माण	९.१	११.९	१२.८	१२.०	१०.५	१२.५	११.९
२.२	सेवा	६.९	८.८	१०.६	१०.९	१०.७	११.०	१०.४
२.२.१	थोक तथा खुद्रा व्यापार	७.३	९.५	१२.०	१३.०	११.९	११.५	११.५
२.२.२	होटेल तथा रेस्टुरेण्ट	९.९	१६.५	२२.०	१७.०	१६.०	१६.०	१७.४
२.२.३	यातायात, भण्डारण र सञ्चार	६.२	९.०	१०.५	११.५	११.०	१२.०	१०.७
२.२.४	वित्तीय मध्यस्थता	६.८	८.५	१०.०	१०.०	१०.०	१०.५	९.८
२.२.५	घर जग्गा, बहाल तथा व्यापारिक क्रियाकलाप	७.१	८.०	९.५	९.०	९.५	१०.०	९.२
२.२.६	सामान्य प्रशासन तथा रक्षा	३.७	९.२	७.५	९.०	८.५	९.०	८.६
२.२.७	शिक्षा	५.९	८.५	९.५	१०.५	१०.५	११.०	१०.०
२.२.८	स्वास्थ्य तथा सामाजिक कार्य	९.४	१०.०	१०.३	१०.५	११.३	१२.०	१०.८
२.२.९	अन्य सामुदायिक सामाजिक तथा व्यक्तिगत सेवाका क्रियाकलाप	४.१	४.५	४.५	४.६	५.२	५.५	४.८
	कुल मूल्य अभिवृद्धि (FISIM समेत)	६.९	८.९	११.०	१०.७	१०.५	११.०	१०.४
	वित्तीय मध्यस्थता सेवा अप्रत्यक्ष रूपमा	४.८	७.५	८.०	८.०	७.५	८.०	७.८
	कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (आधारभूत मूल्यमा)	७.०	९.०	११.३	१०.९	१०.७	११.२	१०.६
	खुद वस्तु तथा सेवा उत्पादन कर	९.१	१३.०	१३.०	१३.०	१३.०	१३.०	१३.०
	कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (उत्पादकको मूल्यमा)	७.५	१०.१	११.८	११.५	११.३	११.७	११.३

स्रोत:

* केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग

** आधारवर्षको तथ्याङ्कको आधारमा प्रक्षेपित

तालिका ३.३.२: आर्थिक वृद्धिदर र कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

विवरण	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	योजना अवधि
जनसंख्या	करोड	०.६५६१	०.६६६१	०.६७६१	०.६८९७	०.६९६१	०.७०६१	
जनसंख्या वृद्धिदर	प्रतिशत		१.५२३	१.५००	२.०२१	०.९१६	१.४३६	१.४३५
आर्थिक वृद्धिदर (आधारभूत मूल्यमा)	प्रतिशत	७.०	९.०	११.३	१०.९	१०.७	११.२	१०.६
आर्थिक वृद्धिदर (उत्पादकको मूल्यमा)	प्रतिशत	७.५	१०.१	११.८	११.५	११.३	११.७	११.३
कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (आधारभूत मूल्यमा)	रु. करोड	१०३९३०	११३३२०	१२६०८६	१३९८६४	१५४७८४	१७२१०२	
कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (उत्पादकको मूल्यमा)	रु. करोड	१४३२७६	१५७७८०	१७६३२६	१९६६३६	२१८९३६	२४४५९४	

विवरण	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	योजना अवधि
कुल लगानी	रु. करोड		५०९६२	७५८२१	७३५५१	८०५८९	९५९०२	३७६८२४
विनिमय दर		११३.५८						
GNI/GDP ratio		१.०१२						
प्रति व्यक्ति कुल गार्हस्थ्य उत्पादन	रु. हजार	२१८.४	२३६.९	२६०.८	२८५.१	३१४.५	३४६.४	
प्रति व्यक्ति कुल गार्हस्थ्य उत्पादन	अ. डलर	१९२३	२०८६	२२९६	२५१०	२७६९	३०५०	
प्रति व्यक्ति आय	अ. डलर	१९४६	२१११	२३२४	२५४०	२८०२	३०८७	

स्रोत:

* केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग

** आधारवर्षको तथ्याङ्कको आधारमा प्रक्षेपित

२. कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा क्षेत्रगत मूल्य अभिवृद्धिको योगदान

आधार वर्षमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा कृषि क्षेत्रको क्षेत्रगत मूल्य अभिवृद्धिमा १३ प्रतिशत र गैरकृषि क्षेत्रको ८७ प्रतिशत योगदान रहेको छ। कृषि क्षेत्रको योगदान कम हुँदै जाने र गैरकृषि क्षेत्रको क्षेत्रगत योगदान भने बृद्धि हुँदै जाने अनुमान गरिएको छ। कृषि क्षेत्रको योगदान योजनाको अन्तिम वर्षमा १०.३ प्रतिशत हुने अनुमान गरिएको छ भने गैरकृषि क्षेत्रको योगदान योजनाको अन्तिम वर्ष ८९.७ प्रतिशत हुने अनुमान गरिएको छ। गैरकृषि क्षेत्र अन्तर्गत उद्योग क्षेत्रको योगदानभन्दा सेवा क्षेत्रको योगदान बढी हुने अनुमान गरिएको छ। आधार वर्षमा उद्योग क्षेत्रको योगदान १२.६ प्रतिशत रहेको देखिन्छ भने सेवा क्षेत्रको योगदान ७४.४ प्रतिशत रहेको देखिन्छ। योजनाको अन्तिम वर्षमा उद्योग क्षेत्रको योगदान १५.४ प्रतिशत र सेवा क्षेत्रको योगदान ७४.३ प्रतिशत रहने अनुमान गरिएको छ। थप विवरण तालिका ३.३.३ मा छ।

तालिका ३.३.३: कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा क्षेत्रगत मूल्य अभिवृद्धिको योगदान (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

क्र.सं.	क्षेत्रहरू	पहिलो योजना					
		आधार वर्ष २०७५/७६	२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१
१.	कृषि	१३.०	१२.५	११.८	११.३	१०.८	१०.३
१.१	कृषि तथा वन	१३.०	१२.४	११.८	११.२	१०.७	१०.२
१.२	मत्स्यपालन	०.१	०.१	०.१	०.१	०.१	०.१
२.	गैरकृषि	८७.०	८७.५	८८.२	८८.७	८९.२	८९.७
२.१	उद्योग	१२.६	१३.२	१४.१	१४.६	१४.९	१५.४
२.१.२	खानी तथा भू-गर्भ	०.६	०.६	०.६	०.६	०.७	०.७
२.१.२	उत्पादनमूलक उद्योग	५.५	५.६	५.७	५.८	५.९	६.०

क्र.सं.	क्षेत्रहरू	पहिलो योजना					
		आधार वर्ष २०७५/७६	२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१
२.१.३	विद्युत्, ग्याँस तथा पानी	१.१	१.४	२.१	२.४	२.६	२.८
२.१.४	निर्माण	५.५	५.६	५.७	५.८	५.८	५.९
२.२	सेवा	७४.४	७४.३	७४.०	७४.२	७४.३	७४.३
२.२.१	थोक तथा खुद्रा व्यापार	२२.०	२२.१	२२.३	२२.८	२३.१	२३.२
२.२.२	होटेल तथा रेस्टुरेण्ट	२.२	२.४	२.६	२.८	२.९	३.०
२.२.३	यातायात, भण्डारण र सञ्चार	९.६	९.६	९.६	९.७	९.७	९.८
२.२.४	वित्तीय मध्यस्थता	११.०	१०.९	१०.८	१०.८	१०.७	१०.७
२.२.५	घर जग्गा, बहाल तथा व्यापारिक क्रियाकलाप	२०.१	१९.९	१९.६	१९.३	१९.२	१९.०
२.२.६	सामान्य प्रशासन तथा रक्षा	१.३	१.३	१.३	१.३	१.३	१.२
२.२.७	शिक्षा	४.१	४.१	४.०	४.०	४.०	४.०
२.२.८	स्वास्थ्य तथा सामाजिक कार्य	१.१	१.१	१.१	१.१	१.१	१.१
२.२.९	अन्य सामुदायिक सामाजिक तथा व्यक्तिगत सेवाका क्रियाकलाप	३.०	२.८	२.७	२.५	२.४	२.३
	जम्मा	१००	१००	१००	१००	१००	१००

स्रोत:

* केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग

** आधारवर्षको तथ्याङ्कको आधारमा प्रक्षेपित

३. सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात र कुल लगानी

यस योजना अवधिमा करिब रु. ३७ खर्ब ६८ अर्ब २४ करोड कुल पुँजी निर्माण हुने प्रक्षेपित अनुमान छ। आर्थिक वर्ष २०७५।७६ को स्थिर मूल्य अनुसार आ.व. ०७६।७७ मा रु. ५ खर्ब, ९ अर्ब र ६२ करोड, आ.व. ०७७।७८ मा रु. ७ खर्ब, ५८ अर्ब र २१ करोड, आ.व. ०७८।७९ मा रु. ७ खर्ब, ३५ अर्ब र ५१ करोड, आ.व. ०७९।८० मा रु. ८ खर्ब, ५ अर्ब र ८९ करोड तथा आ.व. ०८०।८१ मा रु. ९ खर्ब, ५९ अर्ब र २ करोड पुँजी निर्माण हुने प्रक्षेपित अनुमान छ। यी लगानीका अनुमानहरू सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपातमा आधारित छन्। योजना अवधिमा समग्र सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात ४.९५ रहने अनुमान छ। समग्रमा ४.९५ को सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपातको आधारमा योजना अवधिमा लक्षित औसत ११.३ प्रतिशतको आर्थिक वृद्धिदर हासिल हुने अनुमान गरिएको छ। थप विवरण तालिका ३.३.४ मा छ।

तालिका ३.३.४: सिमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात र कुल लगानी रकममा (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

क्र. सं	लगानीका क्षेत्रहरू	अनुमानित सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात	पहिलो योजनामा प्रक्षेपित लगानी (रु. करोडमा)					जम्मा
			२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	
१	कृषि		२२२६	२४८६	२९२८	३१४९	३३२४	१४११३
१.१	कृषि तथा वन	३.३	२२०५	२४५७	२८९३	३१०७	३२८१	१३९४४

क्र. सं	लगानीका क्षेत्रहरू	अनुमानित सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात	पहिलो योजनामा प्रक्षेपित लगानी (रु. करोडमा)					जम्मा
			२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	
१.२	मत्स्यपालन	२.५	२१	२९	३५	४१	४३	१६९
२	गैर कृषि		४८७३६	७३३३५	७०६२३	७७४४०	९२५७८	३६२७१२
२.१	उद्योग		१४००७	२८३७२	१९८४४	२१९५८	२८०९०	११२२७१
२.१.१	खानी तथा भू-गर्भ	६.१	४९३	६४३	८१४	९७७	११४३	४०७१
२.१.२	उद्योग	५.२	३६५४	४६०५	५२०४	५४२८	७०९३	२५९८३
२.१.३	विद्युत्, ग्यास तथा पानी	१७	७५२२	२०३११	१०८५२	१२६३७	१६०१९	६७३४१
२.१.४	निर्माण	३.२	२३३७	२८१३	२९७५	२९१५	३८३५	१४८७६
२.२	सेवा		३४७२९	४४९६३	५०७७९	५५४८२	६४४८८	२५०४४०
२.२.१	थोक तथा खुद्रा व्यापार	२.१	४९२२	६८०८	८२६१	८५४५	९२४०	३७७७६
२.२.२	होटेल तथा रेस्टुरेण्ट	६.१	२५१३	३९०४	३६८०	४०५३	४७०१	१८८५२
२.२.३	यातायात, भण्डारण र सञ्चार	११.५	१११७४	१४२१०	१७१९७	१८३४१	२२२०९	८३१३०
२.२.४	वित्तीय मध्यस्थता	३.१	३२४३	४१३९	४५५३	५००८	५७८४	२२७२७
२.२.५	घर जग्गा, वहाल तथा व्यापारिक क्रियाकलाप	५.१	९१८१	११७७४	१२२१४	१४०५३	१६१९८	६३४२०
२.२.६	सामान्य प्रशासन तथा रक्षा	४.५	६१९	५५१	७१०	७३१	८४०	३४५१
२.२.७	शिक्षा	४.१	१५९०	१९२८	२३३३	२५७८	२९८४	११४१२
२.२.८	स्वास्थ्य तथा सामाजिक कार्य	८.८	१०७०	१२१३	१३६४	१६२२	१९१७	७१८५
२.२.९	अन्य सामुदायिक सामाजिक तथा व्यक्तिगत सेवाका क्रियाकलाप	२.८	४१८	४३७	४६६	५५२	६१४	२४८६
	कुल लगानी	४.९५	५०९६२	७५८२१	७३५५१	८०५८९	९५९०२	३७६८२४

आवश्यक कुल लगानीमध्ये कृषि क्षेत्रमा ३.७ प्रतिशत र गैरकृषि क्षेत्रमा ९६.३ प्रतिशत लगानी आवश्यक हुने अनुमान गरिएको छ। गैरकृषि क्षेत्र अन्तर्गत हुने लगानीमध्ये उद्योगमा २९.८ प्रतिशत र सेवा क्षेत्रमा ६६.५ प्रतिशत लगानी हुने अनुमान गरिएको छ। थप विवरण तालिका ३.३.५ मा छ।

तालिका ३.३.५: सिमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात र कुल लगानी प्रतिशतमा (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

क्र. सं	लगानीका क्षेत्रहरू	अनुमानित सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात	पहिलो योजनामा प्रक्षेपित लगानी (प्रतिशतमा)					जम्मा
			२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	
१	कृषि		४.४	३.३	४	३.९	३.५	३.७
१.१	कृषि तथा वन	३.३	४.३	३.२	३.९	३.९	३.४	३.७
१.२	मत्स्यपालन	२.५	०	०	०	०.१	०	०

क्र. सं	लगानीका क्षेत्रहरू	अनुमानित सीमान्त पुँजी उत्पादन अनुपात	पहिलो योजनामा प्रक्षेपित लगानी (प्रतिशतमा)					जम्मा
			२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	
२	गैरकृषि		९५.६	९६.७	९६	९६.१	९६.५	९६.३
२.१	उद्योग		२७.५	३७.४	२७	२७.२	२९.३	२९.८
२.१.१	खानी तथा भू-गर्भ	६.१	१	०.८	१.१	१.२	१.२	१.१
२.१.२	उद्योग	५.२	७.२	६.१	७.१	६.७	७.४	६.९
२.१.३	विद्युत्, ग्यास तथा पानी	१७	१४.८	२६.८	१४.८	१५.७	१६.७	१७.९
२.१.४	निर्माण	३.२	४.६	३.७	४	३.६	४	३.९
२.२	सेवा		६८.१	५९.३	६९	६८.८	६७.२	६६.५
२.२.१	थोक तथा खुद्रा व्यापार	२.१	९.७	९	११.२	१०.६	९.६	१०
२.२.२	होटेल तथा रेस्टुरेण्ट	६.१	४.९	५.१	५	५	४.९	५
२.२.३	यातायात, भण्डारण र सञ्चार	११.५	२१.९	१८.७	२३.४	२२.८	२३.२	२२.१
२.२.४	वित्तीय मध्यस्थता	३.१	६.४	५.५	६.२	६.२	६	६
२.२.५	घर जग्गा, बहाल तथा व्यापारिक क्रियाकलाप	५.१	१८	१५.५	१६.६	१७.४	१६.९	१६.८
२.२.६	सामान्य प्रशासन तथा रक्षा	४.५	१.२	०.७	१	०.९	०.९	०.९
२.२.७	शिक्षा	४.१	३.१	२.५	३.२	३.२	३.१	३
२.२.८	स्वास्थ्य तथा सामाजिक कार्य	८.८	२.१	१.६	१.९	२	२	१.९
२.२.९	अन्य सामुदायिक सामाजिक तथा व्यक्तिगत सेवाका क्रियाकलाप	२.८	०.८	०.६	०.६	०.७	०.६	०.७
	कुल लगानी	४.९५	१००	१००	१००	१००	१००	१००

स्रोत: केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागको राष्ट्रिय लेखा तथ्याङ्कका आधारमा विश्लेषित

४. लगानी संरचना

कृषि क्षेत्रको लागि आवश्यक १ खर्ब, ४१ अर्ब र १३ करोड लगानीमध्ये ४६.७ प्रतिशत लगानी सार्वजनिक क्षेत्रबाट, ३६.४ प्रतिशत लगानी निजी क्षेत्रबाट र १६.९ प्रतिशत लगानी सहकारी तथा अन्य क्षेत्रबाट हुने अनुमान गरिएको छ। त्यसैगरी, गैरकृषि क्षेत्रको लागि आवश्यक ३६ खर्ब, २७ अर्ब १२ करोड लगानीमध्ये ३१.७ प्रतिशत लगानी सार्वजनिक क्षेत्र, ६२.९ प्रतिशत लगानी निजी क्षेत्रबाट र ५.४ प्रतिशत लगानी सहकारी र अन्य क्षेत्रबाट हुने अनुमान गरिएको छ। समग्रमा, योजनाको लागि आवश्यक ३७ खर्ब, ६८ अर्ब र २४ करोड लगानीमध्ये सार्वजनिक क्षेत्रबाट ३२.३ प्रतिशत, निजी क्षेत्रबाट ६१.९ प्रतिशत र सहकारी र अन्य क्षेत्रबाट ५.८ प्रतिशत लगानी हुने अनुमान गरिएको छ। थप विवरण तालिका ३.३.६ मा छ।

तालिका ३.३.६: सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रबाट हुने लगानी (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

(रु. करोडमा)

क्र सं	लगानीका क्षेत्रहरू	सार्वजनिक		निजी		सहकारी		जम्मा	
		रकम	प्रतिशत	रकम	प्रतिशत	रकम	प्रतिशत	रकम	प्रतिशत
१	कृषि	६५८६	४६.७	५१३८	३६.४	२३८९	१६.९	१४११३	१००.०
१.१	कृषि तथा वन	६५५४	४७.०	५०२०	३६.०	२३७०	१७.०	१३९४४	१००.०
१.२	मत्स्यपालन	३२	१९.०	११८	७०.०	१९	११.०	१६९	१००.०
२	गैरकृषि	११४९५१	३१.७	२२८११२	६२.९	१९६४९	५.४	३६२७१२	१००.०
२.१	उद्योग	४७६११	४२.४	६०२४४	५३.७	४४१७	३.९	११२२७१	१००.०
२.१.१	खानी तथा भू-गर्भ	१०५८	२६.०	२९९२	७३.५	२०	०.५	४०७१	१००.०
२.१.२	उद्योग	३११८	१२.०	२०७८७	८०.०	२०७९	८.०	२५९८३	१००.०
२.१.३	विद्युत्, ग्यास तथा पानी	३७०३७	५५.०	२८२८३	४२.०	२०२०	३.०	६७३४१	१००.०
२.१.४	निर्माण	६३९७	४३.०	८१८२	५५.०	२९८	२.०	१४८७६	१००.०
२.२	सेवा	६७३४०	२६.९	१६७८६८	६७.०	१५२३२	६.१	२५०४४०	१००.०
२.२.१	थोक तथा खुद्रा व्यापार	२२६७	६.०	३१७३२	८४.०	३७७८	१०.०	३७७७६	१००.०
२.२.२	होटेल तथा रेस्टुरेण्ट	१५०८	८.०	१६९६७	९०.०	३७७	२.०	१८८५२	१००.०
२.२.३	यातायात, भण्डारण र सञ्चार	४४८९०	५४.०	३५३३०	४२.५	२९१०	३.५	८३१३०	१००.०
२.२.४	वित्तीय मध्यस्थता	२०४५	९.०	१६८१८	७४.०	३८६४	१७.०	२२७२७	१००.०
२.२.५	घर जग्गा, वहाल तथा व्यापारिक क्रियाकलाप	३१७१	५.०	५७०७८	९०.०	३१७१	५.०	६३४२०	१००.०
२.२.६	सामान्य प्रशासन तथा रक्षा	३४५१	१००.०	०	०.०	०	०.०	३४५१	१००.०
२.२.७	शिक्षा	६२७७	५५.०	४६७९	४१.०	४५६	४.०	११४१२	१००.०
२.२.८	स्वास्थ्य तथा सामाजिक कार्य	३२३३	४५.०	३४४९	४८.०	५०३	७.०	७१८५	१००.०
२.२.९	अन्य सामुदायिक सामाजिक तथा व्यक्तिगत सेवाका क्रियाकलाप	४९७	२०.०	१८१५	७३.०	१७४	७.०	२४८६	१००.०
	कुल लगानी	१२१५३६	३२.३	२३३२५०	६१.९	२२०३८	५.८	३७६८२४	१००.०

स्रोत: केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागको राष्ट्रिय लेखा तथ्याङ्कका आधारमा विश्लेषित

५. सार्वजनिक खर्च व्यहोर्ने स्रोत

योजना अवधिको लागि आवश्यक सार्वजनिक खर्च व्यहोर्ने स्रोत देहाय बमोजिम हुने अनुमान गरिएको छः

तालिका १०: सार्वजनिक खर्च व्यहोर्ने स्रोतहरू (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

(रु. करोडमा)

क्र सं	खर्च व्यहोर्ने स्रोतहरू	आधार वर्ष ०७५/७६	खर्च व्यहोर्ने स्रोत (रु. करोडमा)					जम्मा
			०७६/७७	०७७/७८	०७८/७९	०७९/८०	०८०/८१	

क्र सं	खर्च व्यहोर्ने स्रोतहरु	आधार वर्ष ०७५/७६	खर्च व्यहोर्ने स्रोत (रु. करोडमा)					जम्मा
			०७६/७७	०७७/७८	०७८/७९	०७९/८०	०८०/८१	
१	राजस्व	१७९०	२२७९	२५०७	२७५८	३०३३	३३३७	१३९१४
२	संघीय सरकार अनुदान	१५१३	१८०६	१९८७	२१८५	२४०४	२६४४	११०२६
३	वैदेशिक सहयोग							
४	आन्तरिक ऋण							
	जम्मा (१+२+३+४)	३३०३	४०८५	४४९४	४९४३	५४३७	५९८१	२४९३९
	चालु खर्च	१११०	२४४६	२६९१	२९६०	३२५६	३५८१	१४९३३
	प्रदेश सरकारको पूँजीगत खर्च	९५५	१६३९	१८०३	१९८३	२१८२	२४००	१०००६
	स्थानीय तहबाट हुने खर्च	३४२९	३७७२	४१४९	४५६४	५०२०	५५२२	२६४५६
	प्रदेश सरकार र स्थानीय तहबाट हुने जम्मा खर्च		५४११	५९५२	६५४७	७२०२	७९२२	३६४६२
	संघीय सरकारबाट हुने खर्च		४५५५१	६९८६९	६७००४	७३३८७	८७९८०	३४०३६२
	कुल सार्वजनिक खर्च		५०९६२	७५८२१	७३५५१	८०५८९	९५९०२	३७६८२४

स्रोत:

* आर्थिक मामिला तथा योजना मन्त्रालय, बागमती प्रदेश

** आधारवर्षको तथ्याङ्कको आधारमा प्रक्षेपित

६. प्रतिव्यक्ति आय

आधार वर्ष ०७५/७६ मा प्रतिव्यक्ति कुल गार्हस्थ्य उत्पादन रु. २ लाख १८ हजार ४ सय रहेको देखिन्छ। सो वर्षको स्थिर मूल्य अनुसार प्रतिव्यक्ति कुल गार्हस्थ्य उत्पादन योजनाको पहिलो वर्षमा रु. २ लाख ३६ हजार ९ सय हुने र सो मूल्य क्रमशः बृद्धि हुँदै गई योजनाको अन्तिम वर्षमा रु. ३ लाख ४६ हजार २४ सय पुग्ने अनुमान गरिएको छ। अमेरिकी डलरमा प्रतिव्यक्ति कुल गार्हस्थ्य उत्पादन आधार वर्षमा १ हजार ९ सय २३ अमेरिकी डलर रहेको छ। योजनाको पहिलो वर्षमा उक्त आय २ हजार ८६ अमेरिकी डलर हुने र सो बृद्धि हुँदै योजनाको अन्तिम वर्षमा ३ हजार ५० अमेरिकी डलर पुग्ने अनुमान गरिएको छ। आधार वर्षमा प्रतिव्यक्ति आय १ हजार ९ सय ४६ अमेरिकी डलर भएकोमा उक्त आय योजनाको पहिलो वर्ष २ हजार १ सय ११ अमेरिकी डलर पुग्ने र सो बृद्धि हुँदै गई योजनाको अन्तिम वर्ष ३ हजार ८७ अमेरिकी डलर पुग्ने अनुमान गरिएको छ। थप विवरण तालिका ३.३.७ मा छ।

तालिका ३.३.७: प्रतिव्यक्ति आय (२०७५/७६ को स्थिर मूल्यमा)

आम्दानी	एकाई	आधार वर्ष ०७५/७६*	योजना अवधि**				
			०७६/७७	०७७/७८	०७८/७९	०७९/८०	०८०/८१
प्रति व्यक्ति कुल गार्हस्थ्य उत्पादन	रु. हजार	२१८.४	२३६.९	२६०.८	२८५.१	३१४.५	३४६.४
प्रति व्यक्ति कुल गार्हस्थ्य	अ. डलर	१,९२३	२,०८६	२,२९६	२,५१०	२,७६९	३,०५०

आम्दानी	एकाई	आधार वर्ष ०७५/७६*	योजना अवधि**				
			०७६/७७	०७७/७८	०७८/७९	०७९/८०	०८०/८१
उत्पादन							
प्रति व्यक्ति आय	अ. डलर	१,९४६	२,१११	२,३२४	२,५४०	२,८०२	३,०८७

स्रोत:

* केन्द्रीय तथ्याङ्क विभाग

** आधारवर्षको तथ्याङ्कको आधारमा प्रक्षेपित

परिच्छेद—चार प्रमुख आर्थिक क्षेत्र

४.१ आर्थिक नीतिहरू

१. पृष्ठभूमि

प्रदेशको समष्टिगत आर्थिक अवस्थाको विश्लेषण तथा आर्थिक नीतिको तर्जुमा, आर्थिक साधनको बाँडफाँड, प्रदेशको आर्थिक स्थायित्व, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र तथा लक्ष्य निर्धारण, सन्तुलित विकासका लागि क्षेत्रगत नीति र रणनीति तर्जुमा, गरिबी निवारणको रणनीति तर्जुमा, प्रदेश राजस्व र खर्चसम्बन्धी नीति, कानून तर्जुमा, संघीय कानून बमोजिम विकास सहायता प्राप्ति, उपयोग, लेखाङ्कन र प्रतिवेदन, सहवित्तीयकरण आदि प्रदेशको अधिकार क्षेत्रभित्र पर्दछन्। आफ्नो अधिकार क्षेत्रभित्रको विषयको सेवा सुविधाको प्रवाह, केन्द्र र स्थानीय तहको समन्वय र सम्बन्ध, माग र आपूर्तिको अध्ययन र सन्तुलित विकासको आर्थिक आधार निर्माणसहित समग्र आर्थिक व्यवस्थापन प्रदेश सरकारको दायित्व हो।

२. वस्तुगत स्थिति

कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा यस प्रदेशको योगदान आधारभूत मूल्यमा ३५.५५ प्रतिशत छ। संघीय राजस्व सङ्कलनमा भन्सारसहित ५० प्रतिशत र भन्सार बाहेक ८० प्रतिशत यसै प्रदेशबाट सङ्कलन हुन्छ। प्रदेशको मानव विकास सूचकाङ्क ०.५५८ र प्रतिव्यक्ति आय १,९४६ अमेरिकी डलर छ। त्यसैगरी, सार्वजनिक खर्च हुने तथा जलऊर्जा उत्पादन, उद्योग तथा रोजगारी, वैदेशिक लगानी, बैंक तथा वित्तीय संस्था, पूँजी बजार र पर्यटक आगमन आदिका दृष्टिले यस प्रदेशको अवस्था अब्बल नै छ। उपयुक्त नीति र लगानीको वातावरण बनाउन सक्ने हो भने यस प्रदेशको सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक र प्राकृतिक स्रोत र पूर्वाधारको उपयोग गरी समग्र मुलुककै समृद्धिमा महत्वपूर्ण योगदान गर्न सक्ने देखिन्छ।

३. समस्या र चुनौती

विद्यमान पूर्वाधार, श्रोत, साधन र सेवाको उपयुक्त परिचालनबाट समग्र प्रदेशकै दिगो आर्थिक विकासको आधार निर्माण गर्नुपर्नेमा हालसम्मको विकास प्रयासबाट यो अपेक्षा पूरा हुन नसक्नु नै साझा एवम् मुख्य समस्या हो। साधारणतः आर्थिक असमानताको न्यूनीकरण गर्नु, वित्तीय जोखिम नियन्त्रण गर्नु, पूँजी बजार विस्तार गर्नु, विमाको दायरा फराकिलो पार्नु तथा विकासको भौतिक उपस्थितिलाई फराकिलो पार्नु, वैदेशिक लगानीका निम्ति उपयुक्त वातावरण निर्माण गर्नु, बजार मूल्य नियन्त्रण गर्नु, अनुगमन कार्यलाई प्रभावकारी बनाउनु, राज्यका सेवा सुविधा वास्तविक उपभोक्तासम्म पुऱ्याउनु, कृषि क्षेत्रको विकास, विविधीकरण, आधुनिकीकरण एवम् व्यवसायीकरण गर्नु, आयात प्रतिस्थापन र निर्यात प्रवर्द्धन गर्नु, सार्वजनिक निर्माण, उद्योग, पर्यटन, जलस्रोतजस्ता क्षेत्रमा रहेको प्रचुर सम्भावनालाई उजागर गरी देशभित्रै उत्पादनशील रोजगारी सिर्जना गर्नु, वित्तीय सेवा प्रवाहलाई प्रतिस्पर्धी र सहज पहुँच स्थापित गर्नु र सबै प्रकारका प्रकोपको जोखिम न्यूनीकरण गर्नु प्रदेशको चुनौती रहेको छ।

विशेष गरेर संवैधानिक व्यवस्था अनुसार प्रदेशलाई राजस्वका स्रोतहरू कम तर विकास खर्चको आवश्यकता बढी भएकाले विकास खर्च धान्ने गरी राजस्वको दायरा विस्तार गरी राजस्व परिचालन गर्नुपर्ने अवस्था छ। कम प्रयोगमा आएको आन्तरिक राजस्वको स्रोत कृषि आय लगायतमा कर लगाउनु र दायरा बढाउनु, बजेट कार्यान्वयन गर्ने निकायको संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गर्नु, संघीय संरचना अनुसार विकास साझेदारहरूको विकास सहायता परिचालन गर्नु, वित्तीय संस्थाहरूबाट हुने

लगानीलाई कृषि, ऊर्जा र पूर्वाधारमा बढी केन्द्रित गर्नु, सार्वजनिक निजी साझेदारीको अवधारणालाई प्रवर्द्धन गर्दै सहकारी क्षेत्र आकर्षित हुने अत्यावश्यक वस्तुहरूको आपूर्तिमा ती संस्थाहरूको व्यवसायिक भूमिका कुशल बनाउनु र निजी क्षेत्रको लगानी आकर्षण गर्नुपर्ने चुनौती रहेका छन्।

४. सम्भावना र अवसर

संघीय राजधानी यही प्रदेशमा भएकाले तुलनात्मक रूपमा सार्वजनिक लगानी, प्रादेशिक गार्हस्थ्य उत्पादन, प्रतिव्यक्ति आय बढी र वित्तीय संस्थाहरूको बाक्लो उपस्थितिका कारण यस प्रदेशको निजी, सामुदायिक र सहकारी लगानी क्षमता उच्च रहेको छ। उच्च श्रम उत्पादकत्व, बढी औद्योगिक क्षेत्रहरूको अवस्थिति; साना, मझौला उद्योग विकासका विशेष सम्भावना, प्राविधिक जनशक्ति विकासका प्रतिष्ठित प्रतिष्ठानहरू, विशिष्ट पर्यटन गन्तव्यहरू, बढ्दो शहरीकरण र ठूला बजारहरू, जैविक खेती र यसको राम्रो बजार, विस्तारित वित्तीय पहुँच; उत्पादन, वितरण र सेवा प्रवाहमा सहकारीको विशेष भूमिकाका कारण यो प्रदेश तुलनात्मक हिसावले अरु प्रदेशभन्दा राम्रो छ।

पर्यटन विस्तारसँगै पर्यटन शुल्कको बढोत्तरी हुन सक्ने, तामाकोसी र बुढीगण्डकीजस्ता ठूला जलविद्युत परियोजना विकास भई विद्युत रोयल्टी बढ्न सक्ने, बढ्दो सवारी साधनसँगै सवारी कर बढी उठ्ने, सार्वजनिक खर्चलाई पारदर्शी र अनुमानयोग्य बनाउन सूचना तथा सञ्चार प्रविधिको अधिकतम उपयोग गर्ने अवसर भएको र विद्यमान भौतिक र वित्तीय पूर्वाधार आदिका कारणले पनि निजी क्षेत्रको भूमिका विस्तारित हुनसक्ने लगायतका पर्याप्त अवसरहरू देखिएका छन्।

५. दीर्घकालीन सोच

उच्च, फराकिलो र दिगो आर्थिक वृद्धिसहितको समृद्ध प्रदेश।

६. लक्ष्य

प्राकृतिक, मानवीय एवम् आर्थिक श्रोत र साधनहरूको उच्चतम परिचालन गरी उच्च, फराकिलो र दिगो आर्थिक वृद्धिदर हासिल गर्ने।

७. उद्देश्य

- सार्वजनिक खर्च प्रणालीको पालना र समायानुकूल सुधार गर्नु,
- निजी र सहकारी क्षेत्रको लगानी प्रवर्द्धन गर्दै विकास प्रक्रियामा सहभागी गराउनु र
- राजस्वको परिचालनलाई प्रभावकारी बनाउनु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
४.१.१ सार्वजनिक खर्च प्रणालीसम्बन्धी नीतिगत, कानुनी र संरचनागत सुधार गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • सार्वजनिक खर्चसम्बन्धी आवश्यक नीति निर्माण गरिनेछ। • सार्वजनिक खर्चको स्रोत र संस्थागत दक्षतामा सुधार गरिनेछ। • आवधिक योजना, क्षेत्रगत योजना र वार्षिक बजेटबीचमा सामञ्जस्यता कायम गरिनेछ। • गैरबजेटरी खर्चलाई निरूत्साहित गरिनेछ। • मन्त्रालयगत बजेट सूचना प्रणालीलाई संघीय सरकारसँग सहकार्य गरी एकल कोष खातासँग आवद्ध गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
<p>४.१.२ सार्वजनिक खर्चलाई बढी उत्पादनशील क्षेत्रमा केन्द्रित गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • बजेट निर्माण, लेखाङ्कन एवम् सार्वजनिक खर्च व्यवस्थापन प्रणालीलाई एकीकृत सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापन सूचना प्रणालीमा आवद्ध गरिनेछ। • सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापनमा संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ। • मध्यमकालीन खर्च संरचना, सम्भाव्यता अध्ययन तथा विस्तृत परियोजना प्रतिवेदनका आधारमा परियोजनाहरूको छनौट गरिनेछ। • परियोजना बैंक तयार गरी स्थानीय आवश्यकता, जनसहभागिता र मापदण्डका आधारमा परियोजनाहरूको प्राथमिकीकरण र छनौट गरी कार्यान्वयन गरिनेछ। • तोकिएको सूचक, मापदण्ड र पद्धतिका आधारमा परियोजना र कार्यक्रमहरूको मूल्याङ्कन गरिनेछ। • बहुवर्षीय कार्यक्रम तथा परियोजनाको कार्यान्वयन प्रगतिका आधारमा बजेट विनियोजन गरिनेछ। संघीय सरकारबाट हस्तान्तरण भै आएका बहुवर्षीय परियोजनाहरूमा रकम विनियोजन गर्न प्राथमिकता दिइनेछ। • नतिजामुखी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणाली लागू गरिनेछ। • वित्तीय सुशासन तथा बजेट अनुशासनसम्बन्धी नीति तथा कानूनको निर्माण गरी कार्यान्वयन गरिनेछ। • खुला बजेटको अवधारणा अनुरूप बजेट निर्माण प्रक्रियाको अवलम्बन गरिनेछ। • परियोजना कार्यान्वयन गराउने निकायले कार्यान्वयन गर्ने परियोजना प्रमुखसँग र परियोजना प्रमुखले मातहतका कर्मचारीहरूसँग कार्यसम्पादन करार गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ।
<p>४.१.३ सार्वजनिक, निजी, सहकारी र समुदायको साझेदारीलाई प्रोत्साहित गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • प्रादेशिक गौरवका परियोजनाहरूमा लगानी गर्न निजी तथा वैदेशिक क्षेत्रको निम्ति प्रोत्साहन प्याकेजको अग्रिम घोषणा गरिनेछ। • ठूला लगानी ल्याउने लगानीकर्ताका निम्ति उनीहरूकै खर्चमा जग्गा प्राप्त गर्न प्रदेश सरकारले सहजीकरण गर्नेछ। • निजी क्षेत्रका प्रतिष्ठानहरूको सुरक्षार्थ उनीहरूकै खर्चमा माग भई आएमा सरकारी सुरक्षा प्रदान गरिनेछ। • सार्वजनिक निजी साझेदारीसम्बन्धी नीति र कानून कार्यान्वयनमा ल्याइनेछ। • पूर्वाधार विकासको आवश्यकता, ऊर्जा उपलब्धता र औद्योगिक सुरक्षाका माध्यमबाट निजी क्षेत्रको लगानी आकर्षण गरिनेछ। • निजी क्षेत्रमा प्रतिस्पर्धाको वातावरण सिर्जना गर्न सिण्डिकेट र कार्टेलिङजस्ता गैरकानुनी अभ्यासहरूलाई कानूनतः नियन्त्रण गरिनेछ। • विकास परियोजनाहरूमा सहकारी र समुदायको लगानीलाई प्रोत्साहित गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
४.१.४ सार्वजनिक ऋण र विकास सहायतालाई प्रभावकारी रूपमा परिचालन गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> संघीय कानूनसँग तादात्म्यता हुनेगरी सार्वजनिक ऋणसम्बन्धी प्रादेशिक कानून तर्जुमा गरी लागू गरिनेछ। प्रदेशको समष्टिगत आर्थिक स्थायित्व कायम हुनेगरी सार्वजनिक ऋणको परिचालन गरिनेछ। जलविद्युत, उत्पादनमूलक उद्योग, पर्यटन तथा पूर्वाधार विकास लगायतका बढी प्रतिफल दिने, रोजगारी सिर्जना गर्ने र ऋण तिर्न सक्ने क्षमता भएका परियोजनामा सार्वजनिक ऋणको उपयोग गरिनेछ। प्रदेश सरकारलाई प्राप्त हुने सबै प्रकारको विकास सहायतालाई सहायता व्यवस्थापन प्रणालीमा राखिनेछ।
४.१.५ राजस्व परिचालन क्षमता अभिवृद्धि गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> करका आधार क्षेत्रहरूको पहिचान र बढोत्तरी गर्दै कर तिर्ने परिपाटीको विकास गरिनेछ। राजस्व सङ्कलनमा विद्युतीय प्रणालीको प्रयोगलाई प्रोत्साहन गरिनेछ। राजस्व क्षमता र सम्भाव्यता अध्ययनका लागि स्थानीय तहलाई सहयोग गरिनेछ। करदाता सूचना प्रणालीको विकास गरी आन्तरिक स्रोत सङ्कलन र परिचालनलाई प्रभावकारी र पारदर्शी बनाइनेछ। राजस्व प्रशासनसम्बन्धी आवश्यक नीतिगत व्यवस्था गर्न स्थानीय तहलाई सहयोग गरिनेछ। करदाताहरूको परामर्शमा करका दर निर्धारण, सङ्कलन र कर सचेतना कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। प्रदेशको बजेटमा आन्तरिक राजस्वको हिस्सा बढाउन कर चुहावट नियन्त्रण र दायरा फराकिलो गरिनेछ। तहगत राजस्व बाँडफाँड प्रणाली व्यवस्थित गरी समयबद्ध हस्तान्तरणको व्यवस्था गरिनेछ।
४.१.६ वित्तीय हस्तान्तरणलाई पारदर्शी तथा न्यायोचित बनाउने।	<ul style="list-style-type: none"> स्थानीय तहको सामाजिक, आर्थिक, पूर्वाधार विकास, राजस्व परिचालन क्षमता लगायतका आधारमा वित्तीय हस्तान्तरण गरिनेछ। स्थानीय तहको मानव विकास सूचकाङ्क तयार गरी वित्तीय हस्तान्तरणलाई न्यायपूर्ण, पूर्वानुमानयोग्य र पारदर्शी बनाइनेछ। स्थानीय तहको आन्तरिक राजस्व परिचालन क्षमताको विकास गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय
------	--------------	---------------------

सं.		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	आवधिक योजना, क्षेत्रगत योजना र वार्षिक बजेटबीचमा सामञ्जस्यता कायम		√	√		
२	गैरबजेटरी खर्चलाई निरूत्साहन		√	√		
३	मन्त्रालयगत बजेट सूचना प्रणालीलाई संघीय सरकारसँग सहकार्य गरी एकल कोष खातासँग आबद्ध	√	√	√		
४	बजेट निर्माण, लेखाङ्कन एवम् सार्वजनिक खर्च व्यवस्थापन प्रणालीलाई एकीकृत सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापन सूचना प्रणालीमा आबद्ध		√			
५	सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापनमा संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि		√	√		
६	प्रदेश र स्थानीय तहलाई एकीकृत सूचना तथा प्रतिवेदन प्रणालीमा आबद्ध		√	√		
७	मध्यमकालीन खर्च संरचना, सम्भाव्यता अध्ययन तथा विस्तृत परियोजना प्रतिवेदनका आधारमा परियोजना बैकबाट परियोजनाहरूको छनौट		√	√		
८	परियोजना बैंक तयार गरी स्थानीय आवश्यकता तथा जनसहभागिताका आधारमा परियोजनाहरूको प्राथमिकीकरण र छनौट		√	√		
९	तोकिएको सूचक, मापदण्ड र पद्धतिका आधारमा परियोजना र कार्यक्रमहरूको मूल्याङ्कन		√	√	√	√
१०	बहुवर्षीय कार्यक्रम तथा परियोजनाको कार्यान्वयन प्रगतिका आधारमा बजेट विनियोजन		√	√		
११	नतिजामुखी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणाली लागू		√	√		
१२	खुला बजेटको अवधारणा अनुरूप बजेट निर्माण प्रक्रियाको अवलम्बन		√	√		
१३	कार्यसम्पादन करार गर्ने व्यवस्था लागू		√	√		
१४	प्रादेशिक गौरवका परियोजनाहरूमा लगानी गर्न निजी तथा वैदेशिक क्षेत्रको निमित्त प्रोत्साहन प्याकेज		√			
१५	लगानीकर्ताका निमित्त उनीहरूकै खर्चमा जग्गा प्राप्त गर्न प्रदेश सरकारबाट सहजीकरण	√	√	√	√	
१६	सार्वजनिक निजी साझेदारीसम्बन्धी नीति र कानून कार्यान्वयन	√	√	√	√	√
१७	निजी क्षेत्रको लगानी आकर्षणका लागि पूर्वाधार विकास, ऊर्जा उपलब्धता र औद्योगिक सुरक्षाको व्यवस्था	√	√	√	√	
१८	प्रतिस्पर्धाको वातावरण सिर्जना गर्न सिण्डिकेट र कार्टेलिडजस्ता गैरकानुनी अभ्यासहरूलाई कानूनतः नियन्त्रण	√	√	√	√	
१९	विकास परियोजनाहरूमा सहकारी र समुदायको लगानी आकर्षण		√	√		√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
२०	सार्वजनिक ऋणसम्बन्धी प्रादेशिक कानून तर्जुमा	√	√			
२१	जलविद्युत, उत्पादनमूलक उद्योग, पर्यटन तथा पूर्वाधार विकास लगायतका बढी प्रतिफल दिने, रोजगारी सिर्जना गर्ने र ऋण तिर्न सक्ने क्षमता भएका परियोजनामा सार्वजनिक ऋणको उपयोग		√			
२२	प्रदेश सरकारलाई प्राप्त हुने सबै प्रकारको विकास सहायतालाई सहायता व्यवस्थापन प्रणालीमा आवद्ध		√			
२३	राजस्व सङ्कलनमा विद्युतीय प्रणालीको प्रयोग		√	√		
२४	राजस्व क्षमता र सम्भाव्यता अध्ययनका लागि स्थानीय तहलाई सहयोग		√	√		
२५	स्थानीय तहको आन्तरिक राजस्व परिचालन क्षमताको विकास		√	√		
२६	करदाता सूचना प्रणालीको विकास		√	√		
२७	करदाताहरूको परामर्शमा करका दर निर्धारण, सङ्कलन र कर सचेतना कार्यक्रम सञ्चालन	√	√	√	√	
२८	स्थानीय तहको सामाजिक, आर्थिक, पूर्वाधार विकास, राजस्व परिचालन क्षमता लगायतका आधारमा वित्तीय हस्तान्तरण		√	√		
२९	स्थानीय तहको मानव विकास सूचकाङ्क तयार गरी वित्तीय हस्तान्तरणलाई न्यायपूर्ण, पूर्वानुमानयोग्य र पारदर्शी		√	√		

१०. अपेक्षित उपलब्धि

प्रदेशको कुल गार्हस्थ्य उत्पादन ११.२ प्रतिशतले वृद्धि भएको हुने, प्रतिव्यक्ति आय रू ४ लाख ५ हजार पुगेको हुने, आन्तरिक राजस्व उल्लेख्य वृद्धि भएको हुने, सार्वजनिक खर्चसम्बन्धी आवश्यक नीति निर्माण भएको हुने, बजेट कार्यान्वयनमा सुधार भई ८० प्रतिशतभन्दा बढी पूँजीगत खर्च भएको हुने, निजी र सहकारी क्षेत्रको लगानी वृद्धि भएको हुने र एकीकृत सार्वजनिक वित्त व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको विकास भएको हुने।

४.२ कृषि क्षेत्र

१. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले सबै नेपालीलाई खाद्यको अधिकार प्रत्याभूत गरेको छ। दिगो विकास लक्ष्यले सन् २०३० सम्ममा भोकमुक्त विश्व बनाउने लक्ष्य लिएको सन्दर्भमा संघीय सरकारले वि.सं. २०७७ भित्र खाद्यान्नमा आत्मनिर्भर हुने घोषणा गरेको एवम् पाँच वर्षभित्र कृषि उत्पादकत्व दोब्बर गर्ने प्रतिवद्धता जनाएको छ। हाल मुलुक कृषिको यान्त्रिकीकरण, आधुनिकीकरण र व्यवसायीकरण गर्ने उद्देश्यले १५ वर्षीय कृषि विकास रणनीति कार्यान्वयनको चरणमा छ। यसका साथै, जैविक खेतीको विकासका निमित्त प्रविधि विकास, सामुदायिक तथा सहकारी संस्थाहरूको क्षमता विकासका कामहरू भइरहेका छन्।

प्रदेश सरकारले आ.व. २०७५।०७६ को नीति तथा कार्यक्रममार्फत् खाद्य संप्रभुताको सुनिश्चितताको लागि

बहुआयामिक कृषि उत्पादनमा जोड दिदै प्रदेशलाई तुलनात्मक लाभका क्षेत्रमा आत्मनिर्भर बनाई निर्यात गर्न सक्ने अवस्था सिर्जना गर्न कृषिलाई आधुनिक, प्रतिष्पर्धी र दिगो बनाई कृषिमा क्रान्ति ल्याउने घोषणा गरेको छ।

यस प्रदेशको भूगोलमा रहेको हिमाली, पहाडी र भित्री मधेश क्षेत्रले धेरै प्रकारका कृषि वस्तुको उत्पादनका निम्ति प्राकृतिक आधार प्रदान गरेको छ। यस प्रदेशमा तरकारी, फलफूल, दुध, अण्डा, माछा, मासु, जडिबुटी, खाद्यान्न, च्याउ, मह तथा नगदे बाली उत्पादनको प्रचुर सम्भावना छ। प्राकृतिक सौन्दर्य, विशिष्ट संस्कृति, स्थानीय तथा रैथाने बालीको प्रचुरता आदिका कारणले यस प्रदेशमा कृषि-वन पर्यटनको उल्लेख्य सम्भावना छ। खाद्यान्न न्यून रहेका कारण यस प्रदेशमा प्रतिएकाई जमिन र कृषि श्रमिकको उत्पादकत्व वृद्धिमार्फत् खाद्य स्वाधिनता हासिल गर्नु आवश्यक छ।

प्रदेश सरकारको कार्य क्षेत्रमा कृषि उत्पादन र उत्पादकत्व बढाउने कार्यक्रमहरू, प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकीकरण परियोजनाका पकेट ,ब्लक जोन ,र सुपरजोन विकास कार्यक्रम; कृषिउपजको न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारण र कार्यान्वयन; कृषि र पशुपन्छी बिमासम्बन्धी योजना र कार्यान्वयन; सहूलियत दरमा कृषि ऋणको व्यवस्था, कृषि फार्म/केन्द्रहरूको विकास र व्यवस्थापन; कृषि तथा पशु रोगको निदान प्रयोगशाला व्यवस्थापन र नियमन; कृषिजन्य वस्तु, सेवा र प्रविधिको गुणस्तर निर्धारण र प्रमाणीकरण; सामूहिक खेती प्रणालीको विकासजस्ता विषयहरू पर्दछन्।

२. वस्तुगत स्थिति

यस प्रदेशको कुल क्षेत्रफलको करिब १७ प्रतिशत अर्थात् ३ लाख ४३ हजार २ सय ७४ हेक्टर जमिन खेतीयोग्य छ र सोमध्ये ७३ प्रतिशत क्षेत्रफलमा मात्र खेती गरिएको छ। यस तथ्यले प्रदेशमा कृषि उत्पादनका लागि क्षेत्र विस्तार गर्ने तथा प्रतिएकाइ जमिनमा उत्पादकत्व वृद्धि गर्ने सम्भावनालाई देखाउँछ। नेपालमा मुख्य खाद्यान्न बालीहरूको कुल क्षेत्रफलमा १३ प्रतिशत र समग्र कृषि उत्पादनमा १६ प्रतिशत योगदान यस प्रदेशको छ। यस प्रदेशको कुल खेतीयोग्य भूमिको ४९.५ प्रतिशत भूमि सिँचाइयोग्य छ र सोको पनि ५९.७ प्रतिशत जमिन मात्र सिँचित छ। जिल्लागत रूपमा सबैभन्दा बढी सिँचाइयोग्य भूमि क्रमशः चितवन, मकवानपुर, सिन्धुपाल्चोक र नुवाकोटमा छ। नेपालको प्रमुख खाद्यान्न बालीहरू धान, मकै र गहुँको राष्ट्रिय औसत उत्पादकत्वको तुलनामा यस प्रदेशको औसत उत्पादकत्व बढी छ। सिँचित क्षेत्र विस्तार, गुणस्तरीय कृषि सामग्रीको उपलब्धता, उन्नत खेती प्रविधि प्रसार एवम् बजार प्रवर्द्धनबाट उत्पादकत्वमा थप वृद्धिको सम्भावना छ।

आ.व .२०७३/७४ को कृषिसम्बन्धी विवरण अनुसार यस प्रदेशको कुल खाद्यान्न उत्पादन ८ लाख ५२ हजार ६८० मे .टन छ जुन प्रदेशको आवश्यकताका तुलनामा करिब ३ लाख ९० हजार मे .टन न्यून हो। भैंसी, खसी, बंगुर लगायत कुखुरा र हाँसको गरी यस प्रदेशमा ७५००६ मे .टन मासु उत्पादन हुन्छ जुन कुल राष्ट्रिय उत्पादनको २२.५६ प्रतिशत हो। यसैगरी, दुध उत्पादन ४८ लाख लिटर छ। कुल दुध उत्पादनको १५ प्रतिशत कम्पनीहरूमा, ३५ प्रतिशत होटल तथा रेष्टुरेण्टमा र ५० प्रतिशत घरायसी उपभोगमा खपत हुने गर्दछ। यस प्रदेशमा करिब २० हजार किसानहरू दुग्ध व्यवसायमा संलग्न छन्। नेपालमा उत्पादन हुने कुखुरा र हाँसको कुल अण्डा उत्पादनमा प्रदेशको उत्पादन क्रमशः ५४ र १४ प्रतिशत छ।

काठमाडौँ उपत्यकामा खपत हुने कुल माछामध्ये ६५ प्रतिशत भारतबाट तथा ३५ प्रतिशत नेपालकै विभिन्न स्थानबाट आपूर्ति हुने गर्दछ। प्रदेशको भित्री मधेश र बेंसी क्षेत्रहरूमा धान, मकै र गहुँ तथा पहाडी र हिमाली क्षेत्रमा मकै, कोदो, जौ र आलु बढी उत्पादन हुने गर्दछ। यस प्रदेशमा फलफूल तथा तरकारी खेती, मासु, अण्डा, माछाको उत्पादन बढ्दै गएको छ। चितवनमा माछा तथा अण्डाको बढी उत्पादन हुने गरेको र काभ्रे, चितवन, मकवानपुर र धादिङमा दुधको बढी उत्पादन हुने गरेको छ। नेपालमा पुष्प खेती पनि विस्तार भइरहेको छ। नेपालमा रहेका पुष्प खेती फार्ममध्ये ६१ प्रतिशत

फार्म यस प्रदेशमा छन्।

३. समस्या र चुनौती

कृषिउपजहरूको सम्भावित उत्पादन र उत्पादकत्वको तुलनामा हालको वास्तविक उत्पादन र उत्पादकत्व न्यून रहनु कृषि क्षेत्रको प्रमुख समस्या हो। कृषि प्रणालीमा पछ्यौटेपन कायम हुनु, कृषि पूर्वाधारमा सरकारी क्षेत्रको लगानी न्यून हुनु, कृषि वस्तुको उचित मूल्य कृषकले नपाउनु, उत्पादक कृषकसँग जग्गाको स्वामित्व नहुनु र स्वामित्व भएकाहरूसँग पनि जमिनको मात्रा सानो हुनु, कृषि पेसा आकर्षक बन्न नसक्नु, भू-उपयोग ऐनको अभावले मलिलो र उर्वर भूमि गैरकृषि क्षेत्रमा उपयोग हुने क्रम बढ्नु, अर्थात् भू-अवस्था र कमजोर ग्रामीण पूर्वाधार, छिमेकी मुलुकहरू चीन र भारतमा उत्पादन भई नेपाली बजारमा बिक्री भैरहेका कृषिउपजहरूसँग नेपाली उपजहरूको मूल्य र गुणस्तरमा प्रतिस्पर्धी बन्न नसक्नु आदि कृषि क्षेत्रका थप समस्या हुन्। खेतीका विशिष्टीकृत उत्पादन क्षेत्रहरूको पहिचान नहुनु, कृषिको आधुनिकीकरण र व्यवसायीकरण कम हुनु, ठूलो परिमाणमा उत्पादन गरी बाह्य निर्यातको वातावरण तयार नहुनु, गुणस्तरीय कृषि उत्पादन सामग्री आपूर्ति सुनिश्चित नहुनु; कृषि अनुदान, बिमा, ऋण, न्यूनतम समर्थन मूल्य, शीत भण्डार र थोक बिक्री केन्द्रमा किसानको पहुँच कम हुनु; उत्पादित कृषि वस्तुको संस्थागत रूपमा भण्डारण र बजारीकरणमा समस्या हुनु; कृषि उत्पादन विषादीमुक्त बनाउन नसक्नु, जैविक खेतीको विस्तार हुन नसक्नु, खण्डीकृत जमिनलाई चक्लाबन्दी गरी कृषिको यान्त्रिकीकरण र व्यवसायीकरण गर्न नसक्नु, सबै कृषकलाई कृषि प्रविधि र कृषि बजारसम्बन्धी सूचना सञ्जालभित्र समेट्न नसक्नु र कृषक तालिम, क्षमता विकास र सशक्तीकरणजस्ता कार्यक्रमहरू प्रभावकारी नहुनु कृषि क्षेत्रका प्रमुख चुनौतीहरू हुन्।

तुलनात्मक लाभ भएका निर्यातयोग्य र प्रतिस्पर्धी कृषि तथा पशुपन्छी उपजहरूको उत्पादनमा बढोत्तरी गर्न “विशिष्टीकृत बृहत्तर कृषि उत्पादन क्षेत्र” निर्धारण गरी प्रविधि, पूर्वाधार, सिँचाइ, यन्त्र-उपकरण, कृषि ऋण, कृषि बिमा सुविधा, रासायनिक तथा प्राङ्गारिक मल, उन्नत बीउबिजन, बिरुवा तथा कृषि क्षेत्रको लगानीलाई एकीकृत र रणनीतिक ढङ्गबाट परिचालन गर्नुको साथै युवा जनशक्तिलाई कृषि पेसामा आकर्षित गर्नु पर्ने अवस्था छ।

४. सम्भावना र अवसर

खाद्य र पोषण सुरक्षाका निमित्त कृषि क्षेत्र सरकारको उच्च प्राथमिकतामा रहनु, कृषि उत्पादनमा र बजारीकरणमा निजी क्षेत्रको लगानी क्रमिक रूपमा बढ्दै जानु, युवा पुस्तामा आधुनिक खेतीप्रति आकर्षण बढ्दै जानु, खाद्यान्न, फलफूल, तरकारी, नगदेवाली, पशुपन्छी एवम् मत्स्य उत्पादनका लागि भौगोलिक तथा हावापानीको विविधता हुनु, प्रधानमन्त्री कृषि आधुनिकीकरण परियोजना कार्यान्वयन हुनु, कृषि विकासका निमित्त सहूलियत दरमा कृषि ऋण, बिमा, शीत भण्डार, बीउ, मल, सिँचाइको व्यवस्थामा सरकारी लगानी बढ्दै जानु, जैविक खेती गर्न सकिने पकेटहरू पहिचान हुँदै जानु, प्रदेशका विभिन्न स्थानमा कृषि उत्पादनका विशिष्टीकृत क्षेत्र विकास हुने क्रम बढ्नु, कृषि उत्पादन क्षेत्र र कृषिउपजको बजारकाबीच यातायात सञ्जाल बन्दै जानु, कृषि उत्पादन खपतका लागि काठमाण्डौं उपत्यकाजस्ता ठूला बजार उपलब्ध हुनु, सहकारी र सामूहिक खेती प्रणालीमा सरकारको प्राथमिकता रहनु, बजारीकरणमा कृषि सहकारीका सम्भावना वृद्धि हुनु, वैदेशिक रोजगारबाट फर्केका युवाहरू कृषितर्फ आकर्षित हुनु र सञ्चार सञ्जालको तीव्र विकासका कारण कृषि सूचना प्रविधिको सहज पहुँच हुन सक्ने अवस्था हुनु, चीन र भारतजस्ता ठूला बजारहरू उपलब्ध हुनु, तुलनात्मक लाभ भएका वाली र पशुपन्छी उत्पादन हुन सक्ने वातावरण हुनु, सिँचाइ विकास गरी खेतीयोग्य जमिन विस्तार गर्न सकिने तथा प्रतिएकाइ जमिन र प्रतिश्रमिक उत्पादकत्व बढाउन सकिने सम्भावना हुनु यस प्रदेशका निमित्त कृषि विकासका अवसरहरू हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

खाद्य तथा पोषण सुरक्षासहितको सम्पन्न कृषक

६. लक्ष्य

खाद्य र पोषण सुरक्षा, व्यवसायिक कृषि र लाभप्रद रोजगारीद्वारा किसानको आयस्तर वृद्धि भई समृद्ध प्रदेशको निर्माणमा योगदान पुऱ्याउने।

७. उद्देश्य

- दिगोपनसहितको कृषि उत्पादनमा बढोत्तरी हासिल गर्ने र प्रतिएकाइ जमिन र प्रतिएकाइ कृषि श्रमिकको उत्पादकत्व बढाउनु,
- खाद्य र पोषण सुरक्षा गर्दै कृषि वस्तुको आयात घटाउने एवम् निर्यात प्रवर्द्धन गर्नु,
- कृषिमा आयमूलक रोजगारीका अवसरहरूको विस्तार गर्नु, र
- विषादी अवशेषरहित एवम् जैविक पोषणयुक्त खाद्य वस्तु सुपथ मूल्यमा उपलब्ध गराउनु र उपभोक्ताहरूको खाद्य अधिकार सुनिश्चित गर्नु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
४.२.१ कृषिको विशिष्टीकरण गरी उत्पादन र उत्पादकत्व वृद्धि गर्ने।	<ul style="list-style-type: none">• कृषि, पशुपन्छी, माहुरी र माछा विकाससम्बन्धी दीर्घकालीन नीति, कानून र मापदण्ड तयार गरिनेछ।• कृषि तथा पशुपन्छीजन्य वस्तुहरूको उत्पादनमा वृद्धि गर्न “विशिष्टीकृत बृहत्तर कृषि उत्पादन क्षेत्र” निर्धारण गरी प्रविधि, पूर्वाधार, सिँचाइ, यन्त्र-उपकरण, ऋण, बिमा, मल, उन्नत बिउबिजन तथा विरूवा लगायतका वस्तु तथा सेवाहरू एकीकृत रूपमा उपलब्ध गराउने व्यवस्था मिलाइनेछ।• कृषि तथा पशुपन्छीजन्य उत्पादनलाई बजारीकरणका लागि विशेष सुविधा दिइनेछ।• संघीय कानून अनुसार प्रदेशको भू-उपयोग नीति र कानून तर्जुमा गरी कृषि भूमिको व्यवस्थित प्रयोगमा जोड दिइनेछ।• कृषि भूमिको पहिचान, संरक्षण र विकास गर्न स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ।• कृषि भूमिको संरक्षण र चक्लावन्दीलाई प्रोत्साहन गर्दै साझेदारी, सामूहिक, सहकारी र करार खेतीलाई प्रोत्साहित गरिनेछ।• कृषि कलेज तथा कृषि अनुसन्धानमा संलग्न सरकारी निकायहरूलाई कृषि प्रयोगशाला, घुम्ती कृषि प्रसार, प्रविधि विस्तार र कृषक अन्तरक्रिया कार्यक्रमहरू सञ्चालन गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ।• अनुसन्धानबाट विकास भएका प्रविधिहरूको विस्तारका लागि कृषि क्षेत्रमा कार्यरत सरकारी तथा गैरसरकारी निकायहरूको सञ्जाल गठन गरी सेवा प्रवाहमा दोहोरोपन नआउने गरी एकद्वार कृषि प्रसार प्रणालीलाई प्रोत्साहित गरिनेछ।• खाद्यान्न उत्पादन कम हुने तथा पोषणका हिसावले असुरक्षित ग्रामीण क्षेत्रमा कृषिजन्य

रणनीति	कार्यनीति
	<p>उत्पादनमा जोड दिइनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> • बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाले कृषि लगायतका उत्पादनशील क्षेत्रमा अनिवार्य रूपमा कम्तीमा ५० प्रतिशत ऋण प्रवाह गर्नुपर्ने व्यवस्था गरिनेछ। • परियोजनामा आधारित कृषि ऋण उपलब्ध गराउने व्यवस्थाका लागि अवश्यक नीति बनाइनेछ। • कृषिमा जलवायु परिवर्तन अनुकूलन तथा उत्थानशील प्रविधिको प्रयोग गरी कृषि जैविक विविधताको संरक्षण, सम्बर्धन तथा दिगो उपयोगमा जोड दिइनेछ। • ठूला सिँचाइ परियोजना सम्भव नभएका क्षेत्रमा साना प्रकृतिका सतह, भूमिगत, थोपा, लिफ्ट र अन्य बैकल्पिक सिँचाइ प्रविधिबाट सिँचाइ सुविधाको व्यवस्था गरिनेछ। • सडक पहुँच नभएमा साना कृषि सडक निर्माण गरिनेछ। • सार्वजनिक तथा वन क्षेत्रमा भएका बाँझो तथा खाली जग्गामा सम्बन्धित निकायसँगको समन्वयमा सामुहिक खेती प्रवर्द्धन गरी फलफुल, मसला, जडीबुटी लगायत अन्य उच्च मूल्यका बाली उत्पादनको लागि आवश्यक व्यवस्था मिलाइनेछ। • जंगली जनवारहरूबाट कृषि, पशुपन्छी र मानवीय क्षतिलाई कम गर्न सम्बेदनशीलतालाई ध्यानमा राखी पक्की पर्खाल निर्माण लगायतका उपयुक्त प्रविधि र उपायको अवलम्बन गरिनेछ। • बाँदरबाट कृषिउपज र सम्पत्तिमा पुगेको क्षतिलाई कम गर्न उपयुक्त प्रविधि र उपायको अवलम्बन गरी बाँदर व्यवस्थापन गरिनेछ। • सिँचाइ सुविधा नभएको क्षेत्रमा वर्षातको पानी सङ्कलन गरी उपयोगमा ल्याउन पोखरी संरक्षण र निर्माणलाई अभियानको रूपमा सञ्चालन गरिनेछ। • बीउबिजनको अनुसन्धान तथा प्रसार गर्न र चौरी, भेंडा, बाखा, बंगुर, गाई, भैंसी लगायतका पशु तथा पन्छीको अनुसन्धान, नश्ल सुधार तथा प्रसार गर्न उपयुक्त स्थानहरूमा स्रोत केन्द्रहरूको स्थापना गरिनेछ। • वन्यजन्तु तथा पन्छीहरूको पालन, प्रजनन, मांशाहार, बेचबिखन र विदेश निकासी गर्न सकिने संघीय नीतिको कार्यान्वयनमा सहयोग र सहजीकरण गरिनेछ।
<p>४.२.२ कृषिको यान्त्रिकीकरण, सहजीकरण र बजारीकरणमा सहयोग गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • कृषि सामग्री, अनुदान, बिमा, ऋण, न्यूनतम समर्थन मूल्य, शीत भण्डार, थोक बिक्री केन्द्र, बजारीकरण र कृषि सूचनामा किसानको सहज पहुँच स्थापनामा जोड दिइनेछ। • कृषि तथा पशुपन्छीको उत्पादन वृद्धि गर्न उत्पादनको आधारमा अनुदान उपलब्ध गराउने व्यवस्था मिलाइनेछ। • स्थानीयस्तरमा कृषि औजारहरू उत्पादन गर्न निजी क्षेत्रलाई प्रवर्द्धन गरिनेछ। • कृषिउपज बजार ऐन जारी गरी कृषिउपज बजारीकरणलाई सहजीकरण र नियमन गरिनेछ। • कृषिउपजको उत्पादन, प्रशोधन, भण्डारण एवम् वितरण प्रणालीमा नयाँ प्रविधिको विकास र

रणनीति	कार्यनीति
<p>४.२.३ कृषिको औद्योगिकरणमा सहयोग गर्ने।</p>	<p>विस्तारमा सहयोग गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> • कृषि तथा पशुपन्छीजन्य उत्पादनको व्यवसायीकरणमा निजी तथा सहकारी संस्थाहरूको भूमिका बढाइनेछ। • कृषिउपजको न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारण गर्दा कृषकको वास्तविक उत्पादन लागतलाई मुख्य आधार मानिनेछ। • स्थानीय तह, सहकारी संस्था र दुग्ध व्यवसायीको सहकार्यमा दुग्ध प्रशोधन तथा दुग्ध पदार्थ उत्पादन र बजारीकरणमा प्रोत्साहन गरिनेछ। • पशुपन्छीको आहार, रोग तथा महामारी नियन्त्रण र बिमामा सुविधा र सहूलियत दिई यिनीहरूको उत्पादनमा वृद्धि ल्याइनेछ। • हिमाली क्षेत्रमा पशु चरिचरणका लागि आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ। • कृषि, दुग्ध, मासु तथा माछाजन्य उद्योगहरू स्थापना तथा सञ्चालित उद्योगको आधुनिकीकरण र क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ। • कृषिको बहुआयामिक विकासका लागि कृषि, वन, पशु तथा जैविक उत्पादनमा आधारित कृषि पर्यटनको विकास र प्रवर्द्धन गरिनेछ। • कृषि रिसोर्टहरूको विकास र प्रवर्द्धन गरिनेछ। • काठमाण्डौ उपत्यका लगायत अन्य शहरी तथा शहरोन्मुख क्षेत्रहरूमा हाइड्रोपोनिक्स र अक्वापोनिक्सजस्ता उच्च प्रविधिको प्रयोग गरी शहरी कृषि उद्योग प्रवर्द्धनको विशेष कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। • कृषि, पशुपन्छी, माछा लगायतका वस्तुहरूमा आधारित उत्पादन, प्रशोधन र औद्योगिक वस्तु उत्पादन गर्ने उद्योगहरूको स्थापना, स्तरोन्नति र प्रवर्द्धन गरिनेछ। • सबै स्थानीय तहको माटो परीक्षणका लागि मोबाइल माटो परीक्षण सेवा सुरु गर्न आवश्यक व्यवस्था मिलाइनेछ। • निरन्तर कृषि पेशामा लागि रहेने कृषकहरूलाई सम्मानित र पुरस्कृत गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ।
<p>४.२.४ वडालाई कृषि तथा पशुपन्छी सेवा केन्द्रको रूपमा विकास गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • वडागत रूपमा कृषि, पशु, पन्छी, माछा, मौरी लगायतका पकेट क्षेत्रहरू पहिचान गरी आवश्यक सहयोगहरू एकीकृत रूपमा उपलब्ध गराउन स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। • आवश्यकताका आधारमा वडास्तरमा नमूना प्राङ्गारिक खेतीको प्रवर्द्धन गर्न स्थानीय तहको समन्वयमा निजी क्षेत्र, सहकारी र स्थानीय समुदायसँग सहकार्य गरिनेछ। • स्थानीय तहसँग समन्वय गरी मोबाइल भेटेरिनरी एम्बुलेन्सको व्यवस्था गरी पशु स्वास्थ्य सेवालाई चुस्त, दुरुस्त र भरपर्दो बनाइनेछ। • आवश्यकताको आधारमा दुग्ध पकेट क्षेत्रहरूमा दुग्ध चिस्यान केन्द्र, प्रशोधन केन्द्र एवम् मिल्क पार्लरको विकास गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
	<ul style="list-style-type: none"> पशु विकासका पकेट क्षेत्रहरूमा भूई तथा डाले घाँसको ब्लक स्थापना गरी पशु आहारको न्यूनतालाई पूर्ति गरिनेछ। निजी एवम् सहकारीसँगको साझेदारीमा पशु वधशाला, दाना उद्योग, चीज तथा छुर्पी उत्पादन केन्द्र एवम् दुरध पाउडर प्लान्ट स्थापनामा जोड दिइनेछ। लोपोन्मुख विउविजन, नक्ष र कृषि तथा पशुपन्छीजन्य जैविक विविधताको संरक्षण र व्यवसायीकरणमा जोड दिइनेछ। बाँझो जमिन राखे प्रवृत्तिलाई नियन्त्रण गर्न स्थानीय तहले दिने सेवा सुविधामा कडाइ गर्न नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ। सबै स्थानीय तहका सबै वडाहरूको सहभागिता हुनेगरी कृषिसम्बन्धी आवश्यक तालिमहरू सञ्चालन गरिनेछ। उत्पादन बृद्धिको लागि उन्नत जातको पशुपंक्षी वितरण गरिनेछ। कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। पायक पर्ने स्थानमा सम्भाव्यताको आधारमा सामुदायिक प्रजनन केन्द्रको स्थापना (न्युक्यस एण्ड मल्टिप्लिकेशन) गरिनेछ।
४.२.५ खाद्य स्वच्छता कायम गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> हिमाली क्षेत्र तथा न्यून रासायनिक मल प्रयोग भएको क्षेत्रमा जैविक खेती प्रोत्साहित गर्ने र त्यसको प्रविधि, गुणस्तर निर्धारण, जनशक्ति विकास र बजारीकरणमा सहयोग गरिनेछ। रासायनिक मल वढी प्रयोग भइरहेका क्षेत्रहरूमा क्रमशः प्रभावकारी प्राङ्गारिक मलतर्फ आकर्षण बढाउनका लागि प्रसार कार्यका साथै प्राङ्गारिक मल र कीटनाशक उत्पादन गर्ने उद्योगहरू सञ्चालन गर्न प्रोत्साहन र सहयोग गरिनेछ। रासायनिक मल तथा जीवनाशक विषादी प्रयोग नभएको क्षेत्रलाई क्रमशः प्राङ्गारिक क्षेत्र घोषणा गर्दै बृहत्तर जैविक उत्पादन कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। जैविक कृषिउपज बढाउन आवश्यक स्थानमा कृषक पाठशाला सञ्चालन एवम् तालिम केन्द्र विकास र विस्तार गरिनेछ। आन्तरिक बजारमा खपत हुने कृषि वस्तुको प्रयोगशालामा विषादी अवशेष अनिवार्य रूपले परीक्षण हुने व्यवस्था मिलाउने र निर्यात तथा आयात हुने कृषि तथा पशुपन्छीको लागि क्वारेन्टाइनमा सहज पहुँच हुने व्यवस्था गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	विशिष्टीकृत बृहत्तर कृषि उत्पादन क्षेत्र कार्यक्रम		√	√	√	√
२	कृषि तथा पशुपन्छीजन्य उत्पादनको बजारीकरण, बजार विस्तार र		√	√	√	√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
	व्यवस्थापन					
३	कृषि भूमिको पहिचान, संरक्षण र विकास		√	√	√	√
४	साझेदारी, सामूहिक, सहकारी र करार खेतीलाई प्रोत्साहन		√	√	√	√
५	पोषणका हिसावले असुरक्षित ग्रामीण क्षेत्रमा कृषिजन्य उत्पादनलाई प्रोत्साहन		√	√	√	√
६	ठूला सिँचाइ परियोजना सम्भव नभएमा साना प्रकृतिका सतह, भूमिगत, थोपा, लिफ्ट र अन्य बैकल्पिक सिँचाइ प्रविधिबाट सिँचाइ सुविधाको व्यवस्था	√	√	√	√	√
७	पशु तथा पन्छीको अनुसन्धान, नस्ल सुधार तथा प्रसार गर्न स्रोत केन्द्रहरूको स्थापना		√	√		
८	कृषि तथा पशुपन्छीको उत्पादनको आधारमा अनुदानको व्यवस्था		√	√	√	√
९	कृषि औजार उद्योग प्रवर्द्धन		√	√	√	√
१०	पशुपन्छीको रोग तथा महामारी नियन्त्रण, विमामा सुविधा र सहूलियत	√	√	√	√	√
११	भूईँ तथा डाले घाँसको बलक स्थापना तथा घाँसको बीउ तथा पशु आहार उत्पादन प्रवर्द्धन	√	√	√	√	√
१२	लोपोन्मुख विउबिजन, नस्ल र कृषि तथा पशुपन्छीजन्य जैविक विविधताको संरक्षण र व्यवसायीकरण	√	√	√	√	√
१३	उन्नत जातको पशुपंक्षी वितरण		√	√	√	√
१४	कृत्रिम गर्भाधान		√	√	√	√
१५	माछा मिसन कार्यक्रम		√	√	√	√
१६	बाखा मिसन कार्यक्रम (बृहत्तर बाखा विकास तथा अनुसन्धान)		√	√	√	√
१७	पाडापाडी मिसन कार्यक्रम		√	√	√	√
१८	डेरी मिसन कार्यक्रम(उत्पादनमा आधारित अनुदान)		√	√	√	√
१९	मीटमार्ट, डेरी पसल सुधार		√	√	√	√
२०	नमुना खेती प्रवर्द्धन		√	√	√	√
२१	एकद्वार कृषि प्रसार प्रणालीलाई प्रोत्साहन	√	√	√	√	√
२२	कृषिमा जलवायु परिवर्तन अनुकूलन तथा उत्थानशील प्रविधिको प्रयोग	√	√	√	√	√
२३	साना कृषि सडक निर्माण		√	√		√
२४	बाँझो तथा खाली जग्गामा फलफुल, मसला, जडीबुटी लगायत अन्य उच्च मूल्यका बाली प्रवर्द्धन	√	√	√		√
२५	बर्षाको पानी सङ्कलन गरी उपयोगमा ल्याउन पोखरी संरक्षण र निर्माणलाई अभियानको रूपमा सञ्चालन	√	√	√		√
२६	कृषिमा आधारित उद्योगको आधुनिकीकरण र क्षमता अभिवृद्धि सहयोग	√	√	√	√	√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
२७	कृषि पर्यटनको विकास र प्रवर्द्धन	√	√	√	√	√
२८	हाइड्रोपोनिक्स र अक्वापोनिक्सजस्ता उच्च प्रविधिको प्रयोग गरी शहरी कृषि उद्योग प्रवर्द्धनको विशेष कार्यक्रमहरू सञ्चालन	√	√	√	√	√
२९	मोवाइल माटो परीक्षण सेवा		√	√	√	√
३०	कृषिको पकेट र ब्लक कार्यक्रम	√	√	√	√	√
३१	मोवाइल भेटेरिनरी एम्बुलेन्सको व्यवस्था	√	√	√	√	√
३२	दुध चिस्यान केन्द्र, प्रशोधन केन्द्र एवम् मिल्क पार्लरको विकास	√	√	√	√	√
३३	प्राङ्गारिक मल र कीटनाशक उत्पादन गर्ने उद्योगहरू सञ्चालन गर्न प्रोत्साहन र सहयोग	√	√	√	√	√
३४	क्रमशः प्राङ्गारिक क्षेत्र घोषणा गर्दै बृहत्तर जैविक उत्पादन कार्यक्रमहरू सञ्चालन	√	√	√	√	√
३५	कृषक पाठशाला सञ्चालन एवम् तालिम केन्द्र विकास र बिस्तार		√	√	√	√
३६	सामुदायिक प्रजनन केन्द्रको स्थापना (न्युक्यस एण्ड मल्टिप्लिकेशन)		√	√	√	√
३७	उच्च प्रविधियुक्त खोर/गोठ प्रवर्द्धन		√	√	√	√
३८	हे, साइलेज, र टिएमआर प्रवर्द्धन		√	√	√	√
३९	पशुपंक्षी रोग अन्वेषण प्रयोगशाला सञ्चालन र सहयोग	√	√	√	√	√
४०	पुष्प खेती, मौरी पालन र कौशीखेती		√	√	√	√

१०. अपेक्षित उपलब्धि

कृषि वस्तुको उत्पादन बढेको हुने, प्रदेश फलफूल दुध, मासु, अण्डा, माछा र तरकारीमा आत्मनिर्भर भई आयात प्रतिस्थापन भएको हुने, कृषि उत्पादन, भण्डारण, तथा बजारीकरण तथा कृषिक्षेत्रको औद्योगिकीकरणमा निजी र सहकारी संस्थाको संलग्नता बढेको हुने; स्थानीय र रैथाने जातका कृषिउपजहरूको संरक्षण र प्रवर्द्धन गरी जैविक विविधताको संरक्षण भएको हुने; र निर्यातयोग्य कृषि वस्तुहरूको पहिचान गरी मूल्य शृङ्खला विकास गर्दै प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता वृद्धि भएको हुने, कृषिको औद्योगिकीकरण र कृषि पर्यटनको विकास भएको हुने।

४.३ उद्योग

१. पृष्ठभूमि

उद्योग क्षेत्र रोजगारी र आर्थिक विकासको प्रमुख आधार हो। कृषिबाट उद्योग र सेवा क्षेत्रमा बेरोजगार वा अर्ध बेरोजगार श्रमिकको स्थानान्तरणले मात्र वस्तु र सेवाको उत्पादन, मूल्य अभिवृद्धि, निर्यात प्रवर्द्धन र आयात प्रतिस्थापनका साथै गरिबी न्यूनीकरणमा टेवा पुग्दछ। तीव्र शहरीकरण र बसाइँसराइलाई व्यवस्थित गर्न मुलुकमा औद्योगिकीकरण आवश्यक हुन्छ।

नेपालको कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा उद्योग क्षेत्रको योगदान करिब ५.५ प्रतिशत छ भने राष्ट्रिय रोजगारीमा ६.६ प्रतिशत रहेको छ। आ.व. २०७४/७५ सम्ममा उद्योग विभागमा दर्ता भएका ठूला, मझौला र साना उद्योगहरूको सङ्ख्या

७,५२९ छ र यी उद्योगहरूबाट ५,७५,४९६ कुल रोजगारी सिर्जना भएको छ। कुल दर्ता भएका उद्योगहरूमध्ये ठूला तथा मझौला उद्योगहरू क्रमशः १३.६८ र २१.७८ प्रतिशत छन्। तर साना उद्योगहरू ६४.५४ प्रतिशत छन् र यी उद्योगहरूले ४७.५६ प्रतिशत रोजगारीमा योगदान गरेका छन्। यी उद्योगहरूमा कुल लगानी १६ खर्व ८१ अर्व छ। कुल उद्योगहरूमध्ये ५,०९८ (६७.७१ प्रतिशत) यस प्रदेशमा छन् भने कुल लगानीमा प्रदेशको हिस्सा ३७.३० प्रतिशत छ। यसैगरी, यस प्रदेशको उद्योग क्षेत्रको रोजगारीको हिस्सा ६०.८६ प्रतिशत छ।

प्रदेशको कार्य क्षेत्रमा ठूला तथा मझौला उद्योगहरूको प्रवर्द्धन र नियमन; औद्योगिक व्यवसाय प्रवर्द्धन र नियमन; औद्योगिक भौतिक पूर्वाधार विकास; उद्योगमा श्रममूलक प्रविधि र स्वदेशी श्रमिकको उपयोग तथा प्रदेशस्तरको औद्योगिक क्षेत्र र विशेष आर्थिक क्षेत्रको स्थापना र विस्तारका साथै उद्यमशीलताको विकास पर्दछ।

२. वस्तुगत स्थिति

नेपालमा रहेका ११ औद्योगिक क्षेत्रहरूमध्ये यस प्रदेशमा बालाजु, पाटन, भक्तपुर र हेटौडा गरी चारवटा औद्योगिक क्षेत्रहरू छन्। आ.व. २०७४/७५ को औद्योगिक तथ्याङ्क अनुसार सो वर्ष यस प्रदेशमा दर्ता भएका कुल ३३१ उद्योगमध्ये ८५.२० प्रतिशत अर्थात् २८२ उद्योगहरू काठमाडौं उपत्यकामा मात्र रहेका छन्। आ.व. २०७४/७५ सम्म दर्ता भएका उद्योगहरूमध्ये वैदेशिक लगानी भएका उद्योगहरू ४,४७७ छन्। तीमध्ये ८०.०७ प्रतिशत यस प्रदेशमा छन्।

आ.व. २०७४/७५ सम्म समग्र मुलुकमा दर्ता भएका घरेलु तथा साना उद्योगको सङ्ख्या ५ लाख ३२ हजार २२ छन्। तीमध्ये यस प्रदेशमा ६३ हजार ७ सय ५२ छन्। यो सङ्ख्या कुल सङ्ख्याको ११.९८ प्रतिशत हो। ठूला तथा मझौला उद्योगहरूको तुलनामा घरेलु तथा साना उद्योगको सङ्ख्या प्रदेशमा न्यून छ।

यस प्रदेशमा स्थापित उद्योगहरूमध्ये काठमाडौं उपत्यकामा अत्यधिक छन्। उपत्यकामा भएका वातावरणलाई प्रत्यक्ष असर गर्ने ईटा उद्योग, क्रसर, ढुङ्गा र बालुवा उद्योगहरूबाट जनस्वास्थ्यमा र पर्यटनमासमेत असर पर्न गएको छ। त्यस्ता उद्योगहरूका लागि स्थानान्तरण वा प्रविधि व्यवस्थापन र नियमन हुन सकेको छैन। निजी क्षेत्रमा रहेका कतिपय उद्योगहरू रुग्ण उद्योगको रूपमा रहेका र तिनीहरूलाई पुनःसञ्चालन वा बन्द गर्ने सम्बन्धमा स्पष्ट नीति एवम् कानूनद्वारा सम्बोधन गर्नुपर्ने आवश्यकता छ। ईटाभट्टा उद्योगबाहेक, वातावरण) मुलतः माटो, पानी, हावा(लाई असर पार्ने ७६१ उद्योगहरू काठमाडौं जिल्लामा रहेका छन् भने यस्ता ९२ उद्योगहरू चितवनमा छन्। यीमध्ये १४ वटा छाला उद्योग, ६१ वटा रबर र प्लास्टिक उद्योग र १५ वटा रासायनिक उद्योगहरू काठमाडौंमा केन्द्रित छन्। निर्यातमूलक उद्योगलाई लक्षित गरी काभ्रेपलाञ्चोकको पाँचखालमा विशेष आर्थिक क्षेत्र निर्माणको प्रक्रियामा छ।

३. समस्या र चुनौती

औद्योगिक लगानी-मैत्री वातावरणमा सुधार नहुनु, औद्योगिक पूर्वाधारहरू पर्याप्त र गुणस्तरीय नहुनु, आवश्यक दक्ष श्रमशक्तिको कमी हुनु, कारोबार लागत बढी हुनु, सरकारले उद्योगलाई दिएको प्रोत्साहन र सहूलियत पर्याप्त नहुनु, उद्योग स्थापनाका लागि जग्गा प्राप्तिको समस्या हुनु र उपलब्ध जग्गा पनि अस्वभाविक रूपमा महँगो हुनु उद्योग विकासका प्रमुख समस्याहरू हुन्। फलस्वरूप कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको वृद्धिदरभन्दा उद्योग क्षेत्रको वृद्धिदर न्यून रहेको छ।

औद्योगिक उत्पादनमा गुणस्तरीयता कायम गर्नु, अन्तर्राष्ट्रिय बजारको माग अनुसार ठूलो परिमाणमा उत्पादन गर्नु, औद्योगिक उत्पादनलाई अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा प्रतिस्पर्धी बनाउनु, औद्योगिक क्षेत्रमा पूर्वाधारको विकास बढाउँदै लानु, सञ्चालित उद्योगहरूलाई उत्पादन तथा उत्पादकत्वका दृष्टिले प्रतिस्पर्धी बनाउनु, मौजुदा उद्योगलाई रुग्ण हुनबाट जोगाउनु, आवश्यक औद्योगिक जनशक्ति तयार गर्नु र उद्योगमा नवीनतम् प्रविधि भित्र्याउनु उद्योग क्षेत्रका प्रमुख चुनौतीहरू हुन्।

४. सम्भावना र अवसर

औद्योगिक विकासका निम्ति उपयुक्त वातावरण बनाउन प्रदेश सरकारको तत्परता देखिनु, सापेक्षिक रूपमा कच्चा पदार्थको स्रोत जल, जमिन, जङ्गल र खानी उपलब्ध हुनु, कृषि तथा पशुजन्य उत्पादनमा आधारित उद्योगका निम्ति उपयुक्त आन्तरिक बजार हुनु, औद्योगिक पूर्वाधार निर्माणमा सरकारको लगानी बढ्दै जानु, दक्ष प्राविधिक एवम् सिपयुक्त जनशक्ति उत्पादन गर्ने प्रतिष्ठानहरू स्वदेशमै हुनु प्रदेशका निम्ति औद्योगिक क्षेत्रको विकासका अवसरहरू हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

औद्योगिक उत्पादनको अभिवृद्धि, प्रदेशको समृद्धि।

६. लक्ष्य

औद्योगिक क्षेत्रको विकास र विस्तारद्वारा कृषिको औद्योगिकीकरण, औद्योगिक रोजगारीको सिर्जना, निर्यात प्रवर्द्धन र आयात प्रतिस्थापनमा सहयोग पुगी समृद्धिको आधार तयार भएको हुनेछ।

७. उद्देश्य

- उपलब्ध स्रोत, सिप र क्षमतामा आधारित उद्योगहरूको प्रवर्द्धनद्वारा प्रादेशिक गार्हस्थ्य उत्पादनमा औद्योगिक क्षेत्रको योगदान बढाउनु,
- उद्योगको प्रवर्द्धनद्वारा व्यापार घाटा, बेरोजगारी र गरिबी न्यूनीकरण गर्नु र
- समग्र उद्योग क्षेत्रलाई वातावरणमैत्री बनाई मानव स्वास्थ्य, सांस्कृतिक सम्पदा र प्राकृतिक स्रोतहरूको संरक्षण गर्नु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
४.३.१ औद्योगिक लगानीका निम्ति अनुकूल वातावरण तयार गर्ने।	<ul style="list-style-type: none">• औद्योगिक विकासको लागि उद्योग दत्तदिखि बहिर्गमनसम्मको प्रक्रियालाई सरलीकरण गर्न सहयोग पुग्नेगरी लगानी मैत्री प्रादेशिक औद्योगिक नीति, कानुन आदि तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ।• उद्योग स्थापनाका निम्ति आवश्यक पर्ने जमिन प्राप्त गर्न तथा पूर्वाधार विकासमा लगानीकर्तालाई सहयोग गरिनेछ।• श्रममूलक, निर्यातजन्य र आयात प्रतिस्थापन हुने लगानीलाई प्राथमिकता दिइनेछ।• उद्योग विकास तथा लगानी प्रवर्द्धन कोषको स्थापना गरिनेछ।• झन्झटमुक्त उद्योगदत्ता र अनुमति, नवीकरण, खारेजी प्रक्रियाको कानुनी सुनिश्चितता गरिनेछ।• राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय पूँजी लगानीका लागि प्रदेश लगानी बोर्ड गठन गरिनेछ।• प्रत्येक स्थानीय तहमा सम्भाव्यताको आधारमा प्राविधिक महाविद्यालय स्थापनामा जोड दिई उत्पादित जनशक्तिलाई स्वरोजगार सिर्जनामा सहयोग गरिनेछ।• नव प्रवर्तनलाई बढावा दिन बिजनेस इन्क्यूबेसन सेन्टर र भेन्चर क्यापिटलको प्रवर्द्धन गरिनेछ।
४.३.२	<ul style="list-style-type: none">• कृषि तथा गैरकाष्ठमा आधारित प्रशोधन उद्योगलाई प्राथमिकता दिइनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
स्थानीय स्रोत साधन, परम्परागत सिप र प्रविधिमा आधारित लघु उद्यम, घरेलु तथा साना उद्योगको विकासलाई प्राथमिकता दिने।	<ul style="list-style-type: none"> स्थानीय कच्चा पदार्थमा आधारित उद्योगको स्थापनाको लागि सहयोग गरिनेछ। बहुमूल्य जडीबुटीबाट अधिकतम् फाइदा लिन जडीबुटी प्रशोधन तथा जडीबुटीमा आधारित औषधीजन्य वस्तुको उत्पादन र निकासीमा विशेष जोड दिइनेछ। सहकारीमा आधारित लघु उद्यम, घरेलु तथा साना उद्योगलाई प्रोत्साहन दिइनेछ। कम्तीका एक तहको प्रशोधनपछि मात्र कृषि र वनजन्य वस्तुहरूको निकासी गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ। बन्द भएका खनिज उद्योगहरूलाई सञ्चालनमा ल्याउने व्यवस्था मिलाउनुका साथै सम्भाव्य खानीजन्य वस्तुहरूको अनुसन्धान, अन्वेषण र उत्खननका कार्यक्रमहरू अघि बढाइनेछ। रैथाने बाली, जडिबुटी, उच्च मूल्यका फलफूल तथा काष्ठकला र हस्तकलाका सामानहरूको उत्पादनलाई प्रोत्साहित गरिनेछ। कृषि उद्योगबाट उत्पादित वस्तुको गुणस्तर प्रमाणीकरणका लागि एकडिटेड प्रयोगशालाहरूको सहजता, तथा ब्रान्डिङ र ट्रेडमार्कहरू लिन सहज हुने व्यवस्था मिलाइनेछ।
४.३.३ उद्योगहरूलाई आवश्यक पर्ने पूर्वाधार विकासमा जोड दिने।	<ul style="list-style-type: none"> व्यवस्थित पूर्वाधार र आधुनिक सुविधासहितको औद्योगिक पार्क र औद्योगिक ग्रामहरूको निर्माण गरिनेछ। निजी क्षेत्रलाई प्रोत्साहन गर्न उद्योग क्षेत्रमा पहुँचमार्ग, विद्युत लाइन र सञ्चार सञ्जालको विस्तार गरिनेछ। सम्भाव्यताको आधारमा औद्योगिक क्षेत्र र विशेष आर्थिक क्षेत्रहरूको विकास गरिनेछ। औद्योगिक उत्पादनको गुणस्तर वृद्धि गर्न गुणस्तर परीक्षण क्षमता वृद्धि गरिनेछ।
४.३.४ समग्र उद्योग क्षेत्रलाई वातावरणमैत्री बनाउने।	<ul style="list-style-type: none"> औद्योगिक प्रदूषण नियन्त्रण तथा न्यूनीकरणका प्रविधिहरूको अवलम्बन गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ। काठमाडौं उपत्यकाभित्र रहेका छाला, प्लाष्टिक, रासायनिक, र ईटा लगायत अन्य वातावरण प्रदूषण गर्ने उद्योगहरूलाई विकल्पसहित स्थानान्तरण गरिनेछ। नदीजन्य सामग्रीहरूको दोहन गर्ने र वातावरणमा असर पुऱ्याउन सक्ने क्रसर उद्योगहरूको नियमन गर्न आवश्यक मापदण्ड बनाइनेछ। वातावरण प्रदूषण गर्ने उद्योगहरूबाट निस्कने फोहरहरूको विसर्जन पूर्व अनिवार्य प्रशोधन गर्नुपर्ने नीतिको प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय
------	--------------	---------------------

सं.		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	विशेष आर्थिक क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, औद्योगिक पार्क र औद्योगिक ग्रामहरूको निर्माण	√	√	√	√	√
२	रैथाने बाली, जडिबुटी, उच्च मूल्यका फलफूल तथा काष्ठकला र हस्तकलाका सामानहरूको उत्पादनलाई प्रोत्साहन	√	√	√	√	√
३	जडीबुटी प्रशोधन तथा जडीबुटीमा आधारित औषधीजन्य वस्तुको उत्पादन र निकासीमा सहयोग	√	√	√	√	√
४	औद्योगिक प्रदूषण नियन्त्रण तथा न्यूनीकरणका प्रविधिहरूको अवलम्बन गर्न प्रोत्साहन	√	√	√	√	√
५	काठमाडौं उपत्यकाभित्र वातावरण प्रदूषण गर्ने उद्योगहरूलाई विकल्पसहित स्थानान्तरण	√	√	√	√	√
६	उद्योगहरूबाट निस्कने फोहरहरूको विसर्जन पूर्व अनिवार्य प्रशोधन गर्नुपर्ने नीतिको प्रभावकारी कार्यान्वयन	√	√	√	√	√
७	लघु उद्यम, घरेलु तथा साना उद्योगलाई प्रोत्साहन	√	√	√	√	√
८	स्थानीय कच्चा पदार्थमा आधारित उद्योगको स्थापनाका लागि सहयोग	√	√	√	√	√
९	विजनेस इन्क्युबेसन सेन्टर र भेन्चर क्यापिटलको प्रवर्द्धन	√	√	√	√	√
१०	क्रसर उद्योगहरूको नियमन गर्न आवश्यक मापदण्ड र तर्जुमा	√	√	√	√	
११	उद्योग विकास तथा लगानी प्रवर्द्धन कोषको स्थापना	√	√	√	√	√

१०. अपेक्षित उपलब्धि

सबै किसिमका उद्योगहरूको स्थापना तथा विस्तार भई थप रोजगारीका अवसरहरूको सिर्जना भएको हुने, सहकारी र निजी क्षेत्रमार्फत् कृषिको औद्योगिकीकरणको गति बढेको हुने, प्रशोधित कृषि वस्तुको निकासीमा वृद्धि भई निर्यात बढेको हुने र स्तरीय तथा भरपर्दो पूर्वाधारका कारण औद्योगिक क्षेत्रको उत्पादन र उत्पादकत्व बढेको हुने।

४.४ वाणिज्य तथा आपूर्ति क्षेत्र

१ पृष्ठभूमि

वाणिज्य क्षेत्रको विकासले व्यापार र यसका पूर्वाधारहरूको विकासमा योगदान दिने हुनाले मुलुकभित्र वस्तु तथा सेवाको सहज आपूर्ति र देशमा उत्पादित वस्तु तथा सेवाको मुलुकबाहिर निर्यात हुने वातावरण तयार गर्दछ। तुलनात्मक तथा प्रतिस्पर्धात्मक लाभका क्षेत्रको पहिचान गरी वाणिज्य क्षेत्रको विकास र विस्तारद्वारा निर्यात प्रवर्द्धन गर्दै वस्तु तथा सेवाको विकास र विस्तार गर्ने उद्देश्यका साथ वाणिज्य नीति, २०७२ र नेपाल व्यापार एकीकृत रणनीति, २०७३ कार्यान्वयनमा छन्। आवश्यक वस्तु तथा सेवा सुलभ तथा सहज रूपमा उपलब्ध गराउन गोदाम व्यवस्थापन, बजार अनुगमन, आपूर्ति सूचना व्यवस्थापन, मिलेमतो र कालोबजारी नियन्त्रण, प्रतिस्पर्धी बजार प्रवर्द्धनजस्ता कार्यक्रमलाई प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन गर्न आवश्यक छ।

प्रदेशले आवश्यकता अनुसार वाणिज्य क्षेत्रमा नीति, ऐन, नियमहरूको निर्माण; वाणिज्यसम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानून, मापदण्ड, योजना, कार्यान्वयन र नियमन; प्रादेशिक व्यापार प्रवर्द्धन, सहजीकरण; प्रदेशभित्रको व्यापार पूर्वाधार निर्माण

र सञ्चालन; व्यापारसम्बन्धी सिन्डिकेट/कार्टेलिङ नियन्त्रण; प्रतिस्पर्धासम्बन्धी नीति तथा कानून, मापदण्डको कार्यान्वयन र नियमन; व्यापारिक फर्महरूको दर्ता/नवीकरण, खारेजी र नियमन; प्रदेशगत सार्वजनिक संस्थान, समिति, प्रतिष्ठान तथा कम्पनी आदिको सञ्चालन, व्यवस्थापन सुधार तथा नियमन; प्रादेशिक व्यापारको तथ्याङ्क प्रणाली र अध्ययन अनुसन्धान गर्न सक्ने व्यवस्था संविधानले गरेको छ। स्थानीय बजार व्यवस्थापन तथा अनुगमन र उपभोक्ता अधिकार एवम् उपभोक्ता हित संरक्षणमा स्थानीय तहलाई प्रदेश सरकारले समन्वय तथा सहजीकरण गर्न सक्दछ।

२ वस्तुगत स्थिति

पस्मिना, कार्पेट, गार्मेन्ट, हस्तकलाका सामान, जुत्ता लगायतका महत्वपूर्ण निर्यातजन्य औद्योगिक वस्तुहरूको प्रमुख उत्पादन स्थल यो प्रदेश हो। यो प्रदेश सबैभन्दा बढी आयातित वस्तु (खाद्य सामग्री, मोटरकार, ईन्धन, विजुली, ब्रान्डेड सामान) खपत गर्ने प्रदेश पनि हो। हवाईमार्गबाट सबैभन्दा बढी आयात र निर्यात त्रिभुवन विमानस्थलबाट हुने गरेको छ। आयात व्यवस्थापनका लागि यस प्रदेशको काठमाडौंको चोभार, रसुवा र तातोपानीमा सुक्खा बन्दरगाह बनाउने संघीय सरकारको योजना रहेको छ।

नेपाल आयल निगमले हालको पेट्रोलियम भण्डारण क्षमतालाई बढाउन काभ्रेको पाँचखालमा र नुवाकोटको बट्टारमा पेट्रोल भण्डारण डिपो बनाउने र काठमाडौंमा भण्डारण क्षमता बढाउने योजना रहेको छ। हाल समग्र मुलुकमा पेट्रोलियम पदार्थको भण्डारण क्षमता बिक्री धान्ने अवधि औसतमा १४ दिन छ भने यस प्रदेशको १६ दिन छ।

यस प्रदेशमा काठमाण्डौं, काभ्रे र सिन्धुलीमा कृषिउपज थोक बजार स्थलहरू छन्। सबैभन्दा ठूलो थोक बजार काठमाडौं कालिमाटीमा दैनिक औसत ७०० मे.ट .तरकारी तथा फलफूल बिक्री भई रू ३ करोडसम्मको कारोबार हुने गर्छ।

प्रदेशमा अवस्थित आपूर्ति प्रकृत्यामा संलग्न संस्थाहरूमा नेसनल ट्रेडिङ लिमिटेड टेकु, काठमाडौंले सिमेन्ट, विद्युतीय मोटर, स्टिल, मदिरा र उपभोग्य वस्तु आपूर्ति गर्छ, नेपाल खाद्य संस्थान लिमिटेड भद्रकाली प्लाजा, काठमाडौंले खाद्यान्न, खसी बोका आदि आपूर्ति गर्दछ, साल्ट ट्रेडिङ कर्पोरेशन लिमिटेड कालिमाटी, काठमाडौंले नुन र अति आवश्यक वस्तु आपूर्ति गर्दछ भने नेपाल आयल निगम लिमिटेड बबरमहल, काठमाडौंले पेट्रोलियम पदार्थ आपूर्ति गर्दछ।

३ समस्या र चुनौती

सम्भाव्य र तुलनात्मक लाभ भएका कृषि वस्तुमासमेत आन्तरिक उत्पादनद्वारा आपूर्ति हुन नसक्नु र सबै वस्तुको आपूर्ति व्यवस्थालाई सहज र विश्वसनीय बनाउन नसक्नु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्। प्रदेशभित्र उत्पादन हुने निर्यातजन्य वस्तुहरूको अन्तर्राष्ट्रिय मापदण्ड अनुसार गुणस्तर कायम गर्नु, कृषि तथा वनस्पतिजन्य वस्तुहरूको सहज निकासीका लागि निर्यात नाकामै क्वारेन्टाइनको व्यवस्था गर्नु, निर्माणाधीन सुक्खा बन्दरगाह र पेट्रोलियम भण्डारण डिपोहरू चाँडो निर्माण गर्नु, कृषि उत्पादन केन्द्र र उपभोग क्षेत्रलाई जोड्ने सडक पूर्वाधारको निर्माण वा नियमित मर्मत सम्भार गर्नु, कृषि थोक बजार, बिक्री केन्द्र व्यवस्थापन गर्नु, आन्तरिक आपूर्ति प्रणालीमा कार्टेलिङ, सिन्डिकेट र विचौलियाको अन्त्य गर्नु, र स्वच्छ एवम् प्रतिस्पर्धी बजार संयन्त्रमार्फत् आपूर्ति व्यवस्था सहज बनाई उपभोक्ता हकहित संरक्षण गर्नु वाणिज्य र आपूर्ति क्षेत्रका चुनौतीहरू हुन्।

४ सम्भावना र अवसर

प्रदेशमा महत्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र र कृषि उत्पादन क्षेत्रहरू रहेकाले वाणिज्य विकासको सम्भावना रहेको, राजमार्गहरू र सडक सञ्जालहरूको पहुँच तुलनात्मक रूपमा राम्रो रहेकाले प्रतिएकाइ लागत कम भई व्यापार विस्तारको

सम्भावना भएको र अन्तर्राष्ट्रिय व्यापार नाकाहरू) रसुवा, तातोपानी आदि(को विकास गर्न सकिने भएकाले वाणिज्य तथा आपूर्ति क्षेत्रमा प्रशस्त अवसरहरू देखिन्छ। उद्योगहरूको विकासको प्रचुर सम्भावना भएकोले आयात प्रतिस्थापन गर्न सकिने सम्भावना छ।

५ दीर्घकालीन सोच

वाणिज्य क्षेत्रको विस्तार र सहज आपूर्ति

६ लक्ष्य

प्रदेशको व्यापार प्रवर्द्धन तथा आपूर्ति व्यवस्था सुदृढ गर्ने।

७ उद्देश्य

१. प्रादेशिक बजार केन्द्रहरूको सुव्यवस्थामार्फत् अत्यावश्यक वस्तुहरूको आन्तरिक आपूर्ति प्रणालीलाई सुदृढ बनाई स्वच्छ, स्वस्थ उपभोग्य वस्तुहरू उपलब्ध गराउनु र
२. स्थानीय कच्चा पदार्थ, स्रोत, साधन र सिपमा आधारित वस्तुको उत्पादन र निकासी प्रवर्द्धन गर्नु।

८ रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
४.४.१ स्वच्छ र स्वस्थ अत्यावश्यक उपभोग्य वस्तुहरूको सुलभ आपूर्ति र वितरण प्रणालीको विकास गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • व्यापार/वाणिज्यसम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानून, मापदण्ड र योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयन र नियमन गरिनेछ। • उत्पादित वस्तुहरूमा मापदण्ड अनुसारको गुणस्तर सुनिश्चित गर्न गुणस्तर परीक्षण प्रयोगशालाहरूको विकास गरिनेछ। • कृषि वस्तुको समर्थन मूल्य, गोदाम घर, शीत भण्डार, प्रादेशिक बफरस्टकको व्यवस्था गरिनेछ। • प्रमुख शहरी केन्द्रमा कृषि वस्तु सङ्कलन केन्द्र र बिक्री केन्द्र विस्तार गर्न सहयोग गरिनेछ। • कृषिजन्य वस्तुहरू बजारमा पुऱ्याउनु अघि कृषिको पकेट क्षेत्र र बजार केन्द्रहरूमा विषादी परीक्षण गरिनेछ। • बजारको सहज पहुँच नभएका क्षेत्रमा सहकारीको माध्यमबाट सुपथ मूल्यका पसलहरू सञ्चालन गरिनेछ। • आन्तरिक आपूर्ति प्रणालीमा कालोबजारी, काटेँलिंग, सिन्डिकेट र विचौलियाको नियन्त्रण गरिनेछ। • आपूर्तिमा आइपनेँ अवरोध घटाउन निजी क्षेत्रसँग सहकार्य गरिनेछ।
४.४.२ निर्यात हुने वस्तु तथा सेवाको उत्पादन वृद्धि हुने वातावरण तयार गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • निर्यातजन्य वस्तुहरूको पहिचान र विकास गर्न निजी तथा सहकारी संस्थाहरूलाई सहयोग गरिनेछ। • निर्यात प्रवर्द्धनका लागि उत्पादन क्षेत्रदेखि निकासी विन्दुसम्मको आवश्यक पूर्वाधार निर्माण गरिनेछ।

९ प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	कालोबजारी, कार्टेलिंग, सिन्डिकेट र विचौलियाको नियन्त्रण	√	√	√	√	√
२	निर्यातजन्य वस्तुहरूको पहिचान र विकास गर्न निजी तथा सहकारी संस्थाहरूलाई सहयोग	√	√	√	√	√
३	गुणस्तर परीक्षण प्रयोगशालाहरूको विकास	√	√	√	√	√
४	कृषिको पकेट क्षेत्र र बजार केन्द्रहरूमा विषादी परीक्षण	√	√	√	√	√
५	प्रमुख शहरी केन्द्रमा कृषि वस्तु सङ्कलन केन्द्र र बिक्री केन्द्र विस्तार	√	√	√	√	√
६	सहज पहुँच नभएका क्षेत्रमा सहकारीको माध्यमबाट सुपथ मूल्यका पसलहरू सञ्चाल		√	√		√
७	गोदाम घर, शीत भण्डार, प्रादेशिक बफरस्टकको व्यवस्था	√	√	√	√	√

१० अपेक्षित उपलब्धि

अत्यावश्यक वस्तुको आपूर्ति नियमित र विश्वसनीय भएको हुने, गुणस्तर परीक्षण प्रयोगशाला र स्थलगत परीक्षणको व्यवस्था हुने, सहज आपूर्तिको लागि पूर्वाधारहरूको विकास भएको हुने, व्यापार/बाणिज्यसम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानून, मापदण्ड र योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयन र नियमन भएको हुने र आयात प्रतिस्थापनका कारण व्यापार घाटामा सुधार हुने।

४.५ पर्यटन क्षेत्र

१. पृष्ठभूमि

यो प्रदेश प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, साहसिक लगायत सबै हिसाबले नेपालको अग्रणी पर्यटन क्षेत्र हो। विदेशी पर्यटकका लागि नेपालको प्रवेशद्वारको रूपमा रहेको यो प्रदेश नेपाली कला, सांस्कृतिको परिचायक पनि हो। नेपालमा सन् २०१७ मा पर्यटनबाट रू १ खर्व ७७ अर्ब भित्रिएर कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा ३.६ प्रतिशत योगदान पुगेको थियो। विश्व पर्यटन परिषद्का अनुसार पर्यटनबाट हुने अप्रत्यक्ष योगदानसमेत जोड्दा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा ७.५ प्रतिशत पुग्ने देखिन्छ। नेपालको पर्यटनको मुख्य लाभ यस प्रदेश र खास गरेर काठमाण्डौ उपत्यकालाई हुन्छ भने सन् २०२० सम्ममा वार्षिक २० लाख पर्यटक भित्र्याउने नेपालले राखेको लक्ष्य हासिल गर्न सबभन्दा बढी योगदान पनि यसै प्रदेशले गर्नुपर्ने हुन्छ। समग्र नेपाल र खासगरी यस प्रदेशका निमित्त पर्यटन क्षेत्र आय, संचित, पूँजी निर्माण, रोजगारी, विदेशी मुद्रा संचिति र पूर्वाधार निर्माण लगायत सबै दृष्टिले प्रदेश अर्थतन्त्रको एक प्रमुख आधार हो।

प्रदेश सरकारको कार्यक्षेत्रमा प्रादेशिक पर्यटन विकासको नीति, कानून, मापदण्ड, योजना, नियमन, पर्यटन व्यवसायको व्यवस्थापन, प्रादेशिक पर्यटनको प्रवर्द्धन र पर्यटकीय वस्तु र पूर्वाधारको पहिचान, विकास र प्रवर्द्धन आदि सम्बद्ध विषयहरू पर्दछन्।

२. वस्तुगत स्थिति

विश्व सम्पदा सूचीमा सूचीकृत नेपालमा रहेका १० वटामध्ये ८ वटा सम्पदाहरू (चाँगुनारायण मन्दिर, भक्तपुर दरबार क्षेत्र, स्वयम्भूनाथ स्तूपा, पशुपति मन्दिर क्षेत्र, पाटन दरबार क्षेत्र, हनुमान ढोका दरबार, बौद्धनाथ महाचैत्य र चितवन राष्ट्रिय

निकुञ्ज) यो प्रदेशमा रहेका छन्। त्यसैगरी, चितवन राष्ट्रिय निकुञ्ज, शिवपुरी राष्ट्रिय निकुञ्ज, लाडटाड राष्ट्रिय निकुञ्ज, पर्सा राष्ट्रिय निकुञ्ज (मध्यवर्ती क्षेत्रका केही भाग) र गौरीशंकर संरक्षण क्षेत्रजस्ता पर्यापर्यटनका स्थलहरू यसै प्रदेशमा छन्।

यस प्रदेशमा साहसिक पर्यटन अन्तर्गत न्यापिटडका लागि त्रिशुली, सुनकोसी र भोटेकोसी नदी; कायाकिडका लागि त्रिशुली र भोटेकोसी नदी; क्यान्योनिडका लागि चितवनको जलविरे, सुन्दरीजल, ककनी, भुलकुती, सुनकोसी र भोटेकोसी; जङ्गल सफारीका लागि चितवन राष्ट्रिय निकुञ्ज र शिवपुरी राष्ट्रिय निकुञ्ज; वन्जी जम्पिडका लागि भोटेकोसी; माउन्टेन बाईक टुरका लागि काठमाण्डौ र नगरकोट क्षेत्र; पर्वतारोहणका लागि लाडटाड, गणेश हिमाल तथा रोलवालिड हिमाल; र पाराग्लाइडिङका लागि काठमाण्डौ वरपरका डाँडाहरू उपयुक्त छन्। नगरकोट, धुलिखेलजस्ता क्षेत्र रिसोर्ट पर्यटनका लागि प्रसिद्ध छन्।

त्यस्तै यस प्रदेशमा तामाङ सम्पदा पदमार्ग, गणेश हिमाल पदमार्ग, लाडटाड उपत्यका-गोसाइकुण्ड पदमार्ग, कालिञ्जोक पदमार्ग, नगरकोट-हेलम्बु पदमार्ग, काठमाण्डौ भ्याली पदमार्ग (तारकेश्वर महादेव, मुलखर्क, चिसापानी, नगरकोट, धुलिखेल र नमोबुद्ध), लाडटाड-जुगल हिमाल पदमार्गजस्ता मनोरम पदमार्गहरू छन्।

सांस्कृतिक र जैविक विविधता यो प्रदेशको विशेषता हो। नेपालका दुई विशिष्ट बन्धजन्तु - एकसिंगे गैंडा र बाघको प्रमुख बासस्थान चितवन राष्ट्रिय निकुञ्ज हो। जातजातिको हिसाबले तामाङ र नेवार संस्कृतिको यो प्रदेश विशिष्ट थलो हो।

यो प्रदेश नेपालको सबैभन्दा बढी पर्यटकीय सुविधा भएको प्रदेश हो। आ.व. २०७४/७५ को प्रदेशगत तथ्याङ्कमा काठमाडौंमा २३५३८ शैयासहितका ६०८ होटलहरू, चितवनमा ११४८० शैयासहितका ४१० होटलहरू, मकवानपुरमा २५०० शैयासहितका ८९ होटलहरू र काभ्रेमा ७०२ कोठासहितका २५ होटलहरू छन्। त्यसैगरी, काठमाडौंमा ४१२ कोठासहितको ११२ होमस्टे, काभ्रेमा १३७ कोठासहित ५४ होमस्टे र रामेछापमा ११६ कोठासहित ३१ होमस्टेहरू दर्ता छन्। ललितपुर, नुवाकोट, चितवन र धादिङमा पनि होमस्टेहरू सञ्चालनमा रहेका छन्।

३. समस्या र चुनौती

पर्यटन वस्तु र गन्तव्यमा विविधीकरण हुन नसक्नु, गुणस्तरीय पर्यटकहरू आकर्षण गर्ने वस्तु, सेवा र जनशक्तिको यथेष्ट विकास नहुनु, पर्यटन पूर्वाधार गुणस्तरीय नहुनु, पर्यटन पूर्वाधारमा सार्वजनिक लगानी कम हुनु, अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा नेपालको पर्यटनको प्रवर्द्धन हुन नसक्नु यस क्षेत्रका प्रमुख समस्याहरू हुन्।

काठमाडौं केन्द्रित पर्यटनलाई अन्य क्षेत्रमा पनि विस्तार गरी पर्यटक बसाइ लम्ब्याउनु, पर्यटन गन्तव्यको विविधीकरण र विकास गर्नु, पर्यटनको केन्द्र काठमाडौं उपत्यकाको वातावरण स्वच्छ राख्नु, गुणस्तरयुक्त पहुँच मार्गको विकास गर्नु, पर्यटन क्षेत्रमा गुणस्तरीय जनशक्ति विकास गर्नु, पर्यटन गन्तव्यको ब्रान्डिङ गर्दै पर्यटकीय सूचनाको संप्रेषण गर्नु, पर्यटन सेवा) होटल, होमस्टे, यातायात आदि (गुणस्तरीय बनाउनु, पर्यटन आयको फराकिलो वितरण गर्नु तथा सांस्कृतिक सम्पदा र जीवित सांस्कृतिक परम्पराको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्नु पर्यटन क्षेत्रका चुनौतीका रूपमा रहेका छन्।

४. सम्भावना र अवसर

विशिष्ट पर्यटन गन्तव्य, धार्मिक तथा सांस्कृतिक सम्पदा, जैविक विविधता युक्त निकुञ्ज र संरक्षण क्षेत्र, तीर्थस्थल, विश्व सम्पदा सूचीमा सूचीकृत ८ सम्पदाहरूको थलो, रमणीय तथा महत्वपूर्ण पदमार्गहरू, हिलस्टेशनहरू, -न्यापिटड साइटहरू, हिमाल आरोहण, नेपालमा पर्यटकको मूल प्रवेशद्वारको रूपमा रहेको अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थल, चीन, भारत लगायत छिमेकी मुलुकका पचासभन्दा बढी शहरबाट एक घण्टामै आउन सकिने अवस्था यस प्रदेशका पर्यटन विकासका अवसरहरू हुन्। तारे होटलहरू, पर्यटक होटलहरू, होमस्टे लगायत पर्यटन पूर्वाधारमा बढ्दो निजी क्षेत्रको लगानीले यस प्रदेशमा पर्यटन विकासका महत्वपूर्ण अवसरहरू प्रदान गरेका छन्।

५. दीर्घकालीन सोच
पर्यटन आयमा वृद्धि; रोजगारी र समृद्धि
६. लक्ष्य
पर्यटन सेवा र गन्तव्यको विविधीकरण गर्ने।
७. उद्देश्य
१. आन्तरिक, बाह्य तथा छिमेकी मुलुकका पर्यटकहरू आकर्षित गर्ने र बसाइ लम्ब्याउनु र
 २. पर्यटकीय वस्तु तथा सेवाको विकास, विस्तार र विविधीकरण गर्दै रोजगारी र आयआर्जनको भरपर्दो र दिगो स्रोत बनाउनु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
४.५.१ नयाँ पर्यटन गन्तव्यहरूको पहिचान र विकास गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • प्रादेशिक पर्यटन गुरुयोजना/रणनीतिक योजना तर्जुमा गरिनेछ र चरणबद्ध कार्यान्वयन गरिनेछ। • संघीय सरकारसँगको सहकार्यमा नयाँ पर्यटकीय गन्तव्यहरूको पहिचान, छनौट र अध्ययन गरी पूर्वाधार विकास गरिनेछ। • पर्यटनको सम्भाव्यता भएका जिरी, शैलुङ, कालिञ्चोक र महाभारत क्षेत्रका हिलस्टेशनहरूको एकीकृत विकासको लागि सडक लगायतका पूर्वाधार स्तरीकरण वा निर्माणलाई प्राथमिकता दिइनेछ। • महाभारत क्षेत्र र अन्य उपयुक्त स्थानहरूको सम्भाव्यताका आधारमा नयाँ (हिलस्टेशन, रिसोर्ट, पदमार्ग आदि) गन्तव्य स्थलको पहिचान, विकास र प्रवर्द्धन गरिनेछ। • पर्वतारोहण, पर्यापर्यटन तथा साहसिक पर्यटन र खेलकुद पर्यटन क्षेत्रको पहिचान गरी विकास गरिनेछ। • पर्यटन क्षेत्रको लाभलाई ग्रामीण तहसम्म पुऱ्याउन होमस्टेलाई एक प्रमुख माध्यमको रूपमा विकास गरिनेछ। • त्रिभुवन राजपथलाई पर्यटन मार्गको रूपमा विकास गरिनेछ। • मौसमी पर्यटकीय स्थानको पहिचान तथा विकास गरिनेछ। • जैविक कृषि तथा होमस्टेसहितको कृषि पर्यटनलाई बढावा दिने कार्यक्रम सञ्चालन गरिने छ। • चितवनको दासढुङ्गा देखि गादिपुर/गोलालघाटसम्म मदन-आश्रित एकीकृत वृहत् विकास परियोजना तर्जुमा गरी पर्यटन विकास लगायतका विविध संरचनाहरू निर्माण गर्न संघीय सरकार र स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। • राष्ट्रिय, प्रादेशिक र स्थानीय प्रमुख लोकमार्गहरूलाई सम्भाव्यताको आधारमा पर्यटन करिडोरको रूपमा विकास गरिनेछ। • गणेश हिमालदेखि गौरीशङ्कर हिमालसम्मको क्षेत्रलाई हिमाली पर्यटन क्षेत्रको रूपमा एकीकृत विकास गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
<p>४.५.२ उच्च मूल्यको गुणस्तरीय पर्यटनको प्रवर्द्धन गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> स्थापित पर्यटकीय क्षेत्रहरूमा उच्च मूल्यको पर्यटन विस्तारमा निजी क्षेत्रलाई प्रोत्साहन गरिनेछ। उच्च मूल्यको पर्यटनका निम्ति आवश्यक जनशक्ति र सेवास्तरको विकासमा प्रोत्साहन दिइनेछ र गुणस्तर कायम राख्न प्रभावकारी नियमनको व्यवस्था गरिनेछ। गुणस्तरीय पर्यटनका लागि तारे होटलसहितको सुविधा विस्तार र प्रवर्द्धनमा ध्यान दिइनेछ। उच्च शिक्षामा पर्यटनसम्बन्धी पाठ्यक्रम समावेश गरिनेछ।
<p>४.५.३ पर्यटन क्षेत्रको विकासको लागि स्थानीय तह, निजी क्षेत्र र समुदायसँग सहकार्य गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> पर्यटन पूर्वाधार विकासमा स्थानीय तह, स्थानीय समुदाय तथा निजी क्षेत्रको नेतृत्वदायी भूमिका र सहभागितालाई प्रोत्साहित गरिनेछ। पर्यटनलाई स्थानीय समुदायको विकाससँग आबद्ध गरिनेछ। पर्यटकीय उपज र मूल्य श्रृङ्खलाबीच सम्बन्ध कायम गरिनेछ। प्रमुख पदमार्गहरूमा जैविक र जातिविशेषका सांस्कृतिक सम्पदाको रूपमा रहेका शैलुङ, फूलचोकी, कालिञ्चोक, दामन लगायतका क्षेत्रहरूको विकास गरिनेछ। रसुवा जिल्लाको स्याफ्रुवेशीदेखि लाङटाङ उपत्यकाको क्याङजिङ जाने डा.प्रल्हाद योजन रेड पाण्डा पदमार्ग र संग्रहालयको विकास गरिनेछ। प्रदेशभित्रका पर्यटन स्थलबाट छिमेकका पर्यटन गन्तव्य पुग्ने पर्यटन पूर्वाधारको स्तरीकरण गरिनेछ। निजी क्षेत्रलाई पूर्वाधार निर्माणमा सहयोग गरी प्रमुख पर्यटकीय स्थलहरूमा स्तरीय होटलहरूको विकासलाई प्रोत्साहन दिइनेछ। पर्यटन पूर्वाधार निर्माणमा निजी क्षेत्रसँग सहकार्य गरी निजी क्षेत्रको लगानी अभिवृद्धि गरिनेछ।
<p>४.५.४ पर्यटक सूचना, यातायात र सेवा प्रवाहलाई गुणस्तरीय र विश्वसनीय बनाउने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> पर्यटन गन्तव्यको ब्रान्डिङ गर्दै पर्यटकीय वस्तुको प्रवर्द्धनमा आधुनिक सूचना प्रविधिको प्रयोग गरिनेछ। सम्भाव्यता भएका हरेक स्थानीय तहमा गन्तव्य र सुविधाबारे जानकारी दिन पर्यटन सूचना केन्द्र स्थापना गरिनेछ। आन्तरिक पर्यटन प्रवर्द्धन गर्न शहरी क्षेत्रहरूमा विशेष प्रचार-प्रसार र सामाजिक सञ्जालको प्रयोग गरिनेछ। भारतका प्रमुख शहरहरूमा हवाई सेवा र बस सेवा सञ्चालन गर्न संघीय सरकारसँग सहकार्य गरिनेछ। काठमाडौं केन्द्रित पर्यटनलाई अन्य क्षेत्रमा पनि विस्तार गर्न काठमाडौं आसपासमा पर्यटन गन्तव्यको विकास र सहज पहुँच मार्गको विकास गरिनेछ। पर्यटनमैत्री व्यवहार प्रवर्द्धनका लागि क्षमता अभिवृद्धिका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। पर्यटकहरूको नक्कली उद्धार) फेक रेस्क्यु(मा संलग्न पर्यटक, पर्यटन व्यवसायी र सो कार्यमा संलग्न निकाय र व्यक्तिहरूलाई कारवाही गर्ने नीति लिइनेछ। ठगी?

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	नयाँ पर्यटकीय गन्तव्यहरूको पहिचान, छनौट र अध्ययन गरी पूर्वाधार विकास	√	√	√	√	√
२	पर्यटनको सम्भाव्यता भएका जिरी, शैलुङ, कालिञ्चोक र महाभारत क्षेत्र लगायतका हिलस्टेशनहरूमा सडक पूर्वाधार स्तरीकरण तथा निर्माण	√	√	√	√	
३	पर्यटन पूर्वाधार विकासमा स्थानीय तह, स्थानीय समुदाय तथा निजी क्षेत्रको नेतृत्वदायी भूमिका र सहभागितामा बृद्धि	√	√	√	√	
४	काठमाडौं केन्द्रित पर्यटनलाई अन्य क्षेत्रमा पनि विस्तार गर्न काठमाडौं आसपासमा पर्यटन गन्तव्यको विकास र सहज पहुँच मार्गको विकास	√	√	√	√	
५	पर्यटन सूचना केन्द्र स्थापना	√	√	√	√	
६	संघ, गण्डकी प्रदेश, प्रदेश नं. ५ र सम्बन्धित स्थानीय तहसँगको सहकार्यमा चितवनको दासढुङ्गा देखि गाँजीपुरहुँदै गोलाघाटसम्म मदन-आश्रित एकीकृत वृहत् विकास परियोजना तर्जुमा गरी पर्यटन विकास लगायतका विविध संरचनाहरू निर्माण	√	√	√	√	√
७	पर्वतारोहण, पर्यापर्यटन तथा साहसिक पर्यटन र खेलकुद पर्यटन क्षेत्रको पहिचान गरी विकास	√	√	√	√	√
८	प्रमुख पदमार्गहरूमा जैविक र जातिविशेषका सांस्कृतिक सम्पदाको रूपमा रहेका शैलुङ, फूलचोकी, कालिञ्चोक, दामन लगायतका क्षेत्रहरूको विकास	√	√	√	√	√
९	पर्यटन पूर्वाधार निर्माणमा निजी क्षेत्रसँग सहकार्य गरी निजी क्षेत्रको लगानी अभिवृद्धि	√	√	√	√	√
१०	रसुवा जिल्लाको स्याफ्रुवेशीदेखि लाडटाड उपत्यकाको क्याडजिड जाने डा.प्रल्हाद योजन रेड पाण्डा पदमार्ग र संग्रहालयको विकास	√	√	√	√	
११	कृषि पर्यटनको प्रवर्द्धन	√	√	√	√	√
१२	गणेश हिमालदेखि गौरीशङ्कर हिमालसम्मको क्षेत्रलाई हिमाली पर्यटन क्षेत्रको रूपमा एकीकृत विकास	√	√	√	√	√
१३	उच्च शिक्षामा पर्यटनसम्बन्धी पाठ्यक्रम समावेश	√	√	√		
१४	पर्यटन पूर्वाधार विकासमा स्थानीय तह, स्थानीय समुदाय तथा निजी क्षेत्रको नेतृत्वदायी भूमिका र सहभागितामा बृद्धि		√	√	√	√
१५	उच्च मूल्यको पर्यटन प्रवर्द्धन	√	√	√	√	√
१६	त्रिभुवन राजपथ लगायतका मार्गलाई पर्यटन मार्गको रूपमा विकास	√	√	√	√	√
१७	पर्यटन गन्तव्यको ब्रान्डिङ	√	√	√	√	√
१८	राष्ट्रिय, प्रादेशिक र स्थानीय प्रमुख लोकमार्गहरूहरूमा सम्भाव्यताको आधारमा पर्यटन पूर्वाधारहरूको विकास	√	√	√	√	√
१९	भारतका प्रमुख शहरहरूमा हवाई सेवा र बस सेवा सञ्चालन गर्न संघीय	√	√	√		

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
	सरकारसँग सहकार्य					
२०	महाभारत क्षेत्र र अन्य उपयुक्त स्थानहरूको सम्भाव्यताका आधारमा नयाँ (हिलस्टेशन, रिसोर्ट, पदमार्ग आदि) गन्तव्य स्थलको पहिचान, विकास र प्रवर्द्धन	√	√	√	√	
२१	पर्यटकीय उपज र मूल्य श्रृंखलाबीच सम्बन्ध कायम	√	√	√	√	

१०. अपेक्षित उपलब्धि

पर्यटकहरूको सरदर बसाइ अवधि लम्बिएको र प्रतिपर्यटक प्रतिदिन खर्च बढेको, पर्यटनको भौगोलिक विकेन्द्रीकरण र पर्यटकीय वस्तुको विविधीकरण भएको, आन्तरिक पर्यटक र छिमेकी पर्यटकको आगमन बढेको, पर्यटन क्षेत्रबाट थप रोजगारी र आय सिर्जना भएको, प्रादेशिक गार्हस्थ्य उत्पादनमा पर्यटन क्षेत्रको योगदानमा वृद्धि भएको र गुणस्तरीय पर्यटकको आगमन बढेको हुने।

४.६ सहकारी क्षेत्र

१. पृष्ठभूमि

सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रको सहभागिता तथा विकासमार्फत् राष्ट्रिय अर्थतन्त्रलाई आत्मनिर्भर, स्वतन्त्र तथा उन्नतिशील बनाउने व्यवस्था संविधानमा छ। संविधानले उपलब्ध साधन र स्रोतको अधिकतम परिचालन, तीव्र र दिगो आर्थिक विकास, न्यायोचित वितरण, आर्थिक असमानताको अन्त्य र समाजवाद उन्मुख स्वतन्त्र र समृद्ध अर्थतन्त्रको विकासमा सहकारीको भूमिकालाई स्पष्ट पारेको छ। त्यसैगरी, दिगो विकास लक्ष हासिल गर्न सहकारी संस्थाहरूसँग सहकार्य आवश्यक छ।

वि.स २०१३ साल चैत्र २० गते यसै प्रदेशको चितवनमा बखान ऋण सहकारी समितिको स्थापना भएपछि सुरुवात भएको नेपालको सहकारी अभियानको ६३ वर्षको अवधिमा करिब ३५ हजार सहकारी संस्थामा करिब ६४ लाख नागरिक प्रत्यक्ष र परोक्ष रूपमा संलग्न छन्। वास्तवमा सहकारीले समेट्ने क्षेत्र व्यापक छ। यसका बहुआयामिक फाईदा तथा प्रभाव छन्। निश्चय पनि, सहकारी अभियानले मुलुकको सामाजिक आर्थिक रूपान्तरणमा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गरेका छन्।

प्रदेशको कार्यक्षेत्रभित्र सहकारी संस्थासम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानुन, मापदण्ड, कार्यान्वयन, नियमन र प्रवर्द्धन, प्रादेशिक वित्तीय सहकारी संस्थासम्बन्धी अनुमति, सञ्चालन, मापदण्ड र नियमन, सहकारी संस्थाहरूसँग समन्वय र सहकार्य, प्रादेशिक तथ्याङ्क व्यवस्थापन र अध्ययन अनुसन्धान, क्षमता अभिवृद्धि र परिचालन आदि पर्दछन्।

२. वस्तुगत स्थिति

नेपालमा सहकारी संस्थाहरूको द्रुततर विकास हुँदै गएको छ। वि.स. २०७४ असारसम्ममा नेपालमा ३४,५१२ सहकारी संस्थाहरू दर्ता भएका छन्। तीमध्ये कार्य प्रकृतिका हिसाबले ३४ प्रतिशत बचत तथा ऋण सहकारी, ३१.६ प्रतिशत कृषि सहकारी, १२.७ प्रतिशत बहुद्देशीय सहकारी, ४.८ प्रतिशत दुग्ध सहकारी र बाँकी अन्य छन्। करिब ६४ लाख नेपालीहरू सदस्यको रूपमा सहकारीमा आवद्ध छन्। जसमा ५१ प्रतिशत महिला सदस्य छन्। नेपालको बैकिङ कारोबारको २० प्रतिशत हिस्सा अर्थात् ६ खर्ब रुपैयाँ सहकारीमार्फत् परिचालन भइरहेको छ। करिब ७० हजार नागरिकले

सहकारीमा प्रत्यक्ष रोजगारी पाएका छन्।

यस प्रदेशको नेपालको कुल सहकारी संस्थामा ३३.५५ प्रतिशत, कुल सदस्य सङ्ख्यामा ३२.६५ प्रतिशत, शेयर पूँजीमा ६७.३५ प्रतिशत र ऋण लगानीमा ५६.५ प्रतिशत हिस्सा छ। प्रदेशका ११५७७ सहकारीमध्ये करिब ३३.५ प्रतिशत काठमाडौंमा, १३.५ प्रतिशत काभ्रेमा, र १०.५ प्रतिशत ललितपुरमा छन् भने रसुवामा प्रदेशको कुल सहकारीको करिब १.५ प्रतिशत मात्र छ।

कार्य प्रकृति अनुसार काठमाडौं, भक्तपुर, ललितपुर, मकवानपुर र चितवनमा जिल्लास्थित सहकारी संस्थाको क्रमशः ७८ प्रतिशत, ७१ प्रतिशत, ५० प्रतिशत, ४९ प्रतिशत र ४१ प्रतिशत बचत तथा ऋण सहकारी छन्। धादिङ, रसुवा, नुवाकोट, दोलखामा क्रमशः ५५ प्रतिशत, ५२ प्रतिशत, ४९ प्रतिशत, ३९ प्रतिशत कृषि सहकारी छन्। त्यसैगरी, चितवन, सिन्धुपाल्चोक र काभ्रेमा २० प्रतिशत दुग्ध सहकारी छन्। त्यसैगरी धादिङ, सिन्धुली, चितवनमा क्रमशः ४ प्रतिशत, २ प्रतिशत र २ प्रतिशत तरकारी तथा फलफूल सहकारीहरू छन्। सहकारी संस्थाहरूको कार्य प्रकृतिगत ढाँचा हेर्दा सहकारी क्षेत्रलाई लघुवित्त कारोबारसँगै उत्पादन, बजारीकरण र सेवा प्रवाहमा संलग्न गराई यसको विकास, विस्तार र प्रवर्द्धन गर्न आवश्यक देखिन्छ।

३. समस्या र चुनौती

सहकारी शिक्षा तथा तालिमको अपर्याप्तता, दक्ष जनशक्तिको अभाव, संघीय संरचना अनुरूप स्थानीय तथा प्रदेशमा सहकारी क्षेत्रको नियमन तथा प्रवर्द्धनका लागि संयन्त्रको अभाव, तथ्याङ्क अद्यावधिक हुन नसक्नु, उत्पादन, वितरण र सेवा क्षेत्रमा सहकारीको प्रभावकारी भूमिका हुन नसक्नु, सहकारीबाट उत्पादित वस्तुहरूको लेवलिङ र ब्राण्डिङका लागि नीतिगत अस्पष्टता आदि यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्।

ठूलो सङ्ख्यामा रहेका बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाहरूलाई उत्पादन, वितरण र सेवा सहकारीमा रूपान्तरण गर्नु र उनीहरूको ऋण लगानीलाई उत्पादक क्षेत्रमा प्रवाहित गर्नु, विभिन्न विषयगत सहकारीहरूकोबीच कार्यगत समन्वय ल्याई आर्थिक विकासमा सहकारीको योगदान बढाउनु, सहकारीकर्मी र कर्मचारीलाई नतिजामुखी र विषयगत तालिम प्रदान गरी जनशक्ति विकास गर्नु, सहकारी खेती, थोक बिक्री केन्द्र, शीत भण्डार आदिका लागि लिजमा जग्गा प्राप्त गर्नु, सहकारी संस्थाहरूमा वित्तीय सुशासन कायम गर्नु र बचत तथा ऋणको कारोबार गर्ने सहकारी संस्थाहरूको नियमन गर्नुका साथै सहकारी मूल्य, मान्यता र सिद्धान्तको पालना गराउनु यस क्षेत्रका चुनौतीहरू हुन्।

४. सम्भावना र अवसर

संवैधानिक र कानुनी हिसावले प्राप्त भूमिका र सुविधाका कारण सहकारी क्षेत्रले प्रभावकारी ढङ्गले काम गर्न सक्ने बलियो आधार प्राप्त हुनु, स्थानीयस्तरदेखि राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रियस्तरसम्म सञ्जाल विस्तार हुनु, विकास साझेदार निकायहरूद्वारा सहकारीलाई प्राथमिकतामा राख्नु, दिगो विकास लक्ष्यलाई स्थानीयकरण गर्न सहकारी माध्यम उपयुक्त हुनु, महिला सहभागिता वृद्धि हुँदै जानु सहकारीताका माध्यमबाट उत्पादन, बजारीकरण तथा गरिवी निवारणको लक्ष्य हासिल गर्न सहयोग पुग्नु, सहकारीको कारण छरिएर रहेको पूँजी एकत्रित हुन गई लगानीयोग्य रकम जुट्नु, सामूहिक खेती, सामूहिक व्यापार, सामूहिक उद्योग एवम् सामूहिक सेवा व्यवसाय सञ्चालन गर्न सम्भव हुनु, स्थानीयस्तरमा वित्तीय अन्तरसम्बन्ध कायम गर्ने अवसरहरूको उपयोग गर्न सकिने अवस्था हुनु सहकारी क्षेत्रमा विद्यमान अवसरहरू हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

स्थानीय पूँजी परिचालनमार्फत् उत्पादन, रोजगारी र आयमा अभिवृद्धि

६. लक्ष्य

स्थानीय जनताको श्रम, सिप, पूँजी तथा स्रोतलाई सामूहिक हितका लागि सङ्गठित रूपमा परिचालन गरी आर्थिक समृद्धि, सामाजिक रूपान्तरण र समन्यायिक विकासको आधारशीला तयार गर्ने।

७. उद्देश्य

१ . सहकारीमा आधारित कृषि, उद्योग तथा सेवा व्यवसायको विस्तार गरी प्रदेशको सामाजिक आर्थिक रूपान्तरणमा योगदान पुऱ्याउनु र

२ . कानूनको पालना र सहकारीको सिद्धान्त र मूल्यहरूको अनुसरण बढाई सहकारी क्षेत्रमा सुशासन कायम गर्नु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
४.६.१ नीतिगत र संस्थागत प्रवन्ध गर्ने।	<ul style="list-style-type: none">• एकभन्दा बढी स्थानीय तह कार्यक्षेत्र भएका सहकारी संस्थासम्बन्धी नीति, कानून र मापदण्ड निर्माण गरिनेछ।• बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाले कृषि लगायतका उत्पादनशील क्षेत्रमा अनिवार्य रूपमा कम्तीमा ५० प्रतिशत लगानी प्रवाह गर्नुपर्ने व्यवस्था गरिनेछ।
४.६.२ उत्पादन, वितरण र सेवामूलक सहकारीलाई प्रोत्साहन र विस्तार गर्ने।	<ul style="list-style-type: none">• स्वास्थ्य, उच्च शिक्षा, पर्यटन, यातायात परिवहन, सार्वजनिक वितरण, बिमा, वातावरण संरक्षण, आवास, नवीकरणीय ऊर्जाजस्ता क्षेत्रमा सहकारीको प्रवर्द्धनलाई प्रोत्साहन दिइनेछ।• संघीय सरकारसँग समन्वय र स्थानीय तहसँग सहजीकरण गरी सहकारी संघ र महासंघ लगायतका निकायहरूसँग सहकार्य गर्दै सहकारीको क्षमता अभिवृद्धि र सहकारी क्षेत्रको प्रवर्द्धन गरिनेछ।• कृषिमा आधारित उत्पादन, भण्डारण, प्रशोधन, बजारीकरण तथा कृषि सामग्री आपूर्तिको लागि स्थापना गरिएको सहकारी उद्योग/व्यवसायलाई सहूलियतपूर्ण ऋण तथा अनुदान सहयोग उपलब्ध गराइनेछ।• पशुपालनको माध्यमबाट बायोग्याँस उत्पादन गर्ने कृषि तथा दुग्ध सहकारीहरूलाई क्षमता विकास, प्राविधिक र वित्तीय सहयोग उपलब्ध गराइनेछ।
४.६.३ सामूहिक कृषि उत्पादन र बजारीकरणमा सहकारीलाई प्रोत्साहित गर्ने।	<ul style="list-style-type: none">• सहकारीतालाई कृषि प्रसार, पूर्वाधार विकास, बजारीकरण तथा स्थानीय स्रोत परिचालनको माध्यमको रूपमा विकास गरिनेछ र यस्ता कार्यमा विकट भौगोलिक क्षेत्र र सीमान्तकृत समुदायलाई प्राथमिकता दिइनेछ।• जैविक कृषि विस्तार र विशिष्टीकरणमा सहकारीलाई प्रोत्साहन गरिनेछ।• जग्गा चक्रलाबन्दी गरी सहकारी पद्धतिबाट व्यवसायिक परिमाणमा खेती गर्ने कृषकहरूको सहकारीहरूलाई प्रविधि, बिमा, र कृषि सामग्रीमा अनुदान दिइनेछ।• कृषिउपजका साथै गैरकृषिउपजहरूको उत्पादन, प्रशोधन, भण्डारण तथा बजारीकरण गर्न सहकारी संस्थाहरूलाई प्रोत्साहित गरिनेछ।• सहकारी थोक बजार स्थलहरूको निर्माण तथा विकासका लागि साझेदार निकायहरू तथा अन्य सरोकार संघ-संस्थाहरूको सहभागितामा सञ्चालन र व्यवस्थापन गरिनेछ।• सहकारीद्वारा कृषि वस्तुको आन्तरिक आपूर्ति व्यवस्थापनका लागि शीत भण्डार, ढुवानी

रणनीति	कार्यानीति
	<p>साधन, र थोक बिक्री केन्द्रका निमित्त आवश्यक थलो र पूर्वाधारमा सहयोग प्रदान गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> • कृषि र वनजन्य कच्चा पदार्थमा आधारित उद्योगहरूको सञ्चालनमा सहकारीको भूमिका अभिवृद्धि गरिनेछ। • उत्पादनका क्षेत्रमा उत्कृष्ट कार्य गर्ने सहकारीलाई पुरस्कृत गरिनेछ।
४.६.४ प्रशिक्षण, अनुगमन तथा नियमनलाई प्रभावकारी बनाई सहकारी क्षेत्रमा सुशासन कायम गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • सहकारी संस्थाहरूमा सम्पत्ति शुद्धीकरण निवारणसम्बन्धी कानुनको पालनालाई प्रभावकारी बनाइनेछ। • नियमन क्षेत्राधिकार अनुसार एकल तथा संयुक्त रूपमा सहकारी संस्थाहरूको प्रभावकारी अनुगमन तथा निरीक्षणको व्यवस्था मिलाई सहकारी संस्थाहरूमा सुशासन कायम गरिनेछ। • सहकारीसम्बन्धी एकीकृत आधारभूत तथ्याङ्क तयार गर्न तथा नियमनलाई प्रभावकारी बनाउन एकीकृत सूचना प्रणालीको विकास गरिनेछ। • सहकारी क्षेत्रको प्रवर्द्धन गर्न अध्ययन अनुसन्धानलाई प्रोत्साहित गरिनेछ। • प्रादेशिक सहकारी तालिम केन्द्रको निर्माण गरी सहकारी संघसंस्थासमेतको सहभागितामा सहकारी शिक्षा तथा तालिम कार्यक्रमलाई व्यापकता दिइनेछ। • सूचना प्रविधिको उपयोग गरी सहकारी सूचना प्रणालीलाई प्रभावकारी बनाई विषयगत सहकारी सञ्जालको स्थापनामा सहयोग गरिनेछ। • सहकारी क्षेत्रको विकासका लागि आवश्यक कानुनी व्यवस्था, विषयगत सहकारीको दीर्घकालीन रणनीतिक योजनाको तर्जुमा एवम् उपयुक्त सङ्गठनात्मक संरचनाको निर्माण गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	सहकारीतालाई कृषि प्रसार, पूर्वाधार विकास, बजारीकरण तथा स्थानीय स्रोत परिचालनको माध्यमको रूपमा विकास		√	√	√	√
२	जैविक कृषि विस्तार र विशिष्टीकरणमा सहकारीलाई प्रोत्साहन		√	√	√	√
३	जग्गा चक्लाबन्दी गरी सहकारी पद्धतिबाट व्यवसायिक परिमाणमा खेती गर्ने कृषकहरूको सहकारीहरूलाई प्रविधि, विमा, र कृषि सामग्रीमा अनुदान		√	√	√	√
४	सहकारी थोक बजार स्थलहरूको निर्माण तथा विकासका लागि साझेदार निकायहरू तथा अन्य सरोकार संघ-संस्थाहरूको सहभागितामा सञ्चालन र व्यवस्थापन	√	√	√	√	√
५	सहकारीद्वारा कृषि वस्तुको आन्तरिक आपूर्ति व्यवस्थापनका लागि शीत	√	√	√	√	√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
	भण्डार, ढुवानी साधन, र थोक बिक्री केन्द्रका निमित्त आवश्यक थलो र पूर्वाधारमा सहयोग					
६	कृषि र वनजन्य कच्चा पदार्थमा आधारित उद्योगहरूको सञ्चालनमा सहकारीको भूमिका अभिवृद्धि	√	√	√	√	√
७	सहकारी संस्थाहरूमा सम्पत्ति शुद्धीकरण सम्बन्धी कानूनको पालना	√	√	√	√	√
८	सहकारी संस्थाहरूमा सुशासन कायम	√	√	√	√	√
९	सहकारीसम्बन्धी एकीकृत आधारभूत तथ्याङ्क तयार गर्न तथा नियमनलाई प्रभावकारी बनाउन एकीकृत सूचना प्रणालीको विकास	√	√	√	√	√
१०	सहकारीको दीर्घकालीन रणनीतिक योजनाको तर्जुमा	√	√	√	√	√
११	सहकारी संस्थाहरूको अनुगमन					
१२	स्वास्थ्य, उच्च शिक्षा, पर्यटन, यातायात परिवहन, सार्वजनिक वितरण, विमा, वातावरण संरक्षण, आवास, नवीकरणीय ऊर्जाजस्ता क्षेत्रमा सहकारीको प्रवर्द्धन	√	√	√	√	√
१३	सहकारीको क्षमता अभिवृद्धि		√	√	√	√
१४	सहकारी उद्योग/व्यवसायलाई सहूलियतपूर्ण ऋण तथा अनुदान सहयोग		√	√	√	√
१५	सहकारी क्षेत्रको प्रवर्द्धन गर्न अध्ययन अनुसन्धान		√	√	√	√
१६	प्रादेशिक सहकारी तालिम केन्द्रको निर्माण गरी सहकारी संघसंस्थासमेतको सहभागितामा सहकारी शिक्षा तथा तालिम कार्यक्रम सञ्चालन		√	√	√	√
१७	विषयगत सहकारी सञ्चालको स्थापनामा सहयोग		√	√	√	√

१०. अपेक्षित उपलब्धि

उत्पादन, वितरण र सेवामा सहकारीको संलग्नता विस्तार भएको हुने, कृषिजन्य उद्योग, भण्डारण, बजारीकरणमा सहकारी संस्थाहरूको भूमिका बढेको हुने, सहकारी क्षेत्रमा तालिमप्राप्त जनशक्तिमा वृद्धि भएको हुने, नियमन कार्य प्रभावकारी र व्यवस्थापनमा सुधार आई सहकारी क्षेत्रमा सुशासन कायम भएको हुने, कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा सहकारी क्षेत्रको योगदानमा वृद्धि भएको हुने, सहकारीसम्बन्धी एकीकृत सूचना प्रणालीको विकास भएको हुने र स्वरोजगारी तथा रोजगारी अभिवृद्धि भएको हुने।

परिच्छेद— पाँच सामाजिक क्षेत्र

५.१ शिक्षा

१. पृष्ठभूमि

संविधानले प्रत्येक नागरिकलाई आधारभूत तहसम्म अनिवार्य र निःशुल्क तथा माध्यमिक तहसम्म निःशुल्क शिक्षा पाउने हक प्रत्याभूत गरेको छ। मातृभाषामा शिक्षा पाउने हकसमेत सुनिश्चित गरेको छ। त्यस्तै, अपाङ्गता भएका र आर्थिक रूपले विपन्न नागरिकलाई कानून बमोजिम निःशुल्क उच्च शिक्षा पाउने हकसमेत स्थापित गरेको छ।

राज्यको नीति शिक्षालाई वैज्ञानिक, प्राविधिक, व्यवसायिक, सिपमूलक, रोजगारमूलक एवम् जनमुखी बनाउने छ। सक्षम, प्रतिस्पर्धी र नैतिकवान् दक्ष जनशक्तिको विकास सबैका लागि समावेशी र समतामूलक एवम् गुणस्तरीय शिक्षा सुनिश्चित गर्न क्रमशः उच्च शिक्षासम्म निःशुल्क बनाउँदै जीवनपर्यन्त सिकाइका अवसरहरू प्रवर्द्धन गर्ने दिगो विकास लक्ष्य रहेको छ।

प्रादेशिक शैक्षिक योजना, प्रदेश विश्वविद्यालय तथा उच्च शिक्षा, शैक्षिक परामर्श सेवाको मापदण्ड निर्धारण, अनुमति तथा नियमन, प्रादेशिक प्राविधिक तथा व्यवसायिक शिक्षा एवम् तालिम, प्रादेशिक शिक्षा र छात्रवृत्तिसम्बन्धी नीति, कानून तथा मापदण्ड निर्धारण, कार्यान्वयन र नियमन तथा पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक तथा पाठ्यसामग्री निर्माण, उत्पादन र वितरण, शिक्षक व्यवस्थापन र क्षमता विकास, माध्यमिक परीक्षा व्यवस्थापन तथा प्रदेशस्तरमा प्राज्ञिक अनुसन्धान तथा शैक्षिक तथ्याङ्क व्यवस्थापनजस्ता विषयहरू प्रदेशको कार्य क्षेत्रमा पर्दछन्।

२. वस्तुगत स्थिति

२०७५ को तथ्याङ्क अनुसार यस प्रदेशमा सञ्चालन भएका ६९९९ विद्यालयमध्ये आधारभूत तह (१-५) मा ६८२९, आधारभूत (१-८) मा ६८५९ र माध्यमिक तह (९-१०) मा २८०८ र माध्यमिक तह (९-१२) मा २८७२ रहेका छन्। यसैगरी उच्च शिक्षातर्फ ४ वटा विश्वविद्यालय (त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाडौं विश्वविद्यालय, कृषि तथा वन विश्वविद्यालय र नेपाल खुला विश्वविद्यालय) अन्तर्गत ६१२ क्याम्पस र २ वटा स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठान रहेका छन्। विद्यालय तहमा खुद भर्नादर आधारभूत तह (१-५), आधारभूत तह (१-८), माध्यमिक तह (१-१०) र माध्यमिक तह (१-१२) क्रमशः ९५.८, ९४.७, ७४.९, र ५९ परहेका छन्। आधारभूत तह (१-५) कुल भर्नाको लैङ्गिक समता सूचाङ्क ०.९० र माध्यमिक तह (९-१२) कुल भर्नाको लैङ्गिक समता सूचाङ्क ०.९८ रहेको छ।

प्रदेशमा विद्यालय विद्यार्थी अनुपात आधारभूत तह (१-५) मा ९७, आधारभूत तह (६-८) मा ९७, आधारभूत तह (१-८) मा ९५.९, माध्यमिक (९-१०) मा ७८ र माध्यमिक (९-१२) मा ९२० रहेको छ। यसैगरी, शिक्षक विद्यार्थी अनुपात (सामुदायिक), अनुपात आधारभूत तह (१-५), आधारभूत तह (६-८), आधारभूत तह (१-८), माध्यमिक (९-१०) र माध्यमिक (९-१२) मा क्रमशः १:२०, १:२४, १:९९ र १:२७ रहेका छन्। यसैगरी, विद्यालय छाड्ने दर अनुपात आधारभूत तह (१-५), आधारभूत तह (६-८), आधारभूत तह (१-८) र माध्यमिक (९-१०) मा क्रमशः ३.७, ३.८ र २.४ प्रतिशत र कक्षा दोहन्याउने दर क्रमशः ६.६, ३.९, र २.९ प्रतिशत छ। कक्षा उत्तीर्ण दर हेर्दा यो प्रतिशत क्रमशः ९०.७, ९२.८ र ९३.८ प्रतिशत देखिन्छ। आधारभूत तह (१-५) मा बालिकाहरूको कक्षा दोहन्याउने दर ५.५ र

आधारभूत तह (६-८) ३.४ र माध्यमिक तह (९-१०) को ३.७ प्रतिशत रहेको छ।

कुल साक्षरता दर ७४.८५ प्रतिशत रहेको छ। महिला र पुरुष साक्षरता क्रमशः ६७.०४ र ८२.८२ प्रतिशत रहेको देखिन्छ। यसैगरी क्षेत्रगत औसत साक्षरता दर क्रमशः काठमाण्डौ उपत्यकाका जिल्लाहरूमा ८५.०१ प्रतिशत, हिमाली जिल्लाहरूमा ६०.२४ प्रतिशत, पहाडी जिल्लाहरूमा ६४ प्रतिशत र भित्री मधेसका जिल्लाहरूमा ७०.३५ प्रतिशत रहेबाट क्षेत्रगत रूपमा धेरै विषमता रहेको देखिन्छ। कुल साक्षर जनसङ्ख्यामा ३१.५६ प्रतिशतले प्राथमिक तह उत्तीर्ण गरेका १२.३६ प्रतिशतले एस.एल.सी वा सो सरह उत्तीर्ण गरेका छन्। यसैगरी, ५ प्रतिशतले अनौपचारिक शिक्षा हासिल गरेका छन्। उच्च शिक्षा हासिल गरेकामध्ये अत्यन्त न्यून अर्थात् जम्मा ६.१५ प्रतिशतले मात्र प्राविधिक शिक्षा हासिल गरेको देखिन्छ।

विद्यालयको भौतिक पूर्वाधार तथा संरचनाहरू निकै कमजोर रहेको अवस्थामा २०७२ को भूकम्पले प्रदेशका ४२८० सामुदायिक विद्यालयहरू) कुल विद्यालयका ८७ प्रतिशत (क्षतिग्रस्त हुनपुगेको देखिन्छ। यसबाट विद्यालयका १४६६१ कक्षा कोठा पूर्ण क्षतिग्रस्त, ७०७१ क्षतिग्रस्त र ९०८३ सामान्य क्षतिग्रस्त बन्न पुगेको देखिन्छ।

विद्यालयको भौतिक पूर्वाधार तथा संरचनाहरू निकै कमजोर रहेको अवस्थामा २०७२ को भूकम्पले प्रदेशका ४२८० सामुदायिक विद्यालयहरू (कुल विद्यालयका ८७ प्रतिशत) क्षतिग्रस्त हुनपुगेको देखिन्छ। यसबाट विद्यालयका १४६६१ कक्षा कोठा पूर्ण क्षतिग्रस्त, ७०७१ क्षतिग्रस्त र ९०८३ सामान्य क्षतिग्रस्त बन्न पुगेको देखिन्छ। क्षतिग्रस्त विद्यालय र कक्षाकोठाहरू मध्ये धेरैजसो पुनर्निर्माण भइसकेको छ

शैक्षिक गुणस्तर हेर्दा सबैका लागि गुणस्तरीय शिक्षाको सहज पहुँच सुनिश्चित हुन सकेको छैन। सामुदायिक विद्यालय र संस्थागत विद्यालयको शैक्षिक गुणस्तर र सिकाइ उपलब्धिमा ठूलो अन्तर रहेको छ। शिक्षालाई रोजगारीसँग जोड्न नसक्नु अर्को ठूलो चुनौती देखिएको छ। प्रदेशका १३ जिल्लामध्येका ७ जिल्लामा आन्तरिक बसाइँसराइ तीव्र हुनुमा शैक्षिक पूर्वाधार र सुविधाको अभाव पनि एउटा कारक हो।

३. समस्या र चुनौती

साक्षरता दरमा भौगोलिक, जातिगत र लैङ्गिक विषमता हुनु, प्राविधिक शिक्षाको पहुँचमा कमी, प्राथमिक विद्यालय उमेर समूहका बालबालिकाहरूमध्ये कठिन अवस्थामा रहेका बालबालिकाहरूलाई विद्यालयमा ल्याउन नसक्नु, विद्यालय तहमा हुने शैक्षिक क्षतिलाई न्यूनिकरण गर्न नसक्नु (झण्डै एक तिहाइ बालबालिका माध्यमिक तहसम्म नै नपुगी विद्यालयबाट बाहिरिने गरेको), शिक्षण सिकाइ क्रियाकलाप बालमैत्री र प्रविधिमैत्री हुन नसक्नु, विद्यार्थीको अनुपातमा शिक्षक वितरण हुन नसक्नु, शिक्षकको माग र आपूर्तिबीच सन्तुलन हुन नसक्नु आदि यस क्षेत्रका प्रमुख समस्याहरू हुन्।

सबै तहको शिक्षालाई समतामूलक, समावेशी र गुणस्तरीय बनाउनु, खासगरी आर्थिक-सामाजिक रूपले पछाडि परेका सीमान्तकृत समुदाय तथा दुर्गम र पिछडिएका क्षेत्रका बालबालिकाको शिक्षामा पहुँच सुनिश्चित गर्नु, पूर्वाधार र लगानीको अनुपातमा शैक्षिक उपलब्धिमा वृद्धि गर्नु, संघीय प्रणाली अनुरूप शैक्षिक प्रणालीलाई तहगत सरकारका जिम्मेवारी अनुसार रूपान्तरण गर्नु, शिक्षालाई व्यवसायिक तथा रोजगारमूलक बनाई जीवनोपयोगी र प्राविधिक शिक्षाको विस्तार गर्नु, महिला शिक्षकको अनुपात वृद्धि गर्नु, विद्यालयमा महिला शिक्षकको नेतृत्व वृद्धि गर्नु, शिक्षक, प्रधानाध्यापक र अन्य सरोकारवालाहरूको क्षमता वृद्धि गर्नु, शैक्षिक क्षेत्रको व्यवस्थापनमा सुशासनको प्रत्याभूति दिनु र राजनीतिक प्रभावबाट शिक्षा क्षेत्रलाई मुक्त पार्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन्।

४. सम्भावना र अवसर

प्रदेशको शैक्षिक सूचकहरू तुलनात्मक रूपमा राम्रो हुनु, शिक्षा क्षेत्रमा दक्ष मानव संसाधनको बृद्धि हुँदै जानु, समुदायमा शिक्षा विशेषगरी प्राविधिक शिक्षाप्रतिको बढ्दो आकर्षण र जागरुकता, महिला, दलित, जनजाति र अपाङ्गता भएका एवम् सीमान्तकृत समुदायका बालबालिकाहरूलाई विद्यालयमा ल्याउन र टिकाउन विभिन्न प्रोत्साहनमूलक कार्यक्रमहरू रहनु, तुलनात्मक रूपमा शैक्षिक पूर्वाधार तथा सूचना प्रविधिको उपलब्धता र पहुँच हुनु, उच्च शिक्षामा निजी क्षेत्रको आकर्षण रहनु, गैरसरकारी संस्था तथा नागरिक समाजको शिक्षामा चाख र संलग्नता बढ्नु, काठमाण्डौ उपत्यका र चितवनजस्ता स्थानहरू विशिष्ट (मेडिकल, इन्जिनियरिङ, कृषि, वन आदि) शैक्षिक केन्द्रको रूपमा विकास भइरहेको स्थिति तथा संघीय तहका विश्वविद्यालय, अनुसन्धान तथा विकाससम्बन्धी संस्थाहरूको उपस्थिति यो प्रदेशमा रहनु शिक्षा क्षेत्रको विकासका लागि महत्वपूर्ण अवसरहरू हुन्। माध्यमिक तहसम्मको शिक्षा स्थानीय तहको कार्य दायरामा परेकाले शैक्षिक सुशासनको प्रत्याभूति सहज हुने, विद्यालयहरूको पाठ्यक्रम विकास, मूल्याङ्कन र शिक्षक तालिम र शिक्षा क्षेत्रको जनशक्तिको क्षमता विकास प्रदेश सरकारले गर्न सक्ने, प्रदेशको आवश्यकता अनुसार बहुप्राविधिक महाविद्यालय र प्रदेश विश्वविद्यालयको स्थापना गर्न सकिने र दिगो विकासका लक्ष्यहरूप्रति सबै तहका सरकारको प्रतिबद्धता रहनु शिक्षा क्षेत्रको विकासका लागि अनुकूलताहरू हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

सामाजिक आर्थिक रूपान्तरणको लागि गुणस्तरीय शिक्षा र दक्ष जनशक्ति

६. लक्ष्य

प्रतिस्पर्धी, उद्यमशील र नव प्रवर्तनशील मानव पूँजीको निर्माण गरी प्रदेशको समृद्धिको आधार तयार गर्ने।

७. उद्देश्य

- गुणस्तरीय शिक्षामा सबै वर्ग एवम् समुदायको समतामूलक पहुँच स्थापित गर्नु,
- प्राविधिक, व्यवसायिक, सिपयुक्त एवम् व्यवहारिक शिक्षाको विकास एवम् विस्तार गर्नु,
- शिक्षामा कार्यरत जनशक्तिको क्षमता अभिवृद्धि गर्नु,
- उच्च शिक्षालाई अनुसन्धानमूलक बनाई विकास प्रकृत्यामा आबद्ध गर्न संघीय विश्वविद्यालयहरूसँग सहकार्य गर्नुका साथै प्रदेश स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठान र प्रदेश विश्वविद्यालयको स्थापना र सञ्चालन गर्नु,
- शैक्षिक क्षेत्रमा नवप्रवर्तन र सुशासनलाई संस्थागत गर्नु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
५.१.१ शिक्षासम्बन्धी नीति, कानून, योजना, मापदण्ड तथा पाठ्यक्रम तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • प्रादेशिक शिक्षा नीति र कानून तर्जुमा गरी लागू गरिनेछ। • विद्यालय शिक्षाको गुणस्तरमा एकरूपता कायम हुनेगरी पाठ्यक्रम विकास गरिनेछ। • प्राविधिक तथा व्यवसायिक शिक्षा एवम् तालिमसम्बन्धी नीति, कानून र मापदण्ड निर्माण गरी पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक र पाठ्य सामग्री उत्पादन र वितरण गरिनेछ। • मापदण्डका आधारमा विद्यालय गाभ्ने, तह घटाउने, सार्ने र नक्सानुसार कार्यमा स्थानीय तहलाई सहयोग, सहजीकरण प्रोत्साहन गरिनेछ। • विद्यालयहरूको भौतिक पूर्वाधार आवश्यकताको प्रक्षेपणका साथै कार्य योजना बनाई लागू गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
<p>५.१.२ सार्वजनिक शिक्षालाई गुणस्तरीय, समावेशी, समतामूलक एवम् पहुँचयोग्य बनाउने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • विद्यालय तहका शिक्षकहरूको क्षमता तथा पेसागत विकासका लागि आवश्यकता प्रक्षेपण गरी विषयगत शिक्षकको माग र आपूर्तिबीच सन्तुलन कायम गर्न शैक्षिक विकास योजना तर्जुमा गरी लागू गरिनेछ। • शैक्षिक व्यवस्थापन सूचना प्रणालीलाई प्रभावकारी बनाउने गरी तथ्याङ्क व्यवस्थापन, समन्वय र सुदृढीकरण गरी नीति निर्माण र निर्णय प्रक्रियामा उपयोग गरिनेछ। • सामुदायिक र संस्थागत विद्यालयहरूमा ऐच्छिक विषयका समान पाठ्यक्रम लागू गर्नुपर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ र पाठ्यक्रममा प्रदेशका जातजाति, संस्कृतिका विशिष्टता र भौगोलिक विविधतालाई प्रतिबिम्बित गराइनेछ। • शिक्षकको कार्य सम्पादनलाई विद्यार्थीको नतिजासँग आबद्ध गर्न स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। • विद्यालयको शैक्षिक तथा व्यवस्थापकीय पक्षको अनुगमन गरी सुधारका लागि प्रोत्साहित गरिनेछ। • सिकाइमा सहजता ल्याउन अंग्रेजी, विज्ञान, गणित र प्राविधिक लगायतका विषयमा डिजीटल पाठ्यसामग्री विकास गरी प्रयोगमा ल्याइनेछ। • माध्यमिक शिक्षा उत्तीर्ण परीक्षा (कक्षा १०) को सञ्चालन र व्यवस्थापनका लागि संस्थागत संरचनाको स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ। • उच्च शिक्षामा सबैको सहज पहुँच पुऱ्याउन खुल्ला शिक्षा र दूरशिक्षा प्रणालीलाई संस्थागत गर्न आवश्यक व्यवस्था मिलाइनेछ। • विद्यालय उमेर समूहका सबै बालबालिकालाई अनिवार्य विद्यालय भर्ना गर्न र टिकाउन स्थानीय तहसँग सहयोग र सहकार्य गरिनेछ। • विद्यालय शिक्षामा पहुँच बढाउन तथा विद्यालय छाड्ने दर घटाउन विशेष किसिमका प्रोत्साहनमूलक कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। • आधारभूत तहमा अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा तथा निःशुल्क माध्यमिक शिक्षाको सुनिश्चितताका लागि स्थानीय तहलाई सहयोग र सहजीकरण गरिनेछ। • मापदण्डका आधारमा पूर्ण साक्षर प्रदेश घोषणा गर्न स्थानीय तहसँगको सहकार्यमा अभियानको रूपमा विशेष कार्यक्रम (विद्यालय केन्द्रित साक्षरता अभियान, अनौपचारिक शिक्षा आदि) सञ्चालन गरिनेछ। • वैज्ञानिक परीक्षा प्रणाली अवलम्बन गरी माध्यमिक तहको शिक्षण सिकाइको गुणस्तरीयताको मूल्याङ्कन गरिनेछ। • योग्यता पुगेका महिलाहरूलाई शिक्षण पेशामा आकर्षित गर्नको लागि प्रोत्साहित गरिनेछ। • महिला शिक्षकहरूको नेतृत्व विकासको लागि विशेष कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
	<ul style="list-style-type: none"> • प्रदेशका उत्कृष्ट सामुदायिक विद्यालयहरूलाई पुरस्कृत गरिनेछ। • सामुदायिक विद्यालयमा कार्यरत प्रअ, शिक्षक, कर्मचारी, विद्यालय व्यवस्थापन समितिका पदिधिकारी र मन्त्रालय र मातहतका निकायमा कार्यरत कर्मचारीहरूको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ। तालिम पछि अनुगमन र पेशागत सहयोग संयन्त्र बनाई परिचालन गरिनेछ। • सबै सामुदायिक विद्यालयमा विज्ञान प्रयोगशाला, कम्प्युटर प्रयोगशाला र इ—लाइब्रेरीसहितको स्मार्ट कक्षा सञ्चालन र स्मार्ट विद्यालय स्थापना गर्न स्थानीय तहसँग सहकार्य एवम् सहयोग गरिनेछ। • सामुदायिक विद्यालयमा भएका असल अभ्यासहरूलाई अन्य विद्यालयहरूसँग आदान प्रदान गर्ने अवसरमा जोड दिइनेछ। • स्थानीय तहको सहकार्यमा विद्यालय सुरक्षा तथा जोखिम न्यूनीकरणमा न्यूनतम उपायहरूको प्याकेज र विद्यालय भवन मापदण्ड निर्माण गरी कार्यान्वयन गरिनेछ। • सामुदायिक र संस्थागत विद्यालयका सम्पूर्ण शिक्षकले सूचना तथा प्रविधि, भाषा र आधुनिक सिकाइविधिसम्बन्धी तालिम लिनैपर्ने व्यवस्थाका लागि स्थानीय तहसँग सहकार्य एवम् सहयोग गरिनेछ।
<p>५.१.३</p> <p>रोजगारी र उद्यमशीलता विकास गर्नका लागि जीवोपयोगी, प्राविधिक एवम् व्यवसायिक शिक्षा र तालिमको विस्तार गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • आवश्यकताको आधारमा सामुदायिक माध्यमिक विद्यालयमा कम्तीमा एक व्यवसायिक विषयको पठनपाठन गराउन स्थानीय तहलाई सहजीकरण गरिनेछ। • स्थानीय तहमा व्यवसायिक सम्भाव्यतामा आधारित प्राविधिक विद्यालयको स्थापना र सञ्चालन गर्न सहयोग गरिनेछ। • प्राविधिक विषयका शिक्षकहरूको क्षमता अभिवृद्धिलाई जोड दिइनेछ। • प्राविधिक तथा व्यवसायिक शिक्षाको दिगो विकासका लागि निजी क्षेत्रसँग सहकार्य गरिनेछ। • प्राविधिक तथा व्यवसायिक शिक्षा एवम् तालिम केन्द्रहरूको स्थापना गरी आधारभूत तहका प्राविधिक जनशक्ति उत्पादन गरिनेछ। • परम्परागत सिप तथा विदेशमा सिकेको सिप र अनुभवलाई मापदण्डका आधारमा प्रमाणीकरण र उपयोग गर्ने व्यवस्था गरिनेछ।
<p>५.१.४</p> <p>विशिष्टीकृत उच्च शिक्षा केन्द्रहरूको विस्तार गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • आवश्यक सिप तथा प्रविधियुक्त जनशक्ति उत्पादन गर्न सम्भाव्यताका आधारमा प्रत्येक जिल्लामा कम्तीमा एक बहुप्राविधिक महाविद्यालयको स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ। • विश्वविद्यालयहरूलाई व्यवहारिक र प्राविधिक विषयहरूमा भौगोलिक क्षेत्रगत श्रोत र प्रसार केन्द्रका रूपमा विकास र उपयोग गर्न सहकार्य गरिनेछ। • उच्च शिक्षामा अनिवार्य रूपमा कम्तीमा ६ महिनाको स्वयंसेवक सेवा कार्यक्रमलाई पाठ्यक्रमको अङ्गकै रूपमा विकास गर्न संघीय सरकार र स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
	<ul style="list-style-type: none"> सामुदायिक क्याम्पसहरूको सुदृढीकरण गरी उच्च शिक्षाको गुणस्तर अभिवृद्धिमा जोड दिइनेछ । विश्वविद्यालय र विशिष्टीकृत अध्ययन संस्थानहरूबाट शिक्षित विद्यार्थीलाई सम्बन्धित उद्यमसँग आबद्ध गर्न सम्बन्धित निकायसँग सहकार्य गरिनेछ । प्रदेश विश्वविद्यालय र प्रदेश स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठानको स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	नैतिक शिक्षासहितको पाठ्यक्रम विकास	✓	✓	✓	✓	✓
२	प्राविधिक तथा व्यवसायिक शिक्षा एवम् तालिमआदिको पाठ्यपुस्तक र पाठ्य सामग्री निर्माण उत्पादन र वितरण	✓	✓	✓	✓	✓
३	मापदण्डका आधारमा विद्यालय गाभ्ने, तह घटाउने, सार्ने र नक्सानुसार गर्ने	✓	✓	✓		✓
४	विद्यालयहरूको भौतिक पूर्वाधार आवश्यकताको प्रक्षेपण र कार्य योजना बनाई लागू	✓	✓	✓	✓	✓
५	शैक्षिक विकास योजना तर्जुमा		✓	✓	✓	✓
६	प्रदेश तहमा शैक्षिक व्यवस्थापन सूचना प्रणालीलाई प्रभावकारी बनाउने गरी तथ्याङ्क व्यवस्थापन, समन्वय र सुदृढीकरण	✓	✓	✓	✓	
७	सामुदायिक र संस्थागत विद्यालयहरूमा समान पाठ्यक्रम लागू	✓	✓	✓	✓	
८	शिक्षकको कार्य सम्पादनलाई विद्यार्थीको नतिजासँग आबद्ध बनाउने प्रणालीको विकास	✓	✓	✓	✓	
९	विश्वविद्यालयबाट स्वर्ण पदक प्राप्त गरेका विद्यार्थीहरूले शिक्षण पेसामा सिधै प्रवेश गर्न पाउने कानुनी व्यवस्था निर्माण	✓	✓	✓	✓	
१०	अंग्रेजी, विज्ञान, गणित र प्राविधिक लगायतका विषयमा डिजिटल पाठ्यसामग्री विकास	✓	✓	✓	✓	
११	खुल्ला विश्वविद्यालय र दूरशिक्षा प्रणालीको संस्थागत व्यवस्था	✓	✓	✓	✓	
१२	सबै बालबालिकालाई अनिवार्य विद्यालय भर्ना गर्न र टिकाउन स्थानीय तहसँग सहयोग र सहकार्य	✓	✓	✓	✓	
१३	पूर्ण साक्षर प्रदेश घोषणा गर्न स्थानीय तहसँगको सहकार्य	✓	✓	✓	✓	
१४	महिला शिक्षकको अनुपात वृद्धि हुने गरी पदपूर्तिको व्यवस्था	✓	✓	✓	✓	
१५	सबै सामुदायिक विद्यालयमा विज्ञान प्रयोगशाला, कम्प्युटर प्रयोगशाला र इ—लाइब्रेरीसहितको स्मार्ट कक्षा सञ्चालन र स्मार्ट विद्यालय स्थापना	✓	✓	✓	✓	
१६	भूकम्पबाट क्षतिग्रस्त विद्यालयको मर्मत सम्भार र पुनर्निर्माण	✓	✓	✓	✓	
१७	विद्यालय भवन मापदण्ड निर्माण गरी कार्यान्वयन	✓	✓	✓	✓	

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१८	आवश्यकताको आधारमा सामुदायिक माध्यमिक विद्यालयमा व्यवसायिक विषयको पठनपाठन	√	√	√	√	
१९	स्थानीय तहमा व्यवसायिक सम्भाव्यतामा आधारित प्राविधिक विद्यालयको स्थापना	√	√	√	√	
२०	प्राविधिक तथा व्यवसायिक शिक्षाको दिगो विकासका लागि निजी क्षेत्रसँग सहकार्य	√	√	√	√	
२१	प्राविधिक तथा व्यवसायिक शिक्षा एवम् तालिम केन्द्रहरूको स्थापना गरी आधारभूत तहका प्राविधिक जनशक्ति उत्पादन	√	√	√	√	
२२	परम्परागत सिप तथा विदेशमा सिकेको सिप र अनुभवलाई मापदण्डका आधारमा प्रमाणीकरण	√	√	√	√	
२३	बहुप्राविधिक महाविद्यालयहरूको स्थापना	√	√	√	√	
२४	उच्च शिक्षामा अनिवार्य रूपमा कम्तीमा ६ महिनाको स्वयंसेवक सेवा कार्यक्रमलाई पाठ्यक्रमको अङ्गकै रूपमा सञ्चालन	√	√	√	√	
२५	विश्वविद्यालय र विशिष्टीकृत अध्ययन संस्थानहरूबाट शिक्षित विद्यार्थीलाई सम्बन्धित उद्यमसँग आवद्ध गर्न सम्बन्धित निकायसँग सहकार्य	√	√	√	√	
२६	प्रदेश विश्वविद्यालयको स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ	√	√	√	√	
२७	प्रदेश स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठानको स्थापना र सञ्चालन	√	√	√	√	
२८	शिक्षकहरूको तालिम, क्षमता विकास एवम् शिक्षक व्यवस्थापन	√	√	√	√	
२९	शिक्षा क्षेत्रका कर्मचारीहरूको क्षमता विकास		√			

१०. अपेक्षित उपलब्धि

योजना अवधिमा साक्षरता दर ९५ प्रतिशतभन्दा बढी पुगेको हुने, प्राथमिक तहमा खुद भर्ना शत प्रतिशत पुगेको हुने, माध्यमिक तहको खुद भर्ना दर ४८.२ प्रतिशतबाट वृद्धि भई ५२ प्रतिशत पुग्ने, माध्यमिक विद्यालयमा व्यवसायिक विषय पठनपाठन भएको हुने, स्थानीय तहमा प्राविधिक/व्यवसायिक विद्यालय र जिल्लामा कम्तीमा बहुप्राविधिक महाविद्यालय सञ्चालनमा आएको हुने। योजना अवधिमा कम्तीमा एक स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठान र प्रादेशिक विश्वविद्यालयको स्थापना भएको हुने।

५.२ स्वास्थ्य, पोषण र जनसङ्ख्या

१. पृष्ठभूमि

स्वास्थ्य मानव जीवनको अनिवार्य आवश्यकता हो । नागरिकको स्वास्थ्य अवस्थाले राष्ट्रको सामाजिक—आर्थिक पक्ष र सफल जीवनका सम्भावनाहरूलाई प्रतिबिम्बित गर्छ। स्वस्थ जनशक्ति समृद्ध मुलुक निर्माणको महत्वपूर्ण आधार हो। संविधानले प्रत्येक नागरिकलाई राज्यबाट आधारभूत स्वास्थ्य सेवा निःशुल्क प्राप्त गर्ने हक प्रदान गरेको छ। कसैलाई पनि

आकस्मिक स्वास्थ्य सेवाबाट बन्चित नहुने व्यवस्था गरिएको छ । राज्यका नीतिमा गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवामा सबैको सहज, सुलभ र समान पहुँच सुनिश्चित हुने व्यवस्था गरिएको छ। विगत केही वर्षमा नेपालले स्वास्थ्य क्षेत्रमा सन्तोषजनक उपलब्धिरू हासिल गरेको छ। पोलियो उन्मूलन उन्मुख, कुष्ठरोग निवारण, ट्रयाकोमा निवारण, क्षयरोग नियन्त्रण, मातृशिशु मृत्युदरमा आएको कमी, औलो र कालाज्वर नियन्त्रण तथा खोपमा उल्लेखनीय प्रगति हासिल भएका छन्। हालसम्म भएका स्वास्थ्यका उल्लेखनीय र सकारात्मक गतिविधिहरूका कारण नेपालीको औषत आयूमा वृद्धि भएको छ । जनसंख्या वृद्धि प्रतिस्थापनको अवस्था नजिक पुगेको छ । यति हुँदा हुँदै पनि स्वास्थ्यमा सुधार गर्नुपर्ने धेरै क्षेत्रहरू छन् ।

२. वस्तुगत स्थिति

यस प्रदेशमा औसत आयु ७०.७ वर्ष, बाल मृत्यु दर ३६ (प्रति हजार जिवित जन्ममा), नवजातशिशु मृत्युदर २१ (प्रति हजार जिवित जन्ममा), मातृमृत्युदर २३९ (प्रति लाख जिवित जन्ममा), कूल प्रजनन दर १.८, स्वास्थ्य संस्थामा सुत्केरी हुने ७१ प्रतिशत, तोकिएको खोप लगाउने १२-२३ महिनाका बालबालिका ८५ प्रतिशत र जन्मँदा अति कम तौल भएका शिशु ९.७ प्रतिशत रहेको देखिन्छ। यसैगरी, ६ महिना देखि ५९ महिनाका ४२.८ प्रतिशत बालबालिकामा रक्तअल्पता देखिएको छ भने, १५ देखि ४९ वर्षका ३५ प्रतिशत महिलाहरूमा मोटोपन तथा १५ वर्ष माथिका १९.१ प्रतिशत महिला र २८.७ प्रतिशत पुरुषमा उच्च रक्तचापको समस्या रहेको छ। यसै गरी औसत विवाहको उमेर पुरुषमा २१.७ वर्ष र महिलामा १९.७ वर्ष रहेको छ। पाँच वर्ष मुनिका २९ प्रतिशत बालबालिकामा पुङ्कोपनाको अवस्था रहेको छ।

प्रदेशभित्र सरकारीस्तरमा २७ अस्पताल, ४३ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, ६४४ स्वास्थ्य चौकी, १३९ नगर केन्द्र, ११४ सामुदायिक स्वास्थ्य इकाई तथा ६४ आयुर्वेद स्वास्थ्य संस्था, ३९८ बर्थिङ सेन्टर, २४८२ खोप केन्द्र र १९८३ गाउँघर क्लिनिक सञ्चालित छन्। यस प्रदेश भित्र शहरी क्षेत्रमा सामान्य देखि विशेषज्ञ सेवा सहितका नीजि साथै सामुदायिक स्तरका अस्पतालहरू र मेडिकल कलेजहरूले स्वास्थ्य सेवा पुर्याईरहेका छन् । यसै गरी ९५६१ महिला स्वास्थ्य स्वयंसेविका मार्फत् समुदायमा स्वास्थ्य शिक्षा र जनचेतना अभिवृद्धि सम्बन्धी सेवा प्रदान गर्ने कार्य भइरहेको स्थिति छ।

हाल प्रदेश स्वास्थ्य सेवा ऐन, २०७५ कार्यान्वयनमा छ । स्वास्थ्य सम्बन्धि अन्य आवश्यक नीति, कानून, नियमावली, रणनीति तथा योजनाहरू तर्जुमा भैरहेका छन् । प्रवर्द्धनात्मक, प्रतिकारात्मक, उपचारात्मक, पुनर्स्थापनात्मक तथा प्रशामक स्वास्थ्य सेवाको प्रभावकारी कार्यान्वयन र नियमन निरन्तर भैरहेको अवस्था छ। त्यसैगरी गैरसरकारी संघसंस्था, नीजि स्वास्थ्य संस्थाको दर्ता, सञ्चालन अनुमति, स्तरोन्नती, सेवाको गुणस्तर कायम राख्नका लागि अनुगमन र नियमन आदि क्रियाकलापहरू सञ्चालित छन् । सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम अन्तर्गत स्वास्थ्य विमा, लक्षित वर्गका लागि आधारभूत स्वास्थ्य सेवा, अत्यावश्यक औषधी र सामग्रीको खरिद र आपूर्तिको व्यवस्थापन, स्वास्थ्य व्यवस्थापन सूचना प्रणाली, स्वास्थ्य अनुसन्धान, सरुवा रोगहरूको निगरानी, नसर्ने रोगहरूको रोकथाम र नियन्त्रणका प्रयास, विपद र महामारी रोगको व्यवस्थापन र गुणस्तरीय सेवाका लागि स्वास्थ्यकर्मीको ज्ञान, सीप र दक्षता अभिवृद्धि सम्बन्धी कार्यहरू हुँदै आएका छन् ।

स्वास्थ्य सेवा तथा वैकल्पिक उपचार सेवा सम्बन्धी संघ संस्थाको दर्ता, सञ्चालन, अनुमति र नियमन; स्वास्थ्य सेवाको गुणस्तर निर्धारण, अनुगमन र नियमन; औषधीजन्य तथा स्वास्थ्य प्रविधिसम्बन्धी सामग्रीको उत्पादन तथा सञ्चय; अधिकतम् खुद्रा मूल्य निर्धारण, अन्तिम बिसर्जन, गुणस्तर तथा मापदण्ड; स्वास्थ्य बिमा लगायतका सामाजिक स्वास्थ्य सुरक्षा कार्यक्रमको व्यवस्थापन तथा नियमन; औषधी निगरानी र उचित प्रयोग; सूक्ष्म जीवनिरोधक प्रतिरोध न्यूनीकरण; खोप; संवेदनशील औषधी तथा अन्य स्वास्थ्य सामग्री खरिद तथा आपूर्ति व्यवस्थापन; अध्ययन, अनुसन्धान तथा सूचना प्रणाली;

स्वास्थ्य व्यवस्थापन; प्रदेशस्तरीय जनस्वास्थ्य निगरानी र व्यवस्थापन; स्वास्थ्य क्षेत्रमा विपद् र महामारी व्यवस्थापन; आकस्मिक स्वास्थ्य सेवा प्रवाह; सरूवा तथा नसर्ने रोग नियन्त्रण तथा रोकथाम; राष्ट्रिय मापदण्ड अनुरूप स्वास्थ्य सेवा सम्बन्धी भौतिक पूर्वाधार विकास तथा व्यवस्थापन; स्वास्थ्यजन्य फोहोर व्यवस्थापन सम्बन्धी मापदण्ड निर्धारण, कार्यान्वयन र नियमन; मानवस्रोत विकास र व्यवस्थापन; पोषण प्रवर्धन; परिवार योजना तथा जनसंख्या व्यवस्थापन विषयहरू प्रदेशको कार्य क्षेत्रमा पर्दछन्। स्वास्थ्य तथा जनसंख्या सम्बन्धी नेपालको संविधानमा उल्लेख भएका र अन्तराष्ट्रीय स्तरमा गरिएका प्रतिवद्धता र समझदारीहरू हासिल गर्ने तर्फ स्वास्थ्य तथा जनसंख्या सम्बन्धी आगामी गतिविधिहरू प्राथमिकताका साथ अगाडी बढाउनु पर्ने आवश्यकता छ ।

३. समस्या र चुनौती

यस प्रदेशमा एक तिहाइ वडाहरू अझै सरकारी स्वास्थ्य संस्था विहीन रहेका छन्। सबै स्थानीय तहमा अस्पताल पुग्न नसकेको, स्वास्थ्य सेवाको सहज पहुँचमा अझै पनि नागरिकहरूले आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, लैङ्गिक, भौगोलिक तथा संस्थागत बाधाहरू भोग्नु परिरहेको छ। जन्मदरमा लैङ्गिक अनुपात असन्तुलित हुँदै गएको, स्वास्थ्य संस्थाबाहिर सुत्केरी हुने महिलाको सङ्ख्या घटाउन अझै पनि कठिन रहेको, बाल पोषणको अवस्था कमजोर देखिएको, स्वास्थ्य संस्थामा आधारभूत औषधी, स्वास्थ्यकर्मी तथा स्वास्थ्य उपकरणहरूको कमी रहेको, स्वास्थ्यकर्मीहरू शहर केन्द्रित रहेको, सहरी क्षेत्रमा अस्पताल तथा विशेषज्ञ स्वास्थ्य संस्थाहरूमा अत्यधिक चाप रहेको तर स्थानीय तहका स्वास्थ्य संस्थाहरूको उपयोग न्यून रहेको, विपन्नहरूको स्वास्थ्य सेवामा सीमित पहुँच, बाल मृत्युदर र मातृ मृत्युदर अपेक्षित रूपमा घटाउन नसकिएको, भौगोलिक अवस्थाको कारणले स्वास्थ्य सेवाको पहुँचमा असमानताजस्ता प्रमुख समस्याहरू विद्यमान छन्। खास गरेर ग्रामीण र सहरी विपन्न वर्गलाई स्वास्थ्य सेवाको पहुँचभित्र ल्याउने समस्या रहेको छ। यस प्रदेशमा नसर्ने रोगको भार उच्च रहेको, पत्रु खानाको अत्याधिक प्रयोग, मोटोपन बढ्दै गएको र जेष्ठ नागरिकको स्वास्थ्य समस्याहरू बढ्दै गएको देखिन्छ। अव्यवस्थित बसोबास र बसाई सराई तथा आप्रवासन, पोषिलो खानेकुरा उत्पादनमा आप्रवासनाले नकारात्मक असर परेको, बढ्दो शहरिकरण व्यवस्थित हुन नसकेको जस्ता समस्याहरू समेत विद्यमान छन्।

संविधान प्रदत्त स्वास्थ्य अधिकारलाई उपभोग गर्न पाउने स्थितिको सृजना गर्नु, सामुदायिक स्वास्थ्य सेवाको सुदृढीकरण, गुणस्तरीय औषधीमा आम नागरिकको पहुँच एवम् अत्यावश्यक औषधीको व्यवस्था गर्नु, मौसम परिवर्तनका कारण सृजित स्वास्थ्य समस्याहरू जस्तै डेंगु, स्क्रब टाइफसजस्ता रोगहरूको रोकथाम गर्नु, बढ्दो सडक दुर्घटनाबाट घाइते हुनेहरूलाई उपचार सेवा प्रदान गर्नु, बढ्दो प्रदूषण, सूर्तिजन्य पदार्थ र मादक पदार्थको प्रयोगबाट सृजित स्वास्थ्य समस्या र पानीजन्य रोगहरूको रोकथाम गर्नु, गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवाको पहुँच विस्तार गर्नु, बढ्दो निजी स्वास्थ्य संस्थाहरूको नियमन गर्नु, सहरी गरिबहरूलाई स्वास्थ्य सेवाको दायरामा ल्याउनु, शहरमा बढ्दो बसाईसराइ, स्वास्थ्य बिमालाई विपन्न, सीमान्तकृत वर्ग र दुर्गम क्षेत्रमा पुऱ्याउनु, मातृ तथा शिशु मृत्यु दर घटाउनु, स्वास्थ्य लागतमा कमी ल्याउनु, व्यापक रूपमा रहेका मधुमेह, उच्च रक्तचाप, दीर्घ श्वासप्रश्वास, क्यान्सर, मुटुरोगजस्ता नसर्ने रोग र मानसिक स्वास्थ्य समस्या आदिको रोकथाम गर्नु, भूकम्पबाट क्षतिग्रस्त स्वास्थ्य संस्थाहरूको पुनर्निर्माण गर्नु, जनतामा स्वास्थ्य चेतना र स्वस्थ व्यवहार बढाउनु, बढ्दो जेष्ठ नागरिकको स्वास्थ्य समस्याका व्यवस्थापन गर्नु, सन्तुलित र समानुपातिक विकास मार्फत आन्तरिक बसाईसराइ व्यवस्थित गर्नु आदि प्रमुख चुनौतीहरू छन्।।

४. सम्भावना र अवसर

मुलुककै प्रमुख अस्पतालहरू सहित झण्डै एक तिहाइ स्वास्थ्य संस्था र विशिष्टीकृत स्वास्थ्य सेवाका केन्द्रहरू यो प्रदेशमा छन्। स्वास्थ्यमा निजी क्षेत्रको संलग्नता पनि उल्लेख्य र बढ्दो छ। सरकारी र निजीक्षेत्रसमेत गरी स्वास्थ्यकर्मीहरू उत्पादन गर्ने १२ मेडिकल कलेज तथा अनुसन्धान केन्द्रहरू यसै प्रदेशमा छन् भने विशेषज्ञ स्वास्थ्यकर्मीहरूको तुलनात्मक

रूपमा ठूलो उपस्थिति रहेको छ। यसका अतिरिक्त वैकल्पिक स्वास्थ्य सेवाका लागि आवश्यक योग केन्द्रहरू, प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रहरू, आम्चीजस्ता विविध उपचार पद्धतिहरूसमेत यस प्रदेशमा बढी केन्द्रित देखिन्छन्। प्रदेशभित्रको स्वास्थ्य क्षेत्रका असमानताहरूलाई कम गर्न नीतिगत पहलहरूका माध्यमबाट संविधान प्रदत्त अधिकारहरूको सबै भौगोलिक क्षेत्र, समुदाय र वर्गमा प्रत्याभूति गराउने र गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवाको पहुँच सुनिश्चित गर्ने अवसरहरू पनि प्रशस्त छन्।

५. दीर्घकालीन सोच

स्वस्थ नागरिक; गुणस्तरीय जीवनयापन

६. लक्ष्य

स्वास्थ्य सेवामा सबैको पहुँच स्थापित गरी जवाफदेही स्वास्थ्य सेवा प्रणालीको माध्यमबाट गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध भएको हुने।

७. उद्देश्य

- आधारभूत स्वास्थ्य सेवामा निःशुल्क र सर्वसुलभ पहुँच सुनिश्चित गर्नु,
- स्वास्थ्य प्रणालीमा सुधार तथा सेवाको गुणस्तर अभिवृद्धि गर्नु,
- स्वास्थ्यसम्बन्धी विषयहरूलाई एकीकृत रूपमा सम्बोधन गर्नु र
- शहरी क्षेत्रमा हुने बसाइराइलाई नियन्त्रित गर्ने।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
५.२.१ स्वास्थ्यसम्बन्धी नीति, कानून र मापदण्ड निर्माण गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • स्वास्थ्यसम्बन्धी कानून, नीति, रणनीति, मापदण्ड, प्रोटोकल, योजनाको निर्माण गरी प्रभावकारीरूपमा कार्यान्वयन गरिनेछ। • स्वास्थ्य संस्थाहरूको सेवाको स्तर र मापदण्ड निर्धारण गरिनेछ। • स्वास्थ्य सेवा प्रवाहमा जनसहभागिता प्रवर्द्धन गर्ने नीति तर्जुमा गरिनेछ। • औद्योगिक प्रतिष्ठान तथा कार्यस्थलमा व्यवसायजन्य स्वास्थ्य र सुरक्षाका उपाय र मापदण्डहरू निर्धारण गरी नियमन र पालना गराईनेछ। • स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठानहरू सञ्चालन र नियमनका लागि आवश्यक कानुनी व्यवस्था गरि कार्यान्वयन गरिनेछ। • स्वास्थ्य सेवा, औषधी र उपकरणको मूल्यलाई आवश्यक नीति निर्माण गरी व्यवस्थित गरिनेछ। • अस्पतालजन्य फोहर व्यवस्थापनका लागि आवश्यक कानून निर्माण गरी व्यवस्थित गरिनेछ। • औषधी उत्पादन गर्ने स्वदेशी उद्योगहरूलाई प्रवर्द्धन र प्रोत्साहित गरिनेछ। • जेनेरिक मेडिसिनको प्रवर्द्धन गर्ने नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ। • स्वास्थ्य संरक्षण र प्रवर्द्धनका लागि पानी, वायु, ध्वनि प्रदूषण र जलवायु परिवर्तनबाट हुने प्रतिकूल असरको प्रभावकारी नियन्त्रण गर्न मापदण्ड बनाई बहुक्षेत्रीय संयन्त्र परिचालन गरी नियमन गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
<p>५.२.२ स्वास्थ्य सेवामा समतामूलक पहुँच सुनिश्चित गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • आधारभूत स्वास्थ्य सेवालाई निःशुल्क रूपमा सबै नागरिकको पहुँचमा पुऱ्याइनेछ। • दुर्गम तथा विकट ग्रामीण क्षेत्रमा आधारभूत लगायतका स्वास्थ्य सेवा शुलभ रूपमा पुऱ्याउन संघीय सरकार र स्थानीय तहसँगको साझेदारीमा जनस्वास्थ्य कोष स्थापना गरी कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। • स्वास्थ्य सेवाको सहज पहुँचका लागि कानूनी र नीतिगत व्यवस्था गरी व्यवधानहरू हटाइनेछ। • स्वास्थ्य सेवाको पहुँच नभएका क्षेत्रमा सहज पहुँच स्थापना गर्न सामुदायिक स्वास्थ्य प्रणालीको सुदृढीकरण तथा सार्वजनिक, निजी र सहकारी साझेदारीलाई प्रोत्साहन गरिनेछ। • सरकारी स्वास्थ्य संस्था र स्वास्थ्य प्रतिष्ठान र मेडीकल कलेजहरूहरूबाट स्थानीय तहमा विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवा र संस्थागत क्लिनिक सञ्चालन गर्न आवश्यक समन्वय गरिनेछ। • स्वास्थ्य विमालाई प्रदेश स्वास्थ्य प्रणालीसंग समन्वयात्मक रूपमा कार्य गर्ने गरी सयन्त्र विकास, सुदृढीकरण र नियमन गरिनेछ। • जीवनपथको अवधारणा अनुरूप मातृशिशु, बालबालिका, किशोरकिशोरी, जेष्ठ नागरिक लगायत सबै उमेर समुहका नागरिकको स्वास्थ्य सेवा आवश्यकतालाई सम्बोधन गर्न आवश्यक व्यवस्था मिलाइनेछ। • आयुर्वेद एवम् वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतिलाई विशिष्टताको आधारमा एकद्वार प्रणालीबाट सेवा उपलब्ध गराउने व्यवस्था मिलाइनेछ।
<p>५.२.३ स्वास्थ्य संस्था र सेवाहरूको विस्तार गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • आवश्यक औषधी, उपकरण, प्रविधि र दक्ष स्वास्थ्यकर्मीहरूसहितको सेवालाई विस्तार गरिनेछ। • अस्पतालहरूलाई प्रेषण र विशिष्टीकृत सेवा प्रवाह गर्न सक्ने गरी विकास गरिनेछ। • स्थानीय तहमा अस्पताल स्थापना गर्न स्थानीय तहसँग समन्वय र सहजीकरण गरिनेछ। • वडाहरूमा आवश्यकताको आधारमा प्रसूति सेवासहितको स्वास्थ्य चौकी स्थापना गर्न स्थानीय तहसँग समन्वय र सहजीकरण गरिनेछ। • मानसिक रोग, उच्च रक्तचाप, दीर्घ श्वासप्रश्वास रोग, मधुमेह, मुटु रोग लगायतका नसर्ने रोगहरू तथा सडक दुर्घटनाको रोकथाम र नियन्त्रण उपायको रूपमा सचेतना र स्वास्थ्य प्रवर्द्धन कार्यक्रमलाई अभियानको रूपमा सञ्चालन गर्न संघ र स्थानीय तहसँग समन्वय र सहकार्य गरिनेछ। • दुर्गम र पिछडिएका क्षेत्रहरूमा स्वास्थ्य सेवालाई विस्तार र गुणस्तरीय बनाउन दूर स्वास्थ्य सेवालाई उपचार पद्धतिको रूपमा अनुसरण गरिनेछ। • दुर्गम तथा ग्रामीण क्षेत्रमा घुम्ती तथा स्याटेलाइट स्वास्थ्य सेवाहरू सञ्चालन • मानसिक स्वास्थ्य सेवा विस्तार गरी पहुँचलाई सहज बनाइनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
<p>५.२.४</p> <p>स्वास्थ्य सेवाको गुणस्तर सुनिश्चित गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • विद्यालय नर्स कार्यक्रम कार्यान्वयनका लागि स्थानीय तह र संघसँग सहकार्य गरि यसको विकास र दिगोपनाको लागि समेत आवश्यक उपाय र कार्यहरू गरिनेछ। • राजमार्ग क्षेत्रमा निश्चित दुरीमा अवस्थित स्वास्थ्य संस्थालाई सडक दुर्घटनाको तत्काल सम्बोधन गर्न सक्ने गरी सवलीकरण गरिनेछ। • स्वास्थ्य जनशक्तिको ज्ञान, सीप र दक्षता विकास र अभिवृद्धिका लागि आवश्यक तालिम र अभिमुखीकरण लगायतका क्रियाकलापहरू योजना तथा सञ्चालन र स्वास्थ्य सम्बन्धि तालिमको नियमन गरिनेछ। • स्वास्थ्य संस्थाहरूको स्तर र मापदण्ड अनुसार स्वास्थ्यसम्बन्धी पूर्वाधारहरूको विकास ज्येष्ठ नागरिक, अपाङ्ग र लैङ्गिकमैत्री हुने गरी गरिनेछ। • स्वास्थ्यजन्य महामारी तथा प्रकोप, इमर्जिड, रिइमर्जिड रोगहरूको रोकथाम तथा व्यवस्थापनको अग्रिम तयारी स्वरूप आकस्मिक कोष, जनशक्ति, औषधी तथा अन्य आवश्यक सामग्रीहरूसहितको प्रादेशिक आपतकालीन व्यवस्थापन केन्द्रको व्यवस्था गरिनेछ। • स्वास्थ्यलाई हानी गर्ने सुतीजन्य पदार्थ, मदिरा, लागु औषध, अखाद्य वस्तुहरूको मिसावट र प्रयोगलाई न्यूनीकरण गर्न आवश्यक कानुनी व्यवस्था गरी कार्यान्वयन गरिनेछ। • स्वास्थ्यलाई हानी गर्ने खाद्य पदार्थमा रहेको रासायनिक पदार्थको परीक्षणका लागि आवश्यक व्यवस्था गर्न स्थानीय तहलाई सहयोग गरिनेछ।
<p>५.२.५</p> <p>सबै क्षेत्रको सार्वजनिक नीतिहरूको तर्जुमा र कार्यान्वयनमा स्वास्थ्यसम्बन्धी विषयहरूलाई समावेश गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • "स्वास्थ्य सबै नीतिमा" भन्ने विश्वव्यापी नारालाई प्रभावकारी कार्यान्वयन गर्नका लागि बहुक्षेत्रीय समन्वय र सहकार्यको लागि निर्देशिका बनाई लागू गरिनेछ। खास गरी स्वास्थ्य साक्षरता वृद्धि गर्न, खाद्या पदार्थमा विषादीको प्रयोग न्यूनीकरण र नियमन गर्न, स्वस्थ खाद्या सामग्रीको उपलब्धता गराउन, स्वस्थ वातावरणको सृजना गर्न, स्वच्छ पानी र सरसफाईको व्यवस्था गर्न, स्वस्थ आवास र सुरक्षित पूर्वाधारको व्यवस्था गर्न आवश्यक नीतिगत र कानुनी व्यवस्था लगायतका संयन्त्र विकास गरि सम्बन्धित निकायहरूसँग पैरवी, समन्वय र सहकार्य गरिनेछ। • बहुक्षेत्रीय पोषण कार्यक्रमलाई स्वास्थ्यसँग आबद्ध गरी प्रभावकारी रूपमा सञ्चालन गर्न स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। • विद्यालय शिक्षामा स्वास्थ्य र सरसफाइलाई विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रमसँग आबद्ध गरिनेछ।
<p>५.२.६</p> <p>स्वास्थ्य क्षेत्रमा सुशासनको अभिवृद्धि गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • स्वास्थ्य सेवालार्थ जनउत्तरदायी, जिम्मेवार, पारदर्शी र प्रभावकारी बनाउन सामाजिक परिक्षण, सार्वजनिक सुनुवाइ लगायतका कार्यहरूलाई निरन्तर संचालन गरिनेछ। • विकट क्षेत्रमा स्वास्थ्यकर्मीलाई काम गर्न प्रोत्साहित गर्न विशेष सुविधा र अवसरहरूको व्यवस्था गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
	<ul style="list-style-type: none"> • स्वास्थ्यकर्मीको कार्य सम्पादनलाई निजको सेवासँग घनिष्ठ रूपमा आबद्ध गर्ने पद्धतिको विकास गरिनेछ। • वित्तीय सुशासन अभिवृद्धि गरी स्वास्थ्यक्षेत्रको वित्तीय जोखिम न्यूनीकरण गरिनेछ। • एकीकृत स्वास्थ्य सूचना व्यवस्थापन प्रणालीसँग सम्बन्धित सूचनाहरूको गुणस्तरीय र प्रविधिमैत्री सङ्कलन, सम्प्रेषण र उपभोगलाई व्यवस्थित गर्न प्रदेश स्वास्थ्य सूचना व्यवस्थापन प्रणाली विकास गरिनेछ। प्रदेशको स्वास्थ्य सूचना व्यवस्थापन प्रणालीलाई स्थानीय तहको स्वास्थ्य सूचना व्यवस्थापन प्रणालीसँग आबद्ध गराईनेछ। • स्वास्थ्य सेवामा समयानुकुल सुधार, तथ्यमा आधारित योजना तर्जुमा गर्न एवम् नव प्रविधिको विकासका लागि अनुसन्धान र विकासलाई जोड दिदै नीतिगत र कानूनी व्यवस्था समेत गरिनेछ। • जनसंख्या, भौगोलिक अवस्था र आवश्यकता समेत बिचार गरि संगठन तथा व्यवस्थापन सर्वेक्षण गरि प्रदेश भित्रका स्वास्थ्य संस्थामा कार्य र सेवा बोझको आधारमा समयानुकुल र आवश्यक स्वास्थ्यकर्मीको पद र दरबन्दीको सर्वेक्षण, निर्धारण र व्यवस्था मिलाइ स्वास्थ्य सेवामा सुशासन कायम गरिनेछ।
<p>५.२.७ स्वास्थ्य प्रवर्द्धन र स्वास्थ्यसम्बन्धी जनचेतना विस्तार गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • प्रवर्द्धनात्मक र उपचारात्मक स्वास्थ्य सेवाका कार्यक्रम स्थानीय तहसंग समन्वय र सहकार्य गरी व्यापक रूपमा सञ्चालन गरिनेछ। • स्वस्थ बानी, व्यवहार र अभ्यासहरूको प्रवर्द्धन घर घरसम्म पुरयाउन स्थानीय तहसंगको समन्वय र सहकार्यमा शारीरिक अभ्यास र सुगठनका लागि व्यायाम हल, योगाभ्यास केन्द्र निर्माण र पैरवी गरिनेछ। • स्वस्थ बानी, व्यवहार र अभ्यासहरूको प्रवर्द्धन गर्न सूचना र सञ्चार प्रविधि लाई अभियानको रूपमा सञ्चालन गरिनेछ। • शरीरलाई हानी पुऱ्याउने सुर्तीजन्य पदार्थ, मदिरा, रासायनिक पदार्थ, विषादीयुक्त, मिसावटजन्य, प्रशोधित तथा तयारि खाना र पत्रु खाद्य पदार्थ (जंकफूड) विरुद्ध स्थानीय तहसंग समन्वय र सहकार्यका साथै आवश्यक नीतिगत र कानूनी व्यवस्था समेत गरि जनचेतनामुलक र यस्ता पदार्थहरूको तथ्यहीन र भ्रमपूर्ण प्रचार र विज्ञापनलाई नियन्त्रण र नियमन गर्ने कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। • खेलकुद र स्वास्थ्यलाई अभिन्न अंगको रूपमा विकास गर्न सम्बन्धित क्षेत्रसंग आवश्यक समन्वय, सहकार्य, पैरवी र सयन्त्रको विकास गरिनेछ। • स्थानीय रूपमा उपलब्ध पौष्टिक खाना तथा पोषणलाई प्रवर्द्धन गरिनेछ। • जीवनशैलीजन्य रोगहरू मधुमेह, दीर्घ श्वासप्रश्वास रोग, क्यान्सर, मुटुरोग र मानसिक स्वास्थ्य समस्यालाई रोकथाम र नियन्त्रणका लागि स्वास्थ्य प्रवर्द्धन कार्यक्रमलाई प्राथमिकताका साथ संचालन गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
<p>५.२.८ प्रजनन स्वास्थ्यलाई अधिकारको रूपमा स्थापित र सुनिश्चित गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> किशोरी गर्भ र त्यस्ता आमाबाट हुने जन्मदर घटाउने, बाल विवाह न्यूनीकरण गर्ने कार्यक्रमहरू संचालन गरिनेछ। किशोर किशोरी तथा युवा युवतीका लागि जीवनोपयोगी सीप र क्षमता विकास तथा अभिवृद्धिका कार्यक्रमहरू संचालन गरिनेछ। सुरक्षित यौन तथा प्रजनन स्वास्थ्यलाई प्रवर्द्धन र व्यवस्थित परिवारको अवाधारनालाई प्रोत्साहित गरिनेछ। लैंगिक समानता र सामाजिक समावेशीकरणको मान्यता अनुरूप स्वास्थ्य, जनसंख्या र दिगो विकास कार्यक्रमहरूमा लक्षित वर्गको सहभागितालाई सुनिश्चित गरिनेछ।
<p>५.२.९ जनसङ्ख्या, आन्तरिक बसाईसराई र शहरीकरणलाई व्यवस्थित गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> विकास कार्यक्रम र जनसंख्या बीच सामन्जस्यता कायम गर्दै जनसंख्या व्यवस्थापनलाई समन्वयात्मक रूपमा संचालन गरिनेछ। आन्तरिक बसाईसराई र शहरीकरणलाई निरुत्साहित गर्न नागरिक बसोबास गरेकै स्थानमा शिक्षा, स्वास्थ्य, भौतिक पूर्वाधार, सडक संजाल, संचार, सूचना, प्रविधि र निर्माण लगायतमा समानुपातिक विकास गर्ने र रोजगारीको अवसर सृजना समन्वय गरिनेछ। जनसंख्या तथा बसाईसराई सम्बन्धि नीति तथा कार्यक्रम तर्जुमा गरि कार्यान्वयन गरिनेछ। जन्म, मृत्यु, विवाह, बसाईसराई जस्ता घटना दर्तालाई अनिवार्य गर्ने स्थानीय तहसंगको समन्वयमा गरिनेछ। जनसंख्या र बसाईसराई सम्बन्धि सूचना, तथ्यांक र अभिलेखलाई पारदर्शी, बैज्ञानिक, अध्यावधिक बनाउन र त्यस्ता सूचना नीति र योजना तर्जुमामा उपयोग गर्न जनसंख्या र बसाईसराई अध्ययन तथा अनुसन्धानलाई जोड दिईनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	स्वास्थ्य संस्थाहरूको सेवाको स्तर र मापदण्ड निर्धारण	√	√	√	√	
२	स्वास्थ्य विज्ञान प्रतिष्ठानहरू सञ्चालन र नियमनका लागि आवश्यक कानून निर्माण	√	√	√	√	
३	आवश्यक कानून निर्माण गरी अस्पतालजन्य फोहर व्यवस्थापन	√	√	√	√	
४	औषधी उत्पादन गर्ने स्वदेशी उद्योगहरूलाई प्रोत्साहन	√	√	√	√	
५	जेनेरिक मेडिसिनको प्रवर्द्धन	√	√	√	√	
६	स्वास्थ्य संरक्षण र प्रवर्द्धनका लागि पानी, वायु, ध्वनि प्रदूषण र जलवायु परिवर्तनबाट हुने प्रतिकूल असरको प्रभावकारी नियन्त्रण गर्न मापदण्ड	√	√	√	√	

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
	बनाई बहुक्षेत्रीय संयन्त्र परिचालन गरी नियमन					
७	आधारभूत स्वास्थ्य सेवालाई निःशुल्क रूपमा सबै नागरिकको पहुँच स्थापित	√	√	√	√	
८	दुर्गम तथा विकट ग्रामीण क्षेत्रमा आधारभूत स्वास्थ्य सेवा पुऱ्याउन संघीय सरकार र स्थानीय तहसँगको साझेदारीमा विशेष कोष स्थापना गरी सञ्चालन	√	√	√	√	
९	स्वास्थ्य सेवाको पहुँच नभएका क्षेत्रमा सहज पहुँच स्थापना गर्न सामुदायिक स्वास्थ्य प्रणालीको सुदृढीकरण तथा सार्वजनिक, निजी र सहकारी साझेदारीलाई प्रोत्साहन	√	√	√	√	
१०	दुर्गम तथा ग्रामीण क्षेत्रमा घुम्ती तथा स्याटेलाइट स्वास्थ्य सेवाहरू सञ्चालन	√	√	√	√	
११	आयुर्वेद एवम् वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतिलाई विशिष्टताको आधारमा एकद्वार प्रणालीबाट सेवा प्रवाह	√	√	√	√	
१२	अस्पतालहरूलाई रिफरल र टर्सरी सेवा प्रवाह गर्न सक्ने गरी विकास	√	√	√	√	
१३	अस्पताल स्थापना र सञ्चालन गर्न स्थानीय तहलाई सहयोग	√	√	√	√	
१४	आवश्यकताको आधारमा वडाहरूमा सुविधा सम्पन्न र गुणस्तरीय प्रसूति सेवासहितको स्वास्थ्य चौकी स्थापना	√	√	√	√	
१५	मानसिक रोग, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, मुटु रोग लगायतका नसर्ने रोगहरूको परीक्षण र निरोधात्मक उपायको रूपमा सचेतना कार्यक्रमलाई अभियानको रूपमा सञ्चालन	√	√	√	√	
१६	दुर्गम र पिछडिएका क्षेत्रहरूमा दूर स्वास्थ्य सेवालाई उपचार पद्धतिको रूपमा अनुसरण	√	√	√	√	
१७	विद्यालय नर्स कार्यक्रम	√	√	√	√	
१८	स्वास्थ्य जनशक्तिको क्षमता विकास	√	√	√	√	
१९	स्वास्थ्य संस्थाहरूको स्तर र मापदण्ड अनुसार स्वास्थ्यसम्बन्धी पूर्वाधारहरूको विकास	√	√	√	√	
२०	स्वास्थ्यजन्य महामारी तथा प्रकोप, इमर्जिड, रिडमर्जिड रोगहरूको रोकथाम तथा व्यवस्थापनको अग्रिम तयारी स्वरूप आकस्मिक कोष, जनशक्ति, औषधी तथा अन्य आवश्यक सामग्रीहरूसहितको प्रादेशिक आपतकालीन व्यवस्थापन केन्द्रको व्यवस्था	√	√	√	√	
२१	मानसिक स्वास्थ्य सेवामा सहज पहुँच स्थापना	√	√	√	√	
२२	खाद्य पदार्थको शुद्धता परीक्षणका लागि खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाको स्थापना र सञ्चालन	√	√	√	√	
२३	स्वास्थ्य सम्बन्धमा बहुक्षेत्रीय सहकार्यको निर्देशिका तर्जुमा र लागू	√	√	√	√	

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
२४	बहुक्षेत्रीय पोषण कार्यक्रम सञ्चालनमा सहकार्य	√	√	√	√	
२५	विकट क्षेत्रमा काम गर्ने स्वास्थ्यकर्मीलाई विशेष सुविधा र अवसरहरू प्रदान	√	√	√	√	
२६	प्रदेश स्तरमा एकीकृत स्वास्थ्य सूचना प्रणालीसँग सम्बन्धित सूचनाहरूको सङ्कलन र सम्प्रेषण	√	√	√	√	
२७	स्वास्थ्य सेवामा सुधार एवम् नव प्रविधिको विकासका लागि अनुसन्धान र विकासमा जोड	√	√	√	√	
२८	प्रवर्द्धनात्मक, प्रतिरोधात्मक र निरोधात्मक स्वास्थ्य सेवाका कार्यक्रम सञ्चालन	√	√	√	√	
२९	शरीरलाई हानी पुऱ्याउने खालका रासायनिक पदार्थ, विषादीयुक्त, मिसावटजन्य र पत्रुखाद्यपदार्थ (जंक फुड) विरुद्ध सचेतनात्मक कार्यक्रम सञ्चालन	√	√	√	√	

१०. अपेक्षित उपलब्धि

योजना अवधिमा आधारभूत स्वास्थ्य सेवा निःशुल्क र सर्वसुलभ रूपमा प्राप्त भएको हुने, स्थानीय तहमा अस्पताल स्थापना भएको हुने, दक्ष प्रसूतिकर्मीहरूको सहयोगमा गराइएको जन्महरूको अनुपात १० प्रतिशत पुगेको हुने, मातृ मृत्युदर प्रतिलाख जीवित जन्म २३९ बाट २०० मा आउने, नवजात शिशु मृत्युदर प्रतिहजार जीवित जन्म १७ बाट १४ मा झर्ने, सबै बालबालिकाले आवश्यक खोप लिएको हुने, औसत प्रतिव्यक्ति उमेर ७३ वर्ष पुगी दिगो विकासका लक्ष्य पूरा गर्न निर्धारित सूचकहरूमा महत्वपूर्ण सुधार आएको हुने।

५.३ लैङ्गिक समानता, सामाजिक समावेशीकरण र संरक्षण

१. पृष्ठभूमि

लैङ्गिक समानता तथा सामाजिक समावेशीकरण (लैससास) मानव अधिकार तथा सामाजिक विकास दुवै दृष्टिले अति महत्वपूर्ण सवाल हो। संविधानको प्रस्तावनामा नै समानुपातिक समावेशी र सहभागिताको सिद्धान्तका आधारमा समतामूलक समाजको निर्माणका लागि वर्गीय, जातीय, क्षेत्रीय, भाषिक, धार्मिक, लैङ्गिक विभेद र हिंसा तथा सबै प्रकारका जातीय छुवाछूत एवम् विभेदको अन्त्य गरी आर्थिक समानता, समृद्धि र सामाजिक न्यायको सुनिश्चित गर्ने संकल्प गरिएको छ। महिला अधिकार लगायत विपन्न, लोपोन्मुख तथा सीमान्तकृत समुदायले राज्यबाट पाउनुपर्ने आधारभूत मानवीय सेवा सुविधाको समावेशी पहुँच र उपभोगका लागि नैतिक तथा कानुनी रूपमा जवाफदेही शासन प्रणालीको स्थापना गर्ने परिकल्पना संविधानले गरेको “कोही पनि छुट्टनु हुँदैन” भन्ने मान्यताका साथ लैङ्गिक समता र बालिकालाई सशक्त बनाउने दिगो विकासको लक्ष्य रहेको छ।

२. वस्तुगत स्थिति

प्रदेशका १३ वटै जिल्लाका स्थानीय तहमा ४४.५२ प्रतिशत र प्रदेश सभामा ३४.५५ प्रतिशत महिला र

दलितहरूको प्रतिनिधित्व रहेको, लैङ्गिक असमानता सूचक ०.४८९ रहेको, महिलाको मानव विकास सूचक ०.५२१ पुगेको, बालविवाह २९ प्रतिशत रहेको, ५८.६ प्रतिशत महिलाहरूले आफूले कमाएका पैसा खर्च गर्ने क्षमता रहेको, १४.९ प्रतिशतले श्रीमानको कमाइबाट खर्च गर्ने गरेको, ८.९ प्रतिशत महिलाको नाममा घरको र १३.४ प्रतिशत महिलाको नाममा जग्गा जमिनमा स्वामित्व रहेको अवस्था छ। महिला र पुरुषको श्रमशक्ति सहभागिता दर क्रमशः २६.३ र ५३.८ प्रतिशत तथा बेरोजगारी दर क्रमशः १३.१ र १०.३ प्रतिशत रहेकोछ ।

महिलाको साक्षरताको प्रतिशत ६७.०४ प्रतिशत छ भने पुरुषको ८२.८२ प्रतिशत रहेको, शैक्षिकस्तर र बाल मृत्युदरको तुलना गर्दा उच्च र कम शैक्षिकस्तर भएका आमाहरूको पाँच वर्षमुनिका बच्चाहरूको मृत्युदर (प्रति एक लाख जीवित जन्ममा) क्रमशः २१ र ६० रहेको, त्ससैगरी बाल मृत्युदर गरिब धनी समूहमा क्रमशः ६ र १२ को ठूलो अन्तर विद्यमान छ।

१५ वर्षको उमेरदेखि नै शारीरिक हिंसा भोगेका महिला १९.६ प्रतिशत रहेको, गरिब तथा निम्न मध्यम वर्ग नै बढी हिंसाको शिकार भएको, यो प्रतिशत अति गरिब, मध्यम वर्ग र धनीमा क्रमशः २१ प्रतिशत, २५ प्रतिशत र १४ प्रतिशत रहेको, महिलाको शैक्षिकस्तरका आधारमा हेर्दा कम पढेका वा नपढेका महिलाहरूमा ३४.४ प्रतिशत र एसएलसी वा सोभन्दा बढी पढेका महिलामा ७.७ प्रतिशत रहेको देखिन्छ। दिगो विकासको लक्ष्यमा बालबालिकाको गुणस्तरीय शिक्षा तथा स्वास्थ्य, सुरक्षित, पहुँचयोग्य र हरित सार्वजनिक स्थलमा पहुँच, बालबालिका तथा किशोरकिशोरी विरुद्ध हुने सबै प्रकारका विभेद, शोषण, दुर्व्यवहार र हिंसा अन्त्य गरी सशक्त गर्ने जस्ता विषयलाई सम्बोधन गर्नुपर्ने आवश्यकता रहेको छ ।

प्रदेशमा कुल जनसङ्ख्याको १.६३ प्रतिशत शारीरिक, दृष्टि, श्रवण तथा बोली, मानसिकसम्बन्धी अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरू रहेका छन्। कुल अपाङ्गमध्ये शारीरिक अपाङ्गता भएका ३५.२५ प्रतिशत र श्रवणसम्बन्धी अपाङ्गता भएका २.०२ प्रतिशत रहेको छ। नेपालमा ज्येष्ठ नागरिकको जनसंख्या (२०६८ को जनगणना अनुसार) २४ लाख २२ हजार ४९४ जना (कुल जनसंख्याको ८.१३ प्रतिशत) रहेको छ। बागमती प्रदेश मा ज्येष्ठ नागरिकको जनसंख्या ४ लाख ५५ हजार ९ सय ८७ (कुल जनसंख्याको ८.२४ प्रतिशत) सो मध्ये महिला — ४.२६ प्रतिशत पुरुष — ३.९८ प्रतिशत रहेको छ ।

महिला हकसम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानून, मापदण्ड तथा योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र नियमन, लैङ्गिक उत्तरदायी बजेट र लैङ्गिक परीक्षण, महिला सशक्तीकरण, लैङ्गिक समता, जेष्ठ नागरिक, एकल महिला, अपाङ्गता भएका व्यक्ति, लोपोन्मुख सिमान्तीकृत समुदायको विकास र संरक्षण, महिला सशक्तीकरण तथा लैङ्गिक समतासम्बन्धी अध्ययन, अनुसन्धान, बालबालिकाको हकहित संरक्षणसम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानून, मापदण्ड तथा योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र नियमन, अध्ययन, अनुसन्धान, बालमैत्री शासकीय प्रवन्ध र सेवाप्रवाह, बाल उद्धार कोष व्यवस्थापन र बाल सुधार तथा पुनर्स्थापना, प्रदेशस्तरमा ज्येष्ठ नागरिक, अपाङ्गता भएका व्यक्ति र अशक्त, बालबालिका र महिलासम्बन्धी कार्यहरूको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन, समाज कल्याण र संघसंस्थासम्बन्धी कार्यहरूको अनुगमन तथा मूल्याङ्कनजस्ता विषयहरू प्रदेशको कार्य क्षेत्रमा पर्दछन्।

३. समस्या र चुनौती

नक्सानुसारका लागि तथ्याङ्क बैक नहुनु, खण्डीकृत तथ्याङ्क नहुनु, तथ्याङ्कको अभावमा सीमान्तकृत समूहहरूको स्पष्ट पहिचान नहुनु र उक्त समुदायको सेवा तथा नीतिगत निर्णयमा प्राथमिकता पाउन नसक्नु, दलित, लोपोन्मुख तथा जनजाति महिलाहरूको सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक, शैक्षिक एवम् वैयक्तिक स्थिति कमजोर रहनु, महिला तथा बच्चितीकरणमा परेका समूहको सहभागिता प्रायः औपचारिक प्रतिनिधित्वमा मात्र सीमित रहनु आदि प्रमुख समस्या छन्।

महिला तथा बच्चितीकरणमा परेका सीमान्तकृत समूहको राज्य संरचनामा प्रतिनिधित्व बढाउनु, जातीय र वर्गीय विभेद

अन्त्य गर्नु, लैङ्गिक हिंसा तथा घरेलु हिंसा अन्त्य गर्नु, विपन्न, सीमान्तकृत महिलाहरूको आर्थिक अवस्थामा सुधार ल्याउनु, बालबालिका तथा किशोर किशोरीहरूको आधारभूत अधिकार उपभोग गर्न सक्ने वातावरण सृजना गर्नु, अपाङ्गताप्रतिको सामाजिक दृष्टिकोणमा परिवर्तन ल्याउनु, सामाजिक, आर्थिक र राजनीतिक क्षेत्रमा व्याप्त लैङ्गिकतासम्बन्धी नकारात्मक सोचको अन्त्य गर्नु, लैङ्गिक संवेदनशील र लैङ्गिक उत्तरदायी सोचलाई व्यवहारमा उतार्नु, राज्य संयन्त्रहरूमा लैङ्गिक परीक्षण, लैससास विश्लेषण, अनुगमन र मूल्याङ्कनको प्रणालीलाई संस्थागत गर्नु, लैससास कायम गर्न समावेशितालाई विकासको अभिन्न अङ्गका रूपमा हेर्ने राजनीतिक प्रतिबद्धता र इच्छा शक्तिको सुनिश्चितता गर्नु, लैङ्गिक बजेट प्रणालीको अवलम्बन गर्नु, राज्यका सबै तह र निकायहरूमा लैससासको दृष्टिकोणलाई मूलप्रवाहीकरण गर्ने सोच, ज्ञान र दक्षता भएका जनशक्तिको व्यवस्थापन गर्नु, अन्तरनिकाय समन्वय र सहकार्यलाई प्रभावकारी बनाउनु आदि यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन्।

४. सम्भावना र अवसर

लैससाससम्बन्धी सुस्पष्ट संबैधानिक व्यवस्था हुनु, संघीय तहमा क्षेत्रगत रूपमा लैससास नीति तथा रणनीति तयार हुनु, वर्तमान राष्ट्रिय बजेटमा प्रत्यक्ष लैङ्गिक उत्तरदायी बजेटको हिस्सा ३८.६५ प्रतिशत पुग्नु, कार्यस्थलमा हुने यौनजन्य दुर्व्यवहार (निवारण) ऐन, २०७१ कार्यान्वयनमा हुनु, लैङ्गिक हिंसा निवारण कोष र एकल महिला सुरक्षा कोषको स्थापना तथा सञ्चालनमा हुनु, लैङ्गिक हिंसा अन्त्यसम्बन्धी रणनीति (२०७५—७९) हुनु, दिगो विकासको पाँचौँ लक्ष्यमा यो विषय समेटिनु, प्रदेशले लैङ्गिक तथा समावेशी विकासलाई प्राथमिकता दिनु, लैङ्गिक हिंसा अन्त्य तथा सशक्तीकरण र विकाससम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय गैससहरूको यस प्रदेशमा उल्लेख्य उपस्थिति रहनु आदि लैससास मूलप्रवाहीकरण र विस्तारका लागि महत्वपूर्ण अवसरहरू हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

लैङ्गिक समता र समावेशीकरण; सुरक्षित संरचना र सामाजिक न्याय

६. लक्ष्य

महिला, बालबालिका, ज्येष्ठ नागरिक, अपाङ्गता भएका व्यक्ति तथा वञ्चितीकरणमा परेका समूहको अर्थपूर्ण सहभागिता, आर्थिक समानता, समृद्धि, सामाजिक न्याय र सामाजिक सुरक्षा कायम भै सबै प्रकारको हिंसा, शोषण तथा दुर्व्यवहारबाट मुक्त लैङ्गिक एवम् सामाजिक विभेदको अन्त्य भएको हुने।

७. उद्देश्य

- १ . लैङ्गिक समता, सशक्तीकरण तथा सामाजिक समावेशीकरण प्रणाली, संरचनाको स्थापना तथा विस्तार गर्नु,
२. वञ्चितीकरणमा परेका महिलाहरूको सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सशक्तीकरण तथा अर्थपूर्ण सहभागिता सुनिश्चित गर्नु,
३. विपन्न, वञ्चितीमा परेका र जोखिममा रहेका समुदायका आर्थिक, सामाजिक तथा समतामूलक पहुँच सुनिश्चित गर्नु,
४. महिला, बालबालिका तथा किशोर किशोरीहरूले भोग्नु परेका दुर्व्यवहार, भेदभाव र हिंसाको अन्त्य गर्नु र
- ५ . विपन्न, ज्येष्ठ नागरिक, जोखिममा परेका, अपाङ्गता भएका व्यक्ति, एकल महिला, लैङ्गिक तथा यौनिक अल्पसङ्ख्यक, दलित, लोपोन्मुख र सीमान्तकृत जातजातिसम्म प्रभावकारी रूपमा सामाजिक सुरक्षा पुऱ्याउनु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
--------	-----------

रणनीति	कार्यनीति
<p>५.३.१ लैससास नीति, पद्धति र संस्थागत संयन्त्रको स्थापना गरी क्रियाशील बनाउने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • लैससाससम्बन्धी नीति, कानून तथा योजनालाई संस्थागत गर्न मन्त्रालयहरूबीच समन्वय गरिनेछ। • प्रदेशको लैससास रणनीति तयार गरिनेछ र साथै स्थानीय तहलाईसमेत उक्त रणनीति तयार गर्न सहजीकरण गरिनेछ। • लैससाससम्बन्धी संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ। • लैससाससम्बन्धी अभिलेख व्यवस्थापनका लागि स्थानीय तहलाई सहयोग र सहजीकरण गरिनेछ। • लैससास सूचकहरू तयार गरी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीलाई प्रभावकारी बनाइनेछ। • सार्वजनिक निकायलाई लैङ्गिक संवेदनशिल तुल्याउन नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ। • लैङ्गिक समता प्राप्तिका लागि पुरुषको सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित गरिनेछ।
<p>५.३.२ महिलाहरूको सशक्तिकरण र समावेशीकरणमा जोड दिने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • महिलाहरूको आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सशक्तीकरण गरी अर्थपूर्ण सहभागिता बढाउँदै लगिनेछ। • लैङ्गिक हिंसाको अन्यका लागि प्रदेशस्तरीय महिला तथा सामाजिक सुरक्षा कोषको स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ। • मानव बेचबिखन तथा लैङ्गिक हिंसाबाट पीडित/प्रभावितहरूको संरक्षण र पुनर्स्थापनाका लागि अल्पकालीन र दीर्घकालीन सेवा केन्द्रहरूको स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ। • गरीब तथा विपन्न, दलित, आदिवासी जनजाती, एकल तथा अपाङ्गता भएका महिला, चेपाङ्ग, जिरेल, सुरेल, थामी, हायु आदि जस्ता बञ्चितीमा परेका सबै समुदायका महिला तथा किशोरीको आय आर्जन, क्षमता विकास र सशक्तीकरण गर्ने गरी आर्थिक, सामाजिक विकासका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ।
<p>५.३.३ बालबालिकाको संरक्षण गर्ने र सार्वजनिक निकायलाई बालमैत्री बनाउने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • बाल श्रमिक र सडक बालबालिकाहरूको उद्धार र संरक्षणको आवश्यक नीति र कार्यक्रमको व्यवस्था गरिनेछ। • बालबालिका तथा किशोर किशोरीहरूमाथि हुने सबै प्रकारको दुर्व्यवहार, हिंसा, शोषण र भेदभाव अन्त्यको लागि स्थानीय तह, समुदाय, विद्यालय, निजी क्षेत्र, सञ्चार जगत र बालअधिकारका क्षेत्रमा क्रियाशील संस्थाहरूसँग सहकार्य गरिनेछ। • अनाथ, असहाय, बेवारिसे, अशक्त, अपाङ्गता भएका र विशेष संरक्षणको आवश्यकता भएका बालबालिका तथा किशोरकिशोरीहरूको संरक्षण र प्रवर्द्धन गर्न संरक्षण सेवाको व्यवस्थापन गरिनेछ। • कानुनी विवादमा परेका बालबालिकाको संरक्षण र बाल सुधार गृहको लागि आवश्यक व्यवस्था मिलाइनेछ। • बाल क्लब, बाल समुह, किशोरकिशोरी समूह जस्ता संस्थाको गठन तथा सञ्चालनलाई

रणनीति	कार्यनीति
<p>५.३.४ ज्येष्ठ नागरिकहरूको सम्मान र संरक्षण गर्ने।</p>	<p>विस्तार गरी बालबालिका तथा किशोरकिशोरीहरूको सहभागिता बढाईनेछ ।</p> <ul style="list-style-type: none"> • सबै स्थानीय तह र प्रदेशलाई बालमैत्री सार्वजनिक निकाय बनाउने नीति र कार्यक्रमको व्यवस्था गरिनेछ। • ज्येष्ठ नागरिकहरूको संरक्षणसम्बन्धी संघीय र प्रादेशिक कानूनहरूको पालना गर्न गराउन आवश्यक पहल गरिनेछ। • हिंसा, दुर्व्यवहार र भेदभावमा परेका; मानसिक तनावमा रहेका, परेका, अशक्त, परिवारविहीन र विपन्न ज्येष्ठ नागरिकहरूको संरक्षणका लागि दिवा सेवा केन्द्र र बृद्धाआश्रमहरूमा फर्त् सेवा प्रदान गर्न आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ। • ज्येष्ठ नागरिकहरूको अनुभव, सिप र ज्ञानलाई स्थानीय तह र प्रदेशको विकासमा उपयोग गर्ने नीति लिइनेछ। • स्थानीय तहसँगको समन्वय र सहकार्यमा सहयोगापेक्षि सडक मानवमुक्त प्रदेश बनाउने नीति लिइनेछ
<p>५.३.५ अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको संरक्षण र सशक्तीकरण गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • आधारभूत शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आयआर्जन र राज्यले दिने अन्य सेवा सुविधाहरूमा अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको पहुँच सुनिश्चित गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ। • आम सञ्चार, सूचना र प्रविधिमा अपाङ्गता भएका व्यक्तिको पहुँच सुनिश्चित गर्ने गरी सेवाको उपलब्धता र उपकरणको व्यवस्था क्रमश गर्दै लगिनेछ । • स्थानीय तह र प्रदेशको विकासमा अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको सहभागिता बढाउँदै लगिनेछ। • अपाङ्गता भएका व्यक्तिलाई सरकारी र निजी क्षेत्रमा रोजगारी अवसर वृद्धि गरिनेछ । • अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको दैनिक जीवन यापन सहज बनाउन सहायक सामग्री उत्पादनको व्यवस्था मिलाई उनिहरूको आवगमनलाई सरल र व्यवस्थित बनाईनेछ। • अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको सशक्तीकरणका लागि आवश्यक नीति र कार्यक्रमको व्यवस्था गरिनेछ।
<p>५.३.६ लैङ्गिक तथा यौनिक अल्पसङ्ख्यकको अधिकार सुनिश्चित गर्ने।</p> <p>५.३.७ दलित समुदायको सशक्तीकरण र विकास गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • लैङ्गिक तथा यौनिक अल्पसङ्ख्यकहरूमाथि हुने हिंसा, दुर्व्यवहार र सामाजिक भेदभाव अन्त्यका लागि संघीय सरकार, स्थानीय तह, नागरिक संस्था, सञ्चार जगत र सरोकारवाला निकायहरूसँग सहकार्य गरिनेछ। • आयआर्जन र राज्यले दिने अन्य सेवा सुविधाहरूमा लैङ्गिक तथा यौनिक अल्पसङ्ख्यकहरूको पहुँच सुनिश्चित गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ। • दलित समुदायको आर्थिक, सामाजिक र राजनीतिक सशक्तीकरणका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। • जातीय भेदभाव अन्त्यका लागि संघीय सरकार, स्थानीय तह, नागरिक संस्था र सरोकारवाला निकायहरूसँग सहकार्य गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
	<ul style="list-style-type: none"> समुदाय, स्थानीय तह प्रदेशको विकासमा दलित समुदायको अर्थपूर्ण सहभागितालाई संस्थागत गरिनेछ।
<p>५.३.८ विपन्न वर्गको सशक्तीकरण र विकास गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> विपन्न वर्ग लक्षित संघीय र प्रादेशिक कानूनहरूको पालना गर्न गराउन आवश्यक पहल गरिनेछ। विपन्न वर्गको आर्थिक, सामाजिक र राजनीति सशक्तीकरणको कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। आधारभूत शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आयआर्जन र राज्यले दिने अन्य सेवा सुविधाहरूमा विपन्न र सीमान्तकृत समुदायको पहुँच सुनिश्चित गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ। विपन्न वर्ग लक्षित कार्यक्रम र परियोजनाहरूको पहिचान, योजना तर्जुमा र कार्यान्वयनमा विपन्न वर्गको सहभागितालाई सुनिश्चित गरिनेछ।
<p>५.३.९ लोपोन्मुख र सीमान्तकृत समुदायको सशक्तीकरण र विकास गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> लोपोन्मुख र सीमान्तकृत समुदायको संरक्षणसम्बन्धी संघीय र प्रादेशिक कानूनहरूको पालना गर्न गराउन आवश्यक पहल गरिनेछ। लोपोन्मुख र सीमान्तकृत समुदायको आर्थिक, सामाजिक र राजनीति सशक्तीकरणको कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। आधारभूत शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आयआर्जन र राज्यले दिने अन्य सेवा सुविधाहरूमा विपन्न र सीमान्तकृत समुदायको पहुँच सुनिश्चित गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ। लोपोन्मुख र सीमान्तकृत समुदाय लक्षित कार्यक्रम र परियोजनाहरूको पहिचान, योजना तर्जुमा र कार्यान्वयनमा उनीहरूको सहभागितालाई सुनिश्चित गरिनेछ।
<p>५.३.१० लैससास परीक्षण गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> प्रदेश सरकार र स्थानीय तहको योजना, बजेट र प्राप्त उपलब्धिहरूको लैससास परीक्षण गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ। प्रदेश सरकार र स्थानीय तहले तर्जुमा गरेका नीति, कानून र मापदण्ड लैससासमैत्री बनाउन आवश्यक व्यवस्था मिलाइनेछ। प्रदेश सरकार र स्थानीय तहले विकास गरेका सार्वजनिक निकायका पूर्वाधार संरचना महिला, बालबालिका, अपाङ्गता र ज्येष्ठ नागरिकमैत्री भए नभएको परीक्षण गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ। महिला, दलित, ज्येष्ठ नागरिक, अपाङ्गता भएका व्यक्ति, लैङ्गिक तथा यौनिक अल्पसङ्ख्यक, बालबालिका, विपन्न वर्ग, लोपोन्मुख र सीमान्तकृत समुदायसम्बन्धी खण्डीकृत तथ्याङ्क र प्रतिवेदन तयार गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	प्रदेशको लैङ्गिक समानता तथा सामाजिक समावेशीकरण रणनीति तयार	√	√	√	√	
२	लैससासम्बन्धी संस्थागत क्षमता विकास कार्यक्रम		√	√	√	√
३	लैससासमैत्री अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रणालीको विकास		√	√	√	√
४	महिलाहरूको आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सशक्तीकरण र अर्थपूर्ण सहभागितामा वृद्धिका कार्यक्रम	√	√	√	√	√
५	प्रदेशस्तरीय महिला तथा सामाजिक सुरक्षा कोषको स्थापना र सञ्चालन		√	√	√	√
६	मानव बेचबिखन तथा लैङ्गिक हिंसाबाट प्रभावितहरूको संरक्षण र पुनर्स्थापनाका लागि अल्पकालीन र दीर्घकालीन सेवा केन्द्रहरूको स्थापना र सञ्चालन	√	√	√	√	√
७	बाल श्रमिक र सडक बालबालिकाहरूको उद्धार र संरक्षण	√	√	√	√	√
८	बालबालिका तथा किशोर किशोरीहरूमाथि हुने दुर्व्यवहार, हिंसा र भेदभाव अन्त्यको लागि स्थानीय तह, समुदाय, विद्यालय, निजी क्षेत्र, सञ्चार जगत र बालअधिकारका क्षेत्रमा क्रियाशील संस्थाहरूसँग समन्वय र सहकार्य	√	√	√	√	√
९	कानुनी विवादमा परेका बालबालिकाको संरक्षण र बाल सुधार गृहको व्यवस्था	√	√	√		√
१०	स्थानीय तह र प्रदेशलाई बालमैत्री सार्वजनिक निकायको रूपमा विकास		√	√	√	√
११	हिंसा, दुर्व्यवहार र भेदभावमा परेका; मानसिक तनाव रहेका, परेका, अशक्त, परिवारविहीन र विपन्न ज्येष्ठ नागरिकहरूको संरक्षणका लागि दिवा सेवा केन्द्र र वृद्धाआश्रमहरूमा फर्त् सेवा प्रदान	√	√	√	√	√
१२	ज्येष्ठ नागरिकहरूको अनुभव, सिप र ज्ञानलाई स्थानीय तह र प्रदेशको विकासमा उपयोग		√	√	√	√
१३	संरक्षण, आयआर्जन र राज्यले दिने अन्य सेवा सुविधाहरूमा अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको पहुँचको व्यवस्था	√	√	√	√	√
१४	स्थानीय तह र प्रदेशको विकासमा अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको सहभागितामा वृद्धि		√	√	√	√
१५	अपाङ्ग भएका व्यक्तिहरूको सशक्तीकरण	√	√	√	√	√
१६	लैङ्गिक तथा यौनिक अल्पसङ्ख्यकहरूमाथि हुने हिंसा, दुर्व्यवहार र सामाजिक भेदभाव अन्त्यका लागि संघीय सरकार, स्थानीय तह, नागरिक संस्था, सञ्चार जगत र सरोकारवाला निकायहरूसँग सहकार्य	√	√	√	√	√
१७	आयआर्जन र राज्यले दिने अन्य सेवा सुविधाहरूमा लैङ्गिक तथा यौनिक अल्पसङ्ख्यकहरूको पहुँच वृद्धि	√	√	√	√	√
१८	दलित समुदायको आर्थिक, सामाजिक र राजनीतिक सशक्तीकरणका कार्यक्रमहरू सञ्चालन	√	√	√	√	√
१९	समुदाय, स्थानीय तह र प्रदेशको विकासमा दलित समुदायको अर्थपूर्ण	√	√	√	√	√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
	सहभागितालाई संस्थागत					
२०	विपन्न वर्गको आर्थिक, सामाजिक र राजनीति सशक्तीकरणको कार्यक्रमहरू सञ्चालन	√	√	√	√	√
२१	आयआर्जन र राज्यले दिने अन्य सेवा सुविधाहरूमा विपन्न र सीमान्तकृत समुदायको पहुँच बृद्धि	√	√	√	√	√
२२	लोपोन्मुख र सीमान्तकृत समुदायको आर्थिक, सामाजिक र राजनीति सशक्तीकरणको कार्यक्रमहरू सञ्चालन	√	√	√	√	√
२३	आयआर्जन र राज्यले दिने अन्य सेवा सुविधाहरूमा विपन्न र सीमान्तकृत समुदायको पहुँच बृद्धि	√	√	√	√	√
२४	प्रदेश सरकार र स्थानीय तहको योजना, बजेट र प्राप्त उपलब्धिहरूको लैससास परीक्षण		√	√	√	√
२५	प्रदेश सरकार र स्थानीय तहले विकास गरेका पूर्वाधार संरचना र कार्यालयहरूको संरचना महिला, बालबालिका, अपाङ्ग र ज्येष्ठ नागरिकमैत्री भए नभएको परीक्षण		√	√	√	√
२६	महिला, दलित, ज्येष्ठ नागरिक, अपाङ्गता भएका नागरिक, लैङ्गिक तथा यौनिक अल्पसङ्ख्यक, बालबालिका, विपन्न वर्ग, लोपोन्मुख र सीमान्तकृत समुदायसम्बन्धी खण्डीकृत तथ्याङ्क र प्रतिवेदन तयार	√	√	√	√	√
२७	बाल अधिकारको संरक्षण एवम् प्रवर्द्धनसम्बन्धी नीति, कानून, योजना तथा मापदण्ड निर्माण र कार्यान्वयन	√	√	√	√	√

१०. अपेक्षित उपलब्धि

लैससास उत्तरदायी कानून, नीति तथा रणनीतिहरू निर्माण तथा कार्यान्वयन प्रणाली तथा पद्धतिको विस्तार हुने, लैससास सयन्त्र संस्थागत र सुदृढ हुने, लक्षित कार्यक्रमका छुट्टै अनुगमन ढाँचा तथा खण्डीकृत तथ्याङ्क प्रणाली क्रियाशील हुने, एकीकृत लक्षित कार्यक्रमका प्रभावकारी कार्यान्वयन, अनुगमनका कारण लक्षित समूहको आर्थिक, सामाजिक विकासको सूचकाङ्कमा प्रगति हुने, दुर्गम एवम् विकट क्षेत्रमा सेवा सुविधाको पहुँच उपलब्ध हुने, लैङ्गिक हिंसा अन्त्य सम्बन्धी कानून कार्यान्वयन भएको हुने, लैङ्गिक हिंसापीडितहरूको उचित संरक्षण तथा सेवाको व्यवस्था हुनेछ। प्रदेशको राजनीतिक नियुक्तिका सार्वजनिक पदमा कम्तीमा एक तिहाइ महिला प्रतिनिधित्व हुनेछ। लैङ्गिक समता तथा महिला एवम् बालिकाहरूको सशक्तीकरण बहुक्षेत्रगत सवालका रूपमा प्रदेशका सबै मन्त्रालयहरूबाट सम्बोधन हुने, जोखिम अवस्थाका बालबालिका, अपाङ्गता तथा ज्येष्ठ नागरिकहरूका उचित संरक्षण हुने, सामाजिक सुरक्षाका सेवाग्राहीहरूको एकीकृत अभिलेख व्यवस्थित भएको हुने।

५.४ युवा तथा खेलकुद

१. पृष्ठभूमि

युवाशक्ति राष्ट्र विकासका संवाहक हो। युवाशक्तिको सङ्ख्यात्मक तथा गुणात्मक विकास र परिचालनबाट नै विकास

सम्भव छ। नेपालको संविधानले युवाहरूको विकास गरी उनीहरूलाई राष्ट्रको सर्वाङ्गीण विकासमा परिचालन गर्ने नीति लिएको छ। युवाशक्तिलाई शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक र संवेगात्मक रूपमा सबल र नैतिकवान् बनाई अनुशासित र मर्यादित समाज निर्माण गर्दै विकास तथा समृद्धिमा रूपान्तरित गर्न खेलकुदको महत्वपूर्ण भूमिका रहन्छ। भूगोल तथा समाजलाई भावनात्मक रूपमा एकीकृत गर्न पनि यसले महत्वपूर्ण भूमिका खेल्दछ।

२. वस्तुगत स्थिति

नेपालको जनसङ्ख्या बनौटमा १६ देखि ४० वर्ष उमेर समूहका युवाहरूको सङ्ख्या ४०.३५ प्रतिशत छ। नेपालमा सन् २०१६ देखि २०२५ सम्म जनसाङ्ख्यिक लाभको अवस्था कायम रहने र २०३० पछि क्रमशः यसमा संकुचन आउने प्रक्षेपण गरिएको छ। प्रदेशमा १६ देखि २९ वर्ष समूहको जनसङ्ख्या २२.८८ प्रतिशत रहेको छ भने १६ देखि ४० वर्ष समूहको हिस्सा ३५.७९ प्रतिशत छ। पछिल्लो पाँच वर्षमा (आब ०७०/७१—०७४/७५) रोजगारमा मुलुकबाहिर (भारतबाहेक) गएका युवाहरूको सङ्ख्या ४९३४७६ छ जसमा पुरुष ४,३०,९५५ र महिला ६३,३२९ छन्। युवा तथा साना व्यवसायी स्वरोजगार कोषले विभिन्न ४०० सहकारी संस्थामार्फत् दुई अर्बभन्दा बढी लगानी गरेको छ।

युवा वर्गमा विकास, गतिशिलता र अनुशासनको भावना जगाउन खेलकुदले महत्वपूर्ण भूमिका खेल्छ भन्ने कुरालाई स्विकार गरेको पाइन्छ। खेलकुदले प्रदेशलाई मात्र होइन सिंगो राष्ट्रलाई नै चिनाउन सक्छ। तुलनात्मक रूपले खेलकुदको बढी पूर्वाधारहरू यही प्रदेशमा रहेको छ। तसर्थ, खेलकुद विकासका बढी सम्भावना अन्य प्रदेशको तुलनामा यही प्रदेशमा रहेको छ।

युवासम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानून तथा योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र नियमन, युवा वैज्ञानिक प्रोत्साहन, खेलकुदसम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानून तथा मापदण्ड निर्धारण, कार्यान्वयन र नियमन, खेलकुद तथा खेलकुद पूर्वाधारको विकास र प्रवर्द्धन, खेलकुद प्रशासन र संघसंस्थाको समन्वय र नियमन, राष्ट्रिय र प्रादेशिक खेलकुद प्रतियोगिता तथा कार्यक्रम परियोजना र सहभागिताजस्ता विषयहरू प्रदेशको कार्य क्षेत्रमा पर्दछन्।

३. समस्या र चुनौती

बढ्दो युवा जनसङ्ख्यालाई उद्यम र रोजगारीसँग आबद्ध गर्न नसकिनु, जनसाङ्ख्यिक लाभको उपयोग गर्न नसक्नु, युवा पलायन हुनु, स्रोतमा युवाको सहज पहुँच सुनिश्चित गर्न नसक्नु र युवालाई स्वयं सेवामा संलग्न गराउन नसकिनु लगायत यस क्षेत्रका प्रमुख समस्या हुन्। युवा पलायन रोक्नु, युवा लक्षित जीवनोपयोगी प्राविधिक र व्यवसायिक शिक्षा सर्वसुलभ बनाउनु, स्वदेशमा रोजगारीका अवसरहरूको वृद्धि गर्नु, युवामैत्री लगानीका अवसर बढाउनु, उद्योग, उद्यम र वित्तीय श्रोतमा युवाको सहज पहुँच सुनिश्चित गर्नु, युवालाई विकास र स्वयंसेवाका व्यापक रूपमा परिचालन गर्नु आदि यसक्षेत्रका प्रमुख चुनौतीहरू हुन्।

खेलकुद पूर्वाधारको अपर्याप्तता, खेलकुद क्षेत्रमा न्यून लगानी, खेलकुदमा निरन्तरताको अभाव, व्यवसायिकताको कमी, अभिभावकमा खेलकुदप्रति आकर्षणको नहुनु, खेलकुदबाट जीविकोपार्जन हुने अवस्था नरहनु आदि मुख्य समस्याहरू रहेका छन्। अन्तर्राष्ट्रियस्तरका खेलकुद पूर्वाधारहरूको विकास गर्नु, खेलकुदको विकासमा निजी क्षेत्रलाई आकर्षित गर्नु, खेलकुदमा व्यवसायिकताको विकास गर्नु, खेलकुदको संस्थागत विकास र सुशासन कायम गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौतीहरू हुन्।

४. सम्भावना र अवसर

जनसङ्ख्याको ठूलो हिस्सा युवाशक्ति रहेको, राष्ट्रिय युवा नीति र युथ भिजन-२०२५ सहितको दश वर्षे रणनीतिक

योजना कार्यान्वयनमा रहेको, विभिन्न युवा लक्षित उद्यम विकास तथा स्वरोजगारमूलक कार्यक्रमहरू सञ्चालनमा रहेको, दक्ष जनशक्ति उत्पादन गर्ने शैक्षिक संघ संस्था तथा तालिम केन्द्रहरूको बढ्दो उपस्थिति हुनु आदि युवा विकासका अवसरहरू हुन्।

तीनै तहका सरकारहरूमा खेलकुद विकासको जिम्मेवारी रहनु, राष्ट्रिय र अन्तर्राष्ट्रिय खेलकुद प्रतियोगिताहरूमा नेपालको निरन्तर सहभागिता हुनु, खेलकुदप्रति समाजमा सकारात्मक दृष्टिकोण विकास हुँदै जानु, खेलकुदका पूर्वाधारहरूको क्रमशः विकास हुँदै जानु, खेलकुद शारीरिक र मानसिक विकासको प्रमुख माध्यमको रूपमा अङ्गिकार गरिनु, साहसिक र पर्यटकीय खेलकुदको प्रचुर सम्भावना रहनु र यसमा अन्तर्राष्ट्रिय चाख बढ्दै जानु, प्रहरी, सेना र व्यवसायिक प्रतिष्ठानहरू आदिमा व्यवसायिक खेलकुद क्लब प्रणाली सुरु हुनु आदि खेलकुद विकासका अवसरहरू हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

प्रदेशको गौरव, युवाको पौरख।

६. लक्ष्य

उद्यमशीलता र खेलकुदको विकासको माध्यमबाट युवाशक्तिको विकास गरी प्रदेशको समृद्धिमा योगदान पुऱ्याएको हुने।

७. उद्देश्य

१. युवा उद्यमशीलता र रोजगारीको अभिवृद्धि गर्नु,
२. खोज र अनुसन्धानमा जोड दिँदै प्रदेशको विकासमा युवा परिचालन गर्नु, र
३. खेलकुदको विकासद्वारा स्वस्थ, सृजनशील र अनुशासित युवाहरूको निर्माण गर्नु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
५.४.१ युवाहरूको क्षमता विकास गरी रोजगारीसँग आबद्ध गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • विद्यालय अध्ययन सम्पन्न गरेका युवाहरूलाई युवामुखी क्षमता विकास योजना तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ। • युवाहरूलाई बजारको आवश्यकता अनुरूप जीवनोपयोगी तथा प्राविधिक शिक्षा र सिपमूलक तालिम प्रदान गरिनेछ। • स्थानीय विकासका कार्यलाई युवा रोजगारमुखी बनाउन प्रोत्साहन गरिनेछ। • निजी क्षेत्र, गैसस र विकास साझेदारहरूसँग समन्वय गरी युवा रोजगारीलाई प्रवर्द्धन गरिनेछ।
५.४.२ युवाको तालिम, उद्यमशीलता विकास र रोजगारीमूलक कार्यमा लगानी अभिवृद्धि गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • युवामा प्रविधि एवम् परम्परागत सिपको आधुनिकीकरण गरी पेसाको व्यवसायीकरण गर्न र स्वरोजगारमूलक कार्यमा सहूलियत लगानी र व्याजमा अनुदान प्रदान गरिनेछ। • युवाहरूको शिक्षा, तालिम तथा रोजगारी अभिवृद्धि गर्ने खालका कार्यक्रममा लगानी बढाइनेछ। • युवा वैज्ञानिकहरूको पहिचान गर्दै विकासका विविध क्षेत्रमा अनुसन्धान र विकासका लागि प्रोत्साहन गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
<p>५.४.३</p> <p>शासकीय प्रक्रिया र विकास निर्माणमा युवाहरूको समावेशी सहभागिता अभिवृद्धि गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> परम्परागत पेसामा व्यवसायीकरण गर्न लगानी अभिवृद्धि गरिनेछ। सफल युवाहरूको राम्रा सिकाइ र अनुभव हस्तान्तरण हुने गरी युवा अगुवाहरूको अन्तरक्रिया, अवलोकन भ्रमण र ज्ञान तथा अनुभव आदानप्रदानको व्यवस्था गरिनेछ। युवाहरूमा सेवाभाव एवम् स्वयंसेवी संस्कृतिको विकास हुनेगरी युवा स्वयंसेवक परिचालन कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। युवाहरूको नेतृत्व विकास गरी शासकीय जिम्मेवारी वहन गर्न सक्षम बनाउँदै लगिनेछ। विकास प्रक्रियामा युवा परिचालन गर्दा समावेशिताको सिद्धान्त अवलम्बन गरी सहभागिता सुनिश्चित गरिनेछ। विदेशबाट फर्केका युवाहरूलाई सामाजिक पुनःएकीकरण गरी आर्जित ज्ञान, सिप र दक्षताको स्वदेशमा प्रयोग गर्न आर्थिक एवम् प्राविधिक सहयोग पुऱ्याइनेछ। प्रदेश युवा परिषद्को स्थापना गरी प्रादेशिक युवाहरूको क्षमता विकास, उद्यमशिलता, रोजगार र विभिन्न क्षेत्रमा खोज र अनुसन्धानमा जोड दिइनेछ।
<p>५.४.४</p> <p>सबै प्रादेशिक नीतिहरूमा युवाका आवश्यकतालाई समावेश गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> प्रादेशिक युवा नीति र रणनीतिको तर्जुमा गरिनेछ। हरेक क्षेत्रगत नीतिहरू तर्जुमा गर्दा युवाहरूको आवश्यकताहरूलाई सम्बोधन गरिनेछ। वातावरण संरक्षण, द्वन्द्व व्यवस्थापन, सामाजिक परिचालनजस्ता बहुसरोकारका विषयहरूमा युवा सहभागिता र परिचालनलाई प्राथमिकता दिइनेछ।
<p>५.४.५</p> <p>खेलकुद पूर्वाधार निर्माण र विस्तार गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> गुणस्तरयुक्त खेलकुद पूर्वाधारहरूको विकास गर्न लगानीमा वृद्धि गरिनेछ। जिल्लामा रंगशाला र प्रदेशमा अन्तर्राष्ट्रियस्तरको रंगशाला निर्माण गरिनेछ। निर्वाचन क्षेत्रमा कर्भर्ड हलको व्यवस्था गरिनेछ। विद्यालय खेल मैदान र स्थानीय तहमा बहुउद्देश्यीय खेलकुद स्थलनिर्माण गर्न स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। परम्परागत खेलकुदको पहिचान र प्रवर्द्धन गरिनेछ। साहसिक खेलकुदका सम्भाव्य क्षेत्रहरू) साइक्लिड, हाइकिड, बज्जी जम्पिड, जिप फ्लायर, प्याराग्लाइडिड आदि (र स्थानहरू पहिचान गरी आधारभूत पूर्वाधारहरू विकास र प्रवर्द्धन गरिनेछ।
<p>५.४.६</p> <p>व्यवसायिक खेलकुदको विकासलाई संस्थागत गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> प्रादेशिक खेलकुद नीति र रणनीतिको तर्जुमा गरिनेछ। भौगोलिक सम्भाव्यताका आधारमा विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रहरूलाई खेलकुद हबको विकास गरिनेछ। अन्तर्राष्ट्रिय प्रतियोगिता हुने कम्तीमा ५ खेललाई प्राथमिकतामा राखी उक्त

रणनीति	कार्यनीति
	<p>खेलहरूको विकास गर्न भौगोलिक क्षेत्र केन्द्रित विशेष कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> व्यवसायिक खेलकुद क्लबहरू स्थापना गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ। व्यवसायिक कम्पनीहरूलाई खेलकुद कार्यक्रमहरूको परियोजना तथा खेलकुद क्लबहरूको गठनमा सामाजिक उत्तरदायित्व कोषहरूको परिचालन गर्न प्रोत्साहन गरिनेछ। फरक क्षमता भएकाहरूको विशिष्टीकृत खेलकुद प्रतियोगिताहरूको परियोजना गर्ने र उनीहरूलाई खेलकुदप्रति आकर्षित गरिनेछ। “सबैका लागि खेलकुद, राष्ट्रका लागि खेलकुद” भन्ने नारालाई सार्थक बनाउन प्रदेश खेलकुद विकास परिषद् गठन गरी प्रत्येक २ वर्षमा प्रादेशिक खेलकुद कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। खेलाडीहरूको व्यवसायिक जीवनको संरक्षण गरिनेछ। जनसहभागिता र स्थानीय तहसँगको सहकार्यमा स्थानीय स्तरका खेलकुद पूर्वाधार निर्माणलाई प्रोत्साहित गरिनेछ। खेलकुद क्षेत्रमा अन्तरसरकार तथा निजी क्षेत्रसँग सहकार्य र समन्वय गरिनेछ। तुलनात्मक सम्भावनाका खेलहरू) हात्तीपोलो, प्याराग्लाइडिङ, बन्जी जम्पिङ, क्रिकेट, उचाइमा भलिबल प्रतियोगिता (सञ्चालन, प्रतियोगिता परियोजना तथा प्रवर्द्धनका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। अन्तरस्थानीय तह, प्रादेशिक, अन्तरप्रादेशिक, अन्तर महाविद्यालय स्तरका खेलकुद प्रतियोगिताहरू परियोजना गरिनेछ। विद्यालय तहदेखि नै प्रतिभावान् खेलाडीको पहिचान गरी खेलकुद क्षेत्रमा प्रतिभा प्रस्फुटनको अवसर प्रदान गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	विद्यालय अध्ययन सम्पन्न गरेका युवाहरूलाई युवामुखी क्षमता विकास योजना तर्जुमा गरी कार्यान्वयन	√	√	√	√	√
२	युवाहरूलाई बजारको आवश्यकता अनुरूप जीवनोपयोगी तथा प्राविधिक शिक्षा र सिपमूलक तालिम प्रदान	√	√	√	√	
३	प्रविधि एवम् परम्परागत सिपको आधुनिकीकरण गरी पेसाको व्यवसायीकरण गर्न र स्वरोजगारमूलक कार्यमा सहूलियत लगानी र व्याजमा अनुदान प्रदान		√	√	√	
४	परम्परागत पेसाको व्यवसायीकरण गर्न लगानी अभिवृद्धि		√	√	√	

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
५	सफल युवाहरूको राम्रा सिकाइ र अनुभव हस्तान्तरण हुने गरी युवा अगुवाहरूको अन्तरक्रिया, अवलोकन भ्रमण र ज्ञान तथा अनुभव आदानप्रदानको व्यवस्था		√	√	√	
६	प्रदेश विकास युवा स्वयंसेवक परिचालन		√	√	√	
७	विकास प्रक्रियामा युवा परिचालन		√	√	√	
८	विदेशबाट फर्केका युवाहरूलाई सामाजिक पुनःएकीकरण गरी अर्जित ज्ञान, सिप र दक्षताको स्वदेशमा प्रयोग गर्न आर्थिक एवम् प्राविधिक सहयोग	√	√	√	√	
९						
१०	जिल्लामा रंगशाला र प्रदेशमा अन्तर्राष्ट्रियस्तरको रंगशाला निर्माण	√	√	√	√	
११	विद्यालय खेल मैदान र स्थानीय तहमा बहुउद्देश्यीय खेलकुद स्थल निर्माण	√	√	√	√	
१२	साहसिक खेलकुदका सम्भाव्य क्षेत्रहरू (साइक्लिङ, हाइकिङ, बञ्जी जम्पिङ, जिप फ्लायर, प्याराग्लाइडिङ आदि) र स्थानहरू पहिचान गरी आधारभूत पूर्वाधारहरू विकास र प्रवर्द्धन	√	√	√	√	
१३	अन्तर्राष्ट्रिय प्रतियोगिता हुने कम्तीमा ५ खेललाई प्राथमिकतामा राखी उक्त खेलहरूको विकास गर्न भौगोलिक क्षेत्र केन्द्रित विशेष कार्यक्रम सञ्चालन	√	√	√	√	
१४	व्यवसायिक खेलकुद क्लबहरू स्थापना	√	√	√	√	
१५	खेलकुद कार्यक्रमहरूको परियोजना तथा खेलकुद क्लबहरूको व्यवसायिकतामा व्यवसायिक कम्पनीहरूको सामाजिक उत्तरदायित्व कोषहरूको परिचालन गर्न प्रोत्साहन	√	√	√	√	
१६	फरक क्षमता भएकाहरूको विशिष्टीकृत खेलकुद प्रतियोगिताहरूको परियोजना	√	√	√	√	
१७	प्रदेश खेलकुद विकास परिषद् गठन गरी प्रत्येक २ वर्षमा प्रादेशिक खेलकुद कार्यक्रम सञ्चालन		√	√	√	
१८	तुलनात्मक सम्भावनाका खेलहरू (हात्तीपोलो, प्याराग्लाइडिङ, बन्जी जम्पिङ, क्रिकेट, उचाइमा भलिबल प्रतियोगिता) सञ्चालन, प्रतियोगिता परियोजना तथा प्रवर्द्धनका कार्यक्रमहरू सञ्चालन	√	√	√	√	
१९	अन्तरस्थानीय तह, प्रादेशिक, अन्तरप्रादेशिक, अन्तरमहाविद्यालयस्तरका खेलकुद प्रतियोगिताहरू परियोजना	√	√	√	√	
२०	विद्यालय तहदेखि नै प्रतिभावान् खेलाडीको पहिचान गरी खेलकुद क्षेत्रमा प्रतिभा प्रस्फुटनको अवसर प्रदान	√	√	√	√	
२१	प्रदेश युवा परिषदको स्थापना र सञ्चालन		√	√		
२२	खेलकुदको क्षेत्रमा खोज र अनुसन्धान					
२३	निर्वाचन क्षेत्रमा कभर्ड हलको व्यवस्था					

१०. अपेक्षित उपलब्धि

योजनाको आधारवर्षमा स्थापना भएको युवा वैज्ञानिक प्रोत्साहन कोषको प्रभावकारीरूपमा सञ्चालन भई युवाहरूबाट वैज्ञानिक खोज र अनुसन्धानका लागि प्रभावकारी सञ्चालन भएको हुन, प्रदेशमा विकासका विभिन्न क्षेत्रमा स्वमसेवक परिचालन भएको हुने, युवाहरूको क्षमता अभिवृद्धि गर्न प्रदेश युवा परिषद् स्थापना भई सञ्चालन भएको हुने ।

प्रादेशिक तथा राष्ट्रिय खेलकुद प्रतियोगिताहरूमा प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढेको हुने, व्यवसायिक खेलकुदहरू सुरु भएको हुने, प्रत्येक २ वर्षमा प्रदेश स्तरीय र प्रत्येक वर्ष जिल्लास्तरीय प्रतियोगिताहरू परियोजना भएको हुने, प्रत्येक जिल्लामा रंगशाला, प्रदेश निर्वाचन क्षेत्रमा कर्भर्डहल एवम् प्रत्येक स्थानीय तहमा खेलमैदान र प्रदेशस्तरमा एक अन्तर्राष्ट्रियस्तरको बहुउद्देश्यीय रंगशाला निर्माण भएको हुने, विद्यालय तहमा खेलकुदमैदान निर्माण भएको हुने र युवा र खेलकुदसम्बन्धी प्रादेशिक नीति निर्माण भएको हुने ।

५.५ भाषा, संस्कृति र कला

१. पृष्ठभूमि

संविधानले नेपालमा बोलिने सबै मातृभाषाहरू राष्ट्रभाषा हुने र देवनागरी लिपिमा लेखिने नेपाली भाषा सरकारी कामकाजको भाषा हुने व्यवस्था गरेको छ। यसैगरी, धार्मिक स्वतन्त्रताको हक, भाषा तथा संस्कृतिको हकलाई मौलिक हकको रूपमा स्थापित गर्दै प्रत्येक व्यक्ति र समुदायलाई आफ्नो भाषा प्रयोग गर्ने, आफ्नो समुदायको सांस्कृतिक जीवनमा सहभागी हुन पाउने र नेपालमा बसोबास गर्ने प्रत्येक नेपाली समुदायलाई आफ्नो भाषा, लिपि, संस्कृति, सांस्कृतिक सभ्यता र सम्पदाको संवर्द्धन र संरक्षण गर्ने हक प्रदान गरेको छ ।

सामाजिक सुसम्बन्धमा आधारित समाजको निर्माण, ऐतिहासिक, पुरातात्विक तथा सांस्कृतिक सम्पदाको संरक्षण र संवर्द्धन, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा सेवामूलक कार्यमा स्थानीय जनसहभागिता, कला, साहित्य र सङ्गीतको विकास, समाजमा विद्यमान विभेद, असमानता, शोषण र अन्यायको अन्त, भाषा, लिपि, संस्कृति, साहित्य, कला, चलचित्र र सम्पदाको संरक्षण र विकास र बहुभाषिक नीति अवलम्बन गर्ने कुरा राज्यका नितिका रूपमा अङ्गीकार गरिएको छ ।

२. वस्तुगत स्थिति

प्रदेशको जनसङ्ख्यामा मुख्यतः, तामाङ २०.४२ प्रतिशत, पहाडी ब्राह्मण १८.३ प्रतिशत, क्षेत्री १७.३ प्रतिशत, नेवार १६.९२ प्रतिशत, दलित ५.४ प्रतिशत, मगर ४.९, प्रतिशत गुरुङ्ग २.२, प्रतिशत थारु १.७, प्रतिशत राई १.५, प्रतिशत चेपाङ १.१ प्रतिशत र अन्य समुदाय १०.३ प्रतिशत रहेका छन्। प्रदेशमा जम्मा ११३ वटा बोलिने भाषाहरू छन्। जसमध्ये पहिलो, दोश्रो र तेस्रोमा नेपाली, तामाङ र नेवारी क्रमशः ५७.४ प्रतिशत, १८.३ प्रतिशत, र १२.३ प्रतिशत छन्। यस प्रदेशमा ९ वटा धर्मका अनुयायीहरू रहेका छन् जसमा हिन्दु, बौद्ध र क्रिश्चियन क्रमशः ७१.८ प्रतिशत, २३.३ प्रतिशत र २.९ प्रतिशत र बाँकी अन्य रहेका छन्।

नेपाली कला र संस्कृतिको यो प्रदेश अप्रतिम भण्डार हो। नेपालमा रहेका विश्व सम्पदा सूचीका १०मध्ये ८ सम्पदा यसै प्रदेशमा रहेका छन्। यसका अतिरिक्त प्राचीन स्मारक, अभिलेख, गुठी, भौतिक र अभौतिक सांस्कृतिक सम्पदा, मठ, मन्दिर, गुम्बा, मस्जिद, गुरुद्वाराहरू यस प्रदेशमा अवस्थित छन्। साथै, विभिन्न जाति र समुदायका सांस्कृतिक मान्यता र लोकपरम्परा, लोक रीतिरिवाज, लोक साहित्य र विभिन्न सांस्कृतिक चाडपर्व, प्रचलनहरूसहितको विशाल सांस्कृतिक भण्डार यस प्रदेशमा विद्यमान रहेको देखिन्छ। चित्रकला मूर्तिकला, पौवा कला, शिल्पकला, काष्ठ कला आदि कलामा पनि यो प्रदेश धनी छ।

प्रदर्शनकारी लोक कलाहरू (डबली, चोक), परम्परागत सिप र साधन, कला, संगीत, नाट्यकला लगायतका लोक

संस्कृतिहरू पनि यहाँ विद्यमान छन्। २०७२ को भूकम्पले यस प्रदेशका ८ जिल्लाका १४३२ सम्पदाहरू क्षतिग्रस्त वा अतिप्रभावित बनेका छन् र तिनका पुनर्निर्माणको काम विभिन्न चरणमा छन्।

भाषा, कला, संस्कृति र धर्मको संरक्षणसम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानून, मापदण्ड तथा योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र नियमन, ऐतिहासिक, कला र सम्पदाका दृष्टिकोणले महत्व बोकेका प्रादेशिकस्तरका दरवारहरूको संरक्षण, सम्भार, अध्ययन, अनुसन्धान तथा व्यवस्थापन, प्रादेशिकस्तरमा संग्रहालय, प्रदेशस्तरका पुरातात्विक महत्वका स्थल, ऐतिहासिक र धार्मिक सांस्कृतिक सम्पदा, प्राचीन स्मारक, संग्रहालय, सांस्कृतिक धरोहरसम्बन्धी नीति, कानून, मापदण्ड तथा योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र नियमन एवम् संरक्षण, सम्भार, अध्ययन, अनुसन्धान, उत्खनन तथा पुनर्निर्माण, धर्म, परम्परा र गुठी अन्तर्गत चलिआएका विभिन्न जात्रा, पर्वहरूको सञ्चालन र व्यवस्थापन संस्कृतिको विकाससम्बन्धी नीति तथा कानून तर्जुमा, कार्यान्वयन र नियमनजस्ता विषयहरू प्रदेशको कार्य क्षेत्रमा पर्दछन्।

३. समस्या र चुनौती

प्राचीन कला र जातीय संस्कृतिको जगेर्ना हुन् नसक्नु, बाह्य संस्कृतिको अतिक्रमण बढ्नु, ऐतिहासिक मठ मन्दिरहरूमा संरक्षणको कमी, परम्परागत चाडपर्वहरूले मौलिकता गुमाउँदै जानु, कलाकर्मीहरूको उचित सम्मान र संरक्षण हुन् नसक्नु, प्राचीन स्मारकहरू अतिक्रमित हुँदै जानु मुख्य समस्याका रूपमा रहेका छन्।

प्राचीन सांस्कृतिक सम्पदा एवम् तिनीहरूको स्वामित्वमा रहेको सम्पत्तिको वैज्ञानिक अभिलेखीकरण गर्नु, सांस्कृतिक विचलन रोक्नु, अन्तरपुस्ता ज्ञान हस्तान्तरण, संस्कृति, कला, भाषा र सम्पदाहरूको मौलिकपना जोगाइराख्नु, मूर्त तथा अमूर्त सम्पदाहरूको संरक्षण गरी सोको लाभ समुदायले प्राप्त गर्न सक्ने तुल्याउनु, महत्वपूर्ण सम्पदाहरू चोरी तथा नष्ट हुनबाट रोक्नु, सांस्कृतिक गुठी तथा जात्राहरूको संरक्षण र निरन्तरता दिनु, सांस्कृतिक सम्पदाहरूको वैज्ञानिक अनुसन्धान, अध्ययन एवम् संरक्षण गर्नु आदि चुनौतीहरू रहेका छन्।

४. सम्भावना र अवसर

भाषा, लिपि, संस्कृति, ललित कला आदिको संरक्षण र उपयोग प्रदेशको कार्य दायरामा रहेको, जातीय संस्कृतिको संरक्षणमा समुदायहरूको बढ्दो सकृयता, धार्मिक, पुरातात्विक एवम् ऐतिहासिक सम्पदाहरूको संरक्षण तथा सम्बर्धन र भूकम्पपश्चात् सांस्कृतिक सम्पदाहरूको पुनर्निर्माणले गति लिनका साथै सम्पदा पुनर्निर्माणप्रति बढ्दो जनचासो, सांस्कृतिक एवम् धार्मिक विविधताकाबीच सद्भाव अभिवृद्धि भएकाले राष्ट्रिय एकता सुदृढ गर्नका साथै बाह्य धार्मिक पर्यटकलाई आकर्षण गर्न सकिने अवस्था रहनु आदिले संस्कृतिको संरक्षण र विकासलाई आयआर्जन र रोजगारीका अवसरहरूसँग जोडेर प्रदेशको समृद्धिमा योगदान पुऱ्याउने अवसर प्राप्त छ।

५. दीर्घकालीन सोच

प्रदेशको पहिचान; भाषा, संस्कृति र कलाको प्रवर्द्धन।

६. लक्ष्य

ऐतिहासिक सम्पदा तथा मौलिक संस्कृतिहरूको जगेर्ना भई समग्र संस्कृतिमा गर्व गर्ने परिपाटीका साथै सामाजिक सद्भाव, सहिष्णुता र ऐक्यबद्धता सुदृढ भएको हुनेछ।

७. उद्देश्य

- सबै सांस्कृतिक सम्पदाहरूको अभिलेखीकरण गरी संरक्षण गर्नु,
- विभिन्न भाषा र लिपिहरूको संरक्षण र उत्थान गर्नु र

- सबै किसिमका मौलिक कलाहरूको संरक्षण, विकास र प्रवर्द्धन गर्नु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
<p>५.५.१</p> <p>पुरातात्विक एवम् मौलिक सम्पदा, जातीय संस्कृति र गुठीहरूको संरक्षण, संवर्द्धन र अभिलेखीकरण गर्न संस्थागत संरचनाको निर्माण गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • ऐतिहासिक, प्राकृतिक एवम् पुरातात्विक सम्पदाहरूको मर्मत र सम्भार गरिनेछ। • प्रदेश संग्रहालयको स्थापना गरी स्थानीय कला, भाषा, लिपि, संस्कृति र ऐतिहासिक वस्तुहरू प्रदर्शनको व्यवस्था मिलाइनेछ। • विभिन्न जातिका सांस्कृतिक रीतिरिवाज र परम्परा झल्काउने कार्यक्रमहरू, टेलिफिल्म, भिडियोहरू बनाउने र विद्यालय तथा समुदायस्तरमा प्रदर्शन गर्ने कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। • परम्परादेखि लाग्दै आएका ठूला मेलाहरूको उचित व्यवस्थापन गर्ने प्रबन्ध मिलाइनेछ।
<p>५.५.२</p> <p>भाषा, साहित्य र कलाको संरक्षण र विकास गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • मातृभाषा, लोक साहित्य, आधुनिक साहित्य, लोक संगीत, आधुनिक संगीत, लोक नाट्य र ललितकलाको अनुसन्धान, संरक्षण र विकासको लागि स्वायत्त निकायको रूपमा “भाषा, साहित्य तथा कला प्रज्ञा प्रतिष्ठान”को गठन गरिनेछ। • सामाजिक जागरण, राष्ट्रिय जागरण र परिवर्तनमुखी साहित्य र कलाको संरक्षण र विकास गरिनेछ। • भाषा, साहित्य, नाट्यकला, संगीत र ललितकलाको क्षेत्रमा योगदान पुऱ्याउने संघ संस्था तथा व्यक्तित्वहरूको अभिलेख तयार गरी अध्यावधिक गरिनेछ। • भाषा, साहित्य र कला प्रवर्द्धन सम्बन्धी कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। • भाषा, साहित्य र कलाको क्षेत्रबाट सामाजिक-सांस्कृतिक रूपान्तरणमा विशिष्ट योगदान गर्ने व्यक्तित्वहरूलाई सम्मानित र पुरस्कृत गरिनेछ। • गायन, संगीत, नृत्य र नाटकसम्बन्धी व्यवसायिक र गैरव्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्रहरूको आधारभूत पाठ्यक्रममा एकरूपता कायम गरिनेछ। • सबै जातजातिको भाषा, संस्कृति, कला आदिको संरक्षण गर्न सङ्ग्रहालयको स्थापना गर्न आवश्यक व्यवस्था मिलाइनेछ।
<p>५.५.३</p> <p>विभिन्न भाषा, भाषिका, लिपिको पहिचान गरी तिनीहरूको संरक्षण एवम् उत्थान गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • लोपोन्मुख स्थानीय कला, भाषा, लिपि, र संस्कृतिको अभिलेखीकरण गरी संरक्षणात्मक र विकास गरिनेछ। • भाषा, कला, लिपि र संस्कृतिलाई अभ्यास र स्थलीय सघनताका आधारमा सामूहिकृत गरी विकास र संरक्षणका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ।
<p>५.५.४</p> <p>परम्परागत मौलिक कला र लोक</p>	<ul style="list-style-type: none"> • विभिन्न जाति र समुदायका लोकगीत, लोककथा, नाट्यकला, परम्परागत भजन लगायतका लोकसाहित्यका विभिन्न विधाहरूको सर्वेक्षण, सङ्कलन,

रणनीति	कार्यनीति
संगीत, नृत्य, नाट्य लगायतका प्रदर्शनकारी लोक कलाहरूको संरक्षण, अनुसन्धान र विकास गर्ने।	अध्ययन, संरक्षण र प्रवर्द्धन गरिनेछ।
५.५.५ मूर्त तथा अमूर्त सम्पदा, भाषा र लिपिको संरक्षणमा उत्प्रेरित गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> प्रदेशको स्थानीय र परम्परागत मौलिक कला र संस्कृति र सम्पदाको संरक्षणमा योगदान दिने व्यक्ति, संस्था र समुदाय वा स्थानीय तहलाई प्रोत्साहित र सम्मानित गरिनेछ। स्थानीय कला, भाषा, लिपि, लोकसंस्कृतिको संरक्षणमा सम्बद्ध समुदायलाई उत्प्रेरित गर्न स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। भाषा संस्कृति, लोकसाहित्य, कलाजस्ता मूर्त तथा अमूर्त सम्पदाको संरक्षणमा विद्यालय/शिक्षण संस्थाहरू, सञ्चारमाध्यम र नागरिक समाजको भूमिका प्रभावकारी बनाइनेछ।
५.५.६ मौलिक भाषा, संस्कृति र कलासम्बन्धी सामग्री शैक्षिक पाठ्यक्रममा समावेश गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> मातृभाषामा आधारभूत शिक्षा प्राप्त गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ। मातृभाषासम्बन्धी जानकारीलाई आधारभूत पाठ्यक्रममा समावेश गरिनेछ। लोक तथा परम्परागत संस्कृतिसम्बन्धी जानकारी विद्यालय तहको पाठ्यक्रममा समावेश गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	प्रदेश पुरातत्व तथा जातीय संस्कृतिसम्बन्धी मामिला हेर्ने संरचनाको स्थापना	√	√	√	√	√
२	प्रदेश संग्रहालयको स्थापना गरी स्थानीय कला, भाषा, लिपि, संस्कृति र ऐतिहासिक वस्तुहरू प्रदर्शन	√	√	√	√	
३	सांस्कृतिक रीतिरिवाज र परम्परा झल्काउने कार्यक्रमहरू, टेलिफिल्म, भिडियोहरू बनाउने र विद्यालय तथा समुदायस्तरमा प्रदर्शन गर्ने कार्यक्रम सञ्चालन		√	√	√	
४	परम्परादेखि लाग्दै आएका ठूला मेलाहरूको उचित व्यवस्थापन गर्न सहयोग	√	√	√	√	
५	“भाषा, साहित्य तथा कला प्रज्ञा प्रतिष्ठान” को गठन		√	√	√	
६	सामाजिक जागरण, राष्ट्रिय जागरण र परिवर्तनमुखी साहित्य र कलाको संरक्षण र विकास					
७	भाषा, साहित्य, नाट्यकला, संगीत र ललितकलाको क्षेत्रमा योगदान पुऱ्याउने संघ संस्था तथा व्यक्तित्वहरूको अभिलेख तयार	√	√	√	√	
८	सबै जातजातिको भाषा, संस्कृति, कला आदिको संरक्षण गर्न सङ्ग्रहालयको स्थापना	√	√	√	√	

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
९	लोपोन्मुख स्थानीय कला, भाषा, लिपि, र संस्कृतिको अभिलेखीकरण गरी संरक्षणात्मक र विकास	√	√	√	√	
१०	विभिन्न जाति र समुदायका लोकगीत, लोककथा, नाट्यकला, परम्परागत भजन लगायतका लोकसाहित्यका विभिन्न विधाहरूको सर्वेक्षण, सङ्कलन, अध्ययन, संरक्षण र प्रवर्द्धन	√	√	√	√	
११	मातृभाषामा आधारभूत शिक्षा प्राप्त गर्ने व्यवस्था	√	√	√	√	
१२	लोक तथा परम्परागत संस्कृतिसम्बन्धी जानकारी विद्यालय तहको पाठ्यक्रममा समावेश	√	√	√	√	
१३	ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक र पुरातात्विक सम्पदाहरूको मर्मत संभार, संरक्षण र विकास	√	√	√		

१०. अपेक्षित उपलब्धि

भाषा, साहित्य तथा कलाको संरक्षण, विकास र प्रवर्द्धनका लागि प्रज्ञा प्रतिष्ठानको गठन भएको हुने, भूकम्पबाट क्षतिग्रस्त सम्पदाहरूको पुनर्निर्माण सम्पन्न भएको हुने, ऐतिहासिक एवम् सांस्कृतिक सम्पदाहरूको अभिलेखीकरण, विभिन्न जातजातशिका सांस्कृतिक सग्रहालयको पूर्वाधार विकास भएको हुने, मातृभाषामा पाठ्यक्रम तथा पाठ्यसामग्री विकास भएको हुने।

परिच्छेद—छ

शहरीकरण र पूर्वाधार विकास

१. पृष्ठभूमि

ग्रामीण र दुर्गम क्षेत्रका बासिन्दाहरू, चाहे ती छरिएर रहेका बस्तीका होऊन वा सघन रूपमा रहेका बस्तीका होऊन, कम्तीमा पनि आफैले उत्पादन गर्न नसक्ने नुन, तेल, लत्ताकपडा, औजार, औषधी र उपचार लगायतका वस्तु र सेवाहरूको लागि नजिकैको स-साना ग्रामीण बजारहरूमा आश्रित हुन्छन्। उक्त बजारहरूले उनीहरूलाई सितैमा ती वस्तु र सेवाहरू उपलब्ध गराउँदैनन्। यसका लागि उनीहरूले या त आफ्नो श्रम वेचु पर्छ या त आफूसँग भएको अन्न, पशु, पन्छी, सुकुल, नाड्लो लगायतका वस्तुहरू वेचु पर्छ। यसरी हरेक ग्रामीण बस्तीको सम्बन्ध नजिकैको स-साना ग्रामीण बजार केन्द्रहरूसँग स्थापित हुन्छ। यो विनिमय प्रणालीलाई जीवन्त राख्नको लागि ती स-साना बजार केन्द्रहरूको सम्बन्ध नजिकैको मध्यमस्तरको बजार केन्द्रसँग र तिनीहरूको पनि सम्बन्ध नजिकैको ठूला नगरहरूसँग हुन्छ। ती नगरहरूको सम्बन्ध अझ ठूलो महानगरहरूसँग हुन्छ। यसरी, गाउँ र शहरका सबै बस्तीहरू उत्पादन, वितरण र उपयोगको प्रणालीमा जोडिएका हुन्छन्। यिनीहरू एक अर्कालाई चाहिने वस्तु, सेवा, ज्ञान, सीप र लगानी लगायतका आवश्यकता पूरा गर्दै त्यसबाट पारस्परिक लाभ लिने कार्यमा निरन्तर लागि रहेका हुन्छन्। यस कार्यलाई ग्रामीण क्षेत्रका स-साना ग्रामीण बजार केन्द्रदेखि शहरी क्षेत्रका ठूला बजारहरूले एकीकृत शहरी प्रणालीको रूपमा सहजीकरण गरिरहेको हुन्छ। यो नै गाउँ र शहरको जीवन सञ्चार प्रणाली हो। यो प्रणाली जति बढी सहज र सबल हुन्छ गाउँ र शहरका सबैले त्यति नै बढी लाभ लिन सक्ने हुन्छ। भौतिक पूर्वाधारहरू, चाहे ती उत्पादन बढाउने सिँचाइ, ऊर्जा र औद्योगिक ग्रामजस्ता पूर्वाधार होऊन वा वस्तु र सेवाको वितरणलाई सहज बनाउने जल, थल र हवाई यातायातका पूर्वाधार होऊन वा उपभोगलाई बढवा दिई जीवनस्तर उकास्न मद्दत गर्ने आवास, खानेपानी र मनोरञ्जनका पूर्वाधार होऊन वा जीवन र सम्पत्तिको रक्षाको निम्ति आवश्यक पर्ने स्वास्थ्य, सरसफाइ, फोहरमैला व्यवस्थापन र प्रकोप व्यवस्थापनका पूर्वाधार होऊन, सबैको साझा उद्देश्य शहरी प्रणालीलाई बढीभन्दा बढी सहज र सबल बनाउने नै हुन्छ। त्यसैले, भौतिक पूर्वाधारलाई शहरी प्रणालीबाट अलग्याएर हेर्न सकिँदैन। शहरी प्रणालीलाई बेवास्ता गरेर बनाइने पूर्वाधारको उपयोगिता रहँदैन भने गुणस्तरीय पूर्वाधार बिना शहरी प्रणाली पनि सहज र सबल हुँदैन। पूर्वाधारको अभाव र गुणस्तरहीन पूर्वाधार दुवैले गाउँ र शहरी जीवनलाई कष्टकर र अनुत्पादक बनाउँछ। कतिपय अवस्थामा नकारात्मक पनि बनाउन सक्छ। यी दुईको समन्वयात्मक विकासबाट मात्र पूर्वाधारमा गरिने लगानी र विकासको प्रतिफल प्रभावकारी बनाउन सकिन्छ। यस क्षेत्रमा गरिने लगानीलाई गाउँपालिका वा नगरपालिकाको भूगोलभित्र गरिने लगानीको रूपमा नभई गाउँ र नगर दुवैको हित हुनेगरी शहरी प्रणालीको सुदृढीकरणमा गरिने लगानीको रूपमा लिनु आवश्यक छ। यसमा गरिने लगानीले नगर क्षेत्रको मात्र होइन ग्रामीण क्षेत्रको व्यवस्थित शहरीकरणलाईसमेत सहयोग पुग्दछ। यो समय लाग्ने प्रक्रिया हो। यस तथ्यलाई मध्यनजर गरी शहरीकरण र पूर्वाधार विकासको सन्दर्भमा करिब १५ वर्षसम्मको एकीकृत दीर्घकालीन विकासको सोचसहित यसलाई प्राप्त गर्न अपनाउनुपर्ने ५ वर्षे आवधिक लक्ष्य, उद्देश्य, रणनीति, कार्यान्वयन नीति तथा विकासका पहलहरूको प्राथमिकीकरण तल प्रस्तुत गरिएको छ।

२. वस्तुगत स्थिति

अ. शहरीकरण

- करिब ५५ लाख जनसङ्ख्या यो प्रदेशमा बस्छन् जुन मुलुकको कुल जनसङ्ख्याको २१ प्रतिशत हो। ११९ स्थानीय तहमध्ये ३ महानगरपालिका, १ उपमहानगरपालिका, ४१ नगरपालिका र ७४ गाउँपालिकाहरू छन्। करिब ७३ प्रतिशत जनसङ्ख्या नगरपालिकामा छन्। कम्तीमा १० व्यक्ति प्रतिहेक्टर घनत्व भएका पुराना वडाहरूको (प्रादेशिक विभाजन पूर्वोत्तरका) जनसङ्ख्या अनुसार प्रदेशको शहरीकरण स्तर ४९.६ प्रतिशत रहेको छ।
- सन् २००१ देखि २०११ को दशकमा प्रदेशको वार्षिक जनसङ्ख्या वृद्धिदर २.१ प्रतिशत थियो। काठमाण्डौ उपत्यकाजस्ता शहरी केन्द्रहरूको वृद्धिदर उच्च छ। उपत्यकाको उत्तरमा अवस्थित टोखा र बुढानीलकण्ठ नगरपालिकाको वार्षिक वृद्धिदर क्रमशः १३.१ र ११.६ प्रतिशत रहेको देखिन्छ। काठमाण्डौ महानगरपालिकाको वृद्धिदर भने ४.१५ प्रतिशत मात्र रहेको छ। तुलनात्मक रूपमा भरतपुर महानगरपालिकाको वृद्धिदर २.४ प्रतिशत र हेटौँडा उपमहानगरपालिकाको १.६ प्रतिशत छ।
- प्रदेशको शहरी जनसङ्ख्या प्रमुख चार क्षेत्रहरू — काठमाण्डौ उपत्यका (६० प्रतिशत), चितवन (१०.४ प्रतिशत), हेटौँडा (३.४ प्रतिशत) र काभ्रे (१.७ प्रतिशत) केन्द्रित रहेको छ। काठमाण्डौ महानगरपालिकाको जनघनत्व १९७२६ जना प्रतिवर्ग कि.मी., भरतपुर महानगरपालिकाको ६४८ जना प्रतिवर्ग कि.मी. र हेटौँडाको ५८४ जना प्रतिवर्ग कि.मी. रहेको छ।
- काठमाण्डौ उपत्यकामा शहरी स्वरूप सघन र एकीकृत भइरहेको छ। शहरी कोरिडोरहरू विकास हुने क्रममा छन्। राजमार्ग वरपरका बहुसङ्ख्यक बस्तीहरू जोडिँदै एउटै विशाल शहरी क्षेत्रको रूपमा विकास भइरहेको छ। काठमाण्डौ र धुलिखेललाई जोड्ने २२ कि.मि .लामो काठमाण्डौ/कोटेश्वर-भक्तपुर/सल्लाघारी-साँगा-धुलिखेल शहरी कोरिडोर, र चितवनमा ३३ कि.मि .लामो भरतपुर-रत्ननगर-भण्डारा-पिप्ले शहरी कोरिडोर यसका उदाहरण हुन्।

आ. भौतिक पूर्वाधार

राष्ट्रिय शहरी विकास रणनीति, २०७३ अनुसार काठमाण्डौ महानगरपालिकाको तुलनामा अन्य शहरहरूको आधारभूत पूर्वाधार(जस्तै सडक, खानेपानी, सरसफाइ, फोहोरमैला व्यवस्थापन, आवास र बिजुली)को पहुँचकोस्तरमा निकै भिन्नता रहेको छ। काठमाण्डौ महानगरपालिकाको शहरी पूर्वाधार अवस्था सूचकाङ्क ९१ (कुल अङ्क १००) रहेको छ। तर उपत्यकाभित्रैका अन्य नगरपालिकाहरूको सूचकाङ्क कम छ। काठमाण्डौ बाहिरका नगरपालिकाहरूको सूचकाङ्क केही अपवादबाहेक झन कम छ। अधिकांश नगरपालिकाहरूको शहरी पूर्वाधारको अवस्था नाजुक छ।

क. यातायात सञ्जाल

- प्रदेशका सबै जिल्ला सदरमुकामहरू राजमार्ग वा फिडर सडकबाट जोडिएका छन्। यो नेपालको पूर्व, पश्चिम, उत्तर र दक्षिण जोड्ने राजमार्गहरूका साथै चीन र भारत जोड्ने सडक सञ्जालमा आबद्ध छन्। उपत्यका बाहिरका दुई प्रमुख शहरहरू भरतपुर र हेटौँडा पनि पूर्व-पश्चिम राजमार्गमा अवस्थित छन्। चुरेको सिमानासँगै निर्माण भइरहेको पूर्व-पश्चिम मदन भण्डारी राजमार्गले हेटौँडालाई तराईका अन्य क्षेत्रीय शहरहरूसँग जोड्ने छ। निर्माणाधीन ७२ कि.मी .लामो निजगढ-काठमाण्डौ द्रुत-मार्गले काठमाण्डौ उपत्यकालाई देशको दोस्रो ठूलो प्रस्तावित निजगढ अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलसँग जोड्नुका साथै काठमाण्डौ-तराईबीचको यात्रा समयलाई पनि घटाउनेछ। रणनीतिक सडकहरूको उच्च घनत्वले तुलनात्मक रूपमा काठमाण्डौ उपत्यकामा आन्तरिक आवत जावत सहज भए पनि उपत्यका बाहिरका जिल्लाहरूमा सडक घनत्व निकै कम रहेको छ। प्रदेशको विद्यमान सडक सञ्जालको गुणस्तर र मानकमा पनि न्यूनता देखिन्छ।
- जिल्लाभित्रका उत्पादन केन्द्र र बजारलाई एक आपसमा तथा राजमार्गसँग जोड्ने जिल्ला सडकको अवस्था झन् नाजुक

देखिन्छ। प्रदेशको कुल ५२३२ कि.मि. लम्बाईको जिल्ला सडकमा ५.५ प्रतिशत कालोपत्रे, १६.२ प्रतिशत ग्राभेल र बाँकी माटोका छन्। काठमाण्डौ उपत्यकाका तीन जिल्लाहरूमा (जिल्ला सडकको लम्बाइको तुलनामा) कालोपत्रे गरिएको प्रतिशत काठमाण्डौमा ३८.७, ललितपुरमा १७.२, भक्तपुरमा ६१.९, र चितवनमा २१.५ छन्। तर प्रदेशका बाँकी ९ जिल्लाहरूमा यस्तो प्रतिशत कम छ। रामेछाप, दोलखा, रसुवामा राष्ट्रिय सडक बाहेकका अन्य सडक कालोपत्रे गरिएका छैनन्।

- काठमाण्डौ उपत्यकामा रहेको देशको एक मात्र अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलले उपत्यका र नेपाललाई विश्वका अन्य शहरहरूसँग आबद्ध गराएको छ। यसले आन्तरिक हवाई यातायातमा पनि थप सहजता प्रदान गरेको छ। प्रदेशका भरतपुर र रामेछाप पनि विमानस्थल छन्। रसुवागढी, काठमाण्डौ, वीरगञ्ज र लुम्बिनी जोड्ने प्रस्तावित उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम रेलमार्गले भविष्यमा प्रदेशभित्रको यातायात र पारवाहन सुविधा थप मजबुत हुनेछ।

ख. ऊर्जा

- देशमा स्थापित जलविद्युत परियोजनाहरूको कुल क्षमता १०७३ मेगावाट रहेको छ। राष्ट्रियस्तरमा उत्पादन गरिएको विद्युतमध्ये करिब एक-तिहाइ विद्युत (३४०.३ मेगावाट) प्रदेशमा उत्पादन हुन्छ। कुलेखानी-१ र २, त्रिशुली, माथिल्लो भोटेकोसी, खिम्ती र चिलिमे प्रदेशका केही प्रमुख जलविद्युत परियोजनाहरू हुन्। ४५६ मेगावाट क्षमता रहेको माथिल्लो तामाकोसी दोलखामा निर्माणाधीन अवस्थामा छ। प्रदेशमा थुप्रै साना जलविद्युत परियोजनाहरू सञ्चालनमा छन् र थुप्रै प्रस्तावित छन्। यसमध्ये नेपाल विद्युत प्राधिकरणले ५६२ मेगावाट विद्युत उत्पादन गर्छ भने निजी क्षेत्रले ५११ मेगावाट र भारतबाट ४५० मेगावाट विद्युत आयात गर्ने गरिएको छ। देशमा उत्पादित विद्युतमध्ये बहु-इन्धन/डिजेलबाट ५४ मेगावाट र सौर्य ऊर्जाबाट २.६८ मेगावाट हुन्छ।
- राष्ट्रियस्तरमा उत्पादन गरिएको विद्युत परियोजना केन्द्रहरूबाट सब-स्टेशनहरूसम्म १३२ किलोभोल्टको प्रसारण लाइनबाट वितरण भइरहेको छ। विद्यमान र निर्माणाधीन प्रसारण लाइनको क्षमता ३९२७ सर्किट कि.मी. रहेको छ। यसमा २०० किलोभोल्ट (१४३२ सर्किट कि.मी.), ६६ किलोभोल्ट (४९४ सर्किट कि.मी.), र ४०० किलोभोल्ट (७८ सर्किट कि.मी.) प्रसारण लाइन थपिएको छ।
- यस प्रदेशको घरधुरीहरूको बत्तीको प्रमुख स्रोत बिजुली रहेको छ। बिजुलीको अनुपात ८५.७ प्रतिशत छ भने मट्टितेलको ७.५ प्रतिशत, बायोग्याँसको ०.३ प्रतिशत, सौर्यको ४ प्रतिशत र अन्यको अनुपात १.७ प्रतिशत रहेको छ। यद्यपि, खाना पकाउनका लागि काठ-दाउरा प्रमुख स्रोत हो। ४६ प्रतिशत घरधुरीले काठ-दाउरा प्रयोग गर्छन्, १.८ प्रतिशत ले मट्टितेल, ४७.९ प्रतिशत ले एलपी ग्याँस, २ प्रतिशतले बायोग्याँस, र अन्य प्रयोग गर्छन्।
- काठमाण्डौ उपत्यकाबाहिर धेरै घरधुरीहरू बिजुलीको पहुँचबाट वञ्चित छन्। मकवानपुर, रामेछाप र सिन्धुलीजस्ता जिल्लाहरूका ग्रामीण क्षेत्रहरूमा २५ प्रतिशतभन्दा कम घरधुरीहरूको मात्र बिजुलीमा पहुँच रहेको छ। संघीय सरकारको ऊर्जा, जलविद्युत र सिँचाइसम्बन्धी श्वेत पत्रले अन्य कुराका अतिरिक्त पानी भण्डार गर्ने जलविद्युत परियोजनाहरूको आवश्यकता र बिजुली घरदैलोमा वितरण गर्नका लागि प्रसारण लाइनमा ठोस लगानीको आवश्यकता औँल्याएको छ।

ग. दूरसञ्चार

- टेलिफोन र इन्टरनेट सेवामा घरधुरीको पहुँच बढाउन मोबाइल फोन प्रविधिको ठूलो हात रहेको छ। नेपाल टेलिकम र एनसेल दुई प्रमुख टेलिफोन सेवा प्रदायकहरू हुन्। करिब ६ वटा प्रमुख निजी इन्टरनेट सेवा वितरकहरू देशमा रहेका छन्। प्रदेशमा ७६.१ प्रतिशत घरधुरीहरूको मोबाइल फोनमा पहुँच भए पनि थोरै घरधुरीहरूको मात्र कम्प्युटर

(१९.५ प्रतिशत), इन्टरनेट (१० प्रतिशत), र टेलिफोन (१६.७ प्रतिशत) मा पहुँच रहेको छ।

- संघ, प्रादेश र स्थानीय तह सबैमा इ-शासकीय प्रणाली क्षमता निम्न पक्षहरूमा सीमित रहेको छ : (क) कम्प्युटर, कम्प्युटर नेटवर्किङ, इन्टरनेट, वेबसाइट, वाइफाइ, एसएमएसमा पहुँच, सूचनाको वितरण (ख) सरकारबीच हुने कारोबारहरू (जस्तै सरकारका निर्देशनहरू) (ग) सरकार र नागरिकबीच हुने कारोबारहरू (जस्तै इ-भुक्तानी, इ-अनुमति, इ-आवेदन, इ-सर्भे, विपद् जोखिम व्यवस्थापनका लागि पूर्व चेतावनी) र (घ) सरकार र व्यवसायीहरूबीच हुने कारोबारहरू (जस्तै इ-खरीद)।
- संघीय सरकारले सीमित जिल्लाहरूमा इ-भिलेज केन्द्रहरूमाफर्त् इ-भिलेज कार्यक्रम सञ्चालन गर्दै आएको छ। यसले शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, पर्यटन र स्थानीय विकासजस्ता क्षेत्रहरूमा सूचना प्रविधिको सेवा प्रदान गर्दछ।

घ. सिँचाइ

- प्रदेशमा कृषियोग्य जमिन ३४३,२७४ हेक्टर रहेको छ जुन प्रदेशको कुल क्षेत्रफलको करिब १७ प्रतिशत हुन आउँछ। तर सिँचाइयोग्य जमिन सम्पूर्ण कृषियोग्य जमिनको आधा (४९.५ प्रतिशत) मात्र छ। झनै सिँचित जमिन सिँचाइयोग्य जमिनको तुलनामा आधाभन्दा केही प्रतिशत मात्र ज्यादा (५९.७ प्रतिशत) छ।
- प्रदेशको ८० प्रतिशत सिँचाइयोग्य जमिन (१७०,००० हेक्टर) चितवन (४१,९६३ हेक्टर), मकवानपुर (२३,५०२ हेक्टर), सिन्धुली (२०,६५२ हेक्टर), नुवाकोट (१५,०४७ हेक्टर), काठमाण्डौ (१४,०६९ हेक्टर), सिन्धुपाल्चोक (१२,२७६ हेक्टर), र धादिङ (१०,८३९ हेक्टर) मा रहेको छ। चितवनमा सिँचाइयोग्य जमिनको ७३ प्रतिशत सिँचित छ। तर बाँकी ६ जिल्लाहरूमा सिँचित जमिनको प्रतिशत एक-तिहाइभन्दा कम छ।
- संघीय सरकारको विद्यमान सिँचाइ कार्यक्रमहरूमा (क) नयाँ प्रविधिमा आधारित सिँचाइ (वर्षाको पानी सङ्कलन, नदीबाट पानी लिफ्ट गर्ने), (ख) कम गहिरो र गहिरो ट्युबवेल सिँचाइ, (ग) मझौला सिँचाइ परियोजना (१५० हेक्टर क्षेत्रफल), र (घ) बहुउद्देश्यीय सिँचाइ परियोजनाको पूर्व-सम्भाव्यता अध्ययन आदि छन्। बहुउद्देश्यीय सुनकोसी-मरिणा डाइभर्सन परियोजनाजस्ता बहुउद्देश्यीय सिँचाइ र जलविद्युत उत्पादनका परियोजना अध्ययन डिजाइन क्रममा छन्।

ङ. आवास

- निजी आवास परिवार आफैले जग्गा खरीद गरी क्रमिक रूपमा निर्माण गर्ने र बाटो, यसको स्तर र अन्य सुविधाहरू क्रमशः थपदै जाने गरेको देखिन्छ। यस्ता आवासहरूमा योजना तथा भवनसम्बन्धी मापदण्ड र संहितामा व्यापक कमी हुने गरेको देखिन्छ। शहरी जग्गा बजार अनौपचारिकताले ग्रस्त छ। बिक्रेता र खरिदकर्ता दुवैले जग्गासम्बन्धी सूचना र खरीद-बिक्रीका लागि मध्यस्थकर्ताहरूको सहयोग लिनुपर्ने हुन्छ। महत्वपूर्ण कृषि जमिनहरूमा प्लटिङ गरी घडेरी बिक्री गर्ने क्रम पनि व्यापक छ। यस्तो अनौपचारिक जग्गा बजारको प्रकृतिले शहरी विस्तार जतासुकै छरिएको र अस्तव्यस्त देखिन्छ।
- औपचारिक आवास सीमित सङ्ख्यामा छ। यसअन्तर्गत अपार्टमेन्ट र सङ्गठित आवास पर्दछन् जुन प्राय काठमाण्डौ उपत्यकामा केन्द्रित छन्। धेरैजसो यस्ता आवास पर्खालले घेरेका समुदाय (गेटेड कम्युनिटी)का रूपमा विकास भएका छन्। शहरी आवासको हकमा सरकारले निर्देशित जग्गा विकास(जीएलडी)को माध्यमबाट गाडी गुड्ने बाटोयुक्त जग्गाको आपूर्तिमा जोड दिएको पाइन्छ। ८० को दशकदेखि काठमाण्डौ उपत्यकामा जग्गा एकीकरण कार्यक्रमहरू पनि बृहत रूपमा सम्पन्न भएका छन्। जग्गा एकीकरण कार्यक्रम भरतपुर र कमलामाईमा कार्यान्वयन भइसकेको र सरकारको नयाँ शहर कार्यक्रम लागू भएको सिन्धुलीको खुर्कोट र धादिङको बैरेनी-गल्छीमा पनि कार्यान्वयनमा छन्।
- प्रमुख शहरी केन्द्रहरूमा बहालयुक्त आवासको प्रयोग बढ्दो छ। काठमाण्डौ जिल्लामा बहालयुक्त आवासमा बस्ने

घरधुरीको अनुपात ५८.६ प्रतिशत, ललितपुरमा ४०.९ प्रतिशत र भक्तपुरमा ३२.६ प्रतिशत रहेको छ। प्रदेशका अन्य जिल्लाहरूमा यो अनुपात १० प्रतिशतभन्दा कम देखिन्छ। काठमाण्डौका भित्री भागहरूमा धेरै व्यक्तिहरूले एउटै कोठा बहालमा लिएर भीडभाडमा बसेको पाइन्छ। अझ कतिपय बसाइँसराइ गरी आउने परिवारहरू जग्गाको बजार र बहालयुक्त आवासबाट बञ्चित भई प्राय सार्वजनिक जग्गामा अस्वस्थकर (सुकुम्बासी) बस्तीहरूमा बस्न बाध्य छन्।

- भूकम्पीय जोखिममा रहेको यो प्रदेशमा आवासको गुणस्तरले ठूलो महत्व राख्छ। काठमाण्डौ, ललितपुर र भक्तपुर जिल्लाहरूमा १५ प्रतिशत देखि ३८ प्रतिशत घरधुरीहरू सवलीकरण नगरिएका गाह्रोको (ढुङ्गा वा ईटामा माटोको जोडाई भएको) घरहरूमा बस्छन्। चितवनमा यो प्रतिशत २०.९ र मकवानपुरमा ४४.९ रहेको छ। प्रदेशका बाँकी जिल्लाहरूमा यो प्रतिशत अझ धेरै ५१.२ देखि ९४.५ सम्म रहेको छ।

च. खानेपानी, सरसफाइ र फोहोरमैला व्यवस्थापन

- सन् २०१५ मा राष्ट्रियस्तरमा खानेपानी सेवा ८६.४५ प्रतिशत र सरसफाइको सेवा ८१.९५ प्रतिशत घरधुरीहरूमा पुगेको छ। यस प्रदेशमा ६७.२ प्रतिशत घरधुरीको पाइप जडित वा धाराको पानीमा पहुँच रहेको छ। तर चितवन, सिन्धुली र काठमाण्डौ लगायतका केही जिल्लाहरूमा यो अनुपात कम रहेको देखिन्छ। पानीको गुणस्तर र सेवाको स्तरमा पनि कमी देखिन्छ।
- मेलम्ची खानेपानी परियोजना सम्पन्न भएपछि काठमाण्डौ उपत्यकाको खानेपानी आपूर्तिमा सुधार हुने अपेक्षा गरिएको छ। उपत्यकाको हालको आपूर्ति बर्खामा १५ करोड लिटर प्रतिदिन र सुख्खा याममा ९ करोड लिटर प्रतिदिन रहेको छ। तथापि उपत्यकामा खानेपानीको माग ३५ करोड लिटर प्रतिदिन रहेको र आपूर्ति अझै अपुग हुने देखिन्छ। जमिनमुनिबाट पानी निकाल्ने क्रम अत्यधिक बढ्नुका साथै टेङ्कर, जार र बोतलद्वारा खानेपानी आपूर्ति गर्ने व्यवसाय पनि फस्टाएको छ। अहिले उपत्यकाको शहरी खानेपानीको भौतिक संरचना काठमाण्डौ उपत्यका खानेपानी व्यवस्थापन बोर्डअन्तर्गत रहेको र काठमाण्डौ उपत्यका खानेपानी लिमिटेडले उक्त संरचना लिजमा लिई सेवा प्रदान गरिरहेको छ। यस्तै खालको बोर्डको संरचना भरतपुर, हेटौँडा, काभ्रे उपत्यकामा पनि छ।
- प्रदेशमा समग्रतामा ८२.८ प्रतिशत घरधुरीहरूको शौचालयमा पहुँच रहेतापनि १३ मध्ये ९ जिल्लामा शौचालयको पहुँच कम रहेको छ। शहरी क्षेत्रमा सीमित ढलको व्यवस्था, फोहोर पानी प्रशोधन प्रणालीको अभाव र फोहोर पानी सिधै नदीमा फाल्नाले शहरी वातावरणलाई प्रतिकूल असर परिरहेको छ। कमजोर फोहोरमैला व्यवस्थापनले वातावरणीय समस्याहरूलाई झनै जटिल बनाएको छ र शहरी केन्द्रहरूको बस्नयोग्य अवस्था पनि खस्कंदो छ। स्यानिटरी ल्यान्डफिल साइटको अभाव, अपुग पूर्वाधार तथा लजिस्टिक र नगरपालिकाहरूको कमजोर संस्थागत क्षमताले समस्याहरूको जटिलता बढ्दो छ।

३. समस्या र चुनौती

काठमाण्डौको विशिष्ट प्राकृतिक, सांस्कृतिक र ऐतिहासिक सम्पदालाई असर गर्ने असङ्गतिपूर्ण भू-उपयोगको व्यवस्थापन र विकेन्द्रीकरण चुनौतीको रूपमा रहेको छ। अव्यवस्थित शहरीकरणले उपत्यकाको प्राकृतिक वातावरण र कृषियोग्य जमिनमा तीव्र हास आएको छ। बढ्दो अतिक्रमणले सांस्कृतिक र ऐतिहासिक सम्पदाहरूको संरक्षण समस्याग्रस्त भइरहेको छ। बसाइँसराइसँगै परिवारहरू भिडभाडयुक्त तथा महङ्गो बहालको घर र अस्वस्थकर (सुकुम्बासी) बस्तीहरूमा बस्न बाध्य छन्। जग्गाको मूल्य निरन्तर अकासिँदो छ र यसले पूर्वाधार विकासका लागि जग्गा प्राप्त गर्न झन जटिल बनाएको छ।

रणनीतिक सडकहरू, शहरी सडक र पुलहरूको नियमित मर्मत सम्भारको कमीले यी पूर्वाधारहरूको कार्यात्मक

क्षमता र समग्र यातायात गतिशीलतालाई नै नकारात्मक प्रभाव परिरहेको छ। वितरण सञ्जालको अभावले ग्रामीण भेगका धेरै घरधुरीहरू अझैसम्म पनि बिजुलीको पहुँचबाट वञ्चित छन्। विद्युतलाई यातायात प्रणाली र अन्य प्रयोजनको लागि प्रयोग गर्ने तयारी र तत्परतामा पनि कमी रहेको छ। इ-शासकीय प्रणालीलाई सुचारू रूपमा सञ्चालन गर्न र आधारभूत सार्वजनिक सेवाहरूको प्रवाहमा सुधार ल्याउन संस्थागत एवम् पूर्वाधार संरचनाहरू सीमित मात्र छन्। सिँचाइयोग्य जमिनको ठूलो हिस्सामा सिँचाइ गर्न सकिएको छैन।

खानेपानी, सरसफाइ, र फाहोरमैलाजस्ता आधारभूत शहरी पूर्वाधारहरूको कमीले शहरी केन्द्रहरूले प्रादेशिक आर्थिक विकासमा प्रभावकारी भूमिका खेल्न सकेका छैनन्। वातावरणलाई जोगाउन र जोखिमहरूसँग बचन उचित उपायहरू अवलम्बन गर्नेतर्फ प्रयासहरू संस्थागत भइसकेका छैनन्। योजना तर्जुमा गर्ने, डिजाइन गर्ने र कार्यान्वयन गर्ने कार्यमा प्रदेशको संस्थागत क्षमता सीमित छ। सरकारको तीन तहबीचको योजना तर्जुमा र कार्यान्वयनमा समन्वय र सहकार्य गर्ने अभ्यास बसिसकेको छैन।

४. सम्भावना र अवसर

काठमाण्डौ उपत्यकाको सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक सम्पदा र आर्थिक संरचनाहरूलाई यस प्रदेशको विशिष्ट अवसरको रूपमा लिन सकिन्छ। गुणस्तरीय स्वास्थ्य, शैक्षिक सेवा, कुटनैतिक संस्था, तथा अत्यधिक आर्थिक अवसरहरू काठमाण्डौ उपत्यकामा केन्द्रित हुनाले उपत्यकाको तुलनात्मक लाभ अग्रणी छ। काठमाण्डौ उपत्यकाको विस्तृत सघन शहरीकरण र चितवनका विकासशील शहरी केन्द्रहरू र बढ्दै गइरहेका शहरी कोरिडोरहरूमा बाक्लो शहरी जनसङ्ख्याको उपस्थितिले आर्थिक उत्पादन र बजारको अवसर वृद्धि गरेको छ भने विशिष्ट शहरी पूर्वाधार सेवाहरूको विकासलाई सम्भव बनाएको छ।

काठमाण्डौ, काभ्रे र चितवनका प्रमुख शहरहरूको अन्तरसम्बन्ध सघन छ। यसले द्रुत यातायात प्रणालीको विकास सम्भव तुल्याउन सक्छ। प्रदेश र देशभरिका अन्य शहरी केन्द्रहरू सडक सञ्जालबाट आबद्ध छन्। दक्षिणी शहरहरू हुँदै भारत र उत्तरमा रसुवागढी र कोदारीबाट चिनसँगको आबद्धताले प्रदेशको यी दुई देशसँग व्यापारिक र पर्यटकीय सम्बन्ध पनि बढ्दो छ। देशको एक मात्र अन्तर्राष्ट्रिय विमानस्थलले यस प्रदेशलाई विशेष स्थानिक र तुलनात्मक लाभ प्रदान गरेको छ। यसले वाणिज्य र व्यापारको आन्तरिक, अन्तर-प्रादेशिक र अन्तर्राष्ट्रिय कारोबारलाई वृद्धि गर्नुका साथै संलग्न संरचना र मानवीय संसाधनलाई पनि टेवा पुऱ्याएको छ र प्रादेशिक अर्थतन्त्रलाई सम्मुनत बनाउन योगदान गरेको छ। यस योजना अवधिमा प्रदेशको शहरी केन्द्रहरू र ग्रामीण क्षेत्रबीच गरिने यातायात सञ्जालको सुधार र आबद्धताले बहुसङ्ख्यक किसान र तिनका कृषिउपजहरूको बजार अझ विस्तार हुने अपेक्षा छ।

अध्ययनको क्रममा रहेको बहु-उद्देश्यीय सुनकोसी-मरिन डाइभर्सन परियोजनाले सिँचाइ र जलविद्युत उत्पादनको लागि विशेष अवसर प्रदान गर्नुका साथै सिन्धुली जिल्लालाई केही लाभ पुऱ्याउन सक्दछ। प्रदेशमा मोबाइल फोनको पहुँच उच्च रहेकाले अत्यधिक घरधुरीहरू सूचना आदान प्रदान गर्न सक्षम छन्। यसले इ-शासकीय प्रणालीलाई संस्थागत गर्न मद्दत पुऱ्नेछ। आधारभूत शहरी पूर्वाधारहरूमा घरधुरीहरूको बढ्दो पहुँचले सेवाका अन्य क्षेत्रमा पनि सकारात्मक प्रभाव पारेको छ। समग्रमा पूर्वाधार विकासले रोजगारी सिर्जना गर्नुका साथै सुविधा/सम्पत्ति विस्तार गर्न र गरिबी निवारणमा मद्दत पुऱ्याएको छ।

५. दीर्घकालीन सोच

विकास र समृद्धिको आधार, सन्तुलित शहरी प्रणाली र गुणस्तरीय भौतिक पूर्वाधार

६. लक्ष्य

प्रदेशका ठूला शहर, मझौला शहर, बजार केन्द्र र ग्रामीण आवासीय बस्तीहरूमा नियोजित रूपमा भौतिक पूर्वाधार तथा सेवाहरूको विकास, त्यसको गुणस्तर र पहुँचमा अभिवृद्धि गर्ने।

६.१ शहरीकरण

१. उद्देश्य

१. प्रादेशिक र स्थानीय भौतिक योजना (स्पासियल स्ट्रक्चर प्लान) र एकीकृत मापदण्डको कार्यान्वयनलाई संस्थागत गर्नु र
२. क्षेत्रीय र आधारभूत शहरी पूर्वाधारहरूको अवस्थामा सुधार गर्नु।

२. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
६.१.१ काठमाण्डौ उपत्यकाको दीर्घकालीन विकास सोचसँग मेल नखाने क्रियाकलापहरूलाई उपत्यका बाहिर विकेन्द्रित गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • काठमाण्डौ उपत्यकाको दीर्घकालीन विकास अवधारणालाई संघीयता, बढ्दो शहरी व्यवस्थापनका चुनौती र प्रदेशको आवधिक योजना अनुकूल पुनरावलोकन र कार्यान्वयन गर्न संघीय सरकार र स्थानीय तहहरूसँग समन्वय गरिनेछ। • चितवन, हेटौँडाजस्ता दोस्रो तहका शहरहरूमा सशक्त (स्मार्ट) शहर योजना कार्यान्वयन गरिनेछ। जग्गा एकीकरण प्रणाली अवलम्बन गरी स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग, यातायात र आवासजस्ता विशिष्टीकृत सामाजिक-आर्थिक पूर्वाधार संरचना र शहरी सेवाहरूको विकास र प्रवर्द्धन गरिनेछ। • सम्भाव्य पर्यटकीय केन्द्रहरूमा सशक्त शहर योजना कार्यान्वयन गरिनेछ। • बस्ती विकास, जग्गा एकीकरण, निर्देशित जग्गा विकास र भवन एकीकरणजस्ता कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। • साना शहर तथा बजार केन्द्रहरूमा आधारभूत शहरी पूर्वाधार सुविधा, आर्थिक अवसरहरूको विकास र प्राकृतिक प्रकोपबाट बच्ने सुरक्षासम्बन्धी उपायहरू कार्यान्वयन गर्ने गरी एकीकृत बस्ती विकासको प्रवर्द्धन गरिनेछ।
६.१.२ पूर्वाधार विकासलाई भौतिक योजनाद्वारा निर्देशित गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • भौतिक योजना तर्जुमा, स्वीकृति र कार्यान्वयनसम्बन्धी निर्देशिका बनाई कार्यान्वयन गरिने छ। • स्थानीय तहमा भू-उपयोग योजना अनुरूप पूर्वाधार निर्माण तथा विस्तारलाई प्रोत्साहन गरिने छ। • शहरी चाप बढी हुने सडक सञ्जालमा आकाशेपुल र अण्डरपासको निर्माण गरिनेछ। • जिरी र स्याफ्रुवेंशीलगायतका स्थानहरूमा स्मार्ट शहर र जग्गा विकासका योजनाहरू सञ्चालन गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ।
६.१.३ शहरहरूको एकीकृत विकास गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • राजमार्ग, औद्योगिक र व्यापारिक क्षेत्र समेटेर आवश्यकता अनुसार नयाँ शहर र आर्थिक कोरिडोरहरूको विकास गरिनेछ। • एकीकृत शहरी विकासको लागि संघ, प्रदेश, स्थानीय तह, निजी क्षेत्र र समुदायसँग

रणनीति	कार्यनीति
	<p>सहकार्य गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> स्थानीय विशेषता अनुरूप नयाँ शहरको विकास गरिनेछ। व्यवस्थित शहर विकासको लागि वैदेशिक लगानी आकर्षित गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ। संघीय सरकार र स्थानीय तहसँगको सहकार्यमा काठमाण्डौ उपत्यकाको शहरी विकासको लागि विशेष योजना बनाई कार्यान्वयन गरिनेछ। शहरी क्षेत्रबाट उत्सर्जन हुने मानव मलमुत्र लगायतका जैविक फोहरको व्यवस्थापन गरिनेछ। शहरी गरिब परिवारको लागि आवास र आधारभूत पूर्वाधार र अन्य सेवा सुविधाको व्यवस्था गर्न स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। संघ र स्थानीय तहसँगको सहकार्यमा शहरी नदीप्रणालीलाई स्वच्छ, व्यवस्थित र मनोरम क्षेत्रको रूपमा विकास गर्ने योजना सञ्चालन गरिनेछ।

३. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	काठमाण्डौ उपत्यकाको दीर्घकालीन विकास अवधारणाको विकास	√	√	√	√	
२	सशक्त (स्मार्ट) शहर योजना कार्यान्वयन	√	√	√	√	
३	बस्ती विकास, जग्गा एकीकरण, निर्देशित जग्गा विकास र भवन एकीकरणजस्ता कार्यक्रमहरू सञ्चालन	√	√	√	√	
४	प्रादेशिक पूर्वाधारहरूको मापदण्ड तयार	√	√	√	√	
५	राजमार्ग, औद्योगिक र व्यापारिक क्षेत्र समेटेर आवश्यकता अनुसार नयाँ शहर र आर्थिक कोरिडोरहरूको विकास	√	√	√	√	
६	स्थानीय विशेषता अनुरूप नयाँ शहरको विकास	√	√	√	√	
७	संघीय सरकार र स्थानीय तहसँगको सहकार्यमा काठमाण्डौ उपत्यकाको शहरी विकासको लागि विशेष योजना बनाई कार्यान्वयन	√	√	√	√	
८	शहरी क्षेत्रबाट उत्सर्जन हुने मानव मलमुत्र लगायतका जैविक फोहरको व्यवस्थापन	√	√	√	√	
९	शहरी गरिब परिवारको लागि आवास र आधारभूत पूर्वाधार र अन्य सेवा सुविधाको व्यवस्था	√	√	√	√	
१०	संघ र स्थानीय तहसँगको सहकार्यमा शहरी नदीप्रणालीलाई स्वच्छ, व्यवस्थित र मनोरम क्षेत्रको रूपमा विकास गर्ने योजना सञ्चालन	√	√	√	√	

६.२ यातायात

१. उद्देश्य

प्रादेशिक यातायात सञ्जालको विकास, संरचना र व्यवस्थापनमा सुधार गर्नु।

२. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
६.२.१ यातायात पहुँच (एक्सेसिबिलिटी) र गतिशीलता (मोबिलिटी) मा सुधार गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • प्रादेशिक यातायात गुरुयोजना तर्जुमा गरिनेछ। • प्रदेशस्तरीय सडकहरूको अधिकार क्षेत्र तथा कोरिडोरको चौडाई यकिन गरी सोको परिभाषा, छनौट एवम् नामावली तयार गरिनेछ। • सबै स्थानीय तहको केन्द्रसम्म पक्की सडक निर्माण गर्न संघीय सरकार र स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। • प्रादेशिक र स्थानीय तहको केन्द्र जोड्ने सडकको नियमित तथा पटके मर्मत सम्भारलाई प्राथमिकता दिइनेछ। • अन्तरप्रदेश, अन्तरशहरी लामो दूरीका ठूला बस तथा मालवाहक सवारी साधनहरूको पार्किङ तथा मर्मत सुविधाहरूसहितको बहुउद्देश्यीय क्षेत्रीय लजिस्टिक अटोपार्क र क्षेत्रीय बसपार्कको विकास गर्न स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। • आवागमनलाई सहजीकरण गर्न लिङ्ग सडक, बाइपास, र टनेल निर्माण गरिनेछ • पहुँच र गतिशीलता बढाउन तथा दुरी र लागत कम गर्न रणनीतिक महत्वका भीमफेदी-कुलेखानी लगायतका सुरुङ्गमार्गहरूको निर्माणलाई प्राथमिकता दिइनेछ।
६.२.२ सडक सञ्जाल सुधार गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • सडक तथा पुल निर्माणको लागि पर्याप्त अध्ययन तथा अनुसन्धान गरिनेछ। वातावरणमा न्यूनतम क्षति हुनेगरी आर्थिक प्रतिफल पाउने सुनिश्चित गरेर मात्र ठूला सडक तथा पुलहरू निर्माण गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ। • बायो इन्जिनियरिङ लगायतका उपयुक्त प्रविधिलाई उपयोग गरी सतही भूक्षय नियन्त्रण गरिनेछ। • निजी क्षेत्र र अन्य विकास साझेदारहरूको आर्थिक सहभागितासहितको विशेष साङ्गठनिक संयन्त्र (स्पेशल पर्पोस भेहिकल) बनाई प्रादेशिक नयाँ यातायात संरचनाहरूको विकास गरिनेछ।
६.२.३ प्रादेशिक सडक र संरचनाहरूलाई व्यवसायिक सिद्धान्त अपनाई सञ्चालन र व्यवस्थापन गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • प्रादेशिक भौतिक योजना अनुरूप अन्तर-शहरी रणनीतिक सडक र पक्की तथा झोलुङ्गे पुलहरूको अवस्था बारे सूची (इन्भेन्ट्री) तयार गरिनेछ र आवश्यक मर्मत सम्भारका लागि प्राथमिकता निर्धारण गरिनेछ। • सडक संरचना मर्मत सम्भारको निम्ति निश्चित बजेट प्रदेशले नै छुट्याई वा प्रयोगकर्ताबाट नै निर्धारित शुल्क उठाई संरचनाहरूको (डिजाइन) कार्य क्षमता बनाइ राख्ने विधिमा आधारित सक्रिय (प्रो-एक्टिभ) मर्मत सम्भार व्यवस्था (पर्फमेन्स बेस्ड मेन्टेनेन्स) मिलाइनेछ र सोका लागि आवश्यक सहकार्य गरिनेछ
६.२.४	<ul style="list-style-type: none"> • यातायातसम्बन्धी नीति, कानून र मापदण्ड तयार गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
यातायात व्यवस्थापन प्रणालीलाई व्यवस्थित गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> रज्जुमार्ग, जलमार्ग लगायतका बैकल्पिक यातायात प्रणालीको विकास र प्रवर्द्धन गरिनेछ। नारायणी नदीमा क्रुजसीप र जेट/मोटरबोट आदि सञ्चालन हुने व्यवस्था मिलाइने छ। हेटौंडा काठमाण्डौ रज्जुमार्ग सञ्चालन गरी आपूर्तिको व्यवस्था सहज बनाइनेछ। दिगो तथा वातावरणमैत्री सवारी साधनको प्रयोगका लागि नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ। सार्वजनिक यातायात सञ्चालनमा स्थानीय तह, निजी क्षेत्र र सहकारीसँग सहकार्य गरिनेछ।

३. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	प्रादेशिक यातायात गुरुयोजना तर्जुमा		√			
२	प्रदेशस्तरीय सडकहरूको अधिकार क्षेत्र तथा कोरिडोरको चौडाई यकिन गरी सोको परिभाषा, छनौट एवम् नामावली तयार		√			
३	सबै स्थानीय तहको केन्द्रसम्म पक्की सडक निर्माण		√			
४	आवागमनलाई सहजीकरण गर्न लिङ्ग सडक, बाइपास, र टनेल निर्माण	√	√			
५	वातावरणमा न्यूनतम क्षति हुनेगरी आर्थिक प्रतिफल पाउने सुनिश्चित गरेर मात्र ठूला सडक तथा पुलहरू निर्माण	√	√			
६	प्रादेशिक भौतिक योजना अनुरूप अन्तर-शहरी रणनीतिक सडक र पक्की तथा झोलुङ्गे पुलहरूको अवस्था बारे सूची (इन्भेन्ट्री) तयार	√	√			
७	पहुँच र गतिशिलता बढाउन तथा दुरी र लागत कम गर्न रणनीतिक महत्वका भीमफेदी-कुलेखानी लगायतका सुरुङ्गमार्गहरूको निर्माण	√	√			
८	रज्जुमार्ग, रेलमार्ग, जलमार्ग लगायतका बैकल्पिक यातायात प्रणालीको विकास	√	√			
९	प्रदेश राजधानीबाट जिल्ला सदरमुकाम जोड्ने सडकको अध्ययन तथा विकास गर्ने (प्रदेश लोकमार्ग)		√			
१०	एक जिल्ला सदरमुकामबाट अर्को जिल्ला सदरमुकाम जोड्ने सडक अध्ययन तथा विकास गर्ने (प्रदेश लोकमार्ग)		√			
११	स्थानीय तहको केन्द्र देखि वडाको केन्द्र सम्म जोड्ने सडकको अध्ययन तथा विकास गर्ने (प्रदेश सहायक लोकमार्ग)		√	√		
१२	प्रदेशका आर्थिक केन्द्र, औद्योगिक (कोरिडोर) तथा पर्यटकीय केन्द्र जोड्ने सडक अध्ययन तथा विकास गर्ने		√			
१३	सबै प्रादेशिक सडकहरूमा पर्ने नदी तथा खोलामा पूल अध्ययन तथा विकास		√	√		

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१४	लामो तरिको (LSIB) झोलुंगे पूलको अध्ययन तथा विकास	✓	✓	✓		
१५	प्रादेशिक र स्थानीय तहको केन्द्र जोड्ने सडकको नियमित तथा पटके मर्मत सम्भार		✓			
१६	अन्तरप्रदेश, अन्तरशहरी लामो दूरीका ठूला बस तथा मालबाहक सवारी साधनहरूको पार्किङ तथा मर्मत सुविधाहरूसहितको बहुउद्देश्यीय क्षेत्रीय लजिस्टिक अटोपार्क र क्षेत्रीय बसपार्कको विकास	✓	✓	✓	✓	
१७	निजी क्षेत्र र अन्य विकास साझेदारहरूको आर्थिक सहभागितासहितको विशेष साङ्गठनिक संयन्त्र (स्पेशल पर्पोस भेहिकल) बनाई प्रादेशिक नयाँ यातायात संरचनाहरूको विकास		✓			
१८	हेटौंडा काठमाण्डौको रज्जुमार्ग सञ्चालन	✓	✓	✓	✓	
१९	नारायणी नदीमा क्रुजसीप र जेट/मोटरबोट आदि सञ्चालन	✓	✓	✓	✓	
२०	प्रादेशिक सडक तथ्यांक व्यवस्थापन तथा सूचना प्रणाली (PRDMIS)		✓			
२१	सडक सम्पत्ति व्यवस्थापन		✓	✓		
२२	यातायात पहुँच तथा गतिशिलतामा सुधार सम्बन्धि प्राविधिक जनशक्ति, निर्माण व्यवसायी, उपभोक्ता समिति, दक्ष जनशक्तिहरूको अध्ययन तथा क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रम गर्ने		✓			
२३	यातायात पूर्वाधार तथा व्यवस्थापन सम्बन्धि अध्ययन अनुसन्धान	✓	✓	✓		
२४	सवारी साधन तथ्यांक तयार	✓	✓			
२५	Vehicle Registration System (VRS) बाट सवारी साधन दर्ता, नविकरण	✓	✓			
२६	Vehicle Fitness Testing Center अध्ययन तथा विकास		✓			
२७	सवारी दर्ता प्रमाणपत्रलाई स्मार्ट कार्डको व्यवस्था		✓			
२८	सघन शहरी क्षेत्रमा सार्वजनिक यातायातको अध्ययन तथा विकास	✓	✓	✓	✓	
२९	अटोभिलेज अध्ययन तथा विकास	✓	✓			

६.३ ऊर्जा

१. उद्देश्य

प्रदेशका सबै घरधुरीहरूको बिजुलीमा शतप्रतिशत पहुँच पुऱ्याउनु।

२. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
६.३.१ प्रदेशभित्र सबै भौगोलिक क्षेत्रमा ऊर्जालाई भरपर्दो र	<ul style="list-style-type: none"> जलविद्युत उत्पादन बढाउन संघ, स्थानीय तह र निजी क्षेत्रसँग सहकार्य गरिनेछ। बहु उपयोगी जलाशययुक्त, रन अफ रिभर, लघु जलविद्युत परियोजनाहरूको विकास गरिनेछ।

सुलभ बनाउने।	<ul style="list-style-type: none"> विजुलीको पहुँच नपुगेका क्षेत्रमा विद्युत प्रसारण लाइनको विस्तार गर्न सहयोग गरिनेछ। साना जलविद्युत परियोजना र नवीकरणीय तथा वैकल्पिक ऊर्जालाई प्रबर्द्धन गर्न संघीय सरकार र स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। ऊर्जा उत्पादनमा निजी क्षेत्रको भूमिकालाई बढावा दिइनेछ।
६.३.२ ऊर्जाको वृहत् प्रयोगमा जोड दिने।	<ul style="list-style-type: none"> संघीय सरकार र स्थानीय तहसँग सहकार्य गरी यातायात, कृषि, तथा उद्योगको आधुनिकीकरणमा विद्युतको उपयोग गर्ने नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ। आधारभूत स्वास्थ्य, गरिबी निवारणजस्ता उद्देश्यसँग गाँसिएका खानेपानी, लिफ्ट सिँचाइ, घरेलु उद्योग लगायतको क्षेत्रमा खपत हुने विजुलीमा सहूलियत प्रदान गर्न व्यवस्था मिलाइनेछ।
६.३.३ वि. सं. २०८५ सम्ममा पेट्रोलियममा निर्भर यातायातका साधनहरूलाई क्रमशः विस्थापन गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> हाइब्रिड प्रविधि र विजुलीबाट चल्ने सार्वजनिक तथा निजी यातायातका साधनहरूलाई उचित सहूलियत दिई प्रबर्द्धन गर्न चरणबद्ध योजना बनाई लागू गरिनेछ। निजी क्षेत्रसमेतको सहभागितामा विद्युतीय सवारी साधनहरूको लागि चार्जिङ् स्टेशनहरूको स्थापना र सञ्चालन गरिनेछ।

३. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	निजी क्षेत्रसमेतको लगानीमा बहु उपयोगी जलाशययुक्त रन अफ रिभर र लघु जलविद्युत आयोजनाहरूको विकास	√	√			
२	विजुलीको पहुँच नपुगेका क्षेत्रमा विद्युत प्रसारण लाइनको विस्तार गर्न सहयोग	√	√	√		
३	नवीकरणीय तथा वैकल्पिक ऊर्जा उत्पादनमा सहयोग	√	√	√		
४	आधारभूत स्वास्थ्य, गरिबी निवारणजस्ता उद्देश्यसँग गाँसिएका खानेपानी, लिफ्ट सिँचाइ, घरेलु उद्योग लगायतको क्षेत्रमा खपत हुने विजुलीमा सहूलियत प्रदान	√	√	√		
५	हाइब्रिड प्रविधि र विजुलीबाट चल्ने सार्वजनिक तथा निजी यातायातका साधनहरूको प्रबर्द्धन	√	√			
६	निजी क्षेत्रसमेतको लगानीमा विद्युतीय सवारी साधनहरूको लागि चार्जिङ् स्टेशनहरूको स्थापना र सञ्चालन	√	√			

६.४ दूरसञ्चार

१. उद्देश्य

प्रदेशको सबै स्थानीय तहमा सूचना-सञ्चार प्रविधि र सेवाहरूमा परिवारहरूको शतप्रतिशत पहुँच पुऱ्याउनु।

२. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
६.४.१ प्रदेशभित्र सूचना सञ्चार प्रविधि सेवाहरूलाई सरल र सुलभ बनाउने।	<ul style="list-style-type: none"> सबै स्थानमा दुरसञ्चार सेवा विस्तार गरिनेछ। संघीय सरकार र स्थानीय तहसँग सहकार्य गरी आवश्यक वडाहरूमा “इ-भिलेज” स्थापना गरिनेछ। सरकार र सरकाबीचको सहकार्य, सरकार र व्यवसायिक/निजी संस्थाबीचको सहकार्य तथा सरकार र समुदायबीच सहकार्यको सम्भाव्यतालाई अध्ययन गरी संरचनाहरूको विस्तार र सेवाहरूलाई संस्थागत गरिनेछ। दुर सञ्चार सेवा नपुगेका वडाहरूमा सो सेवा पुऱ्याउन सेवा प्रदायक संस्थाहरूलाई सहजीकरण गरिनेछ।
६.४.२ प्रदेश सरकार र स्थानीय तहको प्रभावकारी व्यवस्थापनका लागि विद्युतीय शासन (इ-गभर्नेन्स) क्षमता विकास गर्ने	<ul style="list-style-type: none"> प्रदेश सरकारको विद्युतीय शासन क्षमता विकास गर्न व्यवसायिक योजना बनाई कार्यान्वयन गरिनेछ। स्थानीय तहको विद्युतीय शासन क्षमता विकास गर्न व्यवसायिक योजना बनाई कार्यान्वयन गर्न सहजीकरण गरिनेछ। सूचना प्रविधि पूर्वाधारहरूको निर्माण तथा विकास गरिनेछ।

३. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	प्रदेश सरकारको विद्युतीय शासन क्षमता विकास	√	√	√	√	
२	दुर सञ्चार सेवा नपुगेका वडाहरूमा सो सेवा पुऱ्याउन सेवा प्रदायक संस्थाहरूलाई सहजीकरण	√	√	√	√	
३	आवश्यक वडाहरूमा “इ-भिलेज” स्थापना	√	√	√	√	√
४	स्थानीय तहको विद्युतीय शासन क्षमता विकास	√	√	√	√	
५	सूचना प्रविधि पूर्वाधारहरूको निर्माण तथा विकास	√	√	√	√	

६.५ सिँचाइ

१. उद्देश्य

कृषियोग्य जमिनमा दिगो सिँचाइ सुविधा पुऱ्याउनु।

२. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
६.५.१	<ul style="list-style-type: none"> सिँचाइको दीर्घकालीन गुरुयोजना/रणनीतिक योजना निर्माण गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
उपयुक्त प्रविधिमा आधारित सिँचाइ प्रविधिको प्रयोग गरी सिँचाइ सुविधा विस्तार गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> संघीय सरकारबाट अध्ययन भइसकेका मझौला तथा बहुउद्देश्यीय सिँचाइ परियोजनाहरूलाई प्राथमिकता दिई कार्यान्वयन गर्न संघीय सरकार, स्थानीय तह र समुदायसँग सहकार्य गरिनेछ। विभिन्न क्षेत्रमा उपयुक्तताको आधारमा सतह सिँचाइ, स्यालो तथा डिप ट्युबवेल सिँचाइ तथा नयाँ प्रविधिमा आधारित सिँचाइ योजनाहरूबाट संयोजनात्मक रूपमा खेतियोग्य जमिनमा दिगो, भरपदो र वर्षभरी सिँचाइ सुविधाको प्रवन्ध गरिनेछ। बहुउद्देश्यीय सुनकोसी-मरिन डाइभर्सन सिँचाइ परियोजनाबाट लाभ लिनको लागि संघीय सरकार तथा स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। सिँचाइका लागि वर्षातको पानी सङ्कलन, पोखरी, ताल तलैया, सिमसार र जलाधार क्षेत्रको संरक्षण तथा सुदृढीकरण गरिनेछ। सिँचाइ प्रणालीलाई सरकारी निकायद्वारा व्यवस्थापन गर्ने प्रणाली (एजेन्सी म्यानेज्ड इरिगेशन सिस्टम)बाट किसानद्वारा व्यवस्थापन गर्ने प्रणाली (फारमर्स म्यानेज्ड इरिगेशन सिस्टम)मा क्रमिक रूपमा हस्तान्तरण गर्ने नीति अवलम्बन गरिनेछ।

३. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	सिँचाइको दीर्घकालीन प्रादेशिक जिल्ला तथा पालिकागत गुरुयोजना निर्माण	√	√			
२	संघीय सरकारबाट अध्ययन भइसकेका मझौला तथा बहुउद्देश्यीय सिँचाइ आयोजनाहरूको कार्यान्वयन	√	√			
३	उपयुक्तताको आधारमा सतह सिँचाइ, स्यालो तथा डिप ट्युबवेल सिँचाइ तथा नयाँ प्रविधिमा आधारित सिँचाइ आयोजनाहरू सञ्चालन	√	√	√	√	√
४	सुक्खा टार क्षेत्रमा सिँचाइका लागि वर्षातको पानी सङ्कलन, पोखरी, ताल तलैया, सिमसार र जलाधार क्षेत्रको संरक्षण तथा सुदृढीकरण	√	√	√		
५	सिँचाइ प्रणालीलाई किसानद्वारा व्यवस्थापन गर्ने प्रणाली (फारमर्स म्यानेज्ड इरिगेशन सिस्टम)मा क्रमिक रूपमा हस्तान्तरण	√	√	√		
६	प्रदेश गौरव आयोजनाको रूपमा मण्डन पाचखाल इन्द्रावती बृहत सिँचाइ योजना र सल्यानटार बृहत सिँचाइ योजना धादिग तथा मझौला र अन्य बहुउद्देश्यीय सिँचाइ आयोजनाहरू सञ्चालन		√			
७	निर्माणाधीन तथा सम्पन्न भैसकेका भूमिगत स्यालो तथा डिप ट्युबवेल र लिफ्ट सिँचाइ आयोजनाहरूमा सोलार प्रणाली जडान गर्ने	√	√			
८	सिँचाइ प्रणाली विकास गर्न संलग्न जनशक्तिको क्षमता विकास गर्ने, अध्ययन अनुसन्धानमा सुधार गर्ने तथा सम्पन्न आयोजनाहरू हस्तान्तरण	√	√			

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
	गरि किसानद्वारा दिगो व्यवस्थापन गर्न क्षमता अभिवृद्धि					
९	प्रदेश सिंचाई व्यवस्थापन सूचना प्रणाली (PIMS) अन्तर्गत डाटाबेस तयार		√			

६.६ आवास, बस्ती विकास र भवन निर्माण

१. उद्देश्य

- आवासमा सबैको पहुँच सुनिश्चित गर्नु र
- सुरक्षित र किफायति भवन निर्माण गर्नु।

२. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
६.६.१ आवास, बस्ती विकास र भवनसम्बन्धी आवश्यक नीतिगत व्यवस्था गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • आवास, बस्ती विकास र भवनसम्बन्धी आवश्यक नीति तथा मापदण्डहरू तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गरिनेछ। • भू-उपयोग नीति अनुसार संघीय सरकार, स्थानीय तह र निजी क्षेत्रसमेतको सहकार्यमा आवास तथा बस्ती विकाससम्बन्धी कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। • निजी क्षेत्रबाट भइरहेको घडेरी तथा आवास विकास कार्यलाई उचित मापदण्डका आधारमा नियमन तथा प्रवर्द्धन गर्न स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। • न्यून आय वर्गका लागि सुलभ आवास (एफोर्डेबल हाउजिङ)को व्यवस्था गर्न संघीय सरकार, स्थानीय तह र निजी क्षेत्रसँग सहकार्य गरिनेछ।
६.६.२ सुरक्षित र व्यवस्थित बस्ती विकास र सूचना प्रणालीलाई प्रवर्द्धन गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • सुरक्षित र व्यवस्थित बस्ती विकासको लागि योग्य र अयोग्य भूमिको पहिचान गर्न संघीय सरकार र स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। • जोखिममा रहेको बस्तीहरूलाई सुरक्षित स्थानमा स्थानान्तरण गर्न संघीय सरकार र स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। • अत्यधिक छरिएका पहाडी बस्तीहरूलाई एकीकरण गर्न संघीय सरकार र स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। • सार्वजनिक जग्गा र नदी किनार लगायतका क्षेत्र अतिक्रमण गरी गरिने बस्ती विकासलगायतका कार्यहरूलाई निरूत्साहित गर्न स्थानीय सरकारसँग सहकार्य गरिनेछ। • सुकम्बासी बस्ती, अव्यवस्थित बस्ती र गुठी जग्गासँग सम्बन्धित समस्याहरू समाधान गर्नका लागि संघीय सरकार र स्थानीय तहसँग सहकार्य गरिनेछ। • घर जग्गा व्यवसायलाई औपचारिक क्षेत्रमा ल्याउन आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ।
६.६.३ एकीकृत सरकारी भवन निर्माण	<ul style="list-style-type: none"> • प्रदेशस्तरमा प्रशासनिक सेवालालाई सहज र मितव्ययी बनाउन प्रशासनिक प्लाजा तथा एकीकृत सरकारी भवन निर्माण गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> मन्त्री तथा कर्मचारीको लागि आवश्यक आवासगृह एकीकृत रूपमा निर्माण गरिनेछ। सरकारी भवनहरू निर्माण गर्दा वातावरणमैत्री, किफायती र परम्परागत निर्माण प्रविधि एवम् वास्तुकलासमेतको जगेर्ना हुनेगरी निर्माण गरिनेछ।

३. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	आवास, बस्ती विकास र भवनसम्बन्धी आवश्यक नीति तथा मापदण्डहरू तर्जुमा	√	√	√		
२	आवास तथा बस्ती विकाससम्बन्धी कार्यक्रमहरू सञ्चालन	√	√	√		
३	न्यून आय वर्गका लागि सुलभ आवास (एफोर्डेबल हाउजिङ)को व्यवस्था		√	√		√
४	जोखिममा रहेको बस्तीहरूलाई सुरक्षित स्थानमा स्थानान्तरण	√	√	√		
५	प्रदेशस्तरमा प्रशासनिक सेवालाई सहज र मितव्ययी बनाउन प्रशासनिक प्लाजा तथा एकीकृत सरकारी भवन निर्माण	√	√	√		
६	मन्त्री तथा कर्मचारीको लागि आवश्यक आवासगृह एकीकृत रूपमा निर्माण	√	√	√		
७	सरकारी भवनहरू निर्माण गर्दा वातावरणमैत्री, किफायती र परम्परागत निर्माण प्रविधि एवम् वास्तुकलासमेतको जगेर्ना हुनेगरी निर्माण		√	√		
८	सरकारी भवन रहेको जग्गाको Database तयार	√	√	√		
९	प्रदेश राजधानीको गुरु योजना तयार गरी कार्यान्वयन	√	√	√		
१०	प्रदेश राजधानीको लागि आवश्यक प्रशासनिक भवनहरूको निर्माण	√	√	√		
११	सुरक्षित भवन निर्माणको लागि प्राविधिक जनशक्ति, कालिगढ तथा सेवाग्राहीलाई तालिम तथा सचेतना कार्यक्रम	√	√	√	√	
१२	ठूला शहर, जिल्ला सदरमुकाम, स्थानीय तह केन्द्र, नगरोन्मुख क्षेत्र, पर्यटकीय क्षेत्रहरूको गुरु योजना तयार	√	√	√	√	
१३	ठूला शहरहरूमा अत्यधिक जनघनत्व भएका क्षेत्रहरूको शहरी चाँप कम गर्न आवश्यक Satellite Town हरूको अध्ययन तथा विकास	√	√	√	√	
१४	अत्यधिक छरिएका पहाडी बस्तीहरूको एकीकरण	√	√	√		
१५	सार्वजनिक जग्गा र नदी किनार लगायतका क्षेत्र अतिक्रमण गरी गरिने बस्ती विकास लगायतका कार्यहरूको नियन्त्रण	√	√	√		
१६	घर जग्गा व्यवसायलाई औपचारिक क्षेत्रमा ल्याउने आवश्यक व्यवस्था	√	√	√	√	√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१७	प्रदेश राजधानी, जिल्ला सदरमुकाम, स्थानीय तहका केन्द्रहरूमा आवश्यक सभागृह र प्रदर्शनी स्थलको अध्ययन तथा विकास	√	√	√		
१८	शहर भित्रका सरकारी खाली जग्गाहरू पहिचान गरि हरियाली पार्क, Recreational Centre, प्रादेशिक Land Mark हरूको अध्ययन तथा विकास	√	√	√	√	
१९	प्रमुख घाटहरूमा व्यवस्थित शवदाह स्थल निर्माण	√	√	√	√	
२०	निजी र सामुदायिक भवनहरू निर्माण गर्दा परम्परागत वास्तुकला र शैलीमा निर्माण	√	√	√	√	

६.७ खानेपानी, सरसफाइ र फोहोरमैला व्यवस्थापन

१. उद्देश्य

- स्वच्छ खानेपानी आपूर्ति र सरसफाइमा घरधुरीहरूको पहुँच शतप्रतिशत पुऱ्याउनु र
- व्यवस्थित फोहोरमैला व्यवस्थापनको लागि पूर्वाधार तयार गर्नु।

२. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
६.७.१ स्वच्छ खानेपानीलाई सर्वसुलभ र सरसफाइलाई व्यवस्थित गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • खानेपानी, सरसफाइसम्बन्धी आवश्यक नीति, कानून र मापदण्ड तर्जुमा गरिनेछ। • आधारभूत खानेपानी तथा सरसफाइ सेवाबाट वञ्चित क्षेत्रमा खानेपानी तथा सरसफाइका कार्यक्रम सञ्चालन प्राथमिकतासाथ गरिनेछ। • उच्चस्तरीय खानेपानी तथा सरसफाइ सेवाको विकासका लागि वैकल्पिक स्रोतको परिचालन गरिनेछ। • खानेपानी तथा सरसफाइको आधारभूत पूर्वाधार र सेवाको गुणस्तर वृद्धि गर्न स्थानीय तह र सेवा प्रदायकहरूलाई सहयोग गरिनेछ। • एकभन्दा बढी स्थानीय तहलाई लाभ पुग्ने संरचनाको विकासलाई प्राथमिकता दिइनेछ। • सुक्खा क्षेत्रहरूमा प्राकृतिक नाला, पोखरी तथा जलाधार क्षेत्रको संरक्षण र सुकेका त्यस्ता स्रोतहरूको पुनर्उत्थानका लागि जल सम्भाव्य भू-अध्ययन तथा नक्साङ्कनमा (हाइड्रो जिओलोजिकल एसेसमेन्ट वा सर्भे) आधारित संरक्षण तथा पुनरुत्थान कार्यहरू बारे मापदण्ड बनाइनेछ। • स्वच्छ खानेपानीको प्राकृतिक स्रोतहरूको संरक्षण, सामूहिकीकरण, वितरण र भूमिगत जलको पुनर्भरण तथा व्यवस्थापनसम्बन्धी नीति, मापदण्ड र निर्देशिका बनाई कार्यान्वयनको लागि सबै स्थानीय तहलाई सहजीकरण गरिनेछ। • वितरण गरिने खानेपानीको गुणस्तर वृद्धिका लागि विशेष कार्यक्रमहरू सञ्चालन

रणनीति	कार्यनीति
	गरिनेछ। <ul style="list-style-type: none"> ‘प्रदुषकले नै व्यहोर्ने’ सिद्धान्त बमोजिम औद्योगिक फोहर पानी प्रशोधन गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ।
६.७.२ फोहरमैलालाई सुरक्षित रूपमा विसर्जन गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> सुरक्षित फोहरमैला विसर्जन स्थलको पहिचान र व्यवस्थापन गर्न स्थानीय तहलाई सहयोग, समन्वय र सहजीकरण गरिनेछ। “फोहरलाई मोहोर बनाउने” प्रविधिको प्रयोग लगायतका कार्यमा स्थानीय तहलाई सहयोग गरिनेछ। शुन्य फोहर कार्यक्रम सञ्चालन गर्न स्थानीय तहलाई सहयोग गरिनेछ।

३. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	आधारभूत खानेपानी तथा सरसफाइ सेवाबाट वञ्चित क्षेत्रमा खानेपानी तथा सरसफाइका कार्यक्रम सञ्चालन	√	√	√	√	√
२	खानेपानी तथा सरसफाइको आधारभूत पूर्वाधार र सेवाको गुणस्तर वृद्धि गर्न सेवा प्रदायकहरूलाई सहयोग	√	√	√	√	√
३	सुक्खा क्षेत्रहरूमा प्राकृतिक नाला, पोखरी तथा जलाधार क्षेत्रको संरक्षण र सुकेका स्रोतहरूको पुनर्उत्थानका लागि जल सम्भाव्य भू-अध्ययन तथा नक्साङ्कन (हाइड्रो जिओलोजिकल एसेसमेन्ट वा सर्भे) मा आधारित संरक्षण तथा पुनरुत्थान कार्यहरू बारे मापदण्ड निर्माण	√	√	√	√	√
४	खानेपानीको प्राकृतिक स्रोतहरूको संरक्षण, सामूहिकीकरण, वितरण र भूमिगत जलको पुनर्भरण	√	√	√	√	√
५	सुरक्षित फोहरमैला विसर्जन स्थलको पहिचान र व्यवस्थापन	√	√	√	√	√
६	प्रदेश खानेपानी तथा सरसफाइ सम्बन्धी नीति, ऐन, नियमावली, कार्यविधि र निर्देशिका र मापदण्ड तयार	√	√	√	√	√
७	खानेपानी तथा सरसफाइ क्षेत्रको प्रदेश, जिल्ला तथा स्थानीय तहको खानेपानी तथा सरसफाइ (WASH Plan) को गुरुयोजना तयार	√	√	√	√	√
८	आर्सेनिक प्रदुषण भएका बस्तिहरूमा आर्सेनिक मुक्त खानेपानीको लागी विशेष कार्यक्रम	√	√	√	√	√
९	प्रदेश अन्तर्गत खानेपानी गुणस्तर परिक्षण प्रयोगशालाहरूको स्थापना		√	√		
१०	खुला दिशामुक्त भैसकेका घरधुरीहरूका शौचालयहरूमा single pit बाट double pit मा रुपान्तरण गर्ने तथा पूर्ण सरसफाइ कार्यक्रम संचालन	√	√	√	√	√
११	अर्ध सहरी तथा नगरोन्मुख क्षेत्रका एक एक बटा faecal sludge	√	√	√	√	√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
	व्यवस्थापन प्रणाली अध्ययन तथा विकास					
१२	Low Land का बस्तिहरूमा बाढी प्रकोप न्यूनीकरण गर्न storm water ढल प्रणाली हरूको अध्ययन गरी विकास	√	√	√	√	√
१३	“प्रदुषकले नै व्यहोर्ने” सिद्धान्त बमोजिम औद्योगिक फोहर पानी प्रशोधन	√	√	√	√	√
१४	शुन्य फोहर कार्यक्रम सञ्चालन गर्न स्थानीय तहलाई सहयोग	√	√	√	√	√
१५	प्रदेश खानेपानी तथा सरसफाई व्यवस्थापन सूचना प्रणाली (PWMIS) स्थापना	√	√	√	√	√
१६	खानेपानी तथा सरसफाई क्षेत्रमा संलग्न जनशक्ति, सेवा प्रदायक संस्थाको क्षमता विकास	√	√	√	√	√
१७	बिगतमा सम्पन्न भएका शहरी, अर्ध-शहरी तथा अन्य पम्पिंग खानेपानी प्रणालीहरूमा सेवा अभिवृद्धि तथा बिद्युत महसुल किफायत गर्न सोलार प्रणालीहरू जडान	√	√	√	√	√
१८	खानेपानी तथा सरसफाई क्षेत्रको अनुसन्धान तथा विकास (R & D) सम्बन्धी कार्यहरू सञ्चालन	√	√	√		

६.८ प्राकृतिक प्रकोप तथा मानव सिर्जित जोखिमबाट सुरक्षा

१. उद्देश्य

भौतिक पूर्वाधार र लगानीलाई जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक प्रकोप र मानव सिर्जित जोखिमबाट सुरक्षित बनाउनु।

२. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
६.८.१ जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक प्रकोप र मानव सिर्जित जोखिमबाट बच्ने उपायहरूलाई अवलम्बन गर्ने र संस्थागत गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> प्राकृतिक प्रकोप र मानव सिर्जित जोखिमबाट बच्न अपनाउनु पर्ने सुरक्षासम्बन्धी एकीकृत मापदण्ड निर्माण गरी लागू गरिनेछ। प्राकृतिक प्रकोपको जोखिमबाट बच्न अपनाउनुपर्ने सुरक्षामा (क) स्थलीय (लोकेसन) सुरक्षासम्बन्धी स्थानीय प्रकोप नक्साङ्कन (ख) जल उत्पन्न प्रकोपको जोखिमको सुरक्षासम्बन्धी एकीकृत जल व्यवस्थापन (ग) भवनमा भूकम्प प्रतिरोधात्मक क्षमताका लागि राष्ट्रिय भवन संहितालाई संस्थागत गर्न सहजीकरण गरिनेछ। शहरी बनावट, डिजाइन, क्रियाकलाप र वातावरणीय गुणस्तरको अभावले हुने मानव सिर्जित जोखिमबाट अपनाउनु पर्ने सुरक्षामा (क) योजना तथा भवन निर्माणसम्बन्धी मापदण्ड (ख) भौतिक पूर्वाधार र सेवाको गुणस्तरसम्बन्धी नर्मस तथा स्टेन्डर्ड (ग) वातावरणीय गुणस्तरसम्बन्धी मापदण्डलाई संस्थागत गर्न सहजीकरण गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
	<ul style="list-style-type: none"> प्राकृतिक प्रकोप र मानव सिर्जित जोखिमबाट बचन अपनाउनु पर्ने सुरक्षासम्बन्धी सचेतना कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ।

३. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	प्राकृतिक प्रकोप र मानव सिर्जित जोखिमबाट बचन अपनाउनु पर्ने सुरक्षासम्बन्धी एकीकृत मापदण्ड निर्माण	√	√	√	√	√
२	प्राकृतिक प्रकोपको जोखिमबाट बचन अपनाउनुपर्ने सुरक्षामा (क) स्थलीय (लोकेशन) सुरक्षासम्बन्धी स्थानीय प्रकोप नक्साङ्कन (ख) जल उत्पन्न प्रकोपको जोखिमको सुरक्षासम्बन्धी एकीकृत जल व्यवस्थापन (ग) भवनमा भूकम्प प्रतिरोधात्मक क्षमताका लागि राष्ट्रिय भवन संहितालाई संस्थागत गर्न सहजीकरण	√	√	√	√	√
३	शहरी बनावट, डिजाइन, क्रियाकलाप र वातावरणीय गुणस्तरको अभावले हुने मानव सिर्जित जोखिमबाट अपनाउनु पर्ने सुरक्षामा (क) योजना तथा भवन निर्माणसम्बन्धी मापदण्ड (ख) भौतिक पूर्वाधार र सेवाको गुणस्तरसम्बन्धी नर्मस तथा स्टेन्डर्ड (ग) वातावरणीय गुणस्तरसम्बन्धी मापदण्डलाई संस्थागत गर्न सहजीकरण	√	√	√	√	√
४	जल उत्पन्न प्रकोप पुर्व पहिचान गर्न प्रदेशको पालिकगत प्रकोप जोखिम नक्सांकन (Disaster Vulnerability Mapping) तयार	√	√	√	√	√
५	बाढीको पूर्व सूचना प्रणाली जडान	√	√	√	√	√
६	प्राकृतिक प्रकोप र मानव सिर्जित जोखिमबाट बचन अपनाउनु पर्ने सुरक्षासम्बन्धी सचेतना कार्यक्रम सञ्चालन	√	√	√	√	√
७	प्रदेश भित्रका नदीका तटबन्धन सम्बन्धी गुरुयोजना तयार	√	√	√	√	√

६.९ लगानी, वित्त, जग्गा र संस्थागत व्यवस्था

१. उद्देश्य

पूर्वाधार विकासका निमित्त सुदृढ कार्यान्वयन संरचना स्थापित गर्नु

२. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
६.९.१	<ul style="list-style-type: none"> सम्भाव्यता अध्ययन, वातावरणीय मूल्याङ्कन तथा प्रकोपबाट हुनसक्ने क्षति र

रणनीति	कार्यनीति
उच्च प्रतिफल र दिगो रणनीतिक पूर्वाधारको विकास र मर्मत सम्भारमा लगानीलाई प्राथमिकता दिने।	<ul style="list-style-type: none"> उपायसम्बन्धी विश्लेषण गरिएको भौतिक पूर्वाधारमा मात्र लगानी गरिनेछ। छुट्टै कोषको व्यवस्था गरी पूर्वाधार मर्मत सम्भारको व्यवस्था मिलाइनेछ।
६.९.२ प्रादेशिक पूर्वाधार परियोजनामा वित्तीय श्रोत जुटाउन बहुसंस्थागत साझेदारी पद्धति अवलम्बन गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> पूर्वाधार विकासमा स्वदेशी र विदेशी लगानीलाई आकर्षित गर्ने। पूर्वाधार लगानीको निम्ति वित्तीय श्रोत जुटाउन स्थानीय तह, निजी क्षेत्र र परियोजनाबाट लाभान्वित परिवारहरूसमेतको साझेदारीमा आधारित वित्तीय पद्धतिलाई प्राथमिकता दिइनेछ। शहरी विकासका लागि वैकल्पिक वित्तीय स्रोतको रूपमा “भ्यालु क्यापचर” अवधारणाको प्रयोग गरिनेछ।
६.९.३ भौतिक पूर्वाधारको लागि जग्गाको व्यवस्था गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> जग्गा प्राप्ति सम्बन्धी नीतिगत आधार र कानुनी संयन्त्र निर्माण गरिनेछ। सहभागितामूलक जग्गा विकास, जग्गा व्यवस्थापन तथा जग्गा सट्टापट्टा जस्तो विकल्पहरूलाई प्राथमिकता दिई भौतिक पूर्वाधारको लागि जग्गा व्यवस्था गर्ने।
६.९.४ प्रदेशले दिगो साङ्गठनिक विकास र प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि अपुग विज्ञता र जनशक्ति बाहिरबाट ल्याउने (आउट सोर्स) र सङ्गठनलाई चुस्त र व्यवसायिक (लिन एण्ड मिन) बनाउने।	<ul style="list-style-type: none"> सङ्गठनको दिगो विकासका लागि विशेषज्ञ सेवा संघीय सरकार वा निजी क्षेत्रबाट प्राप्त गरिने र सिप-ज्ञानको हस्तान्तरण गरिने प्रणाली स्थापित गरिनेछ। कर्मचारीको काम-जिम्मेवारीमा सुस्पष्टता, वृत्ति विकास र विद्युतीय प्रविधिको प्रयोगलाई जोड दिई नतिजामूलक कार्य सम्पादन र व्यवसायिक कुशलता संस्थागत गर्ने प्रक्रियालाई प्राथमिकता दिइनेछ। प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि प्रदेशको विद्यमान साङ्गठनिक संरचनालाई मुख्यतः नीतिगत र प्रशासनिक व्यवस्थाको अनुपालन र अनुगमनमा (कमप्लायन्स ओभरसाइट) केन्द्रित गर्दै लगिने र प्रदेशस्तरमा छुट्टै संरचना गठन गरी परियोजना कार्यान्वयनको समन्वय र व्यवस्थापन गर्दै लगिनेछ। पूर्वाधार परियोजनाको विस्तृत प्रतिवेदनमा नै परियोजना कार्यान्वयनको निम्ति प्रदेश वा फिल्ड तहमा आवश्यक संस्थागत संरचना/एकाइ, विज्ञ, प्राविधिक, कर्मचारी, श्रोत, औजार, सामग्रीको निम्ति बहुवर्षीय बजेटको आँकलन गरिने र सो अनुरूप वार्षिक बजेट मिलाइनेछ।

३. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	सम्भाव्यता अध्ययन, वातावरणीय मूल्याङ्कन तथा प्रकोपबाट हुनसक्ने क्षति र उपायसम्बन्धी विश्लेषण गरिएको भौतिक पूर्वाधारमा मात्र लगानी	√	√	√	√	√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
२	पूर्वाधार मर्मत सम्भार कोषको व्यवस्था गरी पूर्वाधार संरचनाहरूको मर्मत सम्भार	√	√	√		
३	पूर्वाधार विकासमा स्वदेशी र विदेशी लगानीलाई प्रोत्साहन	√	√	√	√	
४	प्रदेशस्तरमा छुट्टै संरचना गठन गरी आयोजना कार्यान्वयनको समन्वय र व्यवस्थापन		√			
५	शहरी विकासका लागि वैकल्पिक वित्तीय स्रोतको रूपमा “भ्यालु क्याचर” अवधारणाको प्रयोग	√	√	√	√	√
६	सहभागितामूलक जग्गा विकास, जग्गा व्यवस्थापन तथा जग्गा सट्टापट्टा जस्तो विकल्पहरूलाई प्राथमिकता दिई भौतिक पूर्वाधारको लागि जग्गा व्यवस्था	√	√	√	√	√

७. अपेक्षित उपलब्धि

प्रादेशिक विकासका पहलहरू र यसको कार्यान्वयनका लागि आवश्यक प्रादेशिक संस्थागत संरचना, प्राविधिक क्षमताको विकास र महत्त्वपूर्ण नीतिगत आधार र कानुनी संयन्त्रहरू स्थापित भएको हुनेछ। विशेष गरेर सरकार तहमा समन्वय, सहकार्य र साझेदारीसम्बन्धी प्रक्रिया र पद्धति स्पष्ट भएको हुनेछ। यसले प्रदेशको भौतिक पूर्वाधार योजना तर्जुमा र कार्यान्वयनलाई गतिशील बनाउने छ। प्रदेशमा शहरी योजना, डिजाईन र प्रकोप सुरक्षासम्बन्धी एकीकृत मापदण्ड लागू भई नियोजित शहरीकरणलाई योगदान पुऱ्याएको हुनेछ। चितवन, हेटौडा, जिरी र सयाफ्रुबेसीको स्मार्ट शहर तथा जग्गा विकास योजनाहरू तर्जुमा भई कार्यान्वयन भएको हुनेछ। महत्त्वपूर्ण सडक, यातायात र सिँचाइ परियोजनाहरूको चरणबद्ध सम्भाव्यता अध्ययनहरू सम्पन्न भई कार्यान्वयनमा जानेछ। यसबाट प्रदेशको जनजीवनमा प्रारम्भिक तर महत्त्वपूर्ण वातावरणीय, सामाजिक र आर्थिक रूपान्तरणका आधारहरू स्थापित भएको हुनेछ।

परिच्छेद—सात

वन, वातावरण र विपद् व्यवस्थापन

७.१ वन व्यवस्थापन तथा जलाधार संरक्षण

१. पृष्ठभूमि

वन क्षेत्र जैविक विविधताको भण्डार मात्र होइन कृषि, ऊर्जा, जल तथा औद्योगिक कच्चा पदार्थको श्रोत हुनुका साथै प्रमुख पर्यटकीय गन्तव्य र बहुसङ्ख्यक जनताको जीविकाको प्रमुख आधार पनि हो। वनबाट हाम्रो करिब ७० प्रतिशत इन्धन, करिब ४० प्रतिशत पशु आहारा र अन्य वातावरणीय सेवा प्राप्त हुँदै आएको छ। वन क्षेत्रबाट नेपालको आर्थिक समुन्नति गर्न सक्ने प्रचुर सम्भावना छ। जडिबुटी लगायत विभिन्न वन पैदावारको बिक्रीबाट मात्र वर्षेनी करिब दुई अर्बभन्दा बढी राजस्व सङ्कलन हुने गरेको छ। वन र जलाधार क्षेत्रभित्र नदी-नाला, ढुङ्गा-माटो, जैविक विविधता र विभिन्न भू-उपयोग समेटिएको हुन्छ। जलाधारलाई प्राकृतिक तथा सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया र अन्तरसम्बन्धको समष्टिगत अभिव्यक्ति मात्र सकिन्छ। देशको बाक्लो वनले ढाकेको चुरे क्षेत्रको कमजोर भूबनौटलाई पार गरेर नेपालका सबै खोला र नदीहरू तराईतिर बग्दछन्। अतः जलाधारको स्थिति र त्यसले समेटेको वन तथा चुरेको हैसियतले हाम्रो समग्र वातावरणीय स्वस्थतालाई प्रतिबिम्बित गर्दछ।

नेपालको संविधानमा वातावरणीय सन्तुलन र स्वच्छताको लागि वन क्षेत्र तथा जैविक विविधताको संरक्षण गर्न राज्यले प्राथमिकता दिने कुरा उल्लेख छ। प्रदेशस्तरमा वन, वन पैदावर, वन्यजन्तु र जैविक विविधतासम्बन्धी नीति तर्जुमा तथा कार्यान्वयन, संरक्षण क्षेत्र तथा चरन क्षेत्रको व्यवस्थापन, जडिबुटी खेती प्रविधि प्रवर्द्धन र बजारीकरणसम्बन्धी कानून तर्जुमा तथा कार्यान्वयन, तिनको अध्ययन-अनुसन्धान तथा तथ्याङ्क सङ्कलन, प्राविधिक सूचना सेवा र वन अतिक्रमण नियन्त्रणजस्ता विषय प्रदेशको कार्य क्षेत्रमा पर्दछन्। प्रदेशस्तरमा जलाधार संरक्षण तथा जल उपयोग नीतिको तर्जुमा तथा कार्यान्वयन, चुरे क्षेत्रको संरक्षण र सम्बर्द्धनको लागि संरक्षण क्षेत्र पहिचान र व्यवस्थापकीय पद्धति निर्धारण आदि प्रदेशको कार्यक्षेत्रमा समावेश गरेको देखिन्छ।

२. वस्तुगत स्थिति

नेपालको कुल क्षेत्रफलको करिब ४४.७ प्रतिशत क्षेत्र वन जङ्गलले ढाकेको छ। प्रदेशको कुल १,०९०,८७६ हेक्टर क्षेत्रफल वन क्षेत्रले ओगटेको छ जुन नेपालको कुल वनको १६.५ प्रतिशत र प्रदेशको कुल भूभागको ५३.७ प्रतिशत हुन् आउँछ। उपलब्ध रुखहरूमध्ये १० से. मी. व्यास माथिका रुखहरूको सङ्ख्या ४७ करोड र कुल काण्ड आयतन १८ करोड घन मीटर रहेको अनुमान गरिएको छ। त्यस्तै प्रदेशका ५ वटा जिल्लामा चुरे पर्दछ। यहाँ चुरेको कुल क्षेत्रफल ४७३,९८८ हेक्टर छ र यो प्रदेश भू-भागको २३.४ प्रतिशत हुन्छ। चुरे क्षेत्रको ठूलो भाग अर्थात् ६४ प्रतिशत वनले ढाकेको छ। यस प्रदेशमा कुल ७०७४ हेक्टर वनमा अतिक्रमण रहेको विभिन्न प्रतिवेदनहरूमा उल्लेख भएको देखिन्छ भने करिब २३३० हेक्टर वन अन्य प्रयोजनमा रहेको छ। सोमध्ये सबैभन्दा बढी ८६६.३ हेक्टर क्षेत्र जलविद्युत परियोजना र विद्युत लाइन प्रसारणको लागि उपलब्ध गराइएको छ।

व्यवस्थापनका हिसाबले प्रदेशमा सामुदायिक वन ४,५०९ वटा र कबुलियत वन ३,१२५ वटा छन् जसबाट क्रमशः ५५५,६६२ र २६,८५१ घरधुरी लाभान्वित छन्। निकुञ्जको सिमानामा मध्यवर्ती क्षेत्रहरू छन् जुन प्रदेशको कुल भू-भागको

७.८ प्रतिशत हुन आउँछ। यस प्रदेशमा चारवटा राष्ट्रिय निकुञ्ज र एउटा संरक्षित क्षेत्र छन्। तिनले प्रदेशको २९.९८ प्रतिशत भूभाग ओगटेको छ। यिनमा लाङटाङ र शिवपुरी-नागार्जुन राष्ट्रिय निकुञ्जबाहेक अन्य निकुञ्ज र संरक्षित क्षेत्र अरु प्रदेशसित जोडिएका छन्।

प्रदेशका जलाधारहरूलाई सिंचित गर्ने सातवटा प्रमुख नदीहरू त्रिशुली, सुनकोसी, तामाकोसी, बागमती, राप्ती (पूर्व), कमलामाई र बुढीगण्डकी हुन्। यिनको कुल जलाधार क्षेत्रफल २०,४७६ वर्ग कि.मी. छ। त्रिशुलीमा लाङटाङ, ताडी, लिखु र कोल्पुजस्ता स-साना नदीहरू मिसिन आउँछन्। सुनकोसीमा मेलम्ची र इन्द्रावती मिसिन्छन् भने तामाकोसीमा खारेखोला र सिंगटी खोला मिसिन्छन्। ती दुवै नदी प्रदेश नं. १ तर्फ बग्दछन्। बागमती नदीमा क्यान र मरिन मिसिन आइपुग्छ जुन प्रदेश नं. २ तर्फ बग्दछ भने राप्तीमा कर्रा, मनहरी, लोथर, कयर र रेवा (रिउ) मिसिन्छन् जुन पछि नारायणी नदीमा मिसिन पुग्दछ। बुढीगण्डकीमा आँखु र थोपल मिसिन आउँछन्। बुढीगण्डकी बागमती र गण्डकी प्रदेशको सीमानदी हो।

३. समस्या र चुनौती

देशभरीमा काठको वार्षिक माग अनुमानित ३४ लाख घनमीटर छ। यस प्रदेशमा ठूला शहरहरू केन्द्रित रहेकाले यहाँ काठको माग बढी छ। मागको १० प्रतिशत मात्र आफ्नै वनबाट आपूर्ति भइरहेको छ बाँकी बाह्य मुलुकबाट आयात गरिन्छ भने अर्कातिर उत्पादित काठ र अन्य वन्य श्रोत कुहिपर गइरहेका छन्। माग आपूर्ति निम्ति काठ बाहेक स्थानीय जनताका आधारभूत आवश्यकता जस्तै दाउरा, घाँस र स्याउलाको एकमात्र श्रोत वन हो। तर, सबैमा खासगरी गरिब किसान र सीमान्तकृत वर्गमा वनको लाभ तुलनात्मक रूपमा पुग्न सकेको छैन। पछिल्लो समय मानव-वन्यजन्तु द्वन्द्वका घटना बढिरहेको छ। साथै मानिसबाट हुने वन क्षेत्रको अतिक्रमण, अत्यधिक चरन, वनपैदावारको चोरी-निकासी र वन्यजन्तुको अवैध शिकार नियन्त्रण हुन सकेको छैन। केही वर्षयता वन डढेलोको प्रकोप पनि बढिरहेको छ र बर्षेनिजस्तो डढेलोको घटना दोहोरिरहेका छन्।

विकासको नाममा अनियन्त्रित, अवैज्ञानिक र वातावरणीय दुस्परिणामको पूर्व अनुमान नै नगरी निर्माण गरिएका ग्रामीण सडकहरू तथा ढुङ्गा, गिटी र बालुवा निकाल्न नदी किनारमा डोजर प्रयोग गरी जथाभावी उत्खनन् गरिएका कारण नदीको जलाधार क्षेत्रको उपल्लो तटीय क्षेत्र र तल्लो तटीय क्षेत्रको प्राकृतिक अवस्था विग्रदै गएको छ र तिनमा आश्रित जैविक विविधता सङ्कटमा परेको छ। प्राविधिक विश्लेषण बिना डोजरको प्रयोग व्यापक छ। अव्यवस्थित शहरीकरणले सहरी जलाधारको इकोसिस्टमलाई नाजुक अवस्थामा पुऱ्याएको छ। शहरका ससाना खोलाहरू त ढल नै बनिस्केका छन्। चुरेक्षेत्रको अतिक्रमण र अव्यवस्थित बसोबासले मानिसको जीविकोपार्जनलाई झन् सङ्कटतर्फ घचेट्दै छ। प्राकृतिक अवस्थामै पनि चुरेक्षेत्रमा पहिरो गैरहन्छ र त्यहाँबाट बगेको बलौटे माटो थुप्रिएर तराईका नदी-सतह उठिरहेका छन्। चुरेक्षेत्रमा वन मासिंदै जाँदा तराईमा पानीको अपर्याप्तता बढ्दै जानेछ। माथिल्लो चुरे पहाडमा सडक सञ्जालको थप विस्तार हुँदै जाँदा तल्लो समथर क्षेत्रमा विपद् निम्तिने खतरा बढेको छ। उत्पादित वनपैदावारको व्यवस्थित प्रयोगबाट काठमा आत्मनिर्भर हुनु, निम्न आय-श्रोतका जनतासम्म श्रोतको लाभ पुऱ्याउनु, मानव-वन्यजन्तु बीचको द्वन्द्वलाई न्यूनीकरण गर्नु, वन्यजन्तुको वासस्थान खुम्चिन नदीनु र वन अतिक्रमण, खुल्ला चरन, चोरी-शिकारी तथा डढेलो नियन्त्रण गर्नु वनक्षेत्रका चुनौतीहरू हुन्। त्यस्तै, जलाधारहरूको परिस्थितीकीय प्रणाली सन्तुलित राख्नु, मासिएका सिमसार र खोलाहरू पुनर्जीवित गर्नु, चुरे क्षेत्र संरक्षणलाई प्रभावकारी तुल्याउनु, पूर्वाधार विकास र वातावरणीय संरक्षणबीच सन्तुलन मिलाउनु साथै सरोकारवालाहरूसँग सहकार्य गरी दिगो तथा एकीकृत जलाधार व्यवस्थापनका लागि प्रदेशस्तरमा आवश्यक साङ्गठनिक संरचनाको विकास र शासकीय प्रणालीको सुदृढीकरण गर्नु यस क्षेत्रका थप चुनौती रहेका छन्।

४. सम्भावना र अवसर

जलाधार तथा उत्पादनशील वनको क्षेत्र उचित मात्रामा उपलब्ध हुनु, वनको वैज्ञानिक व्यवस्थापनबाट काष्ठ तथा गैरकाष्ठ वनपैदावारको व्यवसायिक लाभ लिन सकिने अवस्था बन्नु, विश्व सम्पदासहितको संरक्षित क्षेत्र हुनु, वन संरक्षणबाट कार्बन सञ्चितिको फाइदा हुनुजस्ता अवसरहरू प्रदेशमा मौजुद छन्। राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय बजारमा जैविक उत्पादन तथा हरित वस्तुहरूको चाहना बढ्दै गएकोले वन्यस्रोतमा आधारित व्यवसायहरूबाट हरित रोजगारीको सृजना हुनसक्ने र पारिस्थितिकीय सेवाको माग बढ्ने सम्भावना देखिन्छ। नेपालमा वैज्ञानिक वन व्यवस्थापनबाट १७ देखि ९१ लाख घनमीटरसम्म काठ आपूर्ति गर्न सकिन्छ र वनमा वार्षिक ४.२ देखि १३.८ लाखसम्म रोजगारी सृजना हुनसक्छ। दुर्लभ वन्यजन्तुसहितको जैविक विविधतायुक्त राष्ट्रिय निकुञ्ज तथा संरक्षित क्षेत्रले पर्यापर्यटनलाई अझ फराकिलो र दिगो हुने अवसर प्रदान गरेको छ। चुरे र नदी किनार लगायत मानव बस्ती विस्तार गर्न अयोग्य क्षेत्रहरूको वन कायम गरी वन्यजन्तुलाई एउटा संरक्षित क्षेत्रबाट अर्कोमा आवत-जावत गर्ने जैविक-मार्गको विकास गर्ने अवसर पनि यस प्रदेशमा रहेको छ।

५. दीर्घकालीन सोच

वातावरणमैत्री विकास, उत्पादनशील वन, संरक्षित जलाधार र जैविक विविधताको दिगो संरक्षण।

६. लक्ष्य

वन, जैविक विविधता र जलाधारको एकीकृत व्यवस्थापनमार्फत् वन पैदावारको उत्पादन वृद्धि र पारिस्थितिकीय सेवा प्रवाहलाई अक्षुण्ण राख्ने।

७. उद्देश्य

- वैज्ञानिक वन व्यवस्थापनद्वारा वनपैदावारको उत्पादनवृद्धि तथा व्यवसायीकरण गर्नुका साथै भू-दृश्य (ल्याण्डस्केप) को व्यवस्थापन गरी वन, वन्यजन्तु र जैविक विविधताको संरक्षण गर्नु,
- एकीकृत जलाधार व्यवस्थापनमार्फत् नदी-नाला, माटो र अन्य प्राकृतिक संरचनाहरूको संरक्षण गरी स्वस्थ र सन्तुलित वातावरण कायम राखी पारिस्थितिकीय सेवा प्रवाहलाई अक्षुण्ण राख्नु,
- चुरेक्षेत्रको वन अतिक्रमणको स्थायी समाधान गरी एकीकृत संरक्षण र व्यवस्थापन गर्नु र
- वन क्षेत्रलाई उद्योग र पर्यटनसँग आबद्ध समृद्धिका लागि योगदान पुऱ्याउनु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
७.१.१ वन तथा जलाधारको वैज्ञानिक व्यवस्थापन गर्न नीति र कार्यान्वयन संरचना निर्माण गर्ने।	<ul style="list-style-type: none">• संविधानमा व्यवस्था भए अनुसार प्रादेशिक वन, जलाधार तथा प्राकृतिक स्रोतहरूको व्यवस्थापन गर्न आवश्यक नीति, मापदण्ड र सङ्गठनात्मक संरचना (जस्तै, प्रदेश स्तरीय आयोग वा प्राधिकरण) निर्माण गरिनेछ।• प्रदेशभित्रका वन, जलाधार एवम् प्राकृतिक स्रोतहरूको तथ्याङ्क आधार तयार गरी दुरुस्त राखिनेछ।• प्रदेशस्तरीय वन तथा जैविक विविधता अध्ययन, सर्वेक्षण तथा अनुसन्धान केन्द्र, सङ्ग्रहालय, उद्यान तथा हर्बेरियमहरूको स्थापनाका लागि आवश्यक तयारी गरिनेछ।• चुरे क्षेत्र र अन्यत्र पाइने नदीजन्य पदार्थ जस्तै ढुङ्गा, गिट्टी, बालुवा आदिको दिगो उपयोग गर्ने नीति तर्जुमा गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
<p>७.१.२ प्रदेशभित्र वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन परियोजनाहरू सञ्चालन गरी मौजुदा एवम् उत्पादित वन पैदावारको उपयोग गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • चुरे क्षेत्र, भिरालो र पहाडी धरातलमा सडक र पूर्वाधार निर्माणका लागि नियमावली बनाई निश्चित मापदण्ड र तोकिएका प्राविधिक अवस्था बाहेक डोजर, एक्सक्याभेटर आदिको प्रयोगमा प्रतिबन्ध लगाइने व्यवस्था गरिनेछ। • चुरे, मध्यवर्ती क्षेत्र लगायतका क्षेत्रको नदीजन्य वन पैदावर, ढुङ्गा, गिटी, बालुवाहरूको सङ्कलन, ओसारपसार र बिक्री वितरणलाई व्यवस्थित गर्न नीतिगत व्यवस्था गरिनेछ। • जैविक विविधताको दिगो संरक्षण गर्दै वनक्षेत्र तथा वन पैदावारको उत्पादन वृद्धि गरी रोजगारी सिर्जना र आपूर्तिमाफत् प्रादेशिक अर्थतन्त्रमा योगदान पुऱ्याउन वनक्षेत्रको वैज्ञानिक व्यवस्थापन गरिनेछ। • प्रदेशभित्रका क्षेत्रहरूमा वन डढेलो र जथाभावी चरिचरन नियन्त्रणका लागि संस्थागत संरचनाको निर्माण तथा पूर्वतयारी क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ। • प्रदेशभित्रका अन्तरस्थानीय तहहरूमा रहेका नदीतटको उचित व्यवस्थापन एवम् सिमसार तथा पानीका श्रोतहरूको संरक्षण र सहरी वनको बृहत्तर विस्तार गरी दिगो संरक्षण गर्न समुदायलाई जिम्मेवार बनाइनेछ। • प्रदेशमा अवस्थित अति महत्वपूर्ण पारिस्थितिकीय प्रणाली र वन्यजन्तुका जोखिमयुक्त वासस्थानहरूको पहिचान र व्यवस्थापन गरिनेछ। • रैथाने वनस्पति लगायत उपयोगी जडीबुटीहरूको संरक्षण, विस्तार र उपयोग गरिनेछ। • वन संरक्षण र विकास तथा भौतिक संरचना निर्माणमा रहेको अस्पष्टता अन्त्य गरी यसका बीचमा उपयुक्त सन्तुलन कायम गरिनेछ। • उच्च प्रविधिको नर्सरीको प्रवर्द्धन गरिनेछ।
<p>७.१.३ वन्यजन्तु ओहोर-दोहोर हुने जैविक मार्गको विकास तथा क्षतिपूर्ति व्यवस्थाद्वारा मानव-वन्यजन्तु बीचको द्वन्द्व घटाउने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • यो प्रदेश र यससँग जोडिएका प्रदेशहरूको संरक्षित क्षेत्र तथा निकुञ्जहरूलाई जोड्ने मौजुदा वन क्षेत्र र नदीहरूलाई वन्यजन्तु आवत-जावत गर्न मिल्ने जैविकमार्गको रूपमा विकास गरी वन्यजन्तुबाट मानव बस्ती र बालीनालीको संरक्षण गरिनेछ, जस्तै, पर्सा-मकवानपुर-चन्द्रागिरी-नागार्जुन-शिवपुरी-लाडटाड वा बरंडाभार-गाईघाट-सेती उपत्यका-पन्चासे-अन्नपूर्ण। • वन तथा संरक्षित क्षेत्रहुँदै जाने राजमार्गहरूमा तत्काल सुधार गरी वन्यजन्तु वारपार गर्न सक्ने सुरुड मार्ग वा पुलहरूको विकास गरिनेछ। • वन्यजन्तुबाट हुने मानवीय तथा बालीनाली क्षतिबापत पीडितलाई यथाशीघ्र उचित सहयोग उपलब्ध गराइनेछ। साथै, त्यस्ता क्षतिको सम्भावनालाई ध्यानमा राखी विमाको व्यवस्था गरिनेछ।
<p>७.१.४ सामुदायमा आधारित वन कार्यक्रमलाई थप समावेशी</p>	<ul style="list-style-type: none"> • सामुदायिक वन कार्यक्रमलाई थप समावेशी र व्यापक बनाउँदै समुदायका विपन्न र सीमान्तकृत वर्ग एवम् महिलाहरूलाई प्राथमिकताका साथ संलग्न गरी लाभान्वित गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
<p>बनाउँदै समुदायका विपन्न र सीमान्तकृत वर्गलाई लाभ पुऱ्याउने।</p> <p>७.१.५ नदी प्रणालीमा आधारित एकीकृत जलाधार व्यवस्थापनको योजना तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • सार्वजनिक खाली जग्गाहरूमा वनपैदावार उत्पादन गर्ने खालका प्रजातिहरू लगाई वन क्षेत्रको विस्तार र आपूर्तिमा सघाउने नीति तथा कार्यक्रम तर्जुमा गरिनेछ। • विपन्नमुखी आयमूलक, रोजगारमूलक तथा जीविकोपार्जन सुधारसम्बन्धी कार्यक्रमहरू सबै वन व्यवस्थापन प्रणालीमा कार्यान्वयन गरिनेछ। • सामुदायिक तथा कबुलियती वन क्षेत्रहरूमा तुलनात्मक लाभ हुने उच्च मूल्यका जडीबुटी र वन अनुकूल फलफुल रोपण तथा गैरकाष्ठ वन पैदावारको खेती लगाउन प्रोत्साहित गरिनेछ। • प्रदेशभित्रका नदी प्रणाली र नदीको वास्तविक क्षेत्र निर्धारण र संरक्षण, नदी क्षेत्रको एकीकृत उपयोगसहितका लागि रिभरफ्रन्ट परियोजना विकास र कार्यान्वयन गरिनेछ। • जलाधारको उपल्लो तथा तल्लो तटीय क्षेत्रको अन्तरसम्बन्धलाई महत्व दिँदै स्थानीय तह र जोडिएका प्रदेशहरू भएर बग्ने नदी-नालाहरूको संरक्षण र उपयोग निम्ति समन्वयात्मक एकीकृत जलाधार व्यवस्थापनको योजना तर्जुमा गरिनेछ। • घना मानव बस्तीमा मासिँदै गएका जलाधारहरूको पुनरुत्थान गरिनेछ र संवेदनशील जलाधारको संरक्षण तथा विकासका लागि विशेष जलाधार क्षेत्र घोषणागरी भू-उपयोगको आधारमा व्यवस्थापन गरिनेछ। • जलाधारसँग प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहने उत्पादन क्षेत्र जस्तै वन, कृषि, पशु, खानेपानी र भूमि व्यवस्थापन एवम् जलविद्युत, सिँचाइजस्ता विकास परियोजनाहरूबाट नदी किनारमा नकारात्मक असर पर्नबाट जोगाउन आवश्यक समन्वय कायम गरिनेछ। • तामाकोसी, भोटेकोसी, सुनकोसी तथा नारायणी लगायतका नदीलाई धार्मिक र आर्थिक कोरिडोरको रूपमा विकास गरिनेछ।
<p>७.१.६ चुरे अतिक्रमण र वन्यजन्तु चोरी-शिकारीजस्ता गैरकानुनी र वातावरण बिनास गर्ने खुल्ला चरिचरन, वन डढेलोजस्ता कार्यमाथि नियन्त्रणका साथै कृषिवनजस्ता वैकल्पिक जीवनयापनका उपायहरूको प्रवर्द्धन गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • चुरे क्षेत्रको वातावरण र विकासबीच सन्तुलन कायम राखी र पूर्वाधार निर्माण कार्यक्रममा हुने वातावरणीय क्षतिलाई कम गर्ने उपायहरूलाई अवलम्बन गरिनेछ। • चुरेक्षेत्रको अतिक्रमण र वन्यजन्तु चोरीशिकारीजस्ता गैरकानुनी र वातावरण बिनाश गर्ने खुल्ला चरिचरन, वन डढेलोजस्ता कार्यमाथि नियन्त्रणका साथै कृषि वनजस्ता वैकल्पिक जीवनयापनका उपायहरूको प्रवर्द्धन गरिनेछ। चुरे क्षेत्रको वन अतिक्रमण नियन्त्रणको लागि कार्ययोजना बनाई लागू गरिनेछ। • चुरेक्षेत्रलाई भू-उपयोग नीति अनुरूप वर्गीकरण गरी यसलाई अविच्छिन्न पारिस्थितिकीय प्रणालीको रूपमा दिगो व्यवस्थापन गरिनेछ। चुरे क्षेत्र भएर जाने सडक मार्गको निर्माण निरूत्साहित गरिनेछ। भैरहेका सडक मार्गको व्यवस्थापन र सम्भार निश्चित वातावरणीय मापदण्डहरू बनाई गरिनेछ। • प्रदेश भित्रको चुरेक्षेत्रमा कृषि-वन र चुरेमैत्री विकास र संरक्षण योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयन गरी चुरेमा आश्रित विपन्न वर्गले लाभ लिनसक्ने बनाइनेछ। • चुरेक्षेत्रको संरक्षण र व्यवस्थापनको लागि संघीय सरकार र स्थानीय तहसँग सहकार्य

रणनीति	कार्यनीति
	गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	जैविक विविधताको दिगो संरक्षण र वनको वैज्ञानिक व्यवस्थापन	√	√	√		√
२	जलाधार, नदीतट, सिमसार तथा पानीका श्रोतहरूको संरक्षण	√	√	√		√
३	सार्वजनिक खाली जग्गाहरूमा फलफुल, जडीबुटी र वनपैदावार उत्पादन गर्ने खालका प्रजातिहरू लगाई वन क्षेत्रको विस्तार	√	√	√		√
४	उच्च प्रविधिको नर्सरीको विकास	√	√	√		√
५	अति महत्वपूर्ण पारिस्थितिकीय प्रणाली र वन्यजन्तुका जोखिमयुक्त वासस्थानहरूको पहिचान र व्यवस्थापन	√	√	√		√
६	जलाधारको उपल्लो तथा तल्लो तटीय क्षेत्रको अन्तरसम्बन्धलाई महत्व दिई एकीकृत जलाधार व्यवस्थापन	√	√	√		√
७	चुरे क्षेत्रको वातावरण र विकासबीच सन्तुलन कायम राखी र पूर्वाधार निर्माण	√	√	√		√
८	पर्सा-मकवानपुर-चन्द्रागिरी-नागार्जुन-शिवपुरी-लाडटाड वा बरंडाभार-गाईघाट-सेती उपत्यका-पन्चासे-अन्नपूर्ण लगायतका वन्यजन्तु आवत-जावत गर्न मिल्ने जैविक मार्गको विकास	√	√	√		√
९	रिभरफ्रन्ट परियोजना विकास र कार्यान्वयन	√	√	√		√
१०	वन तथा संरक्षित क्षेत्र छिचोलेर जाने राजमार्गहरूमा सुधार गरी वन्यजन्तु वारपार गर्न सक्ने सुरुङ मार्ग वा पुलहरूको विकास	√	√	√		√
११	मासिंदै गएका जलाधारहरूको पुनरुत्थान र विशेष जलाधार क्षेत्र घोषणागरी भू-उपयोगको आधारमा व्यवस्थापन	√	√	√		√
१२	प्रादेशिक वन, जलाधार तथा प्राकृतिक श्रोतहरूको व्यवस्थापन सम्बन्धी नीति र सङ्गठनात्मक संरचना निर्माण	√	√	√		√
१३	कृषि वनजस्ता वैकल्पिक जीवनयापनका उपायहरूको प्रवर्द्धन	√	√	√		√
१४	प्रदेशस्तरीय वन, जलाधार तथा जैविक विविधता अध्ययन, सर्वेक्षण तथा अनुसन्धान केन्द्र, सङ्ग्रहालय, उद्यान तथा हर्बेरियमहरूको स्थापना	√	√	√		√
१५	चुरेक्षेत्रमा कृषि-वन र चुरेमैत्री विकास र संरक्षण योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयन	√	√	√		√
१६	तामाकोसी, भोटेकोसी, सुनकोसी तथा नारायणी लगायतका नदीलाई धार्मिक	√	√	√		√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
	र आर्थिक कोरिडोरको रूपमा विकास					
१७	प्रदेशभित्रका वन, जलाधार तथा प्राकृतिक स्रोतहरूको तथ्याङ्क आधार तयार	√	√	√		√
१८	रैथाने वनस्पति, जडीबुटी र सुगन्धित फूलहरूको संरक्षण, विस्तार र उपयोग	√	√	√		√
१९	जथाभावी चरिचरन र वन डढेलो नियन्त्रण तथा पूर्वतयारी क्षमता विकास	√	√	√		√
२०	सामुदायिक तथा कबुलियती वन क्षेत्रहरूमा तुलनात्मक लाभ हुने उच्च मूल्यका जडीबुटी र वन अनुकूल फलफुल रोपण तथा गैरकाष्ठ वन पैदावारको खेती प्रवर्द्धन	√	√	√		√
२१	विपन्नमुखी आयमूलक, रोजगारमूलक तथा जीविकोपार्जन सुधारसम्बन्धी कार्यक्रमहरू सबै वन व्यवस्थापन प्रणालीमा कार्यान्वयन	√	√	√		√
२२	शहरी वनको विकास र विस्तार	√	√	√		√
२३	भू-उपयोग नीति अनुरूप अविच्छिन्न पारिस्थितिकीय प्रणालीको रूपमा चुरेक्षेत्रको दिगो व्यवस्थापन	√	√	√		√
२४	वन्यजन्तुबाट हुने मानवीय तथा बालीनाली क्षतिबाट पीडितलाई विमा र अन्य सहयोगको व्यवस्था	√	√	√		√

१०. अपेक्षित उपलब्धि

प्रदेशस्तरीय वन तथा जलाधारको वैज्ञानिक व्यवस्थापनसम्बन्धी कानून, नीति र मापदण्ड भएको हुने, प्रदेशभित्र वैज्ञानिक वन व्यवस्थापनको नमूना परियोजना सञ्चालन गरी मौजुदा एवम् उत्पादित वनपैदावारको उपयोग गर्ने क्षमता विकास भएको हुने, प्राकृतिक जैविकमार्गको विकास तथा मानव-वन्यजन्तुबीचको द्वन्द्व न्यून भएको हुने, समुदायमा आधारित वन व्यवस्थापन प्रणालीहरू अझ सुदृढ भएको र विपन्न वर्गलाई लाभ पुगेको हुने, फलपूल तथा जडीबुटीको उत्पादन बृद्धि भएको हुने, नदी प्रणालीमा आधारित एकीकृत जलाधार व्यवस्थापनको योजना कार्यान्वयन भएको हुने, चुरे तथा वन अतिक्रमण र वन्यजन्तु चोरीशिकारी, वातावरण विनाश गर्ने खुल्ला चरिचरन, वन डढेलोजस्ता कार्यहरूको नियन्त्रण भएको हुने, कृषिवनजस्ता वैकल्पिक जीवनयापनका उपायहरूद्वारा विपन्न वर्गलाई टेवा पुगेको हुने, जैविक विविधताको संरक्षण भएको हुने र वन क्षेत्रको उत्पादकत्व बृद्धि भएर वन पैदावारको माग पूर्ति भई आयात न्यूनीकरण भएको र वन तथा प्राकृतिक श्रोतसम्बन्धी तथ्याङ्क दुरुस्त बनेको हुने।

७.२ वातावरण प्रदूषण नियन्त्रण

१. पृष्ठभूमि

वातावरणीय प्रदूषण एक विश्वव्यापी समस्या हो। नेपाल यसमा अछुतो छैन। अहिले वातावरणमा देखिएका मुख्य समस्याहरूमा हावा, पानी, माटो र ध्वनिको प्रदूषण र फोहोरमैलाको व्यवस्थापन हुन्। सडकको धुलो-मैलो, ढल बनेका खोल्सा र नदीहरू, रासायनिक मल र विषादी मिसिएको माटो, शहर बजारको खैलाबैला, यत्रतत्र मिल्काइएका प्लास्टिकको झोला र फलफूलका बोक्राहरूले मानव स्वास्थ्य र पशुपन्छीसमेतलाई हानी पुर्याइरहेको छ। धासप्रधास र रक्तचापसम्बन्धी

समस्या, अर्बुद रोग र अन्य स्वास्थ्य जटिलता निरन्तर बढिरहेका छन्। अन्ततः यसले पुन्याउने असर भनेको आर्थिक नोक्सानी, सामाजिक अवनति र मानवीय क्षति नै हो।

नेपालको संविधानले नागरिकलाई स्वच्छ र स्वस्थ वातावरणमा बाँच्न पाउने र वातावरणीय प्रदूषण वा हासबाट हुने क्षति बापत पीडितलाई प्रदूषकबाट कानून बमोजिम क्षतिपूर्ति पाउने हक हुनेछ भन्ने व्यवस्था गरेको छ। प्रदेशस्तरको वातावरण/प्रदूषणसम्बन्धी नीति, कानून, मापदण्ड, योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र नियमन, वातावरणीय सूचना प्रणालीको स्थापना, वातावरण प्रयोगशाला, हानिकारक पदार्थहरूको नियमन तथा व्यवस्थापन, इन्धनको गुणस्तर अनुगमन, न्यून कार्वनमुखीजस्ता विषय प्रदेशको कार्य क्षेत्रमा रहेका छन्।

स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ र फोहोरमैला व्यवस्थापन ऐन, २०६८ ले स्थानीय तहलाई स्थानीयस्तरमा प्रदूषण नियन्त्रण र हानिकारक पदार्थहरूको नियमन तथा व्यवस्थापन, फोहोर सङ्कलन, प्रशोधन तथा विसर्जन गर्न आवश्यक संरचनाहरूको निर्माण, सञ्चालन तथा व्यवस्थापन गरी स्वच्छ र स्वस्थ वातावरण कायम राख्ने जिम्मेवारी प्रदान गरेको छ। विकास परियोजनाहरूमा वातावरणीय प्रभाव मूल्याङ्कनलाई संस्थागत गर्ने प्रयत्न भएको छ। वायुको गुणस्तर एवम् सवारी प्रदूषणसम्बन्धी मापदण्डहरू निर्धारण गरी कार्यान्वयनमा ल्याइएको छ। पानीको स्रोतको संरक्षण र उचित उपयोग गर्ने र मुलुकलाई खुला दिसापिसाबमुक्त क्षेत्रको घोषणा गरी वातावरणीय सरसफाइमा विशेष जोड दिइएको छ। यी प्रयासहरू दिगो विकास लक्ष्यसित जोडिएका छन्।

२. वस्तुगत स्थिति

हालै सार्वजनिक गरिएको 'इन्भारोमेन्ट परफरमेन्स इन्डेक्स २०१८ (ईपीआई) प्रतिवेदन अनुसार वायु प्रदूषणका हिसाबले नेपाल विश्वका १८० देशमध्ये १७६ औं स्थानमा छ र काठमाडौं तीन शीर्ष खराब वायु प्रदूषित शहरमा रहको छ। प्रदेशको प्रमुख शहरहरूको वायुमा पीएम २.५ र पीएम १० को मात्रा मापदण्डभन्दा बढी छ। विश्व बैंक र आइएचएमई, २०१६ का अनुसार नेपालमा वायु प्रदूषणका कारण मृत्यु हुनेको सङ्ख्या २२ हजार ३८ छ जसले गर्दा अर्थतन्त्रमा २.८ खर्ब (कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको ४.७५ प्रतिशत)ले हास आएको छ। काठमाडौं उपत्यकाको प्रदूषणमा सवारी साधनको ३८ प्रतिशत हिस्सा छ र बाँकीमा सडकको धुलो २५, कृषिको १८, इँटाभट्टाको ११ प्रतिशत र बाँकी अन्यको छ। काठमाडौंमा जनसङ्ख्या ४.३५ प्रतिशतले बढिरहेको छ भने सवारी साधनको सङ्ख्या वर्षेनी १२५ प्रतिशतले बढिरहेको छ। इइसीको प्रतिवेदनअनुसार काठमाडौं जिल्लामा मात्र २०० वटा इँटाभट्टाहरू सञ्चालनमा छन्।

सन् २०१२ को अध्ययन अनुसार नेपालका साविकको ५८ नगरपालिकामा दैनिक १ हजार ४३५ टन फोहोर उत्पादन हुन्छ, यसमा प्रदेशका १८ वटा नगरपालिकाको हिस्सा ५३.५५ प्रतिशत छ। नगरपालिकाहरूमध्ये सबैभन्दा धेरै फोहोर उत्पादन काठमाडौं महानगरपालिकामा हुन्छ। घरबाट निस्कने फोहोरहरूको विश्लेषण गरी हेर्दा अधिकांश फोहोर कुहिने खालका र कतिपय पुनः प्रयोगयोग्य भएको पाइएको छ। सो अध्ययन अनुसार २५५ टन कागजजन्य फोहोर, १८५ टन प्लास्टिकजन्य र अन्यमा शिशा, कपडा, धातु र रबर छाला रहेका छन्।

३. समस्या र चुनौती

नेपाल जस्तो विकासोन्मुख देशका लागि वातावरणीय प्रदूषणको समाधान र फोहोरमैलाको व्यवस्थापन जटिल र प्राविधिक रूपमा अत्यन्त चुनौतीपूर्ण छ। प्रमुख वातावरणीय समस्याहरूमा मुख्यतः वायु प्रदूषण, नदी प्रदूषण र फोहोरमैला नै हुन्। प्रदेशमा बढ्दो उद्योग तथा सवारी सङ्ख्या र तिनबाट निस्कने धुवाँ, जनस्वास्थ्यको कुनै पर्वाह नगरी गरिने पूर्वाधार

निर्माण, समन्वयवेगको सडक खन्ने र पुर्ने कामका कारण यहाँका मानिसहरूको जीवन जहिल्यै कष्टकर भइहेको छ। वायु प्रदूषणका कारण रुघाखोकी र आँखा चिलाउने समस्या आमरूपमा देखिने गरेको छ भने हावामा मिसिएका हेभीमेटल पार्टिकल्स लगायतका हानिकारक क्यान्सर गराउने तत्वले दम, खोकी, छातीको सङ्क्रमण, क्यान्सरजस्ता दीर्घरोगको सङ्क्रमण बढाएको छ। अव्यवस्थित शहरीकरण, जनसङ्ख्या वृद्धि, बढ्दो औद्योगिकीकरण तथा भूमि प्रदूषण र त्यहाँबाट निस्केका रसायनहरू, शौचालयका ढल र प्लास्टिकहरू सिधै नदीनालामा मिसाउनाले प्रदेशका प्राय सबै नदीहरू त्रिशुली, नारायणी, वागमती, भोटेकोशी, सुनकोसी आदिको पानीको गुणस्तरमा हास आएको छ। त्यस्तै घर, अस्पताल लगायतका व्यवसायिक स्थलहरू, उद्योग कलकारखानाबाट निक्लने फोहोरमैलाको व्यवस्थापन प्रदेश अर्को प्रमुख समस्या हो। ग्रामीण भेगबाट शहरमा भइरहेको तीब्र बसाइँसराइ र बढ्दो उपभोग प्रवृत्तिजस्ता कारण फोहोरको उत्पादन बेस्सरी बढिरहेको छ। फोहोर सङ्कलन राम्रो व्यवस्थापन नहुँदा यहाँका शहरहरू दुर्गन्धित भई झरी र गर्मीको मौसममा हजारौँ मानिस झाडापखाला, टाइफाइड, जन्डिस आदिबाट ग्रसित हुने गरेको पाईएको छ। यी सबैको असर जनजीविका, पशुपन्छी र पर्यटनमा प्रत्यक्ष परिरहेको छ।

बढ्दो शहरीकरण र अव्यवस्थित बस्ती विकासका कारण वायु प्रदूषण हुनु, पानीका स्रोतहरू सुक्दै जानु र दूषित हुनु, माटो विग्रनु, ध्वनि प्रदूषण हुनु, प्रदूषणकारी सवारी साधन, उद्योग र इँटाभट्टाहरूलाई विस्थापित गर्न नसक्नु, निर्माणाधीन परियोजनाहरू समयमै सम्पन्न नहुनु, सहरी बस्तीमा ढल निकासको व्यवस्था नहुनु, प्लाष्टिक, रसायन तथा सिसायुक्त फोहोरको सुरक्षित विसर्जन हुन नसक्नुजस्ता समस्याहरूलाई समाधान गर्न आवश्यक कानून बनाई तिनको कार्यान्वयन गर्नु, त्यस निम्ति पर्याप्त बजेटको व्यवस्था गर्नु, संस्थागत पूर्वाधार बनाउनु, फोहोरबाट मोहर उत्पादन हुने प्राविधिक ज्ञानको प्रसार गर्नु, दक्ष—तालिम प्राप्त मानव स्रोत जुटाउनु र सरोकारवाला निकायहरूबीच प्रभावकारी समन्वय कायम गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती हुन्।

४. सम्भावना र अवसर

प्रदेशमा विशिष्टीकृत निकायको रूपमा उद्योग, वन तथा वातावरण मन्त्रालयको गठन हुनु, वायु पानी र ध्वनि प्रदूषण नियन्त्रण सेवा एवम् संरचनाको विकास तथा विस्तारमा स्थानीय निकाय, विकास साझेदार, अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्था, गैरसरकारी संस्था तथा उपभोक्ता समितिहरू र नागरिकको सहभागिता बढ्दै जानु, फोहोरलाई ऊर्जाको स्रोतमा परिवर्तन गर्न प्रविधि विकास गर्नु, फोहोर व्यवस्थापनको नीति, रणनीति र निर्देशिका बनाउनु र सरसफाइ कार्यक्रमले सामाजिक अभियानको रूप लिनु नयाँ अवसरहरू हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

स्वस्थ जीवनका लागि स्वच्छ वातावरण

६. लक्ष्य

बढ्दो शहरीकरणबाट उत्पन्न वातावरणीय प्रदूषणको न्यूनीकरण गरी वातावरणीय स्वच्छता कायम गर्ने।

७. उद्देश्य

१. वायु प्रदूषण नियन्त्रण गरी नागरिकहरूको स्वास्थ्यमा सुधार ल्याउनु,
२. नदीहरूमा हुने प्रदूषण न्यूनीकरण गरी त्यहाँको परिस्थितिकीय प्रणालीमा सुधार गर्नु,
३. फोहोरमैलाको उचित व्यवस्थापन र पुनर्प्रयोगका उपायहरूबाट रोजगारी सृजना गर्नु र
४. धुँवाधूलो तथा आवाजबाट सिर्जित प्रदूषणको नियन्त्रणमा आवश्यक प्रणाली अवलम्बन गर्नु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
<p>७.२.१</p> <p>यातायातका साधनहरू तथा उद्योगलाई वातावरणमैत्री उन्मुख, वैकल्पिक ऊर्जा र स्वच्छ प्रविधिको प्रयोग तथा हरियाली वृद्धि गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • सार्वजनिक निजी साझेदारीमा शहर बस्तीमा विद्युतीय सार्वजनिक यातायात प्रणालीलाई सञ्चालनमा ल्याइने छ र हरियाली वृद्धि गरिनेछ। • प्रमुख क्षेत्रहरूमा सवारी प्रदूषण मापनका लागि स्वचालित प्रविधिको स्थापना गर्दै सवारीसाधनको आयु, प्रदूषण मापदण्ड र क्षमताको पुनर्मापन गरी कानुनमा भएका व्यवस्था कडाइका साथ लागू गरिनेछ। • वैकल्पिक तथा नवीकरणीय ऊर्जाबाट चल्ने सवारीसाधनहरूलाई प्रोत्साहन गर्दै वि.सं. २०८५ वैशाख १ गतेदेखि काठमाडौं उपत्यका, चितवन, हेटौंडा, बनेपा, धुलिखेल र पनौतीमा पेट्रोलियम पदार्थमा आधारित सवारीसाधनमा पूर्ण प्रतिबन्ध लगाइनेछ। • प्रदूषणकारी उद्योगहरूलाई मानव बस्तीभन्दा पर सारी आधुनिक प्रविधिसहितको वातावरणमैत्री उद्योगलाई प्राथमिकता, प्रोत्साहन, अनुदान दिइनेछ। • बायोग्याँस, सुधारिएको चुलो, ग्यासीफायर, बायोब्रिकेटजस्ता किफायती जैविक ऊर्जाहरूको प्रवर्द्धन एवम् विस्तार गरिनेछ। • पेट्रोलियम पदार्थको आंशिक विकल्पका रूपमा जैविक इन्धनको उत्पादन गर्न किसान र उद्यमीहरूलाई प्रोत्साहित गर्न आवश्यक नीति तर्जुमा गरिनेछ। • गरिब र विपन्नवर्गसम्म नवीकरणीय ऊर्जा प्रविधिको पहुँच सुलभ गरी दाउराको प्रयोग कम गरिनेछ।
<p>७.२.२</p> <p>नगर तथा नगर उन्मुख क्षेत्रमा ढल प्रशोधन, फोहोरमैला व्यवस्थापन, पुनःप्रशोधन र पुनःप्रयोग विधि अवलम्बन गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • प्रदेशका प्रमुख शहर, नगरपालिका र गाउँपालिकामा खानेपानी, ढल निकास तथा प्रशोधन परियोजनाहरूको अध्ययन गरी निर्माण कार्य प्रारम्भ गर्नुका साथै सञ्चालित परियोजनाहरूको स्तरोन्नति गरिनेछ। • नदीनालाहरू तथा अन्य पानीका स्रोतहरूको संरक्षण र वातावरणीय व्यवस्थापन गर्ने कार्य सञ्चालनमा ल्याइनेछ। • राजमार्ग छेउ जथाभावी फोहर र शौच गर्ने र नदी किनारमा जथाभावी सवारी साधन धुने, पखाल्ने कार्यमा नियन्त्रण गरी शौचालय र सर्बिस सेन्टरहरूको विकास गरिनेछ। • “एक घर एक शौचालय” को योजनालाई कार्यान्वयनमा ल्याई सार्वजनिक स्थानहरूमा शौचालय निर्माण गरी प्रदेशलाई खुला दिसामुक्त घोषणा गरिनेछ। • फोहरमैलाको उपयुक्त व्यवस्थापन गर्न फोहर पुनःप्रशोधन, पुनःप्रयोग र प्राङ्गारिक मल उत्पादन गर्नेजस्ता कार्यक्रम सञ्चालनका लागि स्थानीय तहमा फोहोर प्रशोधन केन्द्र र अन्तरपालिका साझेदारीमा एकीकृत फोहरमैला व्यवस्थापन केन्द्रको स्थापना गरिनेछ। नयाँ र विकास हुँदै गरेका शहरहरूमा घरपरिवारकै तहदेखि “शून्य फोहर”को व्यवस्था कार्यान्वयन गरिनेछ। • संघीय सरकारको समन्वयमा फोहोरबाट ऊर्जा उत्पादन गर्ने आवश्यक प्रविधि र प्रणालीहरूको प्रवर्द्धन र विस्तार गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
७.२.३ कीटनाशक विषादी र रासायनिक मल प्रयोगलाई दुरुत्साहन गरी जैविक उपाय र प्राङ्गारिक मलको प्रयोग र प्लाष्टिक झोलाको सट्टामा स्थानीय सामग्रीबाट उत्पादित वातावरण मैत्री झोला उपयोगमा ल्याउने।	<ul style="list-style-type: none"> आगामी तीन वर्षभित्र प्लाष्टिक झोलामुक्त प्रदेश बनाइनेछ। स्थानीय सामग्रीको प्रयोग गरी "हरित झोला" उत्पादन गरी प्रयोगमा ल्याइनेछ। अस्पताल र अन्य संस्थागत हानिकारक फोहरहरू व्यवस्थापन गर्न अटो-क्लेभजस्ता प्रभावकारी प्रविधिको प्रयोग गरिनेछ। प्राङ्गारिक मल तथा जैविक विषादी उद्योग स्थापना तथा 'ब्लाक् सोल्जर फलाई प्रविधि' लगायतका प्रविधिहरूको प्रवर्द्धन गर्दै प्राङ्गारिक खेतीका सम्भावित वस्तु र क्षेत्रहरूको पहिचान एवम् उत्पादन गरी "हरित-वस्तु" को ब्रान्ड प्रवर्द्धन र बजारीकरण गरिनेछ। कीटनाशक औषधी व्यवस्थापन गर्ने काममा स्थानीय तहसँग समन्वय र सहकार्य गरिनेछ।
७.२.४ प्रदूषण नियन्त्रणका लागि संस्थागत क्षमता अभिवृद्धि गरी वातावरण व्यवस्थापनलाई विकास कार्यक्रमको अभिन्न अङ्गका रूपमा आबद्ध गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> प्रदूषण नियन्त्रण र फोहोर व्यवस्थापनसँग सम्बन्धित कानूनहरूको तर्जुमा र विद्यमान कानूनहरू, वातावरणीय नीति नियम अद्यावधिक, संयन्त्रको सबलीकरण र संस्थागत क्षमता विकास गरिनेछ। प्रदूषण मापन र फोहोर वस्तुको प्रयोग एवम् नवीकरणीय ऊर्जासम्बन्धी प्रादेशिक अनुसन्धान तथा विकास केन्द्रको स्थापना गरी वैज्ञानिक अनुगमनसमेत गरिनेछ। वातावरणीय चेतना र सावधानी, फोहर बर्गीकरण र फोहोर व्यवस्थापनसम्बन्धी शैक्षिक तथा जनचेतनाका कार्यक्रमहरूलाई तीव्र पारिनेछ। "प्रदुषकले नै वेहोर्ने" भन्ने सिद्धान्त अनुरूप आवश्यक संयन्त्रको विकास एवम् कार्यान्वयन गर्दै वातावरणीय सीमाको निरूपण गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	वातावरण संरक्षणको लागि "प्रदुषकले नै वेहोर्ने" भन्ने सिद्धान्त अनुरूप आवश्यक संयन्त्रको विकास एवम् सञ्चालन	√	√	√	√	
२	वातावरणमैत्री उद्योगलाई प्राथमिकता र प्रोत्साहन	√	√	√	√	
३	सवारीसाधनको आयु, प्रदूषण मापदण्ड र क्षमताको पुनर्मापन	√	√	√	√	
४	झोलामुक्त प्रदेशको निर्माण	√	√	√	√	
५	बायोग्याँस, सुधारिएको चुलो, ग्यासीफायर, बायोब्रिकेटजस्ता किफायती जैविक ऊर्जाहरूको प्रवर्द्धन एवम् बिस्तार	√	√	√	√	
६	फोहरमैलाको उपयुक्त व्यवस्थापन गर्न फोहर पुनःप्रशोधन, पुनःप्रयोग र प्राङ्गारिक मल उत्पादन र शुन्य फोहर लगायतका कार्यक्रम सञ्चालन	√	√	√	√	√
७	अन्तरपालिका साझेदारीमा एकीकृत फोहरमैला व्यवस्थापन केन्द्रको स्थापना	√	√	√	√	√
८	वैकल्पिक तथा नवीकरणीय ऊर्जाबाट चल्ने सवारीसाधनहरूलाई प्रोत्साहन	√	√	√	√	√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
९	अस्पताल र अन्य संस्थागत हानिकारक फोहरहरू व्यवस्थापन	√	√	√	√	√
१०	प्राङ्गारिक मल तथा जैविक विषादी उद्योग स्थापना	√	√	√	√	√
११	प्रमुख शहरी क्षेत्रमा विद्युतीय सार्वजनिक यातायात प्रणाली सञ्चालन	√	√	√	√	√
१२	प्रमुख शहर, नगरपालिका र गाउँपालिकामा खानेपानी, ढल निकास तथा प्रशोधन आयोजनाहरूको अध्ययन गरी निर्माण	√	√	√	√	
१३	प्रदूषण मापन र फोहर वस्तुको प्रयोग एवम् नवीकरणीय ऊर्जासम्बन्धी प्रादेशिक अनुसन्धान तथा विकास केन्द्रको स्थापना		√	√		
१४	वातावरणीय चेतना र सावधानी, फोहर बर्गीकरण र फोहोर व्यवस्थापनसम्बन्धी शैक्षिक तथा जनचेतनाका कार्यक्रमहरू सञ्चालन	√	√	√	√	√

१०. अपेक्षित उपलब्धि

प्रदेशमा वायुप्रदूषण नियन्त्रण गरी नागरिकहरूको स्वास्थ्यमा सुधार आएको हुने, नदीहरूमा हुने प्रदूषण घटेर त्यहाँको परिस्थितिकीय प्रणाली स्वस्थ भई तिनमा आश्रित मानिसको जीविका र जलीय जीवहरूको सुरक्षा भएको हुने, फोहोरमैलाको व्यवस्थापन र पुनर्प्रयोग साथै वैकल्पिक ऊर्जाका कार्यक्रमहरू सञ्चालन भएर स्थानीयवासी खासगरी गरीब वर्गलाई रोजगारी मिलेको र उद्घमी किसानहरूलाई अर्थोपार्जनमा प्रोत्साहन पुगेको हुने।

७.३ जलवायु परिवर्तन अनुकूलन तथा न्यूनीकरण

१. पृष्ठभूमि

अहिले भइरहेको जलवायु परिवर्तनलाई मानव इतिहासकै सबैभन्दा ठूलो वातावरणीय समस्या मानिन्छ। जलवायु परिवर्तनले नेपालमा विविध प्रकारका वातावरणीय परिवर्तनहरू देखापरेका छन्, जस्तै हिउँ र हिमनदी पगलने क्रममा तीब्रता, औसत तापक्रममा वृद्धि, चरम मौसमी अवस्थाहरू आदि। खडेरी, अति वर्षा, बाढी, पहिरो, रोग-व्याधि, चट्याङ, आगलागी आदिले मानव स्वास्थ्य, कृषि, खाद्य सुरक्षा, वन, जैविक विविधता, भौतिक संरचना आदि सबै क्षेत्रमा र अन्ततः देशको अर्थतन्त्र र सामाजिक व्यवस्थामा नकारात्मक प्रभाव विशेषत तीव्र गतिमा भइरहेको जलवायु परिवर्तनको पछाडि मानवीय क्रियाकलापहरू जस्तै औद्योगिकीकरण, जैविक ईन्धन प्रयोग गर्ने यातायातका साधनहरूको बढ्दो प्रयोग र भौतिक पूर्वाधार निर्माण, वनजङ्गल विनाश बढी जिम्मेवार रहेको छ। विश्वको कुल हरितगृह ग्याँस उत्सर्जनमा नेपालको योगदान न्यून १०.०२७ प्रतिशत(छ)। तर जलवायु परिवर्तन देशहरूको साँध-सिमानाभिन्न सीमित रहन्न।

नेपालले जलवायु परिवर्तन सम्बद्ध अन्तर्राष्ट्रिय सम्झौता र सन्धिहरूमा सम्मिलन हुँदै तदनुसार जलवायु परिवर्तन नीति २०११, राष्ट्रिय अनुकूलन कार्यक्रम २०१०, स्थानीय अनुकूलन कार्ययोजना २०११ र राष्ट्रिय अनुकूलन योजना २०१७ जस्ता राष्ट्रिय नीति तथा संस्थागत संयन्त्रहरूको व्यवस्था गरेको छ। यी नीतिहरूमा जलवायु परिवर्तनको असर न्यूनीकरण गर्न हरित विकासको अवधारणालाई आत्मसात् गरिएको छ र अनुकूलनका रणनीतिक कार्यक्रमहरूको तर्जुमा, कार्बन व्यापारको थालनी, वातावरणीय संवेदनशीलताका मुद्दाहरूको आन्तरिकीकरण र सम्बोधनजस्ता प्रयासहरू भइरहेका छन्। यस क्षेत्रमा लगानी यकिन गर्न जलवायु परिवर्तन बजेट सङ्केतको व्यवस्थासमेत गरिएको छ। नेपालले सन् २०१५ मा भएको

जलवायु परिवर्तनसम्बन्धी पेरिस सम्झौता कार्यान्वयन प्रारम्भ गरेको छ। वातावरणीय प्रभाव मूल्याङ्कनलाई संस्थागत गर्ने प्रयत्न भएको छ। वायुको गुणस्तरसम्बन्धी मापदण्ड एवम् नेपाल सवारी प्रदूषणसम्बन्धी मापदण्डहरू निर्धारण गरी कार्यान्वयनमा ल्याइएको छ। क्योटो प्रोटोकल अन्तर्गत कार्बन व्यापारबाट नेपालले आम्दानी प्राप्त गर्न सुरु गरिसकेको छ।

प्रदेशस्तरमा न्यून कार्बनमुखी तथा वातावरणमैत्री विकास प्रक्रिया र हरितक्षेत्र प्रवर्द्धन प्रदेशको कार्यक्षेत्रमा पर्छन्। यस्ता नीति, ऐन, नियम, मापदण्ड तयार गरी प्रभावकारी रूपले कार्यान्वयन हुनु आवश्यक छ।

२. वस्तुगत स्थिति

सन् २०१२ मा प्रकाशित एक प्रतिवेदनले नेपाललाई जलवायु परिवर्तनका कारण विश्वमै चौथो संकटग्रस्त मुलुकमा राखेको छ। नेपालले सन् २०१० मा तयार गरेको जलवायु परिवर्तनसम्बन्धी राष्ट्रिय अनुकूलन कार्यक्रमले कृषि र खाद्य सुरक्षा, जलश्रोत र ऊर्जा, वन र जैविक विविधता, जनस्वास्थ्य, शहरी बसोवास र पूर्वाधार, जलवायु सिर्जित प्रकोपजस्ता ६ क्षेत्रहरूलाई बढी जोखिमजन्य क्षेत्रहरूको रूपमा परिभाषित गरिसकेको छ।

नेपालको तापक्रम वर्षेनि ०.०६ डिग्री सेल्सियसले बढिरहेको छ। प्रदेशको उच्च पहाडी क्षेत्रहरू रसुवा र दोलखामा अझै बढी ०.८६ डिग्री सेल्सियस, भित्री मधेस चितवनमा ०.२१ डिग्री सेल्सियस र अन्य बाँकी स्थानमा सरदर ०.०५ डिग्री सेल्सियसका दरले वार्षिक तापक्रममा वृद्धि देखिएको छ। समग्रमा नेपालमा भइरहेको वर्षाको प्रवृत्ति स्पष्ट छैन तथापि काठमाण्डौबाहेक अन्य स्थानमा केही मात्रामा घटिरहेको देखिन्छ। सिन्धुली र रामेछापमा खडेरी लाग्ने गरी ९.९ मि.मि प्रतिवर्षका दरले वर्षा घटिरहेको पाइन्छ। नेपालका पहाडी जिल्लाहरूमा १.० डिग्री तापक्रम बढ्दा झाडा पखालाको सङ्क्रमण दर ९ प्रतिशत देखि १३ प्रतिशतसम्म बढ्ने गरेको अनुमान छ।

३. समस्या र चुनौती

जलवायु परिवर्तनले प्रदेशमा मुख्यतः जलस्रोत तथा ऊर्जा, पूर्वाधार र शहरी विकास, मानव स्वास्थ्य, कृषि तथा खाद्य सुरक्षा र वन तथा जैविक विविधतामा असर पारिरहेको छ। मूल सुकेर पानीको अभाव हुँदा अन्यत्र बसाइँसराइ बढिरहेको छ। यस्तै हिमालको हिउँ पगल्ने, मौसम छिनछिनमा परिवर्तन हुने घटनाले जलविद्युत तथा वैकल्पिक ऊर्जाको स्रोतमा पनि असर पारिरहेको छ। लामो समयसम्म वर्षा नहुँदा जलाशयहरू नभरिने अनि अकस्मात अत्यधिक पानीले बाढी र पहिरो आएर जलायशमा माटो, ढुङ्गा र बालुवा थुप्रिँदा जलविद्युत परियोजना प्रभावित भइरहेका छन्। अप्रत्यासित रूपमा हुने बाढीपहिरो लगायतका विपद्का घटनाले नदी तथा खोला किनार भएर निर्माण गरिएका राजमार्ग, बाटो र पुलपुलेसाजस्ता विकासका पूर्वाधार बगाउने र पुरिने क्रम जारी छ। पछिल्लो चरणमा जलवायु परिवर्तनको प्रभावले विकसित भएका घटनालाई आधार मानेर बस्ती विकास हुने वा विकास भइरहेको पनि बढिरहेको छ। जलवायु परिवर्तनले गर्दा डेंगु, मलेरिया, टाइफाइड, झाडा पखालाजस्ता रोगको सङ्क्रमण बढेको छ। नयाँ-नयाँ रोग देखिनु, तराईमा देखिँदै आएका रोग पहाडी भेगमा पनि देखिन थालेका छन्। जलवायु परिवर्तनको प्रत्यक्ष असर कृषिक्षेत्रमा पारिरहेको छ। उचित समयमा पानी नपर्ने, लामो समयसम्म खडेरी लाग्ने, अतिवृष्टि भै बाढीपहिरो जाने, उष्ण प्रदेशीय रोग कीराहरूको फैलावट हुने, खेत र वनमा मिचाहा प्रजातिको विस्तारले खेती प्रणालीमा प्रत्यक्ष असर पारिरहेको छ। जलवायु परिवर्तनको असर स्वरूप वनमा मिचाहा प्रजातिको वृद्धि भएको छ। कतिपय लोपोन्मुख वन्यजन्तु तथा वनस्पतिको वासस्थान विग्रँदा उनीहरू सङ्कटमा पर्दैछन्। उपलब्ध पानीको संचय गर्नु, मानवीय क्रियाकलापहरूबाट हुने विपद् व्यवस्थापन गर्नु, बढ्दो रोग कीरा र किटाणुहरूको नियन्त्रण गर्नु, खाद्य सुरक्षा गर्नु र मिचाहा प्रजातिको वनस्पतिको रोकथाम गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती रहेका छन्।

४. सम्भावना र अवसर

दिगो विकासका लक्ष्यहरूमा प्रादेशिक सरकारबाट प्रतिबद्धता जाहेर गर्नु, प्रादेशिक सरकारबाट स्वच्छ वातावरणमा बाँच्न पाउने हकको सुनिश्चता गर्नु, जलवायु परिवर्तनका क्षेत्रमा दाताहरूको सहयोग भित्रिनु र जलवायु परिवर्तन बहुसरोकारको विषय बन्नु नयाँ अवसरहरू हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

जलवायु परिवर्तन अनुकूलन र न्यूनीकरण मार्फत स्वच्छ एवम् स्वस्थ प्रदेश निर्माण

६. लक्ष्य

जलवायु परिवर्तनका असरहरू न्यूनीकरण तथा अनुकूलन भई हरित गृह ग्याँस उत्सर्जनमा कमी आउने।

७. उद्देश्य

पानीको दिगो उपलब्धता, जलवायुजन्य विपद्का असरहरूको न्यूनीकरण, जलवायु परिवर्तनले मानव स्वास्थ्यमा पार्ने असरको नियन्त्रण र जलवायु परिवर्तनले कृषि र खाद्यान्न सुरक्षामा पारेको असुरसित अनुकूलित हुँदै त्यसबाट सिर्जित लाभ र जलवायु कोष र संयन्त्रहरूबाट हुने लाभको अधिकतम उपयोग गर्नु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
७.३.१ उपलब्ध पानीका श्रोतहरूको संरक्षण तथा वैकल्पिक उपायहरू अवलम्बन गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> पानीका स्रोतहरूको पहिचान गर्ने, संरक्षण गर्ने र वर्षातको पानी सङ्कलन गर्ने प्रविधि र पद्धतिलाई प्रवर्द्धन गरिनेछ। जलाधार पुनरुत्थान र नदीहरूको प्राकृतिक बहाव कायम गर्ने कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछन्। स्थानीय अनुकूलन कार्ययोजनालाई व्यापक बनाई अनुकूलनलाई विकास कार्यक्रमसित आबद्ध गरिनेछ। स्थानीय र आधुनिक ज्ञानलाई संयोजन गर्दै जलस्रोत र ऊर्जाको व्यवस्थापनमा अनुकूलनका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। नदी, ताल, पोखरी र सीमसार क्षेत्रको संरक्षणका कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ।
७.३.२ जलवायु ज्ञान व्यवस्थापन तथा मौसम पूर्वानुमान प्रणालीलाई सुदृढीकरण गर्दै विपद् न्यूनीकरण गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> मौसम पूर्वानुमान प्रणाली र तथ्याङ्क सङ्कलन पद्धतिलाई संघीय सरकारसँग सहकार्य गरी स्वचालित प्रणाली) उच्च प्रविधियुक्त मौसमी राडार, माथिल्लो वायुमण्डलको सूचना लिने, चट्याङसम्बन्धी सूचना दिने संयन्त्र र उच्च गतिको कम्प्युटर प्रणाली(मा स्तरोन्नति गरिने छ र प्रदेशस्तरको जल तथा मौसम सूचना सेवा केन्द्रको स्थापना गरिनेछ। आधुनिक प्रविधि अनुरूप बाढी भविष्यवाणी प्रणालीको सुरुवात गरिनेछ। संघको सहकार्यमा उच्च क्षेत्रमा अवस्थित जोखिममा रहेका हिमतालहरूको सर्वेक्षण, अनुगमन एवम् जोखिम न्यूनीकरणका कार्यहरू गरिनेछ। प्रमुख पर्यटकीय क्षेत्रहरूमा जलवायुजन्य प्रकोपका घटनाहरू केलाउने तथा जोखिम न्यूनीकरण एवम् पूर्वतयारी योजना तयार गरी कार्यान्वयन गरिनेछ। बाढी र नदी कटानको समस्यालाई समाधान गर्न तटबन्ध कार्यक्रमलाई प्रभावकारी

रणनीति	कार्यनीति
७.३.३ चरम जलवायुजन्य घटनाहरूको पहिचान गरी मानवस्वास्थ्यको रक्षा गर्ने।	<p>गरिनेछ र पूर्वाधार विकासलाई वातावरणमैत्री बनाइनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> जलवायु परिवर्तन शिर्षक अन्तर्गत छुट्टयाइने बजेटको ठूलो हिस्सा स्थानीय तहमा खर्च गरिनेछ। प्रदेशमा रहेका अस्पताल र स्वास्थ्य सेवा केन्द्रहरूमा जलवायु परिवर्तनले ल्याएका र ल्याउन सक्ने रोगहरूको निदान गर्नसक्ने क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ। जलवायु परिवर्तनले मानव स्वास्थ्यमा पारेको प्रभाव र अनुकूलनसम्बन्धी तालिम लगायत चेतन कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। जलवायु परिवर्तनबाट फैलिन सक्ने रोगव्याधि र सोको नियन्त्रणमा स्वास्थ्य व्यवसायी र सम्बन्धित सरोकारवालाहरूको अभिमुखीकरण एवम् क्षमता विकास गरिनेछ।
७.३.४ जलवायुमैत्री ऊर्जा र कृषि प्रविधिको छनौट र विस्तार गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> हरित अर्थतन्त्रमा आधारित विकास अवधारणालाई आर्थिक क्रियाकलापका विविध क्षेत्रहरूमा लागू गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ। कृषि (पशुपन्छीसमेत) जैविक विविधताको संरक्षण गर्दै जलवायु परिवर्तनका असर न्यूनीकरण गर्न अनुसन्धानमा आधारित वातावरणमैत्री र जलवायु सशक्त कृषि प्रविधिको विकास र विस्तार गरिनेछ। जलवायु परिवर्तनबाट प्रभावित क्षेत्रमा उपयुक्त कृषि प्रणाली र वैकल्पिक ऊर्जा प्रविधिको पहिचान, प्रवर्द्धन र प्रसार गरिनेछ। स्थानीय पराम्परागत ज्ञानलाई प्रयोग गरेर कृषि व्यवस्थापनमा अनुकूलनका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। विश्वविद्यालय र अनुसन्धान केन्द्रहरूमार्फत् खडेरी वा अधिक वर्षा सहनसक्ने बालीहरूको अनुसन्धान तथा विकास र बाली विविधीकरण, एवम् जलवायुमैत्री मासु उत्पादकत्व वृद्धि गर्ने उपायहरूको विकास गरिनेछ।
७.३.५ अन्तर्राष्ट्रिय अभिसन्धिहरूबाट बनेका जलवायुकोष र संयन्त्रहरूबाट उपलब्ध वित्तीय सहयोग तथा लाभ हासिल गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> सामुदायिक वनमार्फत् स्वच्छ विकास संयत्रबाट लाभ लिने। स्थानीय पराम्परागत ज्ञानलाई आधार मानेर जैविक विविधता व्यवस्थापनमा अनुकूलनका कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। मिचाहा प्रजातिको नियन्त्रणको लागि अनुसन्धानसहितको विशेष कार्यक्रम सञ्चालन गरिनेछ। बहुउपयोगी र व्यवसायिक प्रजातिहरूको वृक्षरोपणको अभियान व्यापक गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	नदी, ताल, पोखरी र सीमसार क्षेत्रको लगायतका पानीका स्रोतहरूको	√	√	√	√	√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहाय्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
	पहिचान, संरक्षण र वर्षातको पानी सङ्कलन गर्ने प्रविधि र पद्धतिको प्रवर्द्धन					
२	जलाधार पुनरुत्थान र नदीहरूको प्राकृतिक बहाव कायम गर्ने कार्यक्रमहरू सञ्चालन	√	√	√	√	√
३	प्रदेशस्तरको जल तथा मौसम सूचना सेवा केन्द्रको स्थापना	√	√	√	√	√
४	मिचाहा प्रजातिको वनस्पतिको नियन्त्रणको लागि अनुसन्धानसहितको विशेष कार्यक्रम सञ्चालन		√			
५	बहुउपयोगी र व्यवसायिक प्रजातिहरूको वृक्षरोपणको अभियान व्यापक रूपमा सञ्चालन	√	√			
६	जलवायु परिवर्तनले मानव स्वास्थ्यमा पारेको प्रभाव र अनुकूलनसम्बन्धी तालिम लगायत चेतन कार्यक्रम सञ्चालन	√	√	√	√	√
७	वैकल्पिक ऊर्जा प्रविधिको पहिचान, प्रवर्द्धन र प्रसार	√	√	√	√	√
८	स्थानीय पराम्परागत ज्ञानमा आधारित कृषि तथा जैविक विविधता व्यवस्थापनमा अनुकूलनका कार्यक्रम सञ्चालन	√	√	√	√	√
९	जोखिममा रहेका हिमतालहरूको सर्वेक्षण, अनुगमन एवम जोखिम न्यूनीकरणका कार्यहरू सञ्चालन	√	√	√		
१०	प्रमुख पर्यटकीय क्षेत्रहरूमा जलवायुजन्य प्रकोप न्यूनीकरण एवम पूर्वतयारी योजना तयार गरी कार्यान्वयन	√	√	√	√	√
११	हरित अर्थतन्त्रमा आधारित विकास अवधारणाको संस्थागत	√	√	√	√	√
१२	वातावरणमैत्री र जलवायु सशक्त कृषि प्रविधिको विकास र बिस्तार	√	√	√	√	√
१३	खडेरी वा अधिक वर्षा सहनसक्ने बन तथा बालीहरूको अनुसन्धान तथा विकास	√	√	√	√	√
१४	आधुनिक प्रविधि अनुरूप बाढी भविष्यवाणी प्रणालीको सुरुवात	√	√	√		√
१५	स्थानीय जलवायु परिवर्तन अनुकूलन कार्ययोजनाको कार्यान्वयन	√	√	√	√	√

१०. अपेक्षित उपलब्धि

जलवायु परिवर्तनसम्बन्धी दक्ष जनशक्तिसहित संस्थागत व्यवस्था भई प्रादेशिक अनुकूलन योजना तयार भएर कार्यान्वयनमा गएको हुने, पानीका मौजुदा श्रोत संरक्षण तथा विकल्पहरू बनेको हुने, मौसम मापन केन्द्रहरूको स्थापना भई पूर्वानुमान तथा सूचना सेवा सञ्चालनमा आई जलवायुजन्य विपद्का असरहरूको न्यूनीकरण भएको हुने, जलवायु परिवर्तनसम्बन्धी सचेतना वृद्धि र जलवायु परिवर्तनले स्वास्थ्यमा ल्याउने समस्याको पहिचान तथा नियन्त्रणमा पहल भएको हुने, कृषि तथा खाद्यान्न सुरक्षामा पारेको असरसित अनुकूलित हुँदै त्यसबाट सिर्जित लाभ र जलवायु कोष तथा अन्य संयन्त्रहरूबाट हुने लाभको अधिकतम् उपयोग गरिएको हुने।

७.४ विपद् जोखिम व्यवस्थापन

१. पृष्ठभूमि

विपद् प्राकृतिक वा मानवीय क्रियाकलापको परिणामस्वरूप विकसित आकस्मिक वा अप्रत्याशित घटना हो। तथापि, विपद्को प्रकृति, सुरक्षा, पूर्वतयारी तथा न्यूनीकरण लगायतका विषयको बुझाई र पूर्वतयारी भए मानवीय, आर्थिक तथा भौतिक क्षति घटाउन सकिन्छ। विगत वर्षहरूमा नेपालसहित विश्वव्यापी रूपमै र खास गरेर प्रदेशमा प्राकृतिक प्रकोपहरूमा भएको वृद्धि र क्षतिले यो विषय विकास योजनामै आबद्ध गर्नुपर्ने देखिएको छ। विपद् व्यवस्थापनको विषय सामुदायिक सशक्तीकरण, वातावरण संरक्षण तथा स्रोतको दिगो उपयोगसम्बन्धी चेतना र कार्यक्रमसँग जोड्ने हो भने विपद्बाट हुने क्षति घटाउन सकिन्छ।

संघीय संरचना अनुसार प्रदेशस्तरमा विपद् व्यवस्थापन, जोखिम न्यूनीकरण र विपद् प्रतिकार्य, प्रादेशिक विपद् कोष स्थापना र सञ्चालन, स्थानीय विपद् कोषमा सहयोग, तथ्याङ्क व्यवस्थापन र अध्ययन तथा अनुसन्धान, विपद् जोखिम क्षेत्र नक्साङ्कन र बस्ती स्थानान्तरणसम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानून, मापदण्ड र योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र नियमन प्रदेशको कार्यक्षेत्रमा समावेश गरेको छ।

२. वस्तुगत स्थिति

नेपाल विपद्का हिसावले विश्वको माथिल्ला २० राष्ट्रहरूको सूचीमा पर्दछ। विपद्का कारण नेपालमा वर्षेनी धनजनको ठूलो क्षति हुने गरेको छ। मुख्यतः भूकम्प, अतिवृष्टि, बाढी, पहिरो, हावाहुरी, चट्याङ्, आगलागी, खडेरी, महामारी, शीतलहर र हिमताल विष्फोटन हुनसक्ने कारण नेपाल विपद्को उच्च जोखिममा रहेको छ। यो प्रदेश पनि विपद्को उच्च जोखिममा रहेको प्रदेश हो। वर्षातको समयमा बाढी, पहिरो र अति भारी वर्षाका कारण वर्षेनी यस प्रदेश अन्तर्गत धादिङ्ग, चितवन र मकवानपुरमा पर्ने प्रमुख सडकखण्ड, रसुवाको राम्चे र टिमुरे खण्ड, काभ्रे-सिन्धुपाल्चोक सडकखण्ड आदि अवरुद्ध हुन गई सवारी साधनको आवागमनमा बाधा पुग्ने र जनजीवन प्रभावित हुने गरेको छ। २०७२ सालको भूकम्पबाट सबैभन्दा बढी प्रभावित भई धन-जन र विश्व सम्पदा सूचीमा परेका ऐतिहासिक धरोहरको व्यापक क्षति भएको थियो। भूकम्पबाट रु .७०६ अर्ब बराबरको नोकसानी भएको थियो जसको ठूलो भाग यही प्रदेशको थियो। भूकम्पबाट यस प्रदेशमा ८९६० जनाको ज्यान गएको थियो, जुन कुल मृत्युको ९३.८ प्रतिशत हो। विपद्को समयमा मानवीय सहायताका कार्य गर्ने विभिन्न संघ संस्थाहरूको सहयोग लिने गरिएको छ। विपद् जोखिम न्यूनीकरण गर्न, खोज, उद्धार र तत्काल राहत कार्यलाई व्यवस्थित गर्न र विकास संरचना सुरक्षित गर्न विकासका सबै प्रक्रियामा विपद् व्यवस्थापनलाई मूलप्रवाहीकरण गर्ने कार्यलाई प्रभावकारी बनाई विषयगत/क्षेत्रगत रूपमा लागू गरी दिगो र सुरक्षित विकासको अवस्था सुनिश्चित गर्नु जरुरी छ।

३. समस्या र चुनौती

यस प्रदेशका स्थानीय तहहरू बाढी, पहिरो र अतिवृष्टिजस्ता सूचकका आधारमा उच्चजोखिमको स्थानमा रहेको देखिन्छ। समग्रमा उच्च पहाडी भागमा वन विनाश, भिरालो जमिनमा गरिने खेती तथा नदीले छाडेको जमिनमा हुने बसोबासजस्ता प्रक्रियाबाट भू-उपयोगमा परिवर्तन आएको देखिन्छ। संवेदनशिल भौगर्भिक बनावट, भिरालो जमिनमा खेती गर्ने अवस्था, बह्दो चरिचरन र भू-संरक्षण सम्बन्धमा अपर्याप्त व्यवस्था आदिले बाढी तथा पहिरोजस्ता प्राकृतिक प्रकोपहरू देखिएका छन्। भूकम्पीय दृष्टिकोणले पनि यो प्रदेश उच्च जोखिममा पर्दछ।

प्रदेशमा हुने विपद्का सबै कारणहरूको असर तथा प्रभावको अध्ययन गरी क्षेत्रगत विकास योजना तर्जुमा गर्नु, पूर्वाधार विकासलाई आर्थिक विकासको बाधक बन्न नदीन स्थानीय तहका सेवा केन्द्र तथा बस्तीहरूको आर्थिक-सामाजिक अवयवलाई

आर्थिक उत्पादनसँग जोड्नु, सुरक्षित बस्ती विकासको अवधारणाभित्र शहर तथा बस्ती विकासको योजना तर्जुमा र कार्यान्वयन गर्ने सम्पूर्ण भौतिक पूर्वाधारसहितको विपद् उत्थानशील एकीकृत बस्ती विकास गर्नु, विपद् प्रतिकार्यको समयमा संलग्न सरकारी निकाय, गैरसरकारी संस्था तथा नागरिकबीचको अन्तरसम्बन्ध कायम गरी समन्वय गर्नु र पीडितको पहिचान, पीडितलाई तत्काल राहत तथा पुनर्स्थापनासम्बन्धी कार्यमा एकरूपता ल्याई दोहोरोपना सिर्जना हुन नदीनु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौती रहेका छन्।

४. सम्भावना र अवसर

दिगो तथा सुरक्षित विकासका लक्ष्यहरूमा प्रदेश सरकारको प्रतिबद्धता रहनु, प्रादेशिक र स्थानीय पूर्वाधार विकास तथा एकीकृत बस्ती र सहरी विकास कार्यकाबीच तालमेल गर्नु पर्ने व्यवस्था गरिनु, सबै प्रकारका विपद्को सामना गर्न आधुनिक प्रविधियुक्त संरचना, मापदण्ड र आवश्यक दक्ष जनशक्तिको विकास गरिनु, विपद् प्रतिकार्य कार्ययोजना तर्जुमा लगायतको पूर्वतयारीका लागि नीतिगत तथा संस्थागत सुदृढीकरण गरिनु विपद् व्यवस्थापनको लागि महत्वपूर्ण अवसरहरू हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

विपद् उत्थानशील प्रणाली र पूर्वाधार; जीवन र सम्पत्ति सुरक्षाको आधार।

६. लक्ष्य

विपद्बाट हुने मानवीय, भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक र पर्यावरणीय क्षतिमा कमी ल्याउने।

७. उद्देश्य

- प्राकृतिक तथा गैरप्राकृतिक विपद्बाट जीवन तथा सम्पत्ति, स्वास्थ्य, जीविकोपार्जन तथा उत्पादनका साधनहरू, भौतिक एवम् सामाजिक पूर्वाधार, सांस्कृतिक एवम् वातावरणीय सम्पदामा हुने क्षतिको उल्लेख्य रूपमा न्यूनीकरण गर्नु,
- विद्यमान विपद् जोखिम तथा क्षतिको न्यूनीकरण गर्न विपद् जोखिम रोकथाम, पूर्वतयारी, प्रतिकार्य एवम् पुनरस्थापना तथा पुनर्निर्माणको सुदृढीकरण र उत्थानशीलता अभिवृद्धि गर्नु र
- जलवायु परिवर्तनबाट उत्पन्न एवम् अन्य कारणबाट उत्पन्न जोखिमको रोकथाम गर्नु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
७.४.१ विपद् जोखिमको बुझाई अभिवृद्धि गर्ने तथा सबै तह र वर्गमा विपद् जोखिमसम्बन्धी जानकारीको पहुँच सुनिश्चित गर्दै पूर्वतयारी सुदृढ गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • हरेक प्रकोपको सम्मुखता, सङ्कटासन्नता र जोखिमको आँकलन तथा नक्साङ्कन गरिनेछ। • बहुप्रकोप जोखिम आँकलनको लागि अन्तरनिकाय समन्वय संयन्त्र स्थापना गरिनेछ। • प्रभावकारी विपद् व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको विकास तथा सूचना प्रवाह गरिनेछ। • विपद् जोखिम बारे बुझाइका लागि क्षमता अभिवृद्धि गर्न विभिन्न अध्ययन, अध्यापन, अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरिनेछ। • जोखिमपूर्ण अवस्थामा रहेका खोला, खोल्सी, खहरे आदिको तटवन्धन र बस्ती संरक्षणका कार्यमा स्थानीय तह र समुदायसँग सहकार्य गरिनेछ।
७.४.२ विपद् जोखिम बुझ्न र	<ul style="list-style-type: none"> • प्रादेशिक विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापन प्राधिकरण स्थापना गरिनेछ। • विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापनका लागि कानुनी र नियामक संरचनाको

रणनीति	कार्यनीति
<p>न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापन गर्न विपद् जोखिम व्यवस्थापनमैत्री शासनको सुदृढीकरण गर्ने।</p> <p>७.४.३ विपद् जोखिम न्यूनीकरणमा सार्वजनिक तथा निजी लगानी वृद्धि गरी उत्थानशीलता अभिवृद्धि गर्ने।</p> <p>७.४.४ “अझ राम्रो र अझ बलियो” अवधारणा अनुरूप विपद्पश्चातको पुनर्लाभ, पुनःस्थापना र पुनर्निर्माण सुनिश्चित गर्ने</p>	<p>निर्माण गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> विपद् जोखिम सुशासनको लागि क्षमता अभिवृद्धि गर्दै विपद् जोखिम व्यवस्थापनमा संलग्न संघीय सरकार र अनुसन्धान संस्थाहरूसँग सहकार्य र साझेदारी विकास गरिनेछ। विपद् जोखिम व्यवस्थापनका विभिन्न प्रक्रियामा सबैको प्रतिनिधित्व र अर्थपूर्ण सहभागिता वृद्धि गरी समावेशिताको सुनिश्चितता गरिनेछ। सार्वजनिक सेवा, जीविकोपार्जनका साधनहरू तथा भौतिक पूर्वाधारहरूको गुणस्तरीय निर्माण र प्रवलीकरणमा लगानी वृद्धि गरी उत्थानशीलता प्रवर्द्धन गरिनेछ। प्रदेश तथा स्थानीयतहमा विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापनका लागि कोषको व्यवस्था गरिनेछ। निजी क्षेत्र, बैंक, सहकारी तथा सामुदायिक संस्थाहरूले विपद् जोखिम न्यूनीकरणमा गर्ने लगानीका लागि सहज व्यवस्था मिलाइनेछ। जोखिम हिस्सेदारी, विमा तथा सामाजिक सुरक्षामार्फत् विपद् उत्थानशीलता अभिवृद्धि गरिनेछ। विपद् जोखिम न्यूनीकरणका लागि खोरिया र भिरालो जमिनमा गरिने खेतीलाई निरूत्साहित गरी फलफुल, अमृसो, बाँस, निगालो, डालेघाँस र पोषिलो जातको अन्य घाँस खेती गर्न किसानहरूलाई प्रोत्साहित गरिनेछ। प्रदेश तहमा दक्ष एवम् श्रोतसाधनयुक्त एकीकृत संस्थामार्फत् खोज र उद्धार क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ। विपद्पश्चात पुनर्लाभ, पुनर्निर्माण र पुनर्स्थापनाका लागि स्तरीय निर्माण सामग्रीको आपूर्ति गर्न र निर्माण कार्यलाई जोखिम प्रतिरोधक बनाउन निर्माण कार्यमा संलग्न व्यवसायी तथा प्राविधिकहरूको क्षमता अभिवृद्धि गरिनेछ। नयाँ प्रविधिको अनुकूलन, अनुसन्धान र विकास गरिनेछ साथै विपद् जोखिमको आधारमा जमिनको वर्गीकरण गरी उच्च जोखिमयुक्त क्षेत्रमा संरचना निर्माणमा रोक लगाईनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	प्रकोपको सम्मुखता, सङ्घटनसन्नता र जोखिमको आँकलन तथा नक्साङ्कन	✓	✓	✓	✓	✓
२	प्रभावकारी विपद् व्यवस्थापन सूचना प्रणालीको विकास तथा सूचना प्रवाह	✓	✓	✓	✓	✓
३	जोखिमपूर्ण अवस्थामा रहेका खोला, खोल्सी, खहरे आदिको तटवन्धन र	✓	✓	✓	✓	✓

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
	वस्ती संरक्षण					
४	प्रादेशिक विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापन प्राधिकरण स्थापना	√	√	√		
५	दिगो लगानी, जोखिम हिस्सेदारी, बिमा तथा सामाजिक सुरक्षामार्फत् विपद् उत्थानशील क्षमताको विकास	√	√	√	√	√
६	प्रदेश तथा स्थानीयतहमा विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापनका लागि कोषको व्यवस्था	√	√	√	√	√
७	विपद् जोखिम न्यूनीकरणका लागि खोरिया र भिरालो जमिनमा गरिने खेतीलाई निरूत्साहित गरी फलफुल, अमृसो, बाँस, निगालो, डालेघाँस र पोषिलो जातको अन्य घाँस खेती गर्न किसानहरूलाई प्रोत्साहन	√	√	√	√	√
८	आपतकालीन खोज र उद्धार क्षमताको विकास	√	√	√	√	√
९	विपद् जोखिम अध्ययन, अध्यापन, अनुसन्धान तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमहरू सञ्चालन	√	√	√	√	√
१०	विपद्पश्चात पुनर्लाभ, पुनर्निर्माण र पुनर्स्थापनाका लागि स्तरीय निर्माण सामग्रीको आपूर्ति गर्न र निर्माण कार्यलाई जोखिम प्रतिरोधक बनाउन निर्माण कार्यमा संलग्न व्यवसायी तथा प्राविधिकहरूको क्षमता विकास	√	√	√	√	√
११	विपद् जोखिमको आधारमा जमिनको वर्गीकरण गरी उच्च जोखिमयुक्त क्षेत्रमा संरचना निर्माणमा रोक लगाउने व्यवस्था	√	√	√	√	√

१०. अपेक्षित उपलब्धि

विपद् व्यवस्थापनसम्बन्धी कानून, नीति संस्थागत व्यवस्था र सोसँग सम्बन्धित क्षेत्रगत योजना, नीति तथा कार्यक्रम तर्जुमा गरी लागू भएको हुने, विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापनमा समन्वय गर्न एकीकृत संरचनाको स्थापना भएको हुने, विपद्को जोखिम न्यूनीकरण भएको हुने, विपद् पूर्वतयारी, जोखिम न्यूनीकरण, विपद् प्रतिकार्य लगायत विपद् व्यवस्थापनका विविध पक्षहरूलाई समेटेरी नीतिगत व्यवस्थामा समसामयिक परिवर्तन तथा कार्यविधिहरूको संशोधन, परिमार्जन र तर्जुमासमेत गरी कार्यान्वयनमा ल्याइएको हुने।

परिच्छेद—आठ

अन्तरसम्बन्धित क्षेत्र

८.१ श्रम तथा रोजगार

१. पृष्ठभूमि

नेपालको संविधानले श्रम र रोजगारीको हकलाई मौलिक हकको रूपमा स्थापित गरेको छ। संघीय सरकारले २०८० सालसम्ममा वाध्यात्मक रूपमा कामका लागि विदेश जान पर्ने स्थितिको सबै नेपालीको निमित्त अन्त हुने घोषणा गरेको छ। देशभित्र लाभप्रद रोजगारीका अवसरहरूको सिर्जना गर्ने र युवा जनशक्तिको व्यापक राष्ट्रिय उपयोगबाट नेपालले जनसाङ्ख्यिक लाभांश लिनुपर्नेमा आम सहमति देखिन्छ।

देशको कुल जनसङ्ख्यामा आर्थिक रूपले सक्रिय जनशक्तिको हिस्सा ५७ प्रतिशत छ। कुल जनसङ्ख्याको करिब २.३ प्रतिशत पूर्ण बेरोजगार र करिब ३० प्रतिशत अर्धबेरोजगार छन्। हाल वार्षिक ५ लाख १२ हजारभन्दा बढी युवाशक्ति श्रम बजारमा प्रवेश गर्छन्। तीनवर्ष अगाडिबाट संघीय सरकारले सुरक्षित, मर्यादित र प्रतिफलमुखी रोजगारीको व्यवस्थाको लागि राष्ट्रिय रोजगार नीति, २०७१ लागू गरेको छ। यसैगरी संघीय सरकारले वैदेशिक रोजगारीमा जानेहरूका लागि निःशुल्क प्रवेशाज्ञा र हवाई टिकटसम्बन्धी व्यवस्था, श्रम स्वीकृति दिने कार्यलाई सहज बनाउन अनलाइन सेवाको सुरुवात र वैदेशिक रोजगारीमा घरेलु कामदार पठाउनेसम्बन्धी निर्देशिका, २०७२ लागू गरेको छ। सामाजिक सुरक्षाको कार्यक्रमलाई व्यवस्थित गर्न योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा ऐन, २०७४ को कार्यान्वयन भइसकेको छ र सामाजिक सुरक्षा कोषको कार्यान्वयन पनि मंसिर, २०७५ बाट शुभारम्भ भएको छ।

प्रदेशको कार्यक्षेत्रमा रोजगार प्रवर्द्धनसम्बन्धी प्रादेशिक नीति, मापदण्ड, नियमन, श्रम शक्ति योजना र अध्ययन र श्रम शक्ति योजनाजस्ता विषय पर्दछन्।

२. वस्तुगत स्थिति

सन् २०११ मा नेपालमा क्षेत्रगत रोजगारीको स्थिति हेर्दा कृषिमा ६६.७ प्रतिशत, सामुदायिक काम र समाज सेवामा १२.८, व्यापार, रेष्टुरा तथा होटलमा ८.१ र निर्माणमा ३.२ प्रतिशत मानिसहरू रोजगार छन्। राष्ट्रिय जनसङ्ख्या तथा घरधुरी सर्वेक्षण २०११ अनुसार काठमाडौंमा आर्थिक दृष्टिले सक्षम जनसङ्ख्यामध्ये सबभन्दा बढी सेवा प्रदायकका रूपमा (२६ प्रतिशत) छन् भने दोस्रोमा हस्तकला र सम्बन्धित व्यापारीहरू (१७ प्रतिशत) छन्। त्यसैगरी, ललितपुर र भक्तपुरमा सबभन्दा बढी हस्तकला र सम्बन्धित व्यापारीहरू (क्रमशः २२ प्रतिशत र १९ प्रतिशत) छन् भने चितवनमा सेवा प्रदायक, हस्तकला र सम्बन्धित व्यापारीहरू, र प्रारम्भिक व्यापारीहरू १० र ११ प्रतिशतको हाराहारीमा छन्।

३. समस्या र चुनौती

श्रमबजार प्रवेश गर्ने पाँच लाख युवा जनशक्तिहरूका लागि रोजगारीका अवसरहरूको सिर्जना, मुलुकभित्र श्रम शक्तिको माग र आपूर्तिबीचको सन्तुलन, अन्तर्राष्ट्रिय श्रमबजारको पहिचान, गन्तव्य मुलुकहरूसँग द्विपक्षीय श्रम सम्झौता र त्यसको कार्यान्वयन, प्राप्त विप्रेषणको पूँजी निर्माणमा परिचालन, तालिमप्राप्त जनशक्तिको निमित्त कामको उपलब्धता, रोजगारीका अवसरसम्बन्धी सूचनामा रोजगारी चाहने मानिसहरूको पहुँच, योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा प्रणालीमा जनताको पहुँच श्रम र रोजगार क्षेत्रका समस्या र चुनौती हुन्।

४. सम्भावना र अवसर

प्रदेशमा कृषि, पर्यटन एवम् औद्योगिक आर्थिक गतिविधिहरू बढ्दै गएको, सेवा क्षेत्रमा (शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्तीय सेवा) सरकारी, निजी तथा सामुदायिक लगानी बढिरहेको, भूकम्प लगायत प्राकृतिक प्रकोपबाट क्षतिग्रस्त विद्यालय, तथा आवास संरचनाहरूको पुनर्निर्माण भइरहेको र राष्ट्रिय गौरवका परियोजनाहरू र अन्य पूर्वाधारहरूको निर्माण भइरहेकोले स्वदेशमै रोजगारीका अवसरहरू धेरै सिर्जना हुने अवस्था रोजगारीका लागि अवसरको रूपमा रहेको छ। साथै प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रम लगायत स्वरोजगारीका लागि सरकारले प्रदान गरेका वित्तीय प्रोत्साहनले पनि नयाँ रोजगारीका अवसर सिर्जना हुने अवसर देखिएको छ।

५. दीर्घकालीन सोच

गुणस्तरीय रोजगारीमा वृद्धि; प्रदेशको समृद्धि

६. लक्ष्य

बजारको माग सम्बोधन गर्ने गरी दक्ष तथा सिपयुक्त मानव संसाधनको विकास गरी रोजगारी एवम् स्वरोजगारका अवसरहरूको उपयोग हुने स्थिति बनाउने।

७. उद्देश्य

- १ . श्रम बजारको बेरोजगारी तथा अर्धबेरोजगारी न्यूनीकरण गर्न स्वदेशमै रोजगारीका अवसरहरू सृजना गर्नु,
- २ . व्यवसायिक सिपमूलक तालिमका अवसरहरू वृद्धि गर्दै प्रतिस्पर्धी श्रमशक्तिको विकास गर्नु, र
- ३ . गन्तव्य मुलुकसँग श्रम सम्झौता गरी वैदेशिक रोजगारीलाई बढी उत्पादक, सुरक्षित र व्यवस्थित बनाउँदै जानु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
८.१.१ श्रमिकको हक अधिकारको संरक्षण तथा असल श्रम सम्बन्ध स्थापना हुने कानुनी तथा आर्थिक आधार तयार गर्ने।	<ul style="list-style-type: none">• राष्ट्रिय रोजगार नीति तथा श्रमिकको हक एवम् रोजगारीको हकसम्बन्धी कानुन प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ।• सामाजिक सुरक्षा योजनाको प्रभावकारी कार्यान्वयनद्वारा असल श्रम सम्बन्धको विकास गरिनेछ।• विभिन्न क्षेत्रका कामदारहरूको निर्धारित न्यूनतम पारिश्रमिकको कार्यान्वयन सुनिश्चित गरिनेछ।• औद्योगिक प्रतिष्ठानहरूमा व्यवसायजन्य स्वास्थ्य तथा सुरक्षासम्बन्धी मापदण्ड लागू गरिनेछ।• प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रमलाई सफल बनाउन स्थानीय तह, निजी क्षेत्र र सरोकारवाला निकायहरूसँग समन्वय र सहकार्य गरिनेछ।
८.१.२ निजी तथा सामुदायिक /सहकारी क्षेत्रको निम्ति लगानीमैत्री वातावरण सृजना गरी स्वदेशमै	<ul style="list-style-type: none">• श्रम सघन उत्पादन क्षेत्र (जस्तै कृषि, साना तथा मझौला उद्योग, होमस्टे) मा लगानी विस्तार गरी रोजगारीका अवसर बढाइनेछ।• रोजगार सेवा केन्द्रलाई स्थानीय तमा विस्तार गरी व्यवस्थित रूपमा श्रम तथा रोजगार सूचना प्रणालीमा आम जनतामा पहुँच विस्तार गरिनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
पर्याप्त र मर्यादित रोजगारी एवम् स्वरोजगारीका अवसरहरू सिर्जना गर्ने ८.१.३ प्राविधिक शिक्षा, सिप तथा व्यवसायिक तालिमका माध्यमबाट प्रतिस्पर्धी, दक्ष श्रम शक्तिको उत्पादन गर्ने। ८.१.४ वैदेशिक रोजगारीलाई कम खर्चिलो, सुरक्षित र लाभप्रद बनाउने र आर्जित विप्रेषणलाई उत्पादनमूलक क्षेत्रमा परिचालन गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> कम्तीमा एउटा बहुविषयगत सिप विकास तालिम केन्द्र स्थापना गरिनेछ। तालिम प्राप्त जनशक्तिका निम्ति व्यवसायिक योजना, वित्तीय सहायता, र बजारमा पहुँचमा सरकारले सहयोग गरी व्यवसायमा आउन उत्प्रेरित गरिनेछ। विप्रेषणलाई पूर्वाधार विकासजस्ता उत्पादनशील क्षेत्रमा लगानी गर्न आवश्यक नीति र विश्वासिलो संयन्त्र बनाइनेछ। वैदेशिक रोजगारीमा जानेका निम्ति श्रम क्षेत्र निर्धारण गरी उपयुक्त पूर्व तालिमको व्यवस्था गरिनेछ। वैदेशिक रोजगारीलाई सुरक्षित र लाभप्रद बनाउन नियमित अनुगमनको व्यवस्था गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	राष्ट्रिय रोजगार नीति तथा श्रमिकको हक एवम् रोजगारीको हकसम्बन्धी कानून प्रभावकारी कार्यान्वयन	√	√	√	√	√
२	सामाजिक सुरक्षा योजनाको प्रभावकारी कार्यान्वयनमा सहयोग	√	√	√	√	√
३	औद्योगिक प्रतिष्ठानहरूमा व्यवसायजन्य स्वास्थ्य तथा सुरक्षासम्बन्धी मापदण्ड लागू गर्न सहयोग	√	√	√	√	√
४	रोजगारीका अवसर बृद्धिका कार्यक्रम सञ्चालन	√	√	√	√	√
५	कम्तीमा एउटा बहुविषयगत सिप विकास तालिम केन्द्र स्थापना र सञ्चालन	√	√	√	√	√
६	तालिम प्राप्त जनशक्तिका निम्ति व्यवसायिक योजना, वित्तीय सहायता, र बजारमा पहुँचमा सहयोग	√	√	√	√	√
७	विप्रेषणलाई उत्पादनशील क्षेत्रमा लगानी गर्न आवश्यक नीति र संयन्त्रको विकास	√	√	√	√	√
८	वैदेशिक रोजगारीमा जानेका निम्ति श्रम क्षेत्र निर्धारण गरी उपयुक्त पूर्व तालिमको व्यवस्था	√	√	√	√	√
९	प्रधानमन्त्री रोजगार कार्यक्रमलाई सफल बनाउन स्थानीय तह, निजी क्षेत्र	√	√	√	√	√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
	र सरोकारवाला निकायहरूसँग समन्वय र सहकार्य					
१०	रोजगार सेवा केन्द्रलाई स्थानीय तहमा विस्तार	√	√	√	√	√

१०. अपेक्षित उपलब्धि

औसतमा वार्षिक १ लाख ६५ हजार रोजगारी सिर्जना हुनेछ। त्यसको ४० प्रतिशत कृषि क्षेत्रमा, २५ प्रतिशत उद्योग क्षेत्रमा र ३५ प्रतिशत सेवा क्षेत्रमा संलग्न भएको हुनेछ। कम्तीमा १० प्रतिशत विप्रेषणबाट प्राप्त आयको उत्पादनशील क्षेत्रमा परिचालन हुनेछ। श्रमिकहरूको मर्यादा, सम्मान र जीवनस्तर बढेको हुनेछ। असल श्रम सम्बन्ध स्थापित भएको हुनेछ। बाध्यात्मक बाल श्रम समाप्त भएको हुनेछ।

८.२ गरिबी निवारण

१. पृष्ठभूमि

गरिबी नेपालको विकासको प्रमुख चुनौती हो। विगतदेखि नेपालका विकास प्रयासहरू गरिबी न्यूनीकरण गर्न र निरपेक्ष गरिबी निवारण गर्न केन्द्रित रहेका छन्। दुई दशकयता गरिबी निवारणमा राष्ट्रिय तहमै धेरै उपलब्धिहरू हासिल भएका छन्। गरिबी निवारणमा यो प्रदेशका उपलब्धिहरू समष्टिमा उल्लेख्य भए पनि दुर्गम पहाडी र हिमाली भेगमा गरिबी व्याप्त छ। समृद्ध र सुखी प्रदेशको आकाङ्क्षा साकार पार्न र “कसैलाई पनि पछि नछाडने” दिगो विकासको लक्ष्य प्राप्त गर्न गरिबी न्यूनीकरण र निरपेक्ष गरिबीको निवारण प्रदेश विकासको आधार हो।

२०७२ सालको भूकम्पले यो प्रदेश सबैभन्दा बढी प्रभावित रह्यो। ६४३३४१ घरहरू पूर्ण वा आंशिक रूपमा क्षतिग्रस्त भए। भूकम्पबाट भएको ९४ %जनक्षति यही प्रदेशमा भयो। यो क्षति प्रदेशका बढी जनजातिहरू वसोवास गर्ने हिमाली र पर्वतीय क्षेत्रमा नै केन्द्रित रह्यो जहाँ गरिबी सापेक्षिक हिसाबले बढी थियो। यसले गरिबहरूलाई मात्रै असर पारेन, अन्य धेरै परिवारलाईसमेत गरिबीमा धकेलिदियो र प्रदेशको गरिबीको चित्रमा झनै विषमता थप्यो।

गरिबी निवारणसम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानून, मापदण्ड, योजना र रणनीतिको तर्जुमा र घरपरिवारलाई सामाजिक सुरक्षा र संरक्षणजस्ता विषय प्रदेशको कार्यक्षेत्रमा पर्दछन्। तर गरिबी न्यूनीकरण र निरपेक्ष गरिबीको निवारण कुनै एक निकायको नीति वा कार्यक्रमबाट हासिल गर्न सकिने कुरा होइन। गरिबी निवारण यसैले प्रदेश सरकारको समग्र सोच, नीति, कार्यक्रम र क्रियाकलापको दिशानिर्देश गर्ने उच्च प्राथमिकताको विषय हो।

२. वस्तुगत स्थिति

मानव विकास र मानव गरिबीका दृष्टिले यो प्रदेश नेपालको औसतभन्दा राम्रो अवस्थामा भए पनि प्रदेशभित्र ठूलो असमानता छ। नेपालको मानव विकास सूचकाङ्क ०.४९० का तुलनामा प्रदेशको सूचकाङ्क ०.५५८ छ। तर हिमाली जिल्लाहरू (सिन्धुपाल्चोक, दोलखा, रसुवा) र नुवाकोट, धादिङ, रामेछाप, सिन्धुलीजस्ता अन्य जिल्ला र ती जिल्लाभित्रका खास खास स्थानीय तहका वडाहरूमा मानव विकास सूचकाङ्क औसत प्रदेशको मात्र होइन नेपालकोभन्दा पनि कम छ। केन्द्रीय तथ्याङ्क विभागको सन् २०११ को साना भेगहरूमा गरिबीको वितरणको नक्साले यो स्थिति प्रष्ट पार्दछ। भौगोलिक हिसाबले प्रदेशको प्रायः उत्तरी हिमाली भेग र महाभारत श्रृंखलामा पर्ने सिन्धुली, रामेछापदेखि काभ्रे, मकवानपुर, चितवनका

ग्रामीण क्षेत्रमा गरिबी व्यापक छ। यी क्षेत्रहरू प्रायः जनजातिहरू मूलतः तामाङ र महाभारतको दक्षिणी भेगमा चेपाङको वसोवास भएका क्षेत्र हुन्। यसरी गरिबीको भौगोलिक र जातीय दुवै आयाम छन्।

ठीक यही स्थिति मानव गरिबीको हकमा देखिन्छ। प्रदेशको मानव गरिबी सूचकाङ्क २५.७ को तुलनामा रसुवा, सिन्धुपाल्चोक, सिन्धुली, रामेछाप, दोलखा, नुवाकोटको मागसू ३५ भन्दा बढी छ अर्कोतिर बसाइँसराइको चापले गर्दा नेपालमै शहरी गरिबी बढ्दो छ। सन् २००३/०४ मा नेपाल जीवनस्तर सर्भेक्षणले देखाएको १० प्रतिशत को शहरी गरिबी २०१०/११ मा १५.५ प्रतिशत थियो। यो प्रवृत्ति प्रदेशको समग्र विकासका लागि ठूलो चुनौती हो।

यो प्रदेशको बहुआयामिक गरिबीको सूचक ०.०५१ छ जुन नेपालको ०.१२७ भन्दा ज्यादै कम हो। प्रदेशको १२.२ प्रतिशत जनसङ्ख्या बहुआयामिक गरिबिमा रहेको छ। तर जिल्ला र वडा तहमा अन्य गरिबीका सूचकमा जस्तै ठूलो असमानता रहेको अनुमान गर्न सकिन्छ।

३. समस्या र चुनौती

गरिबको पहिचान गरि निरपेक्ष गरिबीका कारकहरू (आवश्यक श्रोत-साधन, सम्पति र आयमूलक रोजगारी, र चाहिने सिपमा गरिब घर परिवारको पहुँच) को सम्बोधन नहुनु नै गरिबी निवारणको प्रमुख समस्या हो। विपन्न घर परिवारको पहिचान गर्नु, श्रोत-साधनमा गरिबको पहुँच पुऱ्याउनु, गरिबीको सघनता भएका ठाउँमा आयमूलक रोजगारीका अवसरहरूको विस्तार गर्नु, गरिबहरूलाई कामका लागि चाहिने दक्षता, सिप र साधनको बन्दोबस्त गर्नु, सार्वजनिक कामहरूमा गरिबहरूको आयमूलक सहभागिता वृद्धि गर्नु र गरिब र गरिबीको सीमान्तमा रहेका घर परिवारहरूका निम्ति आकस्मिक विपद् वा जोखिम सामना गर्नका लागि सहायक कोषको व्यवस्था गर्नु यस क्षेत्रका मुख्य चुनौती हुन्।

४. सम्भावना र अवसर

गरिबी निवारण राज्यकै प्राथमिकतामा हुनु, गरिबको पहिचान र गरिब परिचय पत्रको वितरण सुरु हुनु, गरिबी निवारणका क्षेत्रमा दातृ निकायहरूको चासो र सहयोग बढ्नु, र गरिबी निवारण संघीय सरकारको मात्र नभई प्रदेश र स्थानीय तहको कार्य क्षेत्रमा पर्नु यस क्षेत्रमा विद्यमान मुख्य अवसरहरू हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

गरिबी निवारणसहितको आर्थिक सम्बृद्धि।

६. लक्ष्य

निरपेक्ष गरिबीको न्यूनीकरण गरी विपन्न वर्गलाई प्रदेशको समृद्धिमा सहभागी गराउने।

७. उद्देश्य

गरिबीको रेखामुनिको जनसङ्ख्या र बहुआयामिक गरिबीको प्रतिशत आधाले घटाउनु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
८.२.१ प्राकृतिक र अन्य श्रोत र उत्पादनका साधनमा विपन्न घरपरिवारको पहुँच र स्वामित्व बढाउने।	<ul style="list-style-type: none"> सामुदायिक र कबुलियत वन कार्यक्रमहरूमार्फत् उत्पादन वृद्धि गर्न गरिब र सीमान्त गरिबहरूलाई प्राथमिकता दिई सहभागी हुन प्रोत्साहन दिइनेछ। उपयुक्त सार्वजनिक जग्गामा वातावरणमैत्री र उत्पादनमूलक कार्यक्रममा गरिबहरूलाई प्राथमिकता दिई संलग्न गराइनेछ। बाँझो राखिएका निजी जग्गाहरूमा स्थानीय तहको रोहवरमा उत्पादनमूलक खेती

रणनीति	कार्यनीति
<p>८.२.२ गरिब र सीमान्त गरिबको पहिचान गरी उनीहरूको क्षमता र उत्पादकत्व वृद्धि गर्ने।</p>	<p>गर्न विपन्न घरपरिवारलाई प्रोत्साहन गर्ने व्यवस्था गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> • प्रदेश तहमा गरिबी निवारण कोषको स्थापना गरिनेछ र स्थानीय तहका गरिबी निवारण कार्यक्रमलाई सघाउन सहकार्य गरिनेछ। • कृषि, वनजस्ता क्षेत्रमा उत्पादकत्व वृद्धिमा सघाउने कार्यक्रममा (जस्तै प्रांगारीक मल, नर्सरी आदि) विपन्न र सीमान्त विपन्न घरपरिवारलाई प्राथमिकता दिई संलग्न गराइनेछ। • सम्भाव्यताका आधारमा शहरी क्षेत्रहरूमा जग्गामा सहभागिता (ल्याण्ड सेयरिङ) कार्यक्रममार्फत् गरिबहरूको आवास व्यवस्थापन गरिनेछ। • विपन्न घरपरिवारको पहिचान गरी परिचय पत्र वितरण गरिनेछ। • स्थानीय साधन श्रोत र आवश्यकताका आधारमा विपन्न घरपरिवारका सदस्यलाई प्राथमिकता दिई एकद्वार प्रणालीमार्फत् सम्भाव्य तालिम र क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रममा संलग्न गराइनेछ र उद्दम विकासमा सहूलियतसहित प्रोत्साहन गरिनेछ। गरिबहरूलाई सहकारीमा आवद्ध हुन प्रोत्साहित गरिनेछ र लघु वित्तमा पहुँच सुनिश्चित गरिनेछ। • गरिब किसानहरूलाई जलवायु परिवर्तनसँग अनुकूलित हुने प्रविधिको तालिम दिइनेछ र सहूलियतमा प्रविधि उपलब्ध गराइनेछ। • शहरी क्षेत्रमा फोहर व्यवस्थापनमा संलग्न सफाई मजदुरहरूको स्वास्थ्य बिमा गरी पेसालाई सुरक्षित र मर्यादित बनाइनेछ। • विपन्न दलितहरू र अन्य समुदायको पारम्परिक ज्ञानको सम्बर्धन गर्दै पेसागत कामलाई व्यवसायिक बनाउन आवश्यक तालिम, दक्षता अभिवृद्धि र स्वरोजगार कार्यक्रम अन्तर्गत वित्तीय सहयोग गरिनेछ। सिप परीक्षण गरी प्रमाणीकरण गर्ने व्यवस्था मिलाइनेछ। • गरिबमुखी योजना र कार्यक्रमहरूको नियमित अनुगमन र प्रभावकारिताको मूल्याङ्कन र परिमार्जन गरिनेछ।
<p>८.२.३ सार्वजनिक सेवा प्रवाह र विकासका काममा गरिबहरूको सहभागिता बढाउने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षाजस्ता सेवाहरूको प्रवाहमा गरिब र सीमान्त गरिबलाई प्राथमिकता दिइनेछ। • गरिबहरूलाई सहूलियत दरमा स्वास्थ्य बिमाको व्यवस्था गरिनेछ। • रोजगारी नपाएका विपन्न घर परिवारका एकजना सदस्यले वर्षमा कम्तीमा १५० दिन आयमूलक रोजगारी पाउने सुनिश्चित गरिनेछ। • सार्वजनिक निर्माण कार्यमा महिलाहरूबाट गर्न सकिने कामहरूको पहिचान गरी आवश्यक मजदुरको १० प्रतिशत सङ्ख्या विपन्न घरपरिवारको एकल महिला वा महिलाहरूको निम्ति छुट्याइनेछ।

रणनीति	कार्यनीति
<p>८.२.४</p> <p>भौगोलिक र समुदायमा रहेको गरिबीको सघनताका आधारमा गरिबी निवारणका लक्षित कार्यक्रम तर्जुमा गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • प्रदेश सरकार वा स्थानीय तहअन्तर्गतका पसल क्वलजस्ता सार्वजनिक संरचना भाडामा दिँदा २० प्रतिशत सङ्ख्या विपन्न घरपरिवार र एकल महिलाहरूको निम्ति उपलब्ध गराउने व्यवस्था गरिनेछ। • भौगोलिक र समुदायमा रहेको गरिबीको सघनता र विद्यमान सम्भावनालाई मध्यनजर गरी त्यस्ता भौगोलिक क्षेत्र र समुदायका निम्ति गरिबी निवारणको अल्प र मध्यकालीन योजना र कार्यक्रमको तर्जुमा र चरणबद्ध कार्यान्वयन गरिनेछ। • २०७२ को भूकम्पबाट बास गुमेका जोखिममा अवस्थित विपन्न घर परिवारलाई सम्भाव्य ठाउँहरूमा एकीकृत बस्ती विकासका माध्यमबाट बसोबासको व्यवस्था मिलाउन सहजीकरण गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	बाँझो राखिएका निजी जग्गाहरूमा स्थानीय तहको रोहवरमा उत्पादनमूलक खेती गर्न विपन्न घरपरिवारलाई प्रोत्साहन		√	√	√	√
२	प्रदेश तहमा गरिबी निवारण कोषको स्थापना र स्थानीय तहमा गरिबी निवारण कार्यक्रम सञ्चालन		√	√	√	√
३	विपन्न घरपरिवारको पहिचान गरी परिचय पत्र वितरण	√	√	√		
४	विपन्न घरपरिवारका सदस्यलाई प्राथमिकता दिई एकद्वार प्रणालीमार्फत् सम्भाव्य तालिम र क्षमता अभिवृद्धि कार्यक्रम सञ्चालन		√	√		
५	शहरी क्षेत्रमा फोहर व्यवस्थापनमा संलग्न सफाई मजदुरहरूको स्वास्थ्य बिमाको व्यवस्था	√	√	√	√	
६	दलित समुदायको परम्परागत सिप परीक्षण गरी प्रमाणीकरणको व्यवस्था		√	√	√	
७	शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षाजस्ता सेवाहरूको प्रवाहमा गरिब र सीमान्त गरिबलाई प्राथमिकता	√	√	√	√	√
८	गरिबी निवारणको अल्प र मध्यकालीन योजना र कार्यक्रमको तर्जुमा र चरणबद्ध कार्यान्वयन	√	√	√	√	√
९	जोखिममा अवस्थामा रहेका विपन्न घर परिवारलाई सम्भाव्य ठाउँहरूमा एकीकृत बस्ती विकासका माध्यमबाट बसोबासको व्यवस्था मिलाउन सहजीकरण	√	√	√		√
१०	सामुदायिक र कबुलियत वन कार्यक्रमहरूमार्फत् उत्पादन वृद्धि गर्न गरिब र सीमान्त गरिबहरूलाई प्राथमिकता दिई सहभागी हुन प्रोत्साहन	√	√	√	√	√
११	कृषि, वनजस्ता क्षेत्रमा उत्पादकत्व वृद्धिमा सघाउने कार्यक्रममा विपन्न र सीमान्त विपन्न परिवारको सहभागितामा वृद्धि	√	√	√	√	√

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१२	सम्भाव्यताका आधारमा शहरी क्षेत्रहरूमा जग्गामा सहभागिता (ल्याण्ड सेयरिड) कार्यक्रममार्फत् गरिबहरूको आवास व्यवस्थापन	√	√	√	√	√
१३	गरिब किसानहरूलाई जलवायु परिवर्तनसँग अनुकूलित हुने प्रविधिको तालिम र सहुलीयतमा प्रविधि हस्तान्तरण		√	√		√
१४	गरिबमुखी योजना र कार्यक्रमहरूको सञ्चालन, अनुगमन र प्रभावकारिताको मूल्याङ्कन र परिमार्जन	√	√	√		√
१५	गरिबहरूलाई सहुलियत दरमा स्वास्थ्य बिमाको व्यवस्था	√	√	√		√
१६	रोजगारी नपाएका विपन्न घर परिवारका एकजना सदस्यले वर्षमा कम्तीमा १५० दिन आयमूलक रोजगारीको व्यवस्था	√	√	√		
१७	सार्वजनिक निर्माण कार्यमा महिलाहरूबाट गर्न सकिने कामहरूको पहिचान गरी आवश्यक मजदुरको १० प्रतिशत सङ्ख्या विपन्न घरपरिवारको एकल महिला वा महिलाहरूको निमित्तको व्यवस्था	√	√	√	√	√
१८	प्रदेश सरकार वा स्थानीय तहअन्तर्गतका पसल कवलजस्ता सार्वजनिक संरचना भाडामा दिँदा २० प्रतिशत सङ्ख्या विपन्न घरपरिवार र एकल महिलाहरूको निमित्त उपलब्ध गराउने व्यवस्था		√	√	√	

१०. अपेक्षित उपलब्धि

विपन्न र सीमान्त गरिबको तथ्याङ्क अध्यावधिक भएको, विपन्न घरपरिवारको पहिचान भई शिक्षा, स्वास्थ्य र सामाजिक सुरक्षाका सेवा र सुविधामा पहुँच पुगेको हुने, विपन्न घर परिवारका एकजना सदस्यलाई वार्षिक १५० दिन रोजगारीको सुनिश्चितता भएको हुने, उत्पादनका साधनमा विपन्नको पहुँच बढेको हुने, विपन्न घरपरिवारका सदस्यको रोजगारी र व्यवसायिक क्षमतामा अभिवृद्धि भएको र रोजगारीका आवसरमा वृद्धि भएको हुनु, विपन्न घर परिवारमा वित्तीय र अन्य जोखिमहरूमा कमी आएको हुने, विपन्न बस्तीहरूको पूर्वाधारमा सुधार भई जोखिमपूर्ण अवस्थामा रहेका र आधारभूत सेवा सुविधाहरू पुऱ्याउन नसकिने बस्तीहरूको सुरक्षित स्थान्तरण र स्तरोन्नति भएको र समग्रमा निरपेक्ष गरिबी र बहुआयामिक गरिबी आधा घटेको हुने।

८.३ सुशासन

१. पृष्ठभूमि

प्रदेश संसद

संविधानले सार्वजनिक प्रशासनलाई स्वच्छ, सक्षम, निष्पक्ष, भ्रष्टाचारमुक्त, पारदर्शी, जनउत्तरदायी र सहभागितामूलक बनाउँदै राज्यबाट प्राप्त हुने सेवा सुविधामा जनताको समान र सहज पहुँच सुनिश्चित गर्ने व्यवस्था गरेको छ। संविधानका उपरोक्त प्रावधानहरू नै सुशासनका प्रमुख आधारहरू हुन्। सुशासन पाउने नागरिकको अधिकारलाई व्यवहारमा स्थापित गर्न जनतामा अनुभूत हुने गरी शासकीय कार्य सञ्चालन गर्नुपर्ने हुन्छ।

दिगो शान्ति, सुशासन, विकास र समृद्धिको आकाङ्क्षा पूरा गर्ने लक्ष्य हासिल गर्दै संघीयताको जग मजबुत पार्न

कर्मचारीको योगदान महत्वपूर्ण हुन्छ। यो संस्थागत संरचनाको एक जीवन्त अवयव हो। क्षमतायुक्त जनशक्ति नै साङ्गठनिक लक्ष्य प्राप्तिका आधार हुन्। सुशासनका लागि कर्मचारीलाई कर्तव्यनिष्ठ, इमान्दार, क्षमतावान र व्यवसायिक बनाउन क्षमता विकास आवश्यक हुन्छ। मुलुक संघीय संरचनामा भर्खर रूपान्तरण भएको र प्रदेश संरचना नयाँ भएको सन्दर्भमा प्रदेशको शासन व्यवस्थाका सबै अवयवहरू सुचारु गर्न र सेवाप्रवाहलाई जनचाहना अनुरूप छिटो छरितो र सुलभ बनाउँदै सुशासनको अनुभूत गराउन निर्वाचित प्रतिनिधि र कर्मचारी दुवैको समय सापेक्ष क्षमता विकास गर्नु अपरिहार्य छ।

प्रादेशिक नीति तर्जुमा, स्वीकृति, कार्यान्वयन, अनुगमन र मूल्याङ्कन, कार्यसम्पादन नियमावली तर्जुमा र कार्यान्वयन, प्रदेश मन्त्रालयहरूको कार्यको समन्वय, सुपरिवेक्षण, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन नियन्त्रण, प्रदेश सरकारका निर्णयको कार्यान्वयन र अनुगमन, सुशासन, भ्रष्टाचार नियन्त्रण र प्रशासन सुधार, संवैधानिक निकाय तथा आयोगसँगको सम्पर्क र समन्वय, अन्तरप्रदेश परिषद र संघ तथा अन्य प्रदेश र स्थानीय तहसँगको समन्वय र अन्तरसम्बन्ध, प्रदेशस्तरीय मानव संसाधन विकास योजना तर्जुमा र कार्यान्वयन, प्रदेश निजामती सेवा र अन्य प्रदेश सरकारी सेवा सञ्चालनसम्बन्धी नीति, कानून तथा मापदण्ड तर्जुमा एवम् कार्यान्वयन र अभिलेख व्यवस्थापन, प्रदेशस्तरका सरकारी निकायको सङ्गठन तथा व्यवस्थापन, सर्वेक्षण र परीक्षण, प्रदेशस्तरीय तालिम नीति तथा मापदण्ड निर्धारण र स्तरीकरण तथा राष्ट्रिय र प्रदेशस्तरका तालिम केन्द्रसँगको सम्पर्क एवम् समन्वय, प्रदेशस्तरमा सार्वजनिक सेवा वितरणको न्यूनतम मापदण्ड निर्धारण र सेवाग्राही सन्तुष्टि सर्वेक्षण तथा सेवा प्रवाहको अनुगमन, गाउँपालिका र नगरपालिकाको कर्मचारी र कार्यालयको व्यवस्थासम्बन्धी कानून तर्जुमाजस्ता प्रदेश सरकारको कार्य सम्पादनसम्बन्धी विषयहरू प्रदेशको कार्य क्षेत्रमा पर्दछन्।

२. वस्तुगत स्थिति

प्रदेशमा ६ वटा प्रादेशिक मन्त्रालय र एक मुख्यमन्त्री कार्यालय रहनुका साथै ३७४३ निजामती कर्मचारीको दरबन्दी रहेको छ। उक्त दरबन्दीको आधाभन्दा कम पदमा मात्र कर्मचारी कार्यरत छन्। प्रदेशको कार्यबोझ अनुसार नयाँ दरबन्दीको संरचनासहित सङ्गठनको पुनर्संरचना गर्न बाँकी नै छ। प्रदेश कार्य सञ्चालनसम्बन्धी कानुनी पूर्वाधार र कार्य संयन्त्र निर्माणकै चरणमा रहेका छन्। प्रदेश सरकार गठन भएको ठीक एक वर्षमा २४ वटा कानून प्रदेश सभाबाट पारित भइसकेका छन् भने १० भन्दा बढी तर्जुमा प्रक्रियामा रहेका छन्।

३. समस्या र चुनौती

आवश्यक कानून निर्माण भई नसक्नु, कर्मचारी समायोजन भई पदपूर्ति नहुनु, प्रदेशको सङ्गठन तथा व्यवस्थापन अध्ययन र प्रदेशको आवश्यकता अनुरूप सङ्गठनात्मक संरचना तयार भई नसक्नु, प्रदेश निजामती सेवा गठन भई नसक्नु, प्रदेशमा जनशक्ति विकाससम्बन्धी कुनै संस्थागत व्यवस्था नहुनु, साधन श्रोतको अभाव हुनु, कर्मचारीहरू प्रदेश संरचनामा अनुकूलन भै नसक्नु आदि प्रमुख समस्या रहेका छन्।

संविधान बमोजिमका आवश्यक संरचनाहरू निर्माण गर्नु, परम्परागत शासनमुखी कार्य प्रवृत्तिलाई सेवामुखी र प्रदेश सरकार एवम् सेवाग्राहीप्रति उत्तरदायी प्रशासनिक संरचनामा बदल्नु, क्षमतावान् र गुणस्तरीय कर्मचारी प्रदेशमा आकर्षण गर्नु, रिक्तपद पूर्ति गर्नु, तालिम प्रदायक संस्थाहरू प्रदेश अन्तर्गत ल्याउनु, अन्तरनिकाय तथा अन्तरसरकार समन्वय गर्नु, कार्यविभाजन अनुसार संस्थागत र मानवीय क्षमताको विकास गर्नु, शासकीय प्रणालीमा पारदर्शिता तथा जवाफदेहिता सुनिश्चित गर्नु, सार्वजनिक क्षेत्रमा सदाचार पद्धतिको विकास गर्नु, विकास निर्माणका कार्यहरू समयमै गुणस्तरीय ढङ्गले सम्पन्न गरी आम जनताको प्रदेश सरकारप्रतिको विश्वास आर्जन गर्नु प्रदेश सरकारका प्रमुख चुनौतीहरू रहेका छन्।

४. सम्भावना र अवसर

सुशासनका लागि संघीय कानूनहरूको विद्यमानता, सुशासन प्रदेश सरकारको नीतिगत प्राथमिकतामा परेको, नयाँ पूर्ति हुने पदमा आवश्यकता अनुसार योग्यतम् व्यक्तिलाई आकर्षण गर्न सकिने, प्रदेश संरचनामा रहने कर्मचारीहरूको क्षमता विकास योजना तर्जुमा गरी कार्यान्वयन गर्ने अधिकार प्रदेश सरकारमा रहेको, सेवा प्रवाहमा सूचना प्रविधिको प्रयोगलाई सरकारले उच्च महत्त्व दिएको, सूचना तथा सञ्चार प्रविधिमा नागरिक पहुँचको अभिवृद्धि भएको र सामाजिक सञ्जालको उपयोग बढ्दै गएको, भ्रष्टाचारमुक्त उत्तरदायी र पारदर्शी कार्य संस्कृतिको विकासमा जनचासो र चेतना बढ्दै गएको, सहभागितात्मक विकास पद्धतिप्रति प्रतिबद्धता बढेको, संघीय सरकारले सञ्चालन गर्न लागेको प्रदेश तथा स्थानीय तह सहयोग कार्यक्रम सञ्चालन हुने क्रममा रहेको, मुलुककै नेतृत्वदायी अधिकांश विश्वविद्यालय, प्राविधिक महाविद्यालय, तालिम तथा मानव संसाधन विकाससम्बन्धी संस्थाहरू प्रदेशभित्र हुनु आदि प्रदेशमा सुशासन स्थापनाका र क्षमता विकासका लागि महत्त्वपूर्ण अवसर हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

जवाफदेही र परिणाममुखी शासकीय व्यवस्था।

६. लक्ष्य

प्रदेशको शासन प्रणाली समावेशी, कार्यमूलक, जनमुखी, परिणाममुखी, पारदर्शी र उत्तरदायी बनाउने।

७. उद्देश्य

१. सुशासनका लागि कानुनी र नीतिगत पूर्वाधारहरूको निर्माण गर्नु,
२. सार्वजनिक सेवा प्रवाह र विकास प्रक्रियालाई प्रभावकारी बनाउनु र
३. सक्षम, दक्ष, गुणस्तरीय र प्रविधिमैत्री जनशक्तिको विकास गर्नु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
८.३.१ शासन प्रणाली सञ्चालनसम्बन्धी नीति, कानून, मापदण्ड र कार्यविधिहरूको तर्जुमा गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • प्रदेश सरकार सञ्चालनसम्बन्धी नीति, कानून, मापदण्ड र कार्यविधिहरूको तर्जुमा गरिनेछ। • प्रदेश निजामती सेवाको गठनसम्बन्धी कानून निर्माण गरी प्रशासन संयन्त्रलाई प्रदेशप्रति उत्तरदायी बनाइनेछ। • सार्वजनिक निकायका पदाधिकारीको जिम्मेवारी र कर्तव्यलाई स्पष्ट पारिनेछ। • सार्वजनिक निकायका पदाधिकारीको आचारसंहिता पालनाको अनुगमन प्रणाली सुदृढ गराइनेछ। • सार्वजनिक पदाधिकारीको नियुक्ति, सरुवा, बढुवा, पदस्थापन, दण्ड र पुरस्कारलाई पद्धतिबद्ध बनाइनेछ। • प्रदेशको साङ्गठनिक संरचनालाई आवश्यकता र कार्य जिम्मेवारी अनुसार पुनःसंरचना गरिनेछ। • कार्यसम्पादनलाई वृत्ति विकाससँग घनिष्ठ रूपमा आबद्ध हुने गरी कानुनी व्यवस्था मिलाइनेछ। • सार्वजनिक खर्च व्यवस्थापन प्रणाली सुव्यवस्थित गरिनेछ।
८.३.२	<ul style="list-style-type: none"> • सबै प्रकारका सेवामा सबैको र खास गरी समाजका सीमान्तकृत र विपन्न समुदायको

रणनीति	कार्यनीति
<p>प्रदेशले प्रवाह गर्ने सेवामा अधिकारमुखी पहुँच स्थापना गर्ने।</p>	<p>पहुँच सुनिश्चित गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> • सेवाम्राहीको माग सापेक्ष, सहभागितामूलक विकास प्रक्रियाको अवलम्बन गरिनेछ। • विद्युतीय शासन प्रणालीको व्यापक अवलम्बन गरी प्रशासनिक कार्यविधिलाई सरल बनाइनेछ। • जनताका गुनासो सिधै मुख्यमन्त्रीसँग पुग्ने संयन्त्र स्थापित गरी शीघ्र जवाफदेहिता, कारवाही र जानकारीको सुनिश्चितता गरिनेछ। • स्थानीय तहहरूलाई एकद्वार प्रणालीबाट एकीकृत सेवा प्रदान गर्न सहजीकरण गरिनेछ। • सूचना प्रविधिको प्रयोग र पहुँच बढाउने कार्यक्रम सञ्चालनमा सहयोग पुऱ्याउन स्थानीय तहलाई सहजीकरण गरिनेछ।
<p>८.३.३ प्रदेश सरकारको कार्यसम्पादनलाई पारदर्शी, उत्तरदायी र परिणाममुखी बनाउने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • प्रदेशमा शान्ति सुरक्षा र सुव्यवस्था कायम गरिनेछ। • सूचनाको हकसम्बन्धी ऐनको प्रभावकारी कार्यान्वयन गरी सार्वजनिक सरोकार विषयमा सूचनाको सार्वजनिक गर्ने कार्यलाई अनिवार्य बनाइनेछ। • गुनासो सुनुवाइ संयन्त्र र सूचना अधिकारीको भूमिकालाई प्रभावकारी तुल्याइनेछ। • सेवा प्रदायकप्रति नागरिकहरूको सन्तुष्टिको स्तर मापन र नियमित पृष्ठपोषण लिइनेछ। यसकार्यमा तेस्रो पक्ष मूल्याङ्कन प्रणालीसमेतको अवलम्बन गरिनेछ। • कर्मचारीहरूको कार्यसम्पादनलाई विकास कार्यक्रमको नतिजा, सेवा प्रवाहको गुणस्तरीयता, सेवाम्राहीको सन्तुष्टि आदिसँग आबद्ध गरिनेछ। यसका लागि सेवाम्राहीहरूको सन्तुष्टि सर्वेक्षण, गुनासो समाधान, सार्वजनिक सुनुवाइ आदिको मापनलाईसमेत आधार बनाइनेछ। • नैतिकता, आचरण र इमान्दारितालाई कार्य संस्कृतिको रूपमा विकास गरी दण्ड र पुरस्कारलाई व्यवस्थित तुल्याइनेछ। • निश्चित लागत र बजेट सीमाभन्दा माथिका परियोजनाका प्रमुखहरूसँग कार्यसम्पादन सम्झौता गरी नतिजाप्रति उत्तरदायी बनाइनेछ। • सार्वजनिक निर्माणको गुणस्तर परीक्षणका लागि प्रयोगशालाहरूको स्थापना गरिनेछ। • स्थानीय तहसँग एवम् प्रदेश कार्यालयहरूसँग विद्युतीय सूचना प्रविधि कनेक्टिभिटी हुने गरी प्रदेशस्तरीय सूचना केन्द्रको स्थापना गरिनेछ। • भ्रष्टाचार विरूद्ध शून्य सहनशीलता अपनाइनेछ। भ्रष्टाचारजन्य क्रियाकलापमा निगरानी तथा कारवाहीलाई सशक्त बनाउन भ्रष्टाचार विरूद्ध अन्तरनिकाय समन्वय र सहकार्य प्रभावकारी बनाइनेछ। • आन्तरिक नियन्त्रण प्रणालीका साथै वित्तीय जोखिम नियन्त्रण प्रणालीको अवलम्बन गरिनेछ। • बेरूजुलाई सार्वजनिक गरिनुका साथै बेरूजुको प्रकृतिका आधारमा कार्यसम्पादन

रणनीति	कार्यनीति
	<p>मूल्याङ्कनसँग आवद्ध गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> • सेवा प्रवाहलाई जनमुखी र सेवामूलक बनाउन नागरिक बडापत्र राखिनेछ। • महत्वपूर्ण सेवा प्रदायकको मूल्याङ्कनमा सेवोग्राहीको संलग्नता रहने व्यवस्था गरिनेछ। • सार्वजनिक उत्तरदायी संयन्त्रहरू (सामाजिक परीक्षण, सार्वजनिक परीक्षण, सार्वजनिक सुनुवाइ, गुनासो व्यवस्थापन आदि)लाई प्रभावकारी र नियमित गराइनेछ। • सरकारको क्षेत्र र कार्यक्रमगत बजेट, कार्ययोजना, आवधिक प्रगति र जनसरोकारका निर्णयहरू वेबसाइटमार्फत् नियमित रूपमा सार्वजनिक गरिनेछ। • गैरसरकारी संस्था र नागरिक समाजसँग समन्वय र सहकार्यका माध्यमबाट सार्वजनिक उत्तरदायित्व अभिवृद्धिमूलक कार्यसम्पादन गरिनेछ।
<p>८.३.४ साङ्गठनिक पुनःसंरचना र जनशक्ति विकास गर्ने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • प्रदेशको कार्य आवश्यकता अनुसार प्रशासनिक पुनःसंरचना गरिनेछ। • सङ्गठनको लागि आवश्यक पर्ने दक्ष जनशक्तिको विकास र उपयोगका लागि एकीकृत जनशक्ति विकास योजना तयार गरिनेछ। • वार्षिक बजेटको निश्चित प्रतिशत तालिम तथा क्षमता विकास र आवश्यक अनुसन्धानका लागि विनियोजन गरिनेछ। • प्रदेश र स्थानीय तहका जनप्रतिनिधि र कर्मचारीको आवश्यकता र माग अनुसार अभिमुखीकरण, तालिम र क्षमता विकासका लागि आधुनिक प्रविधि र श्रोत-साधनसहितको प्रदेश सुशासन प्रशिक्षण प्रतिष्ठानको स्थापना गरिनेछ। • प्रदेश लोक सेवा अयोगको सिफारिसमा प्रदेश तथा स्थानीय तहमा पदपूर्तिको व्यवस्था गरिनेछ।
<p>८.३.५ तालिमलाई व्यवहारिक, प्रविधियुक्त तथा नवप्रवर्तनशील बनाउने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • कार्यक्षेत्र र कार्यप्रकृति अनुसार नयाँ ज्ञान, सूचना र प्रविधिको निरन्तर अनुसरण गर्न सक्ने नवप्रवर्तनमुखी व्यवहारिक, प्राविधिक तथा सिपमूलक तालिम, परामर्श र सिकाइमा जोड दिइनेछ। • शिक्षण, सिकाइ, तालिम र सङ्गठनात्मक व्यवहारद्वारा नैतिकता र सदाचार पद्धतिलाई प्रोत्साहन गरिनेछ। • विषय दक्षताका आधारमा संघीय निकाय र प्रशिक्षण केन्द्र, विश्वविद्यालय, अनुसन्धान केन्द्र तथा निजी र गैरसरकारी क्षेत्रलाईसमेत तालिमका लागि उपयोग गरिनेछ। अन्य प्रदेशका राम्रा सिकाइ र उत्तम अनुभवलाई आत्मसात् गरिनेछ।
<p>८.३.६ अन्तरसरकार समन्वयलाई प्रभावकारी बनाउने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • प्रदेश समन्वय परिषदलाई नियमित, प्रभावकारी र परिणाममुखी गरिनेछ। • संघीय र स्थानीय तहसँग नियमित सम्पर्क र समन्वय स्थापित गरिनेछ। • प्रदेशभित्रका गाउँपालिका र नगरपालिकाको विवाद समाधान गर्ने प्रक्रिया र कार्यविधिसम्बन्धी कानून निर्माण गरी कार्यान्वयन गरिनेछ। • संघीय, प्रादेशिक र स्थानीय तहकाबीच सूचना प्रणाली व्यवस्थापनमा समन्वय गरिनुका

रणनीति	कार्यनीति
	<p>साथै प्रतिवेदन प्रणालीलाई एकीकृत रूपमा आबद्ध गरी दोहोरो सञ्चार प्रणाली स्थापित गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> स्थानीय तहहरूकाबीच कार्यसम्पादनमा प्रतिस्पर्धा अभिवृद्धिका साथै कार्यसम्पादनमा आधारित प्रोत्साहन अनुदानको व्यवस्था मिलाइनेछ। प्रदेशमा आधिकारिक तथ्याङ्क केन्द्रको स्थापना गरी विगतका अभिलेख एवम् परियोजना दस्तावेजहरू/प्रतिवेदनहरूलाई पोर्टलमा राखिनेछ। स्थानीय तहका पोर्टलहरूलाई प्रदेश पोर्टलसँग जोड्ने गरी वस्तुगत विवरण तथा स्रोत नक्साहरू र परियोजना विवरण लगायतका सूचना उपलब्ध हुने व्यवस्था मिलाइनेछ। प्रदेशभित्रका स्थानीय तहको कार्य सम्पादन र प्रतिवेदन प्रणालीमा एकरूपता आउने गरी स्थानीय तहकोसमेत सफ्टवेयरहरूको विकास गरी सहजीकरण गरिनेछ। सङ्घीय सरकारबाट कार्यान्वयनमा आउने र अन्य सूचना प्रणालीलाई प्रभावकारी बनाइनेछ। प्रदेशस्तरीय विकास समस्या समाधान समितिलाई समस्या समाधान तथा सहजीकरण संयन्त्रको रूपमा विकास गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	प्रदेश निजामती सेवाको गठन	√	√	√		
२	सार्वजनिक निकायका पदाधिकारीको आचारसंहिता पालनाको अनुगमन प्रणालीको व्यवस्था		√	√		
३	सार्वजनिक पदाधिकारीको नियुक्ति, सरुवा, बढुवा, पदस्थापन, दण्ड र पुरस्कार प्रणालीलाई नतिजामुखी र पद्धतिबद्ध बनाउन व्यवस्था	√	√	√		
४	प्रदेशको साङ्गठनिक संरचनालाई आवश्यकता र कार्य जिम्मेवारी अनुसार पुनःसंरचना		√	√		
५	कार्यसम्पादनलाई नतिजा र वृत्ति विकाससँग घनिष्ठ रूपमा आबद्ध हुने कानुनी व्यवस्था		√	√		
६	सार्वजनिक खर्च व्यवस्थापन प्रणालीको सुदृढीकरण	√	√	√		
७	सबै प्रकारका सेवामा सबैको र खास गरी समाजका सीमान्तकृत र विपन्न समुदायको पहुँच सुनिश्चित हुने व्यवस्था	√	√	√		
८	जनताका गुनासो सिधै मुख्यमन्त्रीसँग पुग्ने संयन्त्र स्थापित गरी शीघ्र जवाफदेहिता, कारवाही र जानकारी गराउने व्यवस्था		√	√		
९	गुनासो सुनुवाइ संयन्त्रको विकास		√	√		
१०	स्थानीय तह र प्रदेश बीच विद्युतीय कनेक्टिभिटी हुने गरी प्रदेशस्तरीय		√	√		

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहाय्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
	सूचना केन्द्रको स्थापना					
११	भ्रष्टाचार विरुद्ध शून्य सहनशीलतासम्बन्धी अभिमुखीकरण र अनुगमन संयन्त्रको विकास		√	√		
१२	आन्तरिक नियन्त्रण प्रणालीको विकास		√	√		
१३	वित्तीय जोखिम नियन्त्रण प्रणालीको विकास		√	√		
१४	सामाजिक परीक्षण, सार्वजनिक परीक्षण, सार्वजनिक सुनुवाइ र गुनासो व्यवस्थापन		√	√	√	√
१५	स्थानीय तहहरूलाई एकद्वार प्रणालीबाट एकीकृत सेवा प्रदान गर्न सहजीकरण		√	√		
१६	सूचना प्रविधिको प्रयोग र पहुँच बढाउने कार्यक्रम सञ्चालन		√	√	√	
१७	सेवा प्रदायकप्रति नागरिकहरूको सन्तुष्टिको स्तर मापन र नियमित पृष्ठपोषणको व्यवस्था		√	√		
१८	सार्वजनिक निर्माणको गुणस्तर परीक्षणका लागि प्रयोगशालाहरूको स्थापना		√	√		
१९	बेरूजुको प्रकृतिका आधारमा त्यसलाई कार्यसम्पादन मूल्याङ्कनसँग आवद्ध हुने व्यवस्था कायम		√	√		
२०	महत्वपूर्ण सेवा प्रदायकको मूल्याङ्कनमा सेवाग्राहीको संलग्नता रहने व्यवस्था		√	√	√	√
२१	प्रमुख सेवाहरूको व्यवस्थापन परीक्षण तथा सेवा प्रभावकारिता सर्वेक्षण		√	√		
२२	विद्युतीय शासन प्रयोग र पहुँच विस्तार		√	√		

१०. अपेक्षित उपलब्धि

आवश्यक कानूनहरूको निर्माण भएको हुने, सङ्गठनात्मक पुनःसंरचना र कर्मचारी समायोजन भई तदनुसारको संरचना क्रियाशील भएको हुने, प्रदेशमा सार्वजनिक सेवा प्रवाहको गुणस्तरमा सुधार र सार्वजनिक सेवामा आम नागरिकको पहुँचमा अभिवृद्धि भएको हुने, एकीकृत जनशक्ति विकास योजना तयार भई लागू भएको हुने, प्रदेश प्रशिक्षण प्रतिष्ठान स्थापना भई तालिम तथा क्षमता अभिवृद्धिको कार्यक्रम आरम्भ भएको हुने।

८.४ सूचना तथा सञ्चार

१. पृष्ठभूमि

लोकतन्त्रको मर्म भनेकै पूर्ण प्रेस स्वतन्त्रता, वाक र प्रकाशन स्वतन्त्रता, आफ्नो वा सार्वजनिक सरोकारको सूचना माग्ने र पाउने हक तथा सञ्चारको हकजस्ता विषय हुन्। नेपालको संविधानले आत्मसात गरेका यस्ता मौलिक हकको प्रत्याभुति गर्न सञ्चार तथा सूचना प्रविधि क्षेत्रको महत्वपूर्ण भूमिका रहेको छ। यस क्षेत्रमा विश्वमा भएका द्रुततर विकासले नेपालमा पनि नयाँ प्रविधि भित्र्याउन प्रोत्साहित गरेको छ। सरकारी र निजी क्षेत्रबाट यस क्षेत्रमा भएको लगानीबाट देशको दुर्गम क्षेत्रमासमेत सूचनाको पहुँच उल्लेख्य मात्रामा पुगेको छ। सञ्चार तथा सूचना प्रविधिमा भएको लगानीलाई संरक्षण र सम्बर्धन गर्दै आम सञ्चार माध्यमलाई स्वच्छ, सक्षम, निस्पक्ष, मर्यादित, व्यवसायिक र प्रतिस्पर्धी बनाई यसको

सङ्ख्यात्मकभन्दा गुणात्मकतामा जोड दिई आम नागरिकलाई सहज र सर्वसुलभ रूपमा सूचना प्राप्त हुने अवस्थाको श्रृजना गर्नु आवश्यक रहेको छ।

प्रदेशस्तरका इन्टरनेट सेवा र अनलाइन तथा अन्य प्रविधिमा आधारित सञ्चार माध्यमको दर्ता, अभिलेख, अनुमति, नवीकरण, अनुगमन र नियमन, साइबर सुरक्षा अनुगमन, छापासञ्चार माध्यमको दर्ता, अनुमति, आचार संहिता निर्धारण र अनुगमन, अभिलेखाङ्कन, वर्गीकरण, सञ्चालन र नियमन, प्रेस सूचना प्रवाह, सूचना सामग्रीको उत्पादन, प्रकाशन र वितरण, श्रमजीवी सञ्चारकर्मीहरूको न्यूनतम पारिश्रमिक अनुगमन, केबुल वितरणको इजाजत, नवीकरण र नियमन, सूचनाको हकसम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानून तथा मापदण्ड तर्जुमा र कार्यान्वयन, चलचित्र निर्माण, हल सञ्चालन तथा प्रदर्शन अनुमति र नियमनजस्ता विषयहरू प्रदेशको कार्य दायरामा रहेका छन्।

२. वस्तुगत स्थिति

प्रदेशभित्र पत्रपत्रिका सङ्ख्या ७७६, एफ एम रेडियो १६३, र टेलिभिजन प्रसारण संस्थाहरू ६८ रहेका छन्। सूचनाको हकसम्बन्धी ऐन, २०६४ को व्यवस्था अनुसार प्रदेशका सार्वजनिक निकायहरूले आफूसँग सम्बन्धित सूचना अध्यावधिक गरी सार्वजनिक गर्न थालेका, सूचना अधिकारीहरूको व्यवस्था रहेको, प्रादेशिक निकायहरूले वेबसाइटमार्फत् सूचना तथा जानकारीहरू प्रवाह गर्ने गरेका छन्।

३. समस्या र चुनौती

सरकारी तथा निजी क्षेत्रबाट सञ्चालनमा रहेका आम सञ्चार माध्यमहरूलाई सक्षम, निस्पक्ष, मर्यादित, विश्वसनीय, व्यवसायिक र प्रतिस्पर्धी बनाउनु, शहर केन्द्रित छापा तथा विद्युतीय सञ्चार माध्यमहरूलाई दुर्गम र ग्रामीण क्षेत्रसम्म पुऱ्याउनु, विद्युतीय सञ्चार माध्यम, इन्टरनेट सेवा र अनलाइन तथा अन्य प्रविधिमा आधारित सञ्चार माध्यमको अनुगमन गर्नु, प्रसारण संस्थाले प्रसारण गर्ने विषयवस्तु, प्रयोग भएको प्रविधि र जनशक्तिको अनुगमन गर्न संघीय सरकारले निर्धारण गरेको न्यूनतम पारिश्रमिक पूर्णरूपमा लागू गराउनु तथा आधुनिक प्रविधि देशमा भित्र्याई प्रयोगमा ल्याउनु चुनौतीको रूपमा रहेका छन्।

४. सम्भावना र अवसर

नेपालको संविधानले सूचनाको हक, सञ्चारसम्बन्धी हकलाई मौलिक हकको रूपमा समावेश गर्नु, प्रकाशन र प्रसारण स्वतन्त्रताको हक हुनु, राज्यको खुला नीतिका कारण आम सञ्चार माध्यमहरू प्रतिस्पर्धा भई देशभरी प्रकाशन तथा प्रसारण विस्तार हुँदै जाँदा नागरिकले छिटो र सहज सूचना प्राप्त हुने र सरकारका कामकाजमा पारदर्शिता आउने अवस्था हुनु, सार्वजनिक निकायका काम कारवाहीका बारेमा नागरिकलाई जानकारी गराउने सामाजिक सञ्जालको विकास हुँदै जानु तथा ब्रोडब्यान्ड इन्टरनेटको प्रयोग र अनलाइन प्रकाशनको बढ्दो प्रयोगले सूचनाको पहुँचमा सहज हुनु, यस प्रदेशका प्राय सबै स्थानीय तहसम्म ल्यान्डलाइन, मोबाइल सेवा तथा इन्टरनेट सेवाको पहुँचले सूचना तथा सञ्चार संप्रेषणमा छिटो तथा सरलता हुनु यस क्षेत्रका अवसरहरू हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

सूचना र सञ्चार सेवामा गुणस्तरीय पहुँच।

६. लक्ष्य

पूर्ण प्रेस स्वतन्त्रता, सञ्चार र सूचनाको हक कार्यान्वयन गर्दै नागरिकमा सूचनाको पहुँच विस्तार गर्ने।

७. उद्देश्य

१. आम नागरिकलाई सहज र सर्वसुलभ रूपमा सूचना प्राप्त हुने अवस्था श्रृजना गर्नु, र

२. आम सञ्चार माध्यमलाई स्वच्छ, सक्षम, निस्पक्ष, मर्यादित, विश्वसनीय, व्यवसायिक र प्रतिस्पर्धी बनाउनु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
८.४.१ आम नागरिकको सुसूचित हुन पाउने संवैधानिक हकको लागि उचित वातावरण मिलाउने।	<ul style="list-style-type: none"> सूचनाको हकसम्बन्धी प्रादेशिक नीति, कानून तथा मापदण्डको तर्जुमा तथा प्रभावकारी कार्यान्वयनको व्यवस्था मिलाइनेछ। सामाजिक र आर्थिक विकासका क्षेत्रमा केन्द्रित प्रादेशिक सूचना सञ्चार रणनीतिको तर्जुमा र कार्यान्वयन गरिनेछ। प्रदेशस्तरका मन्त्रालयहरूमा अफिस अटोमेसन प्रणाली लागू गरिनेछ। टेलिसेन्टरहरूको स्थापना र सञ्चालनको व्यवस्था मिलाइनेछ। सबै कार्यालयका वेबसाइट, इमेल, फेसबुक, ट्वीटर, भाईबरजस्ता माध्यमबाट नागरिकको गुनासो प्राप्त तथा सुनुवाइ हुने व्यवस्था मिलाइनेछ।
८.४.२ आम सञ्चार माध्यमलाई स्वच्छ, सक्षम, निस्पक्ष, मर्यादित, व्यवसायिक र प्रतिस्पर्धी बनाउने।	<ul style="list-style-type: none"> आम सञ्चारसम्बन्धी कानून तर्जुमा गरिनेछ। छापा तथा विद्युतीय सञ्चार माध्यमको विकास र सुदृढीकरण गरिनेछ। आम सञ्चार माध्यमलाई स्वच्छ, सक्षम, निस्पक्ष, मर्यादित, व्यवसायिक, विश्वसनीय र प्रतिस्पर्धी हुने वातावरण बनाइनेछ। पत्रकार प्रतिष्ठान स्थापना र सञ्चालनको लागि सहयोग उपलब्ध गराइनेछ।
८.४.३ चलचित्र छायाङ्कन स्थलको निर्माण तथा नेपालको सांस्कृतिक, सामाजिक मूल्य मान्यताका मौलिक चलचित्र निर्माणमा जोड दिने।	<ul style="list-style-type: none"> नेपाललाई चलचित्र छायाङ्कनको स्थलको रूपमा विकसित गर्न दोलखा र अन्य सम्भाव्य स्थानहरूमा चलचित्र नगरी तथा छायाङ्कन स्थलहरूको निर्माण गरिनेछ। सांस्कृतिक तथा सामाजिक मूल्य मान्यता तथा सदभाव कायम राख्ने मौलिक र देशभक्तिपूर्ण चलचित्र निर्माणलाई प्रोत्साहन गरिनेछ। चलचित्रसम्बन्धी नीति बनाई चलचित्रसम्बन्धी मापदण्ड र वर्गीकरण गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	प्रादेशिक सूचना तथा सञ्चार रणनीतिको तर्जुमा र कार्यान्वयन	√	√	√	√	√
२	प्रदेशस्तरका मन्त्रालयहरूमा अफिस अटोमेसन प्रणालीको विकास		√			
३	आम सञ्चारसम्बन्धी कानून तर्जुमा	√	√	√	√	
४	आम सञ्चार माध्यमलाई स्वच्छ, सक्षम, निस्पक्ष, मर्यादित, व्यवसायिक, विश्वसनीय र प्रतिस्पर्धी हुने वातावरण निर्माण		√	√	√	
५	दोलखा र अन्य सम्भाव्य स्थानहरूमा चलचित्र नगरी तथा छायाङ्कन स्थलहरूको निर्माण	√	√	√	√	

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
६	सञ्चारकर्मीहरूको क्षमता विकास		√	√	√	
७	टेलिसेन्टरहरूको स्थापना र सञ्चालनको व्यवस्था		√	√	√	√
८	छापा तथा विद्युतीय सञ्चार माध्यमको विकास र सुदृढीकरण	√	√	√	√	
९	मौलिक र देशभक्तिपूर्ण चलचित्र निर्माणलाई प्रोत्साहन		√	√	√	
१०	पत्रकार प्रतिष्ठान स्थापना र सञ्चालनको लागि सहयोग		√	√	√	

१०. अपेक्षित उपलब्धि

सबै कार्यालयहरूका वेबसाइट, इमेल, फेसबुक, ट्वीटर, भाईबरजस्ता सामाजिक सञ्जालका माध्यमबाट नागरिकको गुनासो प्राप्ति तथा सुनुवाइ हुने व्यवस्था भएका हुने, सामुदायिक सूचना केन्द्रको स्थापना, आम सञ्चार माध्यम व्यवसायिक, मर्यादित र जिम्मेवार भएको हुने, अनलाइन सेवाहरू व्यवस्थित भएका हुने, सांस्कृतिक तथा सामाजिक मूल्य मान्यता तथा सद्भाव कायम राख्ने मौलिक प्रकृतिका चलचित्रहरूको निर्माण भएको हुने।

८.५ विज्ञान तथा प्रविधि

१. पृष्ठभूमि

देशको आर्थिक विकास र सामाजिक रूपान्तरणमा विज्ञान तथा प्रविधिको अहम् भूमिका हुन्छ। वैज्ञानिक अनुसन्धान तथा प्रविधि विकासमा गरिएको लगानीले विकासको गतिलाई तीब्रता दिन्छ। विज्ञान तथा प्रविधिको विकास समग्र विकासको सूचक हो। यो देशको प्रतिष्ठासित पनि जोडिएको हुन्छ। अनुसन्धान तथा प्रविधि विकासमा गरिएको लगानीले प्रविधिको विकासलाई र प्रविधिको विकासले प्रदेश विकासको गतिलाई तीब्रता दिन मद्दत गर्दछ। नेपालको संविधानले वैज्ञानिक अध्ययन अनुसन्धान एवम् आविष्कार, उन्नयन र विकासमा लगानी अभिवृद्धि गर्ने तथा वैज्ञानिक, प्राविधिक, बौद्धिक र विशिष्ट प्रतिभाहरूको संरक्षण गर्ने नीति लिएको छ।

२. वस्तुगत स्थिति

नेपालमा विज्ञान तथा प्रविधिसित सम्बद्ध सरकारको सहयोगमा सञ्चालित निकाय र अनुसन्धानशालाहरू १२५ को हाराहारीमा छ। ती धेरैजसो सेवा प्रदायक एकाइ हुन्। प्रतिष्ठान र विश्वविद्यालयहरूमा धेरैजसो अनुसन्धानहरू हुने गर्दछ। नवप्रवर्तन शैशव अवस्थामै छ। सबै विषयमा गरी विज्ञान तथा प्रविधिको जनशक्ति करिब ९० हजार रहेको अनुमान छ जसमध्ये आधा इन्जिनियरिङ, एक चौथाई चिकित्सा र बाँकी कृषि तथा पशु, वन, वनस्पति, प्राणी, रसायन, भौतिक विज्ञान आदि विषयमा रहेको देखिन्छ। देशभरिमा सरकारले विज्ञान र प्रविधिको क्षेत्रमा कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको औसत ०.३५ प्रतिशत र कुल बजेटको ०.२ प्रतिशत मात्र लगानी गर्ने गरेको छ, जुन अत्यन्तै न्यून हो।

प्रदेशस्तरमा विज्ञान प्रविधिको विकास तथा विस्तार, सोसम्बन्धी तथ्याङ्क सङ्कलन र प्रशोधन, जनशक्ति विकास र उपयोग, वैज्ञानिक अध्ययन अनुसन्धान एवम् आविष्कार, उन्नयन र विकास, विज्ञान संग्रहालय र प्लानेटोरियमको स्थापना, सञ्चालन र व्यवस्थापनजस्ता विज्ञान र प्रविधिसम्बन्धी विषयवस्तुहरू प्रदेशको कार्य क्षेत्रमा पर्दछन्।

३. समस्या र चुनौती

प्रविधिसम्बन्धी विषय कुनै मन्त्रालयको स्पष्ट कार्यदिशभिन्न नपर्नु, विज्ञान तथा प्रविधिसम्बन्धी प्रदेश सरकारमा संस्थागत संरचना नहुनु, सेवा प्रवाहमा विज्ञान र प्रविधिलाई आबद्ध गर्न नसक्नु, विज्ञान प्रविधिको क्षेत्रमा अत्यन्त न्यून लगानी, प्राविधिक जनशक्तिको न्यूनता र भएकाको पनि उचित परिचालन र उपयोग हुन नसक्नु, वैज्ञानिक अनुसन्धान केन्द्रहरूमा अनुसन्धानकर्ताहरूको अभाव, विश्वविद्यालयहरूमा अनुसन्धानका क्षेत्रमा लगानी न्यून रहनुजस्ता समस्याहरू रहेका छन्।

विज्ञान तथा प्रविधि क्षेत्रमा निरन्तर र दिगो लगानी, शिक्षामा विज्ञान तथा प्रविधि भित्र्याउनु, सेवा प्रवाहलाई प्रविधि अनुकूल बनाउनु, रेडियोधर्मी पदार्थको मानव स्वास्थ्यमा अहित नहुने गरी प्रयोगमा ल्याउनु, प्रादेशिक तहमा विज्ञान र प्रविधिको सन्तुलित विकास गर्न आवश्यक संरचना र कानुनी व्यवस्था मिलाउनु, विज्ञान शिक्षालाई गुणस्तरीय र सर्वसुलभ बनाउनु, युवा वैज्ञानिकहरूको पलायन रोकेर प्रदेशमै काम गर्ने स्थिति बनाउनु, आवश्यक दक्ष तथा प्राविधिक जनशक्तिको पहिचान गरी आपूर्ति गर्नुजस्ता चुनौतीहरू विद्यमान छन्।

४. सम्भावना र अवसर

प्रदेशस्तरमा विज्ञान प्रविधिको विकास तथा विस्तार, सोसम्बन्धी तथ्याङ्क सङ्कलन र प्रशोधन, जनशक्ति विकास र उपयोग, वैज्ञानिक अध्ययन अनुसन्धान एवम् विज्ञान र प्रविधिको आविष्कार, उन्नयन र विकास, विज्ञान संग्रहालय र प्लानेटेरियमको स्थापना, सञ्चालन र व्यवस्थापन एवम् प्राज्ञिक अनुसन्धान समावेश हुनु, विज्ञानको अध्यापन विद्यालयदेखि प्रारम्भ भई विश्वविद्यालयको विशिष्ट तहसम्म हुनु, विज्ञान अध्ययनमा आकर्षण र जागरूकता बढ्नु, प्रदेशभिन्न संघीय सरकार मातहतका विज्ञान तथा प्रविधिसम्बन्धी केन्द्रीय संस्थाहरूको उपस्थित रहनु (सूचना प्रविधि विभाग, राष्ट्रिय विधिविज्ञान प्रयोगशाला, वी.पी. कोइराला मेमोरियल प्लानेटेरियम तथा अब्जरभेटरी र विज्ञान संग्रहालय, राष्ट्रिय सूचना प्रविधि केन्द्र, नेपाल विज्ञान तथा प्रविधि प्रज्ञा प्रतिष्ठान, विश्वविद्यालय अन्तर्गत विज्ञान तथा प्रविधिसम्बन्धी शिक्षण संस्थाहरू र तिनले सञ्चालन गर्ने शैक्षिक कार्यक्रमहरू), डिजिटल र सूचना प्रविधिको प्रयोग र त्यसप्रति जनअभिरुचि बढ्दै जानु आदि यस क्षेत्रका अवसरहरू हुन्।

५. दीर्घकालीन सोच

विज्ञान र प्रविधिको विस्तार, विशिष्टीकरण र उत्पादकत्वमा सुधार।

६. लक्ष्य

विज्ञान र प्रविधिको विकास र उपयोगबाट समाजमा वैज्ञानिक चेतनाको अभिवृद्धि गर्ने र आर्थिक विकासमा टेवा पुऱ्याउने।

७. उद्देश्य

- प्रदेशमा विज्ञान तथा प्रविधिको विकास र उपयोग गर्नु र
- विज्ञान र प्रविधिलाई विकास र सेवा प्रवाहसँग आबद्ध गर्नु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
८.५.१ विद्यालयमा विज्ञान शिक्षाको सुदृढीकरण र प्रवर्द्धनात्मक	<ul style="list-style-type: none"> • प्रदेशको शिक्षा नीति र आवधिक कार्य योजनामा विद्यालयको विज्ञान पाठ्यक्रम र क्रियाकलापको तर्जुमा गरिनेछ। • विद्यालयहरूमा विज्ञान प्रयोगशालालाई सुदृढ गर्ने र जिल्लास्तरमा कम्तीमा एउटा प्रयोगशालासहित विज्ञान शिक्षा प्रदान गर्ने विद्यालयमा विज्ञान अध्ययन केन्द्रको स्थापना

रणनीति	कार्यनीति
<p>कार्यक्रमहरूलाई तीव्रता दिने।</p> <p>८.५.२ प्रदेशको प्राथमिकताका क्षेत्रमा वैज्ञानिक अनुसन्धान, प्रविधि विकास र नवप्रवर्तनमा जोड दिने।</p>	<p>गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> • हरेक स्थानीय तहमा सम्भाव्यता हेरी कम्तीमा एक प्राविधिक विद्यालय स्थापना गरिनेछ। • भविष्यमा प्रदेश विश्वविद्यालय हुनसक्ने गरी विज्ञान र प्रविधिका उत्कृष्ट उच्च शिक्षा केन्द्रहरू रणनीतिक स्थानमा स्थापना गरिनेछ। • विद्यालय, क्याम्पस तथा व्यवसायमा आवद्ध युवा वैज्ञानिकहरूलाई प्रोत्साहन तथा प्रतिभा प्रष्फुरण गर्न आवधिक युवा वैज्ञानिक सम्मेलनको परियोजना गरिनेछ। • वैज्ञानिक प्रतिभा प्रवर्द्धन गर्न नियमित रूपमा स्थानीय तह हुँदै प्रादेशिक तहसम्म विज्ञान प्रदर्शनी लगायतका सृजनात्मक प्रतियोगिताहरूको परियोजना गरिनेछ। • विज्ञान र प्रविधिसम्बन्धी प्रतिभा पहिचान गरी विशिष्टीकृत क्षेत्रमा प्रतिभाहरूको विकास र उपयोग गरिनेछ। • कृषि, जनस्वास्थ्य, साना उद्योग, ऊर्जा, यातायात र आवासजस्ता विषयहरू र सूचना प्रविधिमा विकासमूलक र व्यावहारिक अनुसन्धान, अन्वेषण गर्न र प्रविधि विकास र उपयोगमा सहयोग पुऱ्याउन नवप्रवर्तन केन्द्रहरूको स्थापना गरिनेछ। • विज्ञान र प्रविधिलाई उत्पादन, उद्योग, उद्यमशीलता र शिक्षण क्षेत्रमा आवद्ध गर्दै लगिनेछ। • औद्योगिक क्षेत्रको स्थापना सँगसँगै प्राविधिक महाविद्यालयको स्थापनासमेतलाई एकीकृत गरिनेछ। • विज्ञान र प्रविधिका क्षेत्रमा मौलिक सिर्जनशीलतालाई प्रोत्साहन गर्ने गरी सृजनशीलता कोषको स्थापना गरिनेछ। • प्रदेशको प्राथमिकताका क्षेत्रमा अध्ययन, अनुसन्धान र ज्ञान हस्तान्तरणको लागि विश्वविद्यालय र अनुसन्धान प्रतिष्ठानहरूसँग सहकार्य गरिनेछ। • प्रदेशस्तरमा युवा वैज्ञानिकहरूलाई विज्ञान र प्रविधिको अध्ययन अनुसन्धान र विकासका लागि प्रोत्साहन हुने गरी प्राथमिकताका क्षेत्रहरूमा प्रतियोगात्मक वृत्ति विकास र अनुसन्धानका अवसर प्रदान गरिनेछ। • विज्ञान तथा प्रविधिसँग सम्बद्ध प्रदेशका उत्कृष्ट संघ संस्था वैज्ञानिक तथा अनुसन्धानदातालाई योगदानका आधारमा कदर एवम् पुरस्कृत गरिनेछ। • स्थानीय, परम्परागत तथा मौलिक प्रविधिको पहिचान गरी तिनको वैज्ञानिक विकासमा जोड दिइनेछ। • वैज्ञानिक तथा प्राविधिक जनशक्तिलाई उद्यमशीलतासँग आवद्ध गर्दै लगिनेछ। • विश्वविद्यालय र अनुसन्धान प्रतिष्ठान तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानहरूबीच सहकार्य गराइनेछ। • औद्योगिक प्रतिष्ठानहरूमा अनुसन्धान र विकासमा लगानी गर्न प्रोत्साहित गरिनेछ।
<p>८.५.३</p>	<ul style="list-style-type: none"> • प्रदेश सरकारमा विज्ञान र प्रविधि विषय क्षेत्र सम्बद्ध जनशक्तिसहितको संस्थागत संरचनाको

रणनीति	कार्यनीति
विकास निर्माण र सेवा प्रवाहलाई विज्ञान प्रविधि र सूचना प्रविधिमैत्री बनाउने।	<p>व्यवस्था गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> प्रदेशको दैनिक कार्य सञ्चालन, स्थानीय तहसँगको सहकार्यका साथै विकास निर्माण र सेवा प्रवाहलाई प्रभावकारी र छिटो छरितो बनाउन विज्ञान र सूचना प्रविधिको अधिकतम उपयोग गरिनेछ। कर्मचारीको क्षमता विकासमा विज्ञान प्रविधि र सूचना प्रविधिको पाठ्यक्रम समावेश गरिनेछ। प्रदेशमा भएको सेवाप्रवाहमैत्री नवीन प्रविधिलाई प्रोत्साहन गर्न आवधिक प्रदेश प्रविधि मेलाको परियोजना गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	विद्यालयहरूमा विज्ञान प्रयोगशालाहरूको सुदृढीकरण	√	√	√	√	√
२	एक जिल्लामा कम्तिमा एक विज्ञान प्रयोगशालासहित विज्ञान शिक्षा प्रदान गर्ने विद्यालयमा विज्ञान अध्ययन केन्द्रको स्थापना	√	√	√	√	√
३	स्थानीय तहमा प्राविधिक विद्यालयको स्थापना	√	√	√	√	√
४	युवा वैज्ञानिक सम्मेलनको परियोजना					
५	विज्ञान प्रदर्शनी लगायतका सृजनात्मक प्रतियोगिताहरूको परियोजना		√	√	√	√
६	विज्ञान र प्रविधिसम्बन्धी प्रतिभा पहिचान गरी विशिष्टीकृत क्षेत्रमा प्रतिभाहरूको विकास र उपयोग	√	√	√	√	√
७	स्थानीय, परम्परागत तथा मौलिक प्रविधिको पहिचान गरी तिनको वैज्ञानिक विकास		√	√	√	√
८	कर्मचारीको क्षमता विकासमा विज्ञान प्रविधि र सूचना प्रविधिको पाठ्यक्रम समावेश		√	√	√	√
९	विज्ञान र प्रविधिका क्षेत्रमा मौलिक सिर्जनशीलतालाई प्रोत्साहन गर्ने गरी सृजनशीलता कोषको स्थापना		√	√	√	√
१०	प्रदेशको प्राथमिकताका क्षेत्रमा अध्ययन, अनुसन्धान, ज्ञान हस्तान्तरणको लागि विश्वविद्यालय र अनुसन्धान प्रतिष्ठानहरूसँग सहकार्य		√	√	√	√
११	नवप्रवर्तन केन्द्रहरूको स्थापना		√	√	√	√
१२	औद्योगिक क्षेत्रको स्थापना सँगसँगै प्राविधिक महाविद्यालयको समेत स्थापना		√	√	√	√
१३	प्रदेशका उत्कृष्ट संघ संस्था वैज्ञानिक तथा अनुसन्धानदातालाई योगदानका आधारमा कदर एवम् पुरस्कार प्रदान		√	√	√	√
१४	आवधिक रूपमा प्रदेश प्रविधि मेलाको परियोजना		√	√	√	√

१०. अपेक्षित उपलब्धि

विज्ञान विषयको पढाइ हुने सबै विद्यालयहरूमा योजना अवधिमा विज्ञान प्रयोगशालाको सुदृढ भएको र विज्ञान अध्ययन केन्द्रको स्थापना भएको हुने, हरेक स्थानीय तहमा प्राविधिक विद्यालय स्थापना भएको हुने, सृजनशील कोषको स्थापना भई त्यसको प्रयोग आरम्भ भएको हुने, प्रविधि विकासका लागि उत्कृष्ट नवप्रवर्तन केन्द्र स्थापना भएको हुने र प्रदेशको प्रशासनिक तथा सेवा प्रवाहमा आधुनिक सूचना प्रविधिको प्रयोग स्थापित भएको हुने।

८.६ तथ्याङ्क प्रणाली, योजना प्रक्रिया एवम् अनुसन्धान

१. पृष्ठभूमि

सही तथ्याङ्क, सूचना एवम् अनुसन्धानमा आधारित भई यथार्थपरक, व्यवहारिक र नतिजामुखी योजना तर्जुमा तथा कार्यान्वयन, नतिजा सूचकमा आधारित, नियमित र समस्या समाधानमुखी अनुगमन प्रक्रिया, प्रभाव र नतिजा उन्मुख मूल्याङ्कन प्रणाली स्थापनाद्वारा नै योजनाले चाहेको प्रतिफल हासिल गर्न सकिन्छ। विगतको केन्द्रीय र जिल्लास्तरको योजना प्रक्रिया र तिनका उपलब्धिहरूबाट पाठ सिक्ने वस्तुपरक र यथार्थमा आधारित, नवीन र महत्वाकाङ्क्षी तर व्यवहारिक र हासिल गर्न सकिने योजना निर्माणमा जोड दिनुपर्ने देखिन्छ। यसका लागि परियोजनाको पहिचान, वर्गीकरण, छनौट, विश्लेषण, मूल्याङ्कन र प्राथमिकताको मापदण्ड विकास गरी विधिसहितको प्रादेशिक परियोजना बैंकको स्थापना गर्नु उपयुक्त हुन्छ।

नेपालमा प्रदेशस्तरीय योजना प्रक्रियाको भर्खरै सुरुवात हुँदैछ तर तथ्याङ्क व्यवस्थापन भइसकेको स्थिति छैन। प्रदेश र स्थानीय तहको तथ्याङ्क जिल्लागत छुट्याएर लिनुपर्ने स्थिति छ। अधिकांश तथ्याङ्क २०६८ को जनगणनामा आधारित छन् र विगत ७ वर्षमा सामाजिक, आर्थिक र स्थलीय सूचक र सम्बन्धहरूमा भएका परिवर्तनहरूलाई तिनले प्रतिबिम्बित गर्दैनन्।

प्रदेशस्तरीय विकास नीति, प्राथमिकता, आवधिक तथा क्षेत्रगत योजना र वार्षिक विकास कार्यक्रमको तर्जुमा, कार्यान्वयन र अनुगमन तथा मूल्याङ्कन, राष्ट्रिय तथा अन्तरप्रदेश विकास परियोजनाको समन्वय र सशर्त अनुदानको सदुपयोग, तथ्याङ्क, सूचना प्रणाली तथा अभिलेख व्यवस्थापन सम्बन्धमा प्रादेशिक नीति, कानून, मापदण्ड एवम् योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र नियमन तथा संघ र स्थानीय तहसँग सहयोग, समन्वय र सहकार्यजस्ता विषयहरू प्रदेशको कार्य क्षेत्रमा पर्दछन्।

२. वस्तुगत स्थिति

विभिन्न श्रोतबाट उपलब्ध तथ्याङ्क र सूचनाका आधारमा प्रदेशको वस्तुगत स्थिति विवरण तयार भएको, प्रदेश नीति तथा योजना आयोग गठन भएको, सबै मन्त्रालयहरू गठन भइसकेका, आम्दानी तथा खर्चको वित्तीय प्रतिवेदन प्रणाली स्थापित हुन थालेको अवस्था छ। प्रदेश सरकारले आफ्नो नीति तथा कार्यक्रममा परियोजना बैंक स्थापना गर्ने नीति पारित गरेको र सोअनुसार परियोजना बैंकको सफ्टवेयरको विकास लगायतका प्रारम्भिक कार्यहरूसमेत अगाडि बढिसकेको अवस्था छ।

३. समस्या र चुनौती

आवश्यक तथ्याङ्क र सूचना उपलब्ध नहुनु, प्रदेशको तथ्याङ्क व्यवस्थापनको संस्थागत आधार नहुनु, योजना तर्जुमा र कार्यान्वयनको पहिलेको अनुभव नहुनु, स्थापित योजना तर्जुमा प्रणाली नहुनु, प्रदेश सरकार नयाँ संरचना भएकाले व्यवस्थित भई नसक्नु, प्रदेश अन्तर्गतका संस्थागत संरचनाहरू निर्माण भई नसक्नु, कर्मचारीहरूको पदपूर्ति भई नसक्नु, नीति तथा योजना आयोगमा भौतिक पूर्वाधार एवम् मानवीय संसाधन न्यून हुनु आदि यस क्षेत्रका प्रमुख समस्याहरू हुन्।

विकासका सबै क्षेत्रमा वस्तुगत स्थितिको आँकलन गर्नु, श्रोत-साधनको उपलब्धताको सुनिश्चितता गर्नु, योजना तर्जुमा, अनुगमन र नतिजामूलक मूल्याङ्कन पद्धति स्थापित गर्नु, विकासका सरोकारवाला निकायहरूबीच समन्वय कायम गर्नु, योजना र

बजेटबीच सामञ्जस्यता कायम गर्नु, विकासमा भौगोलिक र समुदायगत असमानता घटाउँदै लानु र निरपेक्ष गरिवीको निराकरण गर्नु यस क्षेत्रका प्रमुख चुनौतीहरू हुन्।

४. सम्भावना र अवसर

संविधानले प्रदेशको समग्र र क्षेत्रगत योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन, अनुगमन र मूल्याङ्कनको दायित्व प्रदेशलाई दिएको छ। यस हिसाबले प्रदेश सरकार प्रदेशको सर्वाङ्गीण विकासको प्रमुख संवाहक हो। प्रदेशको पहिलो योजनाले योजना तर्जुमा प्रक्रियाको पद्धति बसाउने, तथ्याङ्कको आधार तयार गर्ने, प्रदेशको विकासको दीर्घकालीन समग्र र क्षेत्रगत सोच, रणनीति र आवधिक योजना तर्जुमा गर्ने, वित्तीय व्यवस्थापन गर्ने, निर्देशिका, मापदण्ड बनाउने, वार्षिक विकास कार्यक्रम तर्जुमा, स्वीकृति, कार्यान्वयन र नियमन गर्ने, योजना अनुगमन तथा मूल्याङ्कनको नतिजामूलक सूचक र आधार तयार गर्ने, नव अनुसन्धान एवम् विकास गर्ने र समग्रमा योजना तर्जुमा, अनुगमन र मूल्याङ्कनका लागि पद्धति स्थापित गर्ने अवसर प्रदान गर्छ। साथै, यसले संघीय र स्थानीय तहका योजनासँग समन्वय र सहजीकरणका लागि प्रणालीको विकास गर्न र दिगो विकास लक्ष्यको प्रदेश र स्थानीय तहमा स्थानीयकरण गर्ने प्रक्रिया विकास गर्न सघाउँछ।

५. दीर्घकालीन सोच

तथ्याङ्क र सूचनामा आधारित नतिजामुखी योजना तर्जुमा, अनुगमन र मूल्याङ्कन प्रणाली।

६. क्षेत्रगत लक्ष्य

योजनाका हरेक शृङ्खलाहरू यथार्थपरक, अन्तरसम्बन्धित, व्यवहारिक भई लक्ष्य र प्रगतिबीचमा सामञ्जस्यता स्थापित भएको हुने।

७. उद्देश्य

- तथ्याङ्क एवम् मापदण्डमा आधारित योजना तर्जुमा गर्नु,
- योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र अनुगमन मूल्याङ्कनलाई प्रभावकारी बनाउनु,
- अनुसन्धान र विकासलाई योजनाको आधारको रूपमा स्थापित गर्नु, र
- परियोजना बैकमा आधारित योजना प्रणाली स्थापित गर्नु।

८. रणनीति र कार्यनीति

रणनीति	कार्यनीति
८.६.१ सुदृढ तथ्याङ्क सङ्कलन, प्रशोधन र व्यवस्थापनको आधार तयार गर्ने।	<ul style="list-style-type: none"> • प्रदेश नीति तथा योजना आयोगमा तथ्याङ्क महाशाखा/विभाग स्थापना गरी तथ्याङ्क सङ्कलन, प्रशोधन, व्यवस्थापन, समन्वय र वितरणको जिम्मा दिइनेछ। • आवश्यकता अनुसार प्राथमिक एवम् मध्यमस्तरीय तथ्याङ्क सङ्कलन गरी विद्युतीय प्रविधि र सूचना प्रणालीमा आबद्ध गराई आवश्यकता अनुसार तथ्याङ्कको आपूर्ति गरिनेछ। • संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच तथ्याङ्क र सूचनाहरू सहज आदान प्रदानको लागि विद्युतीय कनेक्टीभिटीको व्यवस्था गरिनेछ।
८.६.२ योजना तर्जुमा, कार्यान्वयन र अनुगमन मूल्याङ्कनलाई यथार्थपरक, व्यवहारिक	<ul style="list-style-type: none"> • तथ्याङ्क र सूचनाहरूको पर्याप्त विश्लेषण गरी यथार्थपरक योजना तर्जुमा गर्न आवश्यक व्यवस्था गरिनेछ। • प्रदेश तह र स्थानीय तहका योजनाको वर्गीकरण मापदण्ड निर्माण गरी लागू

रणनीति	कार्यनीति
र परिणाममुखी बनाउने।	<p>गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> • विस्तृत अध्ययन प्रतिवेदन सम्पन्न भएका पूर्वाधार विकास परियोजनालाई मात्र प्रदेश योजनामा समावेश गरिनेछ। • प्रदेश गौरवका परियोजनाहरू छनौटको कार्यविधि तर्जुमा गरिनेछ। • योजना तर्जुमाका हरेक चरणमा लाभग्राहीहरूसँग पर्याप्त छलफल र सहभागिता गराई स्थानीय तहहरूसमेतको सहभागितामा योजना तर्जुमा गरिनेछ। • योजनाका हरेक शृङ्खलाहरूको कारण र परिणामको पर्याप्त विश्लेषण गर्दै अन्तरसम्बन्ध स्थापित गरिनेछ। साथै, अन्तरक्षेत्रीय सम्बन्धहरूलाई सम्बद्ध योजना र कार्यक्रमहरूमा आत्मसात् गरिनेछ। • योजना कार्यान्वयन गर्ने निकायको संस्थागत सुदृढीकरणका साथै आवश्यक कर्मचारीहरूको व्यवस्था एवम् तिनीहरूको क्षमता विकास गरी नतिजाप्रति उत्तरदायी बनाइनेछ। • योजनासँग सम्बन्धित निकायहरूबीच समन्वय र साझेदारीको व्यवस्था गरिनेछ। • योजनाका लागत, जनसहभागिता, परिणाम, गुणस्तर, समयपालना आदि विविध विषयमा मापदण्ड बनाई प्रभावकारी कार्यान्वयन गरिनेछ। • योजना अनुगमन तथा मूल्याङ्कन निर्देशिका/दिक्दर्शन बनाई तहगत रूपमा परियोजना अनुगमनका लागि मन्त्रालय, नीति तथा योजना आयोग र मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयमा अनुगमन संयन्त्र गठन गरी नियमित समीक्षा गरिनेछ। • अनुगमन प्रणालीलाई नियमित र प्रभावकारी बनाउन कार्यक्रम वा परियोजना निर्माण तहमै नतिजा सूचकहरूको विकास गरी सोका आधारमा पारदर्शी उपलब्धि मापन गरिनेछ। • केही निश्चित परियोजनाहरूको तेश्रो पक्षद्वारा मूल्याङ्कन गराई त्यसको अनुभव आगामी योजना तर्जुमाको पृष्ठपोषणको रूपमा लिइनेछ।
<p>८.६.३</p> <p>योजना निर्माण र मूल्याङ्कनमा सहयोगी हुने नव अनुसन्धान र विकासमा जोड दिने।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • सामाजिक आर्थिक विकासमा नयाँ आयामको खोजी गर्न र मौजुदा व्यवस्थामा सुधार गर्न अनुसन्धान र विकासमा जोड दिइनेछ। • विशिष्टताका आधारमा विश्वविद्यालय तथा विभिन्न विषयपरक अनुसन्धानमूलक संस्थाहरूलाई अनुसन्धानमा संलग्न गराइनेछ। • नवीनतम् र प्रभावकारी विधिहरूलाई योजना तर्जुमा, अनुगमन र मूल्याङ्कनमा समावेश गर्न नेपाल र छिमेकी मुलुकका विज्ञको सहभागितामा आवधिक योजना विधि कार्यशाला परियोजना गरिनेछ र त्यसको नतिजालाई आगामी योजना

रणनीति	कार्यनीति
८.६.४ परियोजना बैंकमा आधारित योजना प्रणालीलाई स्थापित गर्ने।	<p>प्रक्रियामा पृष्ठपोषण गरिनेछ।</p> <ul style="list-style-type: none"> विकास कार्यक्रमहरूको वार्षिक बजेटको निश्चित प्रतिशत प्राथमिकता दिइएका अनुसन्धान र योजना विधि विकासमा प्रयोग गरिनेछ। परियोजनाहरूको पहिचान, वर्गीकरण, छनौट, विश्लेषण, मूल्याङ्कन तथा प्राथमिकीकरणको मापदण्ड बनाई लागू गरिनेछ। परियोजना बैंकमा रहेका परियोजनाहरू व्यवस्थित अभिलेखीकरणका लागि परियोजना बैंक विद्युतीय व्यवस्थापन सूचना प्रणालीमा आवद्ध गरी परियोजना बैंकबाट परियोजना छनौट प्रणालीलाई संस्थागत गरिनेछ। स्थानीय तहमा परियोजना बैंक स्थापना गर्न आवश्यक समन्वय गरिनेछ।

९. प्रमुख कार्यक्रमहरू

क्र. सं.	कार्यक्रमहरू	सहकार्य गर्ने निकाय				
		संघ	प्रदेश	स्थानीय तह	निजी क्षेत्र	सहकारी र अन्य
१	प्रदेश नीति तथा योजना आयोगमा प्रादेशिक तथ्याङ्क महाशाखा/विभाग स्थापना गरी आवश्यक तथ्याङ्क सङ्कलन, प्रशोधन, व्यवस्थापन, समन्वय र आदान प्रदान	√	√	√		
२	संघ, प्रदेश र स्थानीय तहबीच तथ्याङ्क र सूचनाहरू सहज आदान प्रदानको लागि विद्युतीय कनेक्टीभिटीको व्यवस्था	√	√	√		
३	प्रदेश तह र स्थानीय तहका योजनाको वर्गीकरण मापदण्ड निर्माण		√	√		
४	प्रदेश गौरवका परियोजनाहरू छनौटको कार्यविधि तर्जुमा		√	√		
५	योजना कार्यान्वयन गर्ने निकायको संस्थागत सुदृढीकरण र क्षमता विकास		√	√		
६	योजना तर्जुमा र अनुमगन तथा मूल्याङ्कन निर्देशिका/दिक्दर्शन तर्जुमा		√	√		
७	केही निश्चित परियोजनाहरूको तेश्रो पक्षद्वारा मूल्याङ्कन हुने व्यवस्था		√	√		
८	परियोजनाहरूको पहिचान, वर्गीकरण, छनौट, विश्लेषण, मूल्याङ्कन तथा प्राथमिकीकरणको मापदण्ड निर्माण		√	√		
९	प्रदेश परियोजना बैंक प्रणालीको विकास र प्रयोग		√	√		
१०	स्थानीय तहमा परियोजना बैंक निर्माणमा सहजीकरण		√	√		

१०. अपेक्षित उपलब्धि

व्यवस्थित तथ्याङ्क प्रणाली स्थापना भई विद्युतीय सूचना प्रणालीमा आवद्ध भएको हुने, योजनासम्बन्धी कर्मचारीहरूको क्षमता विकास तालिम भएको हुने, सबै परियोजनाहरूको अनुगमन सूचक बनाएर मात्र परियोजना सञ्चालन गर्ने व्यवस्था भएको हुने, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन निर्देशिका / दिक्दर्शन बनेको हुने, वार्षिक बजेटको एक निश्चित प्रतिशत विकासका अनुसन्धानात्मक कार्यमा लगाउनुपर्ने व्यवस्था भएको हुने र प्रदेश परियोजना बैंकको स्थापना भएको हुने। परियोजना बैंकको

सञ्चालनको कार्यविधि, प्रदेश गौरवका परियोजना छनौटको कार्यविधि र क्षेत्रगत नीति र गुरुयोजनाहरू तर्जुमा भएको हुनेछ।

परिच्छेद—नौ नतिजा खाका

९.१ परिचय

आवधिक योजनाले परिकल्पना गरेका सौँच, लक्ष्य र उद्देश्यहरू कसरी प्राप्त हुन्छ भन्ने तथ्यलाई तर्कसंगत ढंगबाट नतिजा खाकामा प्रस्तुत गरिएको छ। नेपालको विगतको अनुभव र राष्ट्रिय योजना आयोगले अभ्यासमा ल्याएको नतिजा खाकाको ढाँचालाई नै आधार मानी यस आवधिक योजनाको नतिजा खाका तर्जुमा गरिएको छ। प्रदेश सरकारलाई वार्षिक र क्षेत्रगत गुरु योजनाहरू तर्जुमा गर्न, सञ्चालित परियोजनाहरूको अनुगमन तथा मूल्याङ्कन गर्न र स्वयम आवधिक योजनाको मध्यावधि समीक्षा र मध्यमकालीन खर्च संरचना तयार गर्नका लागि यसले मद्दत गर्दछ।

९.२ नतिजा सूचक

९.२.१ समष्टिगत आर्थिक क्षेत्र

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	प्रतिव्यक्ति कुल आय	अमेरिकी डलर	१९४६	२१११	२३२४	२५४०	२८०२	३०८७	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.			१.४	१	
	रिबीको रेखामुनी रहेका जनसङ्ख्याको अनुपात प्रतिदिन १.२५ डलर (पीपीपी)	अमेरिकी डलर							राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.				१	
	प्रतिदिन १.९ डलर (पीपीपी मूल्य)	अमेरिकी डलर	१३.८	१५.९	१८	२०.१	२२.३	२४.४	NLSS-WB Estimate	के.त.वि.				१	
	राष्ट्रिय गरिबीको रेखामुनि रहेका सबै उमेरका महिलाहरू	प्रतिशत												१	
	बहुआयामिक गरिबी सूचकाङ्क वास्तविक गणना (Head Count) अनुपात (प्रतिशत)	प्रतिशत	१२.२	१०.८	९.३	७.९	६.४	५	NLSS-WB Estimate	के.त.वि.				१	
	राष्ट्रिय गरिबी रेखामुनिका बालबालिका (५ वर्षमुनिका, प्रतिशत)	प्रतिशत	३५.१	३१.३	२७.५	२३.७	१९.९	१६.१	NLSS-WB Estimate	के.त.वि.				१	
	आर्थिक वृद्धि दर (उत्पादकको मूल्यमा)	प्रतिशत	७.५	१०.१	११.८	११.५	११.३	११.७	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.			१.३	८	
	कुल गार्हस्थ उत्पादन (उत्पादकको मूल्यमा)	रु. दश लाखमा	१४३२७६	१५७७८०	१७६३२६	१९६६३६	२१८९३६	२४४५९४	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.			१.३	८	
असर	कृषि क्षेत्रको कुल गार्हस्थ उत्पादन (उत्पादकको मूल्यमा)	रु. दश लाखमा	१४६०६	१५२८३	१६०३९	१६९३०	१७८८८	१८८९९	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.		४.२.१	१.३	८	
	उद्योग क्षेत्रको कुल गार्हस्थ उत्पादन (उत्पादकको मूल्यमा)	रु. दश लाखमा	१४१३४	१६०९१	१९१५६	२१८५८	२४७१६	२८४०८	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.			१.३	८	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/ रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	सेवा क्षेत्रको कुल गार्हस्थ्य उत्पादन (उत्पादकको मूल्यमा)	रु. दश लाखमा	८३३६२	९०७३१	१००३७९	१११३२४	१२३१९५	१३६६९१	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि			१.३	८	
	कृषि क्षेत्रको वृद्धि दर	प्रतिशत	६.२	४.६	४.९	५.६	५.७	५.७	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.		४.२.१	१.३	८	
	उद्योग क्षेत्रको वृद्धि दर	प्रतिशत	८.०	१३.८	१९.०	१४.१	१३.१	१४.९	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.			१.३	८	
	सेवा क्षेत्रको वृद्धि दर	प्रतिशत	६.९	८.८	१०.६	१०.९	१०.७	११.०	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि			१.३	८	
	मुद्रास्फीति	प्रतिशत	५.५	५.६	५.७	५.८	५.९	६.०	मूल्य सूचकांक	ने.रा.बैंक					
प्रतिफल	कृषि क्षेत्र र गैरकृषि क्षेत्रको योगदान														
	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा (कृषि तथा वन, मत्स्यपालन र खानी तथा उत्खनन्) को योगदान	प्रतिशत	१३.०	१२.५	११.८	११.२	१०.८	१०.३	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि			१.३		
	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा उत्पादन उद्योग, विद्युत, रयाँस र पानी तथा निर्माण क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत	१२.६	१३.२	१४.१	१४.६	१४.९	१५.४	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि			१.३		
	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा सेवा क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत	७४.४	७४.३	७४.०	७४.२	७४.३	७४.३	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि			१.३		
	पूँजीगत खर्च (कुल पूँजीगत विनियोजनको)	प्रतिशत	४३.९	६०	७०	८०	९०	९९	बजेट पूस्तिका र प्रतिवेदन	आ.मा.यो.म.			१.३		
	संघबाट प्राप्त अनुदान (कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा)	प्रतिशत											१.३		
	बजेटमा आन्तरिक आयको अंश	प्रतिशत	२६.२	२९	३१.७	३४.५	३७.२	४०	बजेट पूस्तिका र प्रतिवेदन	आ.मा.यो.म.			१.३		
	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा राजस्वको योगदान	प्रतिशत							आ.मा.यो.म	आ.मा.यो.म.			१.३		
	आन्तरिक आयमा कर राजस्वको अंश	प्रतिशत	६९.९	७१.९	७३.९	७६	७८	८०	आ.मा.यो.म	आ.मा.यो.म.			१.३		
	औद्योगिक उत्पादन	रकम करोडमा	६,११०	६,८१२	७,६९८	८,६९९	९,७४३	११,१०७	आर्थिक सर्वेक्षण	उ.प.व.वा.म.			१.३		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनको अनुपातमा पूर्वाधारमा भएको सार्वजनिक लगानी	प्रतिशत											१.१		
	बैङ्क शाखा विस्तार भएका स्थानीय तह	संख्या	११५	११९	११९	११९	११९	११९	प्रतिवेदन	ने.रा.बैंक			१.१		
	बैंक खातामा पहुँच पुगेको जनसंख्या	प्रतिशत											१.१		
	स्थायी लेखा नम्बर लिएका जनसंख्या	प्रतिशत											१.१		
	कृषि र गौरकृषि क्षेत्रको वृद्धि दर														
	कृषि भूमिको उत्पादकत्व	मे.टन प्रति हे							भू.कृ.स.म./के.त.वि.	भू.कृ.स.म.			१.३		
	श्रमको उत्पादकत्व	रु. हजारमा	२०५.९	२२६.३	२४६.७	२६७.१	२८७.५	३०७.९	पन्ध्रौ योजना	रायोआ			१.४		
	औद्योगिक लगानिमा वार्षिक वृद्धि	प्रतिशत							सर्वेक्षण प्रतिवेदन				१.३		
	मुद्रास्फिति														
	खाद्य तथा पेय पदार्थको उपभोक्ता मूल्य सूचकांक	प्रतिशत							मूल्य सूचकांक	ने.रा.बैंक					
	गैरखाद्य तथा सेवाको उपभोक्ता मूल्य सूचकांक	प्रतिशत							मूल्य सूचकांक	ने.रा.बैंक					

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ४ को ४.१ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.२ कृषि, पशुपन्छी तथा मत्स्य विकास

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	कृषि क्षेत्रको वृद्धि दर	प्रतिशत	६.२	४.६	४.९	५.६	५.७	५.७	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.		४.२.१	१.३		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रदेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
असर	कृषिको उत्पादकत्वमा वृद्धि														
	खाद्यान्न वालीको उत्पादकत्व	के.जी प्रति हे	२९७१	३०६०	३१३७	३१८४	३२२५	३२५७	प्रतिवेदनहरू			४.२.१	१.३	२	
	नगदे वालीको उत्पादकत्व	मे.टन प्रति हे	८	८	९	९	९	९	प्रतिवेदनहरू			४.२.१	१.३	२	
	वागवानीजन्य वालीको उत्पादकत्व	मे.टन प्रति हे	१४	१५	१५	१५	१६	१६	प्रतिवेदनहरू			४.२.१	१.३	२	
	माछाको उत्पादकत्व	के.जी प्रति हे	५०२९	५२८०	५४३९	५५४८	५६३१	५६८७	प्रतिवेदनहरू			४.२.१	१.३	२	
	कृषि भूमिको उत्पादकत्व	मे.टन प्रति हे							प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म /के.त.वि		४.२.१	१.३	२	
	कृषि उत्पादनमा व्यावसायिक कृषिको हिस्सा	प्रतिशत							प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म /के.त.वि		४.२.१	१.३	२	
	कृषि मजदुरको उत्पादकत्व	अमेरिकी डलर	८३५	८८५	९१५	९५०	९९०	१०१०	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म /के.त.वि		४.२.१	१.३	२	
	खाद्यान्न वालीको उत्पादकत्व	के.जी./हे	२९७१	३०६०	३१३७	३१८४	३२२५	३२५७	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	धान	के.जी./हे	३७६५	३८५९	३९१७	३९५६	३९९६	४१९६	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	मकै	के.जी./हे	३००८	३०८३	३१२९	३१६१	३१९२	३३५२	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	गहुँ	के.जी./हे	२९६७	३०४१	३०८७	३११८	३१४९	३३०६	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	तरकारीको उत्पादकत्व	मे.ट./हे.	१५	१६	१६.५	१७	१७	१८	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	काउली	मे.ट./हे.	१५	१६	१६.५	१७	१७	१८	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	बन्दा	मे.ट./हे.	१६	१६.५	१७	१७	१८	१८	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	गोलभेंडा	मे.ट./हे.	२०	२१	२१.५	२२	२२	२३	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	फलफूलको उत्पादकत्व	मे.ट./हे.	१०.७	११	११.५	१२	१२	१३	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	केरा	मे.ट./हे.	१५.४	१६	१६.३	१७	१८	१९	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रदेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	सुन्तला जात	मे.ट./हे.	११.२	११.५	१२	१२	१३	१३	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	किवी	मे.ट./हे.	६.१	७	७.२	८	८	९	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
प्रतिफल	खाद्यान्न उत्पादन	मे.टन	१३४८२८२	१४१५६९६	१४५८१६७	१४८७३३०	१५०९६४०	१५२४७३७	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
		मे. टन	५०३२३८	५२८४००	५४४२५२	५५५१३७	५६३४६४	५६९०९९	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	धान	मे. टन	६०१५२०	६३१५९६	६५०५४४	६६३५५५	६७३५०८	६८०२४३	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	मकै	मे. टन	१६९२७३	१७७७३७	१८३०६९	१८६७३०	१८९५३१	१९१४२६	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	गहुँ	मे. टन	७४२५१	७७९६४	८०३०२	८१९०९	८३१३७	८३९६९	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	अन्य खाद्यान्न बाली	मे. टन	७९३१९८	८३२८५८	८५७८४४	८७५००१	८८८१२६	८९७००७	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	नगदे वाली (दलहन, तेलहन, आलु र उखु)	मे.टन	२६४३३	२७७५५	२८५८७	२९०१६	२९४५१	२९७४६	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	दलहन	मे. टन	३७५१३	३९३८९	४०५७०	४११७९	४१७९७	४२२१५	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	तेलहन	मे. टन	७२४४०९	७६०६२९	७८३४४८	७९५२००	८०७१२८	८१५१९९	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	आलु	मे. टन	४८४३	५०८५	५२३८	९६०५	९७५०	९८४७	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	उखु	मे. टन	१५८५५१	१००६४७९	१०३६६७३	१०५२८२६	१०६८६१८	१०७९३०४	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	बागवानीजन्य(फलफूल, तरकारी, चिया, कफी, अलैचि, अदुवा)	मे.टन	१४५५२२	१५२७९८	१५७३८२	१५९७४३	१६२१३९	१६३७६०	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	फलफूल	मे. टन	३४४८९	३६२१३	३७३००	३७८५९	३८४२७	३८८१२	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	केरा	मे. टन	५७४८८	६०३६२	६२१७३	६३१०६	६४०५२	६४६९३	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	सुन्तला जात	मे. टन	९७२	१०२१	१०५१	१०६७	१०८३	१०९४	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	किवी	मे. टन	५२५७३	५५२०२	५६८५८	५७७११	५८५७६	५९१६२	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	अन्य फलफूल	मे. टन	७०१६०८	७३६६८८	७५८७८९	७७०१७१	७८१७२३	७८९५४१	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	तरकारी	मे. टन	८५८८८	९०१८२	९२८८८	९४२८१	९५६९५	९६६५२	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	काउली	मे. टन	८०२४६	८४२५८	८६७८६	८८०८८	८९४०९	९०३०३	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	बन्दा	मे. टन	११७०५४	१२२९०७	१२६५९४	१२८४९३	१३०४२०	१३१७२४	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	गोलभेंडा	मे. टन	४१८४२०	४३९३४१	४५२५२१	४५९३०९	४६६१९९	४७०८६१	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	अन्य तरकारी	मे. टन	७३५३३	७७२१०	७९५२६	८१११६	८२३३३	८३१५७	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	चिया	के.जी.	५५७	५८५	६०२	६१४	६२४	६३०	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	कफी	मे. टन	३३८	३५५	३६६	३७३	३७८	३८२	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	अलैची	मे. टन	३६९९३	३८८४३	४०००८	४०८०८	४१४२०	४१८३४	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	अदुवा	मे. टन							प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	पशुपक्षीजन्य(दुध, मासु, ऊन) तथा मत्स्य उत्पादन(अण्डा बाहेक)	मे.टन	४७१८६९	४९५४६२	५१०३२६	५२०५३३	५२८३४१	५३३६२४	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	दुध	मे. टन	३९१०४२	४१०५९४	४२२९१२	४२९२५६	४३५६९४	४४००५१	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	मासु	मे. टन	७७५५२	८१४३०	८३८७२	८५१३१	८६४०८	८७२७२	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	कुखुरा	मे. टन	२६५९४	२७९२४	२८७६१	२९१९३	२९६३१	२९९२७	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	खसीबोका	मे. टन	२६०	२७३	२८१	२८५	२९०	२९३	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	रौंगा	मे. टन	३४९९७	३६७४७	३७८४९	३८४१७	३८९९३	३९३८३	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	अन्य मासु	मे. टन	१५७०१	१६४८६	१६९८१	१७२३५	१७४९४	१७६६९	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	ऊन	के.जी.	५४६१०	५७३४१	५९०६१	५९९४७	६०८४६	६१४५४	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	माछा	के.जी.	३२२१०६ ०	३३८२११ ३	३४८३५७ ६	३५३५८३ ०	३५८८८६ ७	३६२४७५ ६	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	अन्य उत्पादन								प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	रेशम	मे. टन							प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	पुष्प	मे. टन							प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	मह	मे. टन							प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	च्याउ	मे. टन							प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	खाद्यान्न वाली बिउ	मे. टन							प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	तरकारी बिउ	मे. टन							प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	घाँसको बिउ	मे. टन							प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	उच्च मूल्यका वालिको ब्राण्डिङ	सङ्ख्या			१	२	३	४	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	अर्गानिक प्रमाणिकरण भएको क्षेत्रफल	हेक्टर	NA	NA	NA	NA	NA	NA	प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	कुल वालीमा रैथाने वालीको उत्पादन	प्रतिशत	NA						प्रतिवेदनहरू	कृ.प.वि.म		४.२.१	१.३	२	
	खाद्यान्न वालीको बिउ प्रतिस्थापन दर	प्रतिशत							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२	
	तरकारी वालीको बिउ प्रतिस्थापन दर	प्रतिशत							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२	
	पशुको नख सुधार	प्रतिशत							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	पशु खोप सेवाको दायरा	प्रतिशत							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२	
	बाली बीमाको पहुँच प्राप्त कृषक परिवार	प्रतिशत							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२	
	पशुपक्षी बीमाको पहुँच प्राप्त कृषक परिवार	प्रतिशत							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२	
	प्राङ्गारिक खेतीको जोनिङ	सङ्ख्या							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२	
	प्राङ्गारिक खेतीको जोनिङको क्षेत्रफल	हेक्टर							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२	
	नमूना एकीकृत फार्म	सङ्ख्या							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२	
	व्यावसायिक वीउ उत्पादन गर्ने कृषक	संख्या							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२	
	व्यवसायीक नर्सरी स्थापना र सञ्चालन	सङ्ख्या							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२	
	फलफूलका बिरुवा उत्पादन	सङ्ख्या हजारमा							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२	
	कृषि उपज संकलन केन्द्र	संख्या							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.२	१.१	२	
	कृषि उपज संकलन केन्द्रको क्षमता	मे.ट.							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.२	१.१	२	
	शीत भण्डार	संख्या							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.२	१.१	२	
	शीत भण्डारको क्षमता	मे.ट.							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.२	१.१	२	
	कृषि उपज थोक बजार स्थल	संख्या							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.२	१.१	२	
	दुग्ध संकलन केन्द्र	संख्या							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.२	१.१	२	
	दुग्ध चिस्यान तथा प्रशोधन केन्द्र	संख्या							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.२	१.१	२	
	दुग्ध चिस्यान तथा प्रशोधन केन्द्रको क्षमता	मे.टन							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.२	१.१	२	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	रसायनिक मलखाद आपूर्ति	मे.टन							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.२	१.१	२	
	प्राङ्गारिक मलखाद आपूर्ति	मे.टन							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.२	१.१	२	
	जैविक विषादी उत्पादन केन्द्र	संख्या							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.२	१.१	२	
	प्राङ्गारिक मलखाद कारखाना	संख्या							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.२	१.१	२	
	कृषि तथा पशुसेवा प्रसारको प्रवाहमा वृद्धि								प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१		२	
	कृषि प्रसार क्षमता विकास	जना							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.२	२	
	कृषि ऋण लिएका कृषकको संख्या	जना							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.२	२	
	कृषि ऋण प्रवाह	रु. हजार							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.२	२	
	कृषि तथा भेटेरीनरी विषय अध्यापन गराउने संस्थामार्फत कृषि तथा पशुपंक्षी प्रसार कार्यक्रम संचालन	वटा							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.२	२	
	कृषि तथा पशुपंक्षी प्रसार कार्यक्रमबाट लाभान्वित कृषक परिवार	प्रतिशत							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.२	२	
	कृषि प्रसारमा स्थानीय तहको क्षमता विकास	सङ्ख्या							प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.२	२	

कृ.प.वि.म = कृषि तथा पशुपन्छी विकास मन्त्रालय

भू.कृ.स.म = भूमि व्यवस्था, कृषि तथा सहकारी मन्त्रालय

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ४ को ४.२ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.३ भूमि व्यवस्था

नतिजा	नतिजा सूचक	एकाइ	२०७५/७६	लक्ष्य	सूचनाको	जिम्मेवार	अनुमान	प्रादेशिक	दीर्घकालीन	दिगो	कैफियत
-------	------------	------	---------	--------	---------	-----------	--------	-----------	------------	------	--------

स्तर				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	स्रोत	निकाय	तथा जोखिम	लक्ष्य/रणनीति संकेत	राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	विकास लक्ष्य संकेत
प्रभाव	संरक्षित र व्यवस्थित भूमिमा वृद्धि	हेक्टर							प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	
असर	भूउपयोग योजना अनुसार भूमिको प्रयोग	हेक्टर							प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	
	भूमिको अघावधिक विद्युतीय अभिलेख भएका स्थानीय तहको सङ्ख्यामा वृद्धि								प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	
	भूमिको वैज्ञानिक नक्साङ्कन गरी विद्युतीय अभिलेख व्यवस्थापन र जग्गा खरिदबिक्री सूचना प्रणाली स्थापना भएका भूमि व्यवस्था कार्यालयको सङ्ख्यामा वृद्धि								प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	
प्रतिफल	भूउपयोग योजना कार्यान्वयन गर्ने स्थानीय तह	संख्या							प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	
	कृषियोग्य भूमिको क्षेत्रफल	हेक्टर	२५२५६३९						प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२
	कृषियोग्य भूमिमध्ये बाँझो जमिनको अंश	प्रतिशत	९.२६	७.२	५.५	३.२	२	१	प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२
	कृषियोग्य भूमिको क्षयीकरण (भूक्षय, घडेरीकरण, गैरकृषि कार्यमा प्रयोग आदि)	प्रतिशत							प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२
	संरक्षित कृषि भूमि	हेक्टर							प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	२
	भूमिको वैज्ञानिक नक्साङ्कन गरी विद्युतीय अभिलेख व्यवस्थापन र जग्गा खरिद बिक्री सूचना प्रणाली स्थापना भएका भूमि व्यवस्था कार्यालय (नापी र मालपोत)	संख्या							प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	
	ऐतिहासिक मठ, मन्दिर तथा सम्पदासँग सम्बन्धित गुठीको संरक्षण, संवर्द्धन र विकास	प्रतिशत							प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	विद्युतीय नाप नक्सा तयार भएका स्थानीय तह	संख्या							प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३		
	भू-सूचना प्रणालीको स्थापना भएका नापी तथा मालपोत कार्यालयहरू	संख्या							प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३		
	सूचना प्रणाली मार्फत जग्गा खरिद बिक्रि कारोबार सञ्चालन भएका नापी तथा मालपोत कार्यालयहरू	संख्या							प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३		
	विद्युतीय अभिलेखमा समेटिएका गुठीहरू	संख्या							प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३		
	गुठी सम्पत्तिको संरक्षण र व्यवस्थापनका लागि स्थानीय तहसँग सहकार्य	संख्या							प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३		
	भूउपयोग योजना कार्यान्वयन गर्ने स्थानीय तह	संख्या		२०	३०	३५	४०	४५	प्रतिवेदन/ अभिलेख	भू.कृ.स.म		४.२.१	१.३		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ४ को ४.२ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.४ खाद्य सुरक्षा

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	आधारभूत खाद्य सुरक्षामा रहेको परिवार	प्रतिशत	५५.०	६१	६७	७३	७९	८५.०	पन्ध्रौं योजना	रायोआ		४.२.१	२.६	२	
	खाद्य सुरक्षाको दृष्टिले अति जोखिममा रहेको परिवार	प्रतिशत	८.५	७	५.५	४	२.५	१	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		४.२.१	२.६	२	
	विश्वव्यापी खाद्य सुरक्षा सूचकाङ्क (अङ्क) स्कोर	सूचकाङ्क												२	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
असर	प्रतिव्यक्ति खाद्य उपलब्धता	कि.ग्रा. प्रतिवर्ष	१८७	२२१.६	२५६.२	२९०.८	३२५.४	३६०	कृषि तथ्यङ्क, २०१६	भू.कृ.स. मन्त्रालय		४.२.१	२.६	२	
	प्रतिव्यक्ति पशुपन्छीजन्य खाद्य पदार्थको उपलब्धता	कि.ग्रा. प्रतिवर्ष							कृषि तथ्यङ्क, २०१६	भू.कृ.स. मन्त्रालय		४.२.१	२.६	२	
	आफ्नै कृषि उपजले वर्षभरि धाने कृषक परिवार	प्रतिशत										४.२.१	२.६	२	
	कुल उपभोगको दुई— तिहाइभन्दा बढी खानामा खर्च गर्ने जनसङ्ख्या	प्रतिशत										४.२.१	१.४	२	
	खाद्य बालीको उत्पादन	मे.टन	१३४८२८२	१४१५६९६	१४५८१६७	१४८७३३०	१५०९६४०	१५२४७३७	कृषि तथ्यङ्क, २०१७।१८	भू.व्य.कृ.स. म.		४.२.१	२.६	२	
	पशुजन्य पदार्थको उत्पादन	मे.टन	४७१८६९	४९५४६२	५१०३२६	५२०५३३	५२८३४१	५३३६२४	कृषि तथ्यङ्क, २०१७।१९			४.२.१	२.६	२	
	दिवा खाजा उपलब्ध भएका विद्यार्थी	सङ्ख्या										४.२.१	२.६	२	
	बाली उत्पादन उपरान्त हुने क्षति	प्रतिशत										४.२.१	२.६	२	
	खाद्य सुरक्षा भण्डारमा खाद्यान्न भण्डारण	मे.टन हजारमा										४.२.१	२.६	२	
	उत्पादित वस्तुको व्यवस्थित भण्डारण क्षमता भएका परिवार	प्रतिशत							वार्षिक प्रतिवेदन	भू.व्य.कृ.स. म.		४.२.१	२.६	२	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरु: योजनाको परिच्छेद ४ को ४.२ को प्रमुख कार्यक्रमहरुमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.५ उद्योग

नतिजा	नतिजा सूचक	एकाइ	२०७५/७६	२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार	अनुमान	प्रादेशिक	दीर्घकालीन	दिगो	कैफियत
-------	------------	------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------------	-----------	--------	-----------	------------	------	--------

स्तर				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१		निकाय	तथा जोखिम	लक्ष्य/ रणनीति संकेत	राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	विकास लक्ष्य संकेत	
प्रभाव	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा उत्पादनमूलक उद्योग क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत	५.५	५.६	५.७	५.८	५.८	६.०	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.		४.३.२	१.३	९	
असर	औद्योगिक लगानी वृद्धिदर	प्रतिशत	५	६.०	७.०	८.०	९.०	१०.०	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.		४.३.२	१.३	९	
	औद्योगिक उत्पादन	रकम रू. करोडमा	६११०	६८१२	७६९८	८६९९	९७४३	१११०७	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.		४.३.२	१.३	९	
	उत्पादनमूलक उद्योग क्षेत्रको रोजगारी (औपचारिक र अनौपचारिक)	सङ्ख्या हजारमा	१०७२	१२००	१४००	१५००	१७००	१८००	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.		४.३.२	१.३	९	
प्रतिफल	उद्योग दर्ता	संख्या	११५५३७	१४०४६०	१६०४७०	१७०४८०	१८०४९०	२००५००	कार्यालय अभिलेख	उद्योग विभाग		४.३.१	१.३	९	
	ठूला उद्योग	संख्या							कार्यालय अभिलेख	उद्योग विभाग		४.३.१	१.३	९	
	मझौला उद्योग	संख्या	४५२	४६०	४७०	४८०	४९०	५००	कार्यालय अभिलेख	उद्योग विभाग		४.३.१	१.३	९	
	घरेलु तथा साना उद्योग	संख्या	११५०८५	१४००००	१६००००	१७००००	१८००००	२०००००	कार्यालय अभिलेख	घ.सा.उ.का		४.३.१	१.३	९	
	लघु उद्यमीको स्तरोन्नति	संख्या	५०००	६०००	८०००	१००००	१२०००	१५०००				४.३.१	१.३	९	
	लघु उद्यमी सिर्जना	संख्या	३००००	३२०००	३५०००	३६०००	३८०००	४००००				४.३.१	१.३	९	
	औद्योगिक क्षेत्र स्थापना र सञ्चालन (जम्मा)	सङ्ख्या	४	४	६	६	७	७	प्रदेश वस्तुस्थिति विवरण	प्र.नि.यो.आ.		४.३.१	१.३	९	
	स्थापना भएका औद्योगिक ग्राम (जम्मा)	संख्या	०	३	१०	१५	२०	२५	प्रदेश वस्तुस्थिति विवरण	प्र.नि.यो.आ.		४.३.१	१.३	९	
	डिजिटलाईज्ड प्रणालीबाट उद्योग दर्ता गर्ने उद्योग कार्यालय	संख्या	०	१	१३	१३	१३	१३	कार्यालय अभिलेख	उ.प.व.वा.म		४.३.१	१.३	९	
	बैंक वा वित्तीय संस्थाबाट कर्जा सुविधा लिएका साना तथा घरेलु उद्योग	प्रतिशत							कार्यालय अभिलेख	नेराबैं		४.३.१	१.३	९	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	वैदेशिक लगानीका लागि स्वीकृति प्राप्त उद्योग	संख्या							कार्यालय अभिलेख	उद्योग विभाग		४.३.१	१.३	९	
	औद्योगिक प्रतिष्ठान	संख्या	३२७५५	३३०००	३३५००	३४०००	३४५००	३५०००	कार्यालय अभिलेख	उद्योग विभाग		४.३.१	१.३	९	
	औद्योगिक प्रतिष्ठानमा संलग्न जनशक्ति	जना हजार	१६११९५	१६५०००	१६७५००	१७००००	१७२५००	१७५०००	कार्यालय अभिलेख	उद्योग विभाग		४.३.१	१.३	९	
	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा उत्पादनमूलक उद्योग क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत	५.५	५.६	५.७	५.८	५.८	६.०	राष्ट्रिय लेखा	के.त.वि.			१.३	९	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरु: योजनाको परिच्छेद ४ को ४.३ को प्रमुख कार्यक्रमहरुमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.६ खानी तथा उत्खनन

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	गार्हस्थ्य उत्पादनमा खानी तथा उत्खनन क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत	०.६	०.६	०.६	०.६	०.७	०.७	राष्ट्रिय लेखा	केतवि		४.३.२		९	
असर	खानीजन्य उत्पादनको वृद्धि दर	प्रतिशत										४.३.२	१.३	९	
प्रतिफल	खनिज अन्वेषण र उत्खनन सम्बन्धी प्रतिष्ठान	सङ्ख्या	२६९	२८९	३०९	३२९	३४९	३६९	वार्षिक प्रतिवेदन	खानी विभाग		४.३.२	१.३	९	
	खानी क्षेत्रको पहिचान	सङ्ख्या							वार्षिक प्रतिवेदन	उ.प.व.वा.म. र मातहतका निकाय		४.३.२	१.३	९	
	खानी क्षेत्रमा कार्यरत जनशक्ति (रोजगारी)	जना	३७७४	४०५४	४३३४	४६१४	४८९४	५१७७	वार्षिक प्रतिवेदन	खानी विभाग		४.३.२	१.४	९	
	खानी उत्खनन	सङ्ख्या							वार्षिक प्रतिवेदन			४.३.२	१.३	९	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ४ को ४.३ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.७ वाणिज्य तथा आपूर्ति

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा वाणिज्य (थोक तथा खुद्रा व्यापार) क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत	२२.०	२२.१	२२.२	२२.६	२२.८	२२.९	राष्ट्रिय लेखा	केतवि		४.४.१	१.४		
असर	व्यापारिक गतिविधि विस्तार	रुपैया करोड										४.४.१	१.४		
	थोक तथा खुद्रा व्यापार क्षेत्रको वृद्धिदर	प्रतिशत	७.३	९.५	११.५	१३.०	११.९	११.५	राष्ट्रिय लेखा	केतवि		४.४.१	१.४		
प्रतिफल	उपभोक्ता सन्तुष्टी सुचकांक	सुचकांक										४.४.१	१.४		
	व्यापारिक संस्था	सङ्ख्या	१४४४४८	१५९९८३	१७४७८२	१९२२६०	२११४८६	२३२६३५	वार्षिक प्रतिवेदन	उ.वा.म. र मातहतका निकाय		४.४.१	१.४		
	व्यापारिक संस्थामा संलग्न व्यक्ति	सङ्ख्या	३२५२९२	३५७८२१	३९३६०३	४३२९६४	४७६२६०	५२३८८६	वार्षिक प्रतिवेदन	उ.वा.म. र मातहतका निकाय		४.४.१	१.४		
	अन्तर्राष्ट्रिय व्यापारिक नाका	सङ्ख्या	३									४.४.१	१.४		
	सहकारी-सूपथ मूल्यका पसल स्थापना	सङ्ख्या							कार्यालय अभिलेख	भु.कृ.स.म.		४.४.१	१.४		
	बजार अनुगमन	पटक	६०	१५६	१५६	१५६	१५६	१५६	कार्यालय अभिलेख	भु.कृ.स.म.		४.४.१			

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ४ को ४.४ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.८ पर्यटन

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा पर्यटन क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत	२.०५	२.५०	४.००	४.००	४.५०	५.००	राष्ट्रिय लेखा	केतवि		४.५.१	१.४		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
असर	पर्यटन आयको वृद्धिदर											४.५.१	१.४		
प्रतिफल	पर्यटन क्षेत्रमा रोजगारी सिर्जना	संख्या हजारमा	१४५	१७४	२०३	२३२	२६१	२९०	वार्षिक प्रतिवेदन	उद्योग विभाग		४.५.१	१.४		
	पर्यटकको सङ्ख्या									पर्यटकको सङ्ख्या		४.५.१	१.४		
	भारतीय	संख्या (हजार)										४.५.१	१.४		
	तेस्रो मुलुक	संख्या (हजार)										४.५.१	१.४		
	बसाइ दिन											४.५.१	१.४		
	भारतीय	दिन										४.५.१	१.४		
	तेस्रो मुलुक	दिन	१२.४*	१३.०	१३.५	१४.०	१४.५	१५.०	Tourism Statistics, 2018	पर्यटन बोर्ड		४.५.१	१.४		
	प्रति दिन प्रति व्यक्ति खर्च								Tourism Statistics, 2019	पर्यटन बोर्ड		४.५.१	१.४		
	भारतीय	अ. डलर							Tourism Statistics, 2020	पर्यटन बोर्ड		४.५.१	१.४		
	तेस्रो मुलुक	अ. डलर	४४	५०	५६	६२	६८	७४	Tourism Statistics, 2021	पर्यटन बोर्ड		४.५.१	१.४		
	स्थानीय अर्थतन्त्र तथा अप्रत्यक्ष रोजगारीमा आवद्ध पर्यटन व्यवसायको सङ्ख्या	संख्या (हजार)										४.५.१	१.४		
	पर्यटकीय गन्तव्य	संख्या	५०	५५	६०	६५	७०	७५	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	पर्यटन ग्राम	संख्या		१०	१०	१२	१३	१५	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	पर्यटन सूचना (सामुदायिक समेत) केन्द्र	संख्या	१३	१८	२०	२५	२८	३०	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	ट्रेकिङ ट्रेल	संख्या	२२	२५	२८	३०	३५	४०	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	हिल स्टेसन	संख्या		७	७	८	९	१०	कार्यालय	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
									अभिले						
	थिम पार्क	संख्या	१४	१८	२२	३०	३५	४०	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
प्रतिफल	केवल कार	संख्या	३	३	४	५	५	६	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	साहसिक पर्यटन गन्तव्य	संख्या	७	८	९	१०	१२	१५	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	दक्ष जनशक्ति उत्पादन	संख्या हजारमा	४	६	१०	१५	१८	२०	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	क्षेत्रीय तथा आन्तरिक हवाई उडान हुने एयरपोर्ट	संख्या	५	५	५	५	५	५	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	हेलिप्याड	संख्या	१००	१०५	११०	११४	११६	११९	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	पर्यटन स्तरको होटल र बेड संख्या								कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	तारे होटल	होटल संख्या	१२५	१३०	१३५	१४०	१४५	१५०	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
		बेड संख्या							कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	अन्य होटल	होटल संख्या	९७७	१०००	११००	१२००	१२५०	१३००	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
		बेड संख्या							कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	पर्यटकीय बस सेवा (रुट)	संख्या	८	८	९	९	१०	११	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	पर्यटकीय सम्पदाको संरक्षण, नवनिर्माण र स्तरोन्नति	संख्या	२०	२५	३०	३५	४०	४५	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	पर्यटकीय पदमार्ग	कि.मि.	१०५	१२५	१४०	१५०	१६०	१७५	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	होमस्टे (सामुदायिक/निजि)	सङ्ख्या	१०१	१०५	११०	११५	१२०	१२५	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		
	कोशेली घर	सङ्ख्या	१४	१८	२०	२२	२४	२५	कार्यालय	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.१		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
									अभिले						
	होटल, पर्यटन तथा अतिथि सत्कार तालिम (नयाँ जम्मा)	जना		१५०	१७५	२००	२२५	२५०	कार्यालय अभिले	उ.प.व.वा.म		४.५.१	१.४		
	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा पर्यटन क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत	२.०५	२.५०	४.००	४.००	४.५०	५.००	राष्ट्रिय लेखा	केतवि			१.३		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरु: योजनाको परिच्छेद ४ को ४.५ को प्रमुख कार्यक्रमहरुमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.९ सहकारी

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	सहकारी क्षेत्रको कूल गार्हस्थ्य उत्पादनमा योगदान	प्रतिशत							राष्ट्रिय लेखा	केतवि		४.६.३	१.३		
	कृषि तथा पशुपन्छीजन्य उत्पादन र वितरणमा सहकारी क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत							राष्ट्रिय लेखा	केतवि		४.६.३	१.३		
असर	प्रादेशिक लगानीमा सहकारी क्षेत्रको योगदान	रूपैया अर्वमा							वार्षिक प्रतिवेदन	भू.कृ.स.म.		४.६.३	१.३		
प्रतिफल	सहकारी क्षेत्रको रोजगारीमा योगदान	संख्या	२९५६०	३१०३८	३२५९०	३४२१९	३५९३०	३७७२७	वार्षिक प्रतिवेदन	भू.कृ.स.म.		४.६.३	१.३		
	सहकारी संघ संस्था	संख्या										४.६.३	१.३		
	कृषि सहकारी	संख्या	२३०१	२४१६	२५३७	२६६४	२७९७	२९३७	वार्षिक प्रतिवेदन	भू.कृ.स.म.		४.६.३	१.३		
	महिलाद्वारा सञ्चालन गरिएको सहकारी संस्था	सङ्ख्या										४.६.३	१.३		
	सहकारी संघ संस्थाको कुल सदस्यता	संख्या हजारमा	२०५४	२१५७	२२६५	२३७८	२४९७	२६२१	वार्षिक प्रतिवेदन	भू.कृ.स.म.		४.६.३	१.३		
	सहकारी संघसंस्थामा महिला सदस्य	प्रतिशत	४९.६	४९.८	५०	५०.२	५०.४	५०.६	वार्षिक प्रतिवेदन	भू.कृ.स.म.		४.६.३	१.३		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	शेयर पुँजी	रूपैया(दश लाखमा)	४९,२३१	५४,१५४	५९,५७०	६५,५२६	७२,०७९	७९,२८७	वार्षिक प्रतिवेदन	सहकारी विभाग		४.६.३	१.३		
	सहकारी क्षेत्रको निक्षेप संकलन	रूपैया करोडमा							वार्षिक प्रतिवेदन	सहकारी विभाग		४.६.३	१.३		
	सहकारी क्षेत्रबाट कर्जा प्रवाह	रूपैया(दश लाखमा)	१५,३२२०	१६,८५३९६	१८,५३९६	२०,३९३६	२२,४३२९	२४,६७६२	वार्षिक प्रतिवेदन	सहकारी विभाग		४.६.३	१.३		
	सहकारी क्षेत्रबाट कृषि क्षेत्रमा कर्जा प्रवाह	रूपैया करोडमा										४.६.३	१.३		
	सहकारीमा आवद्ध जनशक्ति	संख्या							वार्षिक प्रतिवेदन	सहकारी विभाग		४.६.३	१.३		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ४ को ४.६ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.१० शिक्षा

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	साक्षरता दर (५ वर्ष माथि)	प्रतिशत	७४.९	७८.०	८३.०	८८.०	९३.०	९६.०	ने.ज.स्वा.स.	सा.वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	साक्षरता दर (१५-६० वर्ष)	प्रतिशत	९४.०	९५.०	९६.०	९७.०	९७.५	९८.०	शि मा स्रो वि के	शिक्षा विभाग		५.१.२	१.२	४	
	साक्षरता दर (१५ वर्ष माथि)	प्रतिशत	६९	७४.८	८०.६	८६.४	९२.२	९८.०	पन्ध्रौ योजना	रायोआ		५.१.२	१.२	४	
	युवा साक्षरता दर (१५-२४ वर्ष)	प्रतिशत	९३	९४.२	६५.४	९६.६	९७.८	९९.०	पन्ध्रौ योजना	रायोआ		५.१.२	१.२	४	
असर	प्रारम्भिक बाल शिक्षा तथा विकास/पूर्व प्राथमिक शिक्षामा कुल भर्ना दर	प्रतिशत	११०.३	१०९	१०७.७	१०६	१०५.१	१०४	EMIS, 2019	सामाजिक विकास मन्त्रालय		५.१.२	१.२	४	
	प्रारम्भिक बाल शिक्षा तथा विकास/पूर्व प्राथमिक शिक्षामा खुद भर्ना दर	प्रतिशत	८३.५	८६	८८.५	९१	९३.५	९६	EMIS, 2019	सामाजिक विकास मन्त्रालय		५.१.२	१.२	४	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रदेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	पूर्व प्राथमिक शिक्षा पूरा गरी कक्षा १ मा भर्नादर	प्रतिशत	६७.२	७१	७४.८	७९	८२.४	८६	EMIS, 2019	सामाजिक विकास मन्त्रालय		५.१.२	१.२	४	
	खुद भर्नादर											५.१.२	१.२	४	
	(क) आधारभूत तह (१-५)	प्रतिशत	९५.८०	९६.५	९७.०	९७.५	९८	१००	EMIS, 2019	सामाजिक विकास मन्त्रालय		५.१.२	१.२	४	
	(ख) आधारभूत तह (१-८)	प्रतिशत	९४.८	९५	९६	९७	९८	९९.०	EMIS, 2019	सामाजिक विकास मन्त्रालय		५.१.२	१.२	४	
	(ग) माध्यमिक तह (९-१०)	प्रतिशत	७४.१	७८	८१	८५	८८	९०.०	EMIS, 2019	सामाजिक विकास मन्त्रालय		५.१.२	१.२	४	
	(घ) माध्यमिक तह (९-१२)	प्रतिशत	५१.०	५७	६३	६९	७५	८०.०	EMIS, 2019	सामाजिक विकास मन्त्रालय		५.१.२	१.२	४	
	उच्च शिक्षामा कुल भर्नादर	प्रतिशत	N/A	१७	१९	२१	२३	२५		सामाजिक विकास मन्त्रालय		५.१.२	१.२	४	
	टिकाउ दर											५.१.२	१.२	४	
	(क) आधारभूत तह (१-५)	प्रतिशत	N/A									५.१.२	१.२	४	
	(ख) आधारभूत तह (१-८)	प्रतिशत	८९.७	९१	९२	९३	९४	९५	EMIS, 2019	सामाजिक विकास मन्त्रालय		५.१.२	१.२	४	
	(ख) माध्यमिक तह (९-१०)	प्रतिशत	N/A									५.१.२	१.२	४	
	(ख) माध्यमिक तह (९-१२)	प्रतिशत	८०.०	८१	८२	८३	८४	८५	Education Figures 2017	शिक्षा विभाग		५.१.२	१.२	४	
	उच्च शिक्षामा भर्ना भएका मध्ये प्राविधिक विषयमा भर्ना दर	प्रतिशत							वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रदेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	सिकाइ दर		N/A									५.१.२	१.२	४	
	आधारभूत तह - कक्षा ५	प्रतिशत							नेपालको शैक्षिक तथ्यांक	शिक्षा विभाग		५.१.२	१.२	४	
	आधारभूत तह - कक्षा ८	प्रतिशत							नेपालको शैक्षिक तथ्यांक	शिक्षा विभाग		५.१.२	१.२	४	
	माध्यमिक तह - कक्षा १०	प्रतिशत										५.१.२	१.२	४	
	लैङ्गिक समता दर (विद्यालय शिक्षाको खुद भर्नादरमा)											५.१.२	१.२	४	
	(क) आधारभूत तह (कक्षा १-८)	अनुपात	०.९१	०.९२	०.९४	०.९६	०.९८	१.००	EMIS, 2019			५.१.२	१.२	४	
	(ख) माध्यमिक तह (कक्षा ९-१२)	अनुपात	०.९८	०.९८	०.९९	०.९९	०.९९	१.००	EMIS, 2019			५.१.२	१.२	४	
	(ग) उच्च शिक्षा	अनुपात										५.१.२	१.२	४	
	प्राविधिक तथा व्यावसायिक शिक्षामा (माध्यमिक) भर्नादर	प्रतिशत	N/A						वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	काम गर्ने उमेरका प्राविधिक तथा व्यावसायिक तालिम प्राप्त जनसंख्या	प्रतिशत	N/A						पन्ध्रौं योजना	रायोआ		५.१.२	१.२	४	
प्रतिफल	साक्षर जिल्ला	संख्या	११	१३	१३	१३	१३	१३	वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	सामुदायिक सिकाइ केन्द्र स्थापना तथा सञ्चालन	संख्या	४६०	४६०	४६०	४६०	४६०	४६०	वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	विद्यालय केन्द्रित/उच्च शिक्षा इन्टर्नसिप सञ्चालन गर्ने स्थानीय तह	संख्या							वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	डिजिटल निरन्तर शिक्षा सञ्चालन गर्ने स्थानीय तह	संख्या	N/A	२	४	६	८	१०	वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	विद्यालय उमेरका अपाङ्गता भएका बालबालिकामध्ये	प्रतिशत	N/A						वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/ रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	विद्यालयमा भर्ना भएका प्रतिशत														
	विद्यालय उमेरका अपाङ्गता भएका बालबालिकामध्ये विद्यालयमा भर्ना भएका बालबालिका	सङ्ख्या										५.१.२	१.२	४	
	आधारभूत तह (१-५)	सङ्ख्या	७०५४	७१२५	७१९६	७२६९	७३४०	७४१४	EMIS, 2019	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	आधारभूत तह (१-८)	सङ्ख्या	९१९५	९२८७	९३८०	९४७४	९५६८	९६६४	EMIS, 2019	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	माध्यमिक तह (९-१०)	सङ्ख्या	१९२०	१९३९	१९५९	१९७८	१९९८	२०१८	EMIS, 2019	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	माध्यमिक तह (९-१२)	सङ्ख्या	२०७४	२०९५	२११६	२१३७	२१५८	२१८०	EMIS, 2019	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
												५.१.२	१.२	४	
	शिक्षक विद्यार्थी अनुपात											५.१.२	१.२	४	
	आधारभूत तह (१-५)	अनुपात	२०	२०	२०	२०	२०	२०	EMIS, 2019	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	आधारभूत तह (१-८)	अनुपात	२४	२४	२४	२४	२४	२४	EMIS, 2019	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	माध्यमिक तह (९-१०)	अनुपात	१९	१९	१९	१९	१९	१९	EMIS, 2019	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	माध्यमिक तह (९-१२)	अनुपात	२७	२७	२७	२७	२७	२७	EMIS, 2019			५.१.२	१.२	४	
	बालमैत्री पूर्वाधार भएका सार्वजनिक विद्यालय	प्रतिशत	N/A	६०	७०	८०	९०	९५	नेपालको शैक्षिक तथ्यांक	शिक्षा विभाग		५.१.२	१.२	४	
	भूकम्प प्रतिरोधी भवन भएका विद्यालय	संख्या								पुनिप्रा/शिक्षा विभाग		५.१.२	१.२	४	
	कम्प्युटर ल्याब स्थापना भएका विद्यालय	संख्या	३५०	५८०	८१०	१०४०	१२७०	१३५५	वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	पानी तथा सरसफाइ सुविधासहित शौचालय निर्माण भएका विद्यालय	संख्या										५.१.२	१.२	४	
	इन्टरनेट सुविधा पुगेको माध्यमिक विद्यालय	संख्या	N/A					१३५५				५.१.२	१.२	४	
	सामुदायिक आवासीय विद्यालय (Cumulative)	संख्या	१	४	१०	१५	२०	२५				५.१.२	१.२	४	
	नयाँ कक्षा कोठा निर्माण	संख्या										५.१.२	१.२	४	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रदेशिक लक्ष्य/ रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	पुस्तकालय भएका माध्यमिक विद्यालय	संख्या						१३५५	वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	नमूना विद्यालय	संख्या	५६	७६	९४	१००	११०	११९	CEHRD/EDD			५.१.२	१.२	४	
	प्राविधिक धारका सामुदायिक माध्यमिक विद्यालय	संख्या	७६	८६	९६	१०६	११६	१२६	वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	प्राविधिक धारका माध्यमिक विद्यालयमा अध्ययनरत विद्यार्थी सङ्ख्या	प्रतिशत	N/A	१७	१९	२१	२३	२५				५.१.२	१.२	४	
	प्राविधिक शिक्षालय	संख्या	१४	१५	१६	१७	१८	२०	वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	विश्वविद्यालय स्थापना	संख्या	०	१	१	१	१	१	वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	शैक्षिक अनुसन्धान केन्द्र स्थापना	संख्या	०	०	०	०	०	१	वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	उत्तीर्ण प्रतिशतको आधारमा उच्च शैक्षिक संस्थालाई अनुदान सहयोग	संख्या	०						वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	प्राविधिक विषयमा उच्च शिक्षा दिने शिक्षण संस्थाहरूलाई सहयोग	संख्या	N/A						वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	पिछडिएको समुदाय र आर्थिक रूपमा विपन्नलाई उच्च शिक्षामा पहुँचका लागि सहयोग	संख्या	N/A	४००	५००	६००	७००	८००	वार्षिक प्रतिवेदन	सा. वि. म.		५.१.२	१.२	४	
	विद्युतको पहुँच भएको विद्यालय	सङ्ख्या	N/A					६९००				५.१.२	१.२	४	
	अपाङ्ग मैत्री विद्यालय	सङ्ख्या	N/A									५.१.२	१.२	४	
	माध्यमिक विद्यालय खेल मैदान	सङ्ख्या	N/A	३०	४०	५०	६०	८०				५.१.२	१.२	४	
	मोटर बाटो पुगेको विद्यालय	सङ्ख्या	N/A					५०००				५.१.२	१.२	४	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ५ को ५.१ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.११ स्वास्थ्य तथा पोषण

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/ रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	अपेक्षित आयु (जन्म हुँदाको)	वर्ष	७०.७	७१	७१.५	७२	७२.५	७३	NLSS 2011	रायोआ		५.२.२	२.३	३	
असर	५ वर्ष मुनिको बाल मृत्युदर (प्रति हजार जीवित जन्ममा)	जना	३६.०	३२.४	२८.८	२५.२	२१.६	१८.०	NDHS 2016	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	शिशु मृत्युदर (प्रति हजार जीवित जन्ममा)	जना	२९.०	२६.०	२३.०	२०.०	१७.०	१४.०	NDHS 2016	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	नवजात शिशु मृत्युदर (प्रति हजार जीवित जन्ममा)	जना	१७.०	१५.६	१४.२	१२.८	११.४	१०.०	NDHS 2016	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	आधा घण्टाको दुरीमा आधारभूत स्वास्थ्य सेवामा प्राप्त गर्ने परिवार	प्रतिशत	५०.६	५५.०	६५.०	७०.०	७५.०	८०.०	NLSS 2011	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	५ वर्षभन्दा मुनिका बालबालिकामा भएको पुङ्कोपन (उमेरअनुसार उचाई कम)	प्रतिशत	२९.०	२८.०	२६.०	२४.०	२२.०	२०.०	NDHS 2016	स्वासेवि		५.२.२	२.३	२	
	५ वर्ष मुनिका कम तौल भएका बालबालिका	प्रतिशत	१३.३	१३.०	१२.०	११.०	१०.०	९.०	NDHS 2016	स्वासेवि		५.२.२	२.३	२	
	५ वर्ष मुनिका ख्याउटेपन भएका बालबालिका	प्रतिशत	४.२	४.०	३.५	३.०	२.५	२.०	NDHS 2016	स्वासेवि		५.२.२	२.३	२	
	५ वर्ष मुनिका बालबालिकामा रक्तअल्पता	प्रतिशत	४३.०	४०.०	३५.०	३०.०	२५.०	२०.०	NDHS 2016	स्वासेवि		५.२.२	२.३	२	
	१५ देखि ४९ वर्षका महिलामा रक्तअल्पता	प्रतिशत	२९.०	२७.०	२४.०	२१.०	१८.०	१५.०	NDHS 2016	स्वासेवि		५.२.२	२.३	२	
प्रतिफल	प्रोटोकल अनुसार (४ पटक) गर्भवती जाँच	प्रतिशत	४९.०	६०.०	६५.०	७०.०	७५.०	८०.०	DoHS AR 2074/75	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	संस्थागत प्रसूति सेवा दर	प्रतिशत	७१.०	६८.०	७२.०	७८.०	८५.०	९०.०	NDHS 2016	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	दक्ष स्वास्थ्यकर्मीबाट प्रसूति सेवा लिने गर्भवती महिला	प्रतिशत	६९.९	७२.०	७५.०	७९.०	८५.०	९०.०	NDHS 2016	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	नवजात शिशुको विशेष उपचार सेवा उपलब्ध भएका स्थानीय तह	सङ्ख्या	६.०	७.०	८.०	१०.०	१२.०	१३.०	FWD 2019	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/ रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	नवजात शिशुको सघन उपचार सेवा उपलब्ध भएका स्थानीय तह	सङ्ख्या	३.०	४.०	५.०	६.०	७.०	८.०	FWD 2019	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	सुत्केरी तथा नव शिशु जाँच (तेस्रो) को दायरा	प्रतिशत	९.६	१४.०	२०.०	२५.०	३०.०	३५.०	DoHS AR 2074/75	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	पूर्ण खोपको दायरा (१५ महिना मुनिको बालबालिका)	प्रतिशत	८५.०	८६.०	८९.०	९२.०	९४.०	९६.०	NDHS 2016	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	परिवार नियोजनको आधुनिक साधन प्रयोग दर	प्रतिशत	४९.०	५९.०	५३.०	५५.०	५८.०	६०.०	DoHS AR 2074/75	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	स्वास्थ्यकर्मीको अनुपात (Proxy indicator - national data, Provincial data not available)	प्रति हजार जनसंख्यामा	0.37*	0.37*				२.०	HRH Profile 2013	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	डाक्टरको अनुपात (Proxy indicator - national data, Provincial data not available)	प्रति हजार जनसंख्यामा	0.18*	0.18*				१.०	HRH Profile 2013	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	नर्सको अनुपात (Proxy indicator - national data, Provincial data not available)	प्रति हजार जनसंख्यामा	0.5*	0.5*				२.०	HRH Profile 2013	स्वासेवि		५.२.२	२.३	३	
	स्वास्थ्य विमामा आवद्ध जनसंख्या	प्रतिशत	६.४	१०.०	२०.०	३०.०	४०.०	५०.०	कार्यालय अभिलेख	Health Insurance Board		५.२.२	२.३	३	
	विशिष्टीकृत उपचार सेवा प्रदान गर्ने स्वास्थ्य संस्था	सङ्ख्या	०.०	२.०	४.०	६.०	७.०	८.०	प्रतिवेदन	Health Directorate		५.२.२	२.३	३	
	आयुर्वेद लगायत वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतिको सेवा प्रदान गर्ने स्वास्थ्य संस्था	सङ्ख्या	६८	७०	७५	८०	८५	९०	Provincial Profile 2075	प्र.नि.यो.या		५.२.२	२.३	३	
	स्वास्थ्य संस्थामा वर्षेभरी आधारभूत औषधीको (tracer drugs) उपलब्धता	स्थानीय तह	०	१३	३९	६५	८७	११९	Management Division 2019	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	नवजात शिशु स्थिरीकरण (Stabilization) केन्द्र विस्तार	सङ्ख्या	११	११	१२	१२	१३	१३	FWD 2019			५.२.२	२.३	३	
	जिल्ला अस्पताललाई	सङ्ख्या	२	२	४	६	८	८	DHIS 2	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/ रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	प्रेषण/रिफरल अस्पतालको रूपमा विकास								2075/76						
	अस्पतालजन्य फोहोरको वैज्ञानिक व्यवस्थापन भएका अस्पताल	प्रतिशत	१	२	४	६	८	८	DHIS 2 2075/76	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	ट्रमा सेन्टर सहितको विशिष्टीकृत उपचार सेवा विस्तार	सङ्ख्या	२	२	३	४	५	६	DHIS 2 2075/76	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	मानसिक स्वास्थ्य सेवा विस्तार भएका स्वास्थ्य संस्था	सङ्ख्या	०	५	१०	१५	२०	३०	DHIS 2 2075/76	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	एक द्वार संकट व्यवस्थापन केन्द्र	संख्या	८	८	१०	११	१२	१३	DoHS AR 2074/75	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	विद्यालय नर्स सेवा विस्तार भएका विद्यालय	संख्या	२०	१२१	४००	७००	११००	१३५५		सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	अस्पतालहरूमा आयुर्वेद लगायत वैकल्पिक उपचारको एकीकृत सेवा	संख्या	०	१	२	३	४	५	DHIS 2 2075/76	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	आयुर्वेद लगायत वैकल्पिक स्वास्थ्य सेवाको स्तरोन्नति	संख्या	०	१	३	५	१०	१३		सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	बहुक्षेत्रीय पोषण कार्यक्रम विस्तार	स्थानीय तह	५१	६०	७०	८५	९७	११९	DHIS 2 2075/76	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	पोषण पुनर्स्थापना केन्द्र विस्तार	संख्या	३	३	४	५	७	८	FWD 2019	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	१ घण्टाभित्र स्तनपान गराउने आमा	प्रतिशत	५६.४	६८.०	७२.०	७८.०	८५.०	९०	NDHS 2016	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	स्तनपान गराउने औसत अवधि	महिना	३.६	४.६	५	५.५	६	६.५	NDHS 2016	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	औलो रोग पत्ता लागेको बिरामी	संख्या प्रति लाखमा	०.०२	०.०१०	०.०१५	०.००१	०.००१	०.००१	DoHS AR 2074/75	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	औलो रोगबाट संक्रमित व्यक्ति (इन्डोजेनस संक्रमण)	जना	९	८	६	४	२	०	DHIS 2 2075/76	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	माघार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/ रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	मात्र)														
	एच आइ भी संक्रमित व्यक्ति (नयाँ)	जना	६३०	६००	५००	४००	३००	२५०	DoHS AR 2074/75	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	गर्भवती महिला मध्ये पी एम टी सी टी सेवा पाएका महिला	प्रतिशत	७६	७८	८०	८४	८८	९०	DoHS AR 2074/75	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	क्षयरोग (Case Notification Rate)	प्रतिलाखमा	१२१	१२५	१३५	१४०	१४८	१५६	DoHS AR 2074/75	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	१५ वर्ष माथिका उमेरका महिलाहरूमा उच्च रक्तचापको दर(%)	प्रतिशत	१९	१८.६	१८.२	१७.८	१७.४	१७	NDHS 2016	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	१५ वर्ष माथिका उमेरका पुरुषहरूमा उच्च रक्तचापको दर(%)	प्रतिशत	२९	२८.२	२७.४	२६.६	२५.८	२५	NDHS 2016	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	संवेदनशील रोगको प्रिभ्यालेन्स											५.२.२	२.३	३	
	कुष्ठ रोगका विरामीहरू New cases	सङ्ख्या	२७७१*	२२४३	१७१५	११८७	६५९	१२९	SDG	रायोआ		५.२.२	२.३	३	
	कालाजारको संक्रमण भएका व्यक्ति (प्रति दश हजारमा)	संख्या	०	०	०	०	०	०	DoHS AR 2074/75	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	हात्तीपाइले	प्रति लाख	२०५	१८०	१६०	१४०	१२०	१००	DoHS AR 2074/75	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	डेङ्गे	संख्या	४६५	४००	३००	२५०	२००	१२५	DoHS AR 2074/75	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	हेपाटाइटिस बी	संख्या	NA							सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	ट्रकोमा	संख्या	१६९७	१५००	१२००	९५०	७००	५२५	DoHS AR 2074/75	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	
	पछिल्लो २ हप्तामा पखाला लागेका ५ वर्ष मुनिका बालबालिका	प्रतिशत	12*	१०.६	९.२	७.८	६.४	५	SDG	रायोआ		५.२.२	२.३	३	
	प्रयोगशाला परीक्षणबाट पत्ता लागेका इन्फ्युन्जाका विरामीहरू(h1n1)	सङ्ख्या	२०४*	१७४	१४४	११४	८४	५५	DoHS AR 2074/75	सा.वि.म.		५.२.२	२.३	३	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ५ को ५.२ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.१२ जनसङ्ख्या र बसाइँसराइ

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रदेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत	
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१								
प्रभाव	कुल प्रजनन दर	प्रति महिला	१.८	१.८	१.८	१.८	१.८	१.८	१.८	NDHS, 2016	सा.वि.म.		५.२.९	२.३		
	अपेक्षित आयु (जन्म हुदाको)	वर्ष	७०.७	७१	७१.५	७२	७२.५	७३	७३	NLSS	सा.वि.म.		५.२.९	२.३		
	सक्रिय उमेरको जनसंख्या	प्रतिशत	६२.९	६३	६३.५	६४	६४.५	६५.०	६५.०	CBS			५.२.९	२.३		
	खुद आन्तरिक बसाइँसराइ उच्च भएका जिल्ला	संख्या	४	३.२	२.४	१.६	०.८	०	०	राजग	केतवि		५.२.९	२.३		
	ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धिदर भएका जिल्ला	संख्या	७	७	७	६	६	५	५	नेपाल मा.वि.सू.	सा.वि.म.		५.२.९	२.३		
असर	शिशु मृत्युदर	प्रति हजार जीवित जन्ममा	२९.०	२६.०	२३.०	२०.०	१७.०	१४.०	१४.०	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		५.२.९	२.३		
	श्रमशक्ति सहभगिता दर	प्रतिशत	४७.१	४९.३	५१.५	५३.६	५५.८	५८	५८	NLFS 2017/18	सा.वि.म.		५.२.९	२.३		
	बेरोजगारी दर	प्रतिशत	७.०							NLFS	केतवि		५.२.९	२.३		
किशोर	किशोरी अवस्थामा गर्भवती वा अमा भएका	प्रतिशत	१०	९	८	७	६	५	५	NDHS, 2016			५.२.९	२.३		
	पहिलो बच्चा जन्माउने औषत उमेर	वर्ष	२१.४	२१.८	२२	२२.३	२२.६	२३	२३	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		५.२.९	२.३		
	५ वर्ष मुनिको बाल मृत्युदर	प्रति हजार जीवित जन्ममा	३६.०	३२.४	२८.८	२५.२	२१.६	१८.०	१८.०	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		५.२.९	२.३		
	शिशु मृत्युदर	प्रति हजार जीवित जन्ममा	२९.०	२६.०	२३.०	२०.०	१७.०	१४.०	१४.०	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		५.२.९	२.३		
	पहिलो विवाह गर्ने औषत	वर्ष	२१.२	२१.३	२१.४	२१.६	२१.८	२२	२२	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा		५.२.९	२.३		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	उमेर									विभाग					
	कुल प्रजनन दर र इच्छित प्रजनन दरको अन्तर	प्रतिशत	२८	२५	२३	२०	१७	१५	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		५.२.९	२.३		
	परिवार नियोजनका आधुनिक साधनको प्रयोगकर्ता दर	प्रतिशत	४९	५१	५३	५५	५८	६०	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		५.२.९	२.३		
	परिवार नियोजनका आधुनिक साधनको न्युनता	प्रतिशत	२०	१९	१८	१७	१६	१५	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		५.२.९	२.३		
	पूर्ण खोपको दायरा (१५ महिना मुनिको बालबालिका)	प्रतिशत	८५	८६	८९	९२	९४	९६	HMIS	स्वास्थ्य सेवा विभाग		५.२.९	२.३		
	विदेश गएको अनुपस्थित जनसंख्या	प्रतिशत										५.२.९	२.३		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ४ को ४.२ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.१३ लैङ्गिक समानता र महिला सशक्तिकरण

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	लैङ्गिक विकास सूचकाङ्क	सूचकाङ्क	०.९३१						मानव विकास प्रतिवेदन			५.३.२	२.२	५	
असर	लैङ्गिक हिंसा न्यूनीकरण	प्रतिशत	२६.३*	२५.०	२०.०	१८.०	१५.०	१२.०	दि.वि.ल./रा.यो.आ.			५.३.२	२.२	५	
	लैङ्गिक असमानता न्यूनीकरण	सूचकाङ्क							दि.वि.ल./रा.यो.आ.			५.३.२	२.२	५	
	रोजगार महिला र पुरुषको मासिक आम्दानिको अनुपात (मुख्य कामबाट)	अनुपात	१:१.७	१:१.६	१:१.५	१:१.४	१:१.२	१:१	श्रमशक्ति सर्वेक्षण	केतवि		५.३.२	२.२	५	
	घर जग्गामा एकल स्वामित्व भएका महिला (१५ देखि ४९ वर्ष)	प्रतिशत	१६.८	१८.४	२०.१	२१.७	२३.४	२५	नेजस्वास	स्वासेवि		५.३.२	२.२	५	
	महिला श्रम सहभागिता दर	प्रतिशत										५.३.२	२.२		
प्रतिफल	सम्पत्ति माथिको महिलाको	प्रतिशत	२०.६२*	२२	२६	२८	३०	३५	राष्ट्रिय जनगणना	सा.वि.म. र		५.३.२	२.२	१	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	स्वामित्व (घर जग्गा)									अन्तर्गतका निकाय					
	महिलाहरूको नाममा रहेको सम्पत्ति/ठोस देखिने धनसम्पत्ति	प्रतिशत												१	
	लैङ्गिक उत्तरदायी बजेट बिनियोजन अनुपात	प्रतिशत	३८.६५	३८.६५	४०.००	४१.००	४२.००	४५.००	राष्ट्रिय जनगणना	केतवि		५.३.२	२.२	५	
	नीति निर्णायक तहमा महिलाको पहुँच	प्रतिशत	३३	३३	३६	४०	४५	५०	राष्ट्रिय जनगणना	केतवि		५.३.२	२.२	५	
	प्राविधिक तथा व्यावसायिक दक्षता अभिवृद्धि कार्यक्रममा महिला सहभागिता	प्रतिशत	२८	२८	३०	३३	३६	४०	वार्षिक प्रतिवेदन	CTEVT		५.३.२	२.२	५	
	अल्पकालीन पुनर्स्थापना केन्द्रको स्थापना र स्तरोन्नति (मनोविमर्शसहित)	संख्या	३०	३०	३५	४०	३०	२०	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.३.२	२.२	५	
	मानव बेचबिखन नियन्त्रणमा स्थानीय तहसँग सहकार्य	स्थानीय तह	११९	११९	११९	११९	११९	११९	वार्षिक प्रतिवेदन	साविम		५.३.२	२.२	५	
	जीवनकालमा शारीरिक, मानसिक वा यौन हिंसाबाट पिडित महिला	प्रतिशत	२६.३	२६.३	२०.०	१८.०	१५.०	१३.०	NDHS, 2016	स्वासेवि		५.३.२	२.२	५	
	एकल महिला सुरक्षा कोष/ महिला तथा सामाजिक सुरक्षा कोषबाट लाभ लिने स्थानीय तह	स्थानीय तह संख्या		११९	११९	११९	११९	११९	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.३.२	२.२	५	
	महिला सहकारी संस्थाको सुदृढिकरण	संख्या	३९९	३९९	३९९	३९९	३९९	३९९	महिला तथा बालबालिका विभाग			५.३.२	२.२	५	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरु: योजनाको परिच्छेद ५ को ५.३ को प्रमुख कार्यक्रमहरुमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.१४ सामाजिक समावेशीकरण

नतिजा	नतिजा सूचक	एकाइ	२०७५/७६	२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार	अनुमान	प्रादेशिक	दीर्घकालीन	दिगो	कैफियत
-------	------------	------	---------	---------	---------	---------	---------	---------	---------------	-----------	--------	-----------	------------	------	--------

स्तर				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१		निकाय	तथा जोखिम	लक्ष्य/रणनीति संकेत	राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	विकास लक्ष्य संकेत
प्रभाव	राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक विकासमा पछाडि परेका समुदायको आय असमानता	जिनी गुणक	०.२५	०.२५	०.२४	०.२४	०.२३	०.२३	दि.वि.ल./रा.यो.आ.				२.२	
असर	राजनीतिक सशक्तिकरण सूचकाङ्क	सूचकाङ्क							दि.वि.ल./रा.यो.आ.				२.२	
	सामाजिक सशक्तिकरण सूचकाङ्क	सूचकाङ्क							दि.वि.ल./रा.यो.आ.				२.२	
	आर्थिक सशक्तिकरण सूचकाङ्क	सूचकाङ्क							दि.वि.ल./रा.यो.आ.				२.२	
प्रतिफल	रैथाने पेशा र प्रविधिको स्तरीकरण र आधुनिकीकरण	संख्या							वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म. र अन्तर्गतका निकाय			१.४	
	प्राकृतिक श्रोतको उपयोगमा स्थानीय समुदायको लगानी अंश	प्रतिशत							वार्षिक प्रतिवेदन				१.४	
	रैथाने पेशा लगायत सिप विकास तालिम	जना							वार्षिक प्रतिवेदन				१.२	
	बच्चितामा परेका समुदायको क्षमता विकास	जना							वार्षिक प्रतिवेदन				१.२	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ५ को ५.३ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.१५ सामाजिक सुरक्षा र संरक्षण

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	सामाजिक सुरक्षाको अनुभूति सूचकाङ्क	सूचकाङ्क							मा.वि.सू.	रायोआ			२.२		
असर	सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षण प्राप्त जनसंख्या	प्रतिशत							SDG	रायोआ			२.२		
	प्रादेशिक बजेटमा सामाजिक सुरक्षामा भएको खर्च	प्रतिशत	११.३	११.८	१२.४	१२.९	१३.५	१४.	आययोम	सा.वि.म.			२.२	१	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	बैंक खाता भएको परिवार	प्रतिशत	७४.६	७७.८	८१	८४.२	८७.४	९०.६	NDHS (२०१६)-WB estimat	केतवि				१	
	औपचारिक वित्तीय सेवाहरूबाट समेटिएका परिवार	प्रतिशत												१	
प्रतिफल	बैंकिङ सेवा विस्तार भएको स्थानीय तह	सङ्ख्या	११५	११७	११९	११९	११९	११९	प्रदेश प्रोफाइल	सा.वि.म. र अन्तर्गतका निकाय			२.२		
	प्रतिष्ठानहरूको सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रममा आवद्धता	प्रतिशत							वार्षिक प्रतिवेदन				२.२		
	सामाजिक सुरक्षा योजनामा समावेश हुने प्रतिष्ठान/रोजगारदाताको संख्या	संख्या (हजार)											२.२		
	जोखिमपूर्ण अवस्थामा रहेका बालबालिकाको आपत्कालीन उद्धार तथा संरक्षण व्यवस्थापन	जना											२.२		
	वृद्धाश्रम दिवा सेवा केन्द्र सहित	संख्या	३३	३३	३३	३३	३३	३३	Admin Data				२.२		
	सीपमूलक तालिम प्राप्त अपाङ्गता भएका व्यक्ति	जना	७६	१००	१२५	१५०	१७५	२००	Admin Data				२.२		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ५ को ५.३ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.१६ ज्येष्ठ नागरिक

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	वृद्ध अवस्थाको सूचकाङ्क (Index of ageing)	सूचकाङ्क							सर्वेक्षण			५.३.४	२.२		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
असर	सुरक्षित र सम्मानजनक जीवनयापन गरिरहेका जेष्ठ नागरिक	प्रतिशत							Happiness Index			५.३.४	२.२		
प्रतिफल	सुविधा सम्पन्न ज्येष्ठ नागरिक ग्राम (ज्ञान केन्द्र) स्थापना तथा सञ्चालन	वटा							सा.वि.म.	सा.वि.म. र अन्तर्गतका निकाय		५.३.४	२.२		
	दिवा सेवा केन्द्रको स्थापना	स्थानीय तह							म. तथा बालवालिका विभाग			५.३.४	२.२		
	ज्येष्ठ नागरिक कल्याण कोषको स्थापना	स्थानीय तह		११९	११९	११९	११९	११९				५.३.४	२.२		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ५ को ५.३ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.१७ अपाङ्गता भएका व्यक्ति

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	अपाङ्गता न्युनीकरण	प्रतिशत							जनगणना			५.३.५	२.२		
असर	अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरूको आत्मनिर्भर, स्वावलम्बी र सम्मानजनक जीवनयापन	प्रतिशत							Happiness Index			५.३.५	२.२		
प्रतिफल	अपाङ्गतामैत्री भौतिक संरचना निर्माण	प्रतिशत							सा.वि.म.	सा.वि.म. र अन्तर्गतका निकाय		५.३.५	२.२		
	प्रादेशिक सूचना केन्द्र हेल्पडेस्क र सफ्टवेयर निर्माण (मन्त्रालय)	संख्या										५.३.५	२.२		
	आवश्यकतामा आधारित सीपमूलक तालिम	जना										५.३.५	२.२		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ५ को ५.३ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.१८ बालबालिका तथा किशोर किशोरी

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	श्रममा संलग्न बालबालिका तथा किशोरकिशोरी	प्रतिशत							MICS	केतवि		५.३.३	२.२	५	
असर	बालमैत्री स्थानीय शासनयुक्त स्थानीय तह	सङ्ख्या		३०	५०	७०	९०	११९	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.३.३	२.२	५	
	बालबालिकाको जन्मदर्ता	प्रतिशत							ने.ज.स्वा.स.	केतवि		५.३.३	२.२	५	
	अल्पकालिन बाल संरक्षण केन्द्रको सञ्चालन	सङ्ख्या		४२६	४२६	४२६	४२६	४२६	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.३.३	२.२	५	
	बालमनोविमर्श सेवा तथा कानुनी परामर्श केन्द्रको सञ्चालन	वटा							वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.३.३	२.२	५	
	सबै प्रकारका बालविवाह विरुद्धमा स्थानीय तहहरूमा अभियान सञ्चालन	वटा		११९	११९	११९	११९	११९	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.३.३	२.२	५	
	अनाथ बालबालिका पूनर्स्थापना	सङ्ख्या	११७३९	११७३९	१००००	९०००	८०००	७०००	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.३.३	२.२	५	
	सडक बालबालिकाविहिन पालिका	सङ्ख्या		३०	५०	७०	९०	११९	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.३.३	२.२	५	
	किशोरकिशोरीका लागि जीवन उपयोगी सीप तालिम	सङ्ख्या		१००	३००	५००	८००	१०००	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.३.३	२.२	५	
	किशोरकिशोरी लक्षित विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम	सङ्ख्या							वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.३.३	२.२	५	
	बाल संरक्षण कोष स्थापनामा स्थानीय तहसँग सहकार्य	सङ्ख्या	११९	११९	११९	११९	११९	११९	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.३.३	२.२	५	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ५ को ५.३ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.१९ युवा तथा खेलकुद

नतिजा	नतिजा सूचक	एकाइ	लक्ष्य	सूचनाको	जिम्मेवार	अनुमान	प्रादेशिक	दीर्घकालीन	दिगो	कैफियत
-------	------------	------	--------	---------	-----------	--------	-----------	------------	------	--------

स्तर				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	स्रोत	निकाय	तथा जोखिम	लक्ष्य/रणनीति संकेत	राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	विकास लक्ष्य संकेत	
प्रभाव	युवा बेरोजगारी दर								नेपाल श्रमशक्ति सर्वेक्षण २०१७	केतवि		५.४.१	१.४		
	राष्ट्रिय खेलकुद प्रतियोगितामा प्राप्त गरेको स्वर्ण पदक सङ्ख्यामा वृद्धि									सा.वि.म.		५.४.५	२.६		
असर	शिक्षा, तालिम र रोजगारीबाट विमुख युवा	प्रतिशत							नेपाल श्रमशक्ति सर्वेक्षण २०१७	सा.वि.म.		५.४.१	१.४		
	परम्परागत पेशाको संरक्षण एवम् आधुनिकीकरण	सङ्ख्या		०	२	३	४	५	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.४.१	१.४		
	युवा स्वरोजगार कोषमा युवा पहुँच	सङ्ख्या							वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.४.१	१.४		
	उद्यमशीलता विकास तालिम	सङ्ख्या		५००	१०००	१५००	२०००	२५००	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.४.१	१.४		
	युवा स्वयम्सेवक परिचालन	सङ्ख्या	११५	१९७	२००	२००	२००	२००	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.४.३	१.४		
	युवा सिर्जनशील / युवा वैज्ञानिक प्रोत्साहन कोष (innovation fund) स्किम (प्रविधिको स्थानयीकरणको लागि प्रविधि उपयोग कोष)	सङ्ख्या	०	२०	४०	६०	८०	१००	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.४.१	१.४		
	राष्ट्रिय खेलकुद प्रतियोगितामा खेलाडीले प्राप्त गरेको स्वर्ण पदक	वटा	०	०	५	०	१०	०	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.४.५	२.६		
प्रतिफल	खेलकुद पूर्वाधार विकास								वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.४.५	२.६		
	(क) व्यवस्थित खेल मैदान (जम्मा)	वटा	६६	८६	१००	१०५	११०	११९	admin data	सा.वि.म.		५.४.५	२.६		
	(ख) जिल्लास्तरीय रंगाशाला	वटा	१०	१३	१४	१४	१४	१४	admin data	सा.वि.म.		५.४.५	२.६		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	(ग) कभर्ड हल निर्माण	वटा	१९	२६	३५	४३	५१	५९	admin data	सा.वि.म.		५.४.५	२.६		
	खेलकुद प्रशिक्षण	खेलाडी सङ्ख्या	०	१००	३००	४००	५००	६००	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.४.५	२.६		
	खेलकुदको व्यावसायिकीकरण	खेलाडी सङ्ख्या	०	१००	१००	१००	१००	१००	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.४.५	२.६		
	साहसिक खेलकुद विकास/प्रवर्धन	प्रकार	०	०	२	३	४	५	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म.		५.४.५	२.६		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरु: योजनाको परिच्छेद ५ को ३.४ को प्रमुख कार्यक्रमहरुमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.२० भाषा, कला, साहित्य र सम्पदा संरक्षण

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	संरक्षित भाषाहरुको सङ्ख्यामा बृद्धि	सङ्ख्या										५.५.२			
	संरक्षित कलाहरुको सङ्ख्यामा बृद्धि	सङ्ख्या										५.५.२			
	संरक्षित साहित्यहरुको सङ्ख्यामा बृद्धि	सङ्ख्या										५.५.२			
	संरक्षित सम्पदाहरुको सङ्ख्यामा बृद्धि	सङ्ख्या										५.५.५			
असर	मौलिक संस्कृतिको संरक्षण र संवर्द्धन	सङ्ख्या	१	८	१०	११	१२	१३	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म. र अन्तर्गतका निकाय		५.५.२			
प्रतिफल	प्रदेशको कुल बजेटमा भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति, पुरातात्विक सम्पदा संरक्षण र विकासको अंश	प्रतिशत	०.१३	०.४०	०.५०	०.६०	०.६५	०.७५	बजेट वक्तव्य	आमा तथा योम		५.५.५			
	सांस्कृतिक तथा पुरातात्विक सम्पदाहरुको अध्ययन अनुसन्धान	सङ्ख्या	१	१	२	३	४	५	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म. र अन्तर्गतका निकाय		५.५.५			

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	पुरातात्विक सम्पदा (१०० वर्षभन्दा पुराना) संरक्षण	सङ्ख्या	५	३	१	१	१	१	वार्षिक प्रतिवेदन			५.५.५			
	परम्परागत तथा सांस्कृतिक गुठी संरक्षण	सङ्ख्या	०	०	३	५	७	१०	वार्षिक प्रतिवेदन			५.५.५			
	भाषाको कम्प्युटर इन्जिनियरिङ	सङ्ख्या	०	०	१	२	३	४	वार्षिक प्रतिवेदन			५.५.२			
	लोपोन्मुख भाषा सांस्कृतिक संरक्षण	सङ्ख्या	०	५	८	११	१४	१७	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म. र अन्तर्गतका निकाय		५.५.२			
	सङ्ग्रहालयको स्थापना	सङ्ख्या	०	०	१	२	२	३	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म. र अन्तर्गतका निकाय		५.५.२			
	बहुजातीय सांस्कृतिक ग्राम	सङ्ख्या	०	०	०	०	०	१	वार्षिक प्रतिवेदन			५.५.२			
	सामुदायिक पुस्तकालय सबलीकरण	सङ्ख्या	०	१०	१५	२०	२५	३०	वार्षिक प्रतिवेदन			५.५.२			
	मातृभाषाको पाठ्यक्रम तथा पाठ्य सामग्री विकास	सङ्ख्या	०	०	२	४	६	८				५.५.२			

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ५ को ५.५ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.२१ शहरीकरण, आवास तथा वस्ती विकास

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	सुरक्षित (भवन आचारसंहिताको मापदण्ड अनुसार निर्मित) आवासमा बसोबास गर्ने जनसंख्या	प्रतिशत	३७.८	४४.२	५०.१	५७.१	६३.६	७०	वार्षिक प्रतिवेदन	भौ.पु.वि.म.		६.१.३	१.१	११	
असर	आधारभूत सेवा सुविधा	प्रतिशत							राजग	के.त.वि.		६.१.३	१.१	११	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	पुगेको परिवार														
	ग्रामीण-शहरी जनघनत्वको अनुपात	अनुपात	१:१६						राजग	के.त.वि.		६.१.३	१.१	११	
	शहर केन्द्रीकरण अनुपात (city concentration ratio)	अनुपात	६३.६						राजग	के.त.वि.		६.१.३	१.१	११	
	शहरको औषत आकार (mean city size) - जनसंख्याको आधारमा	संख्या	८७८१९						राजग			६.१.३	१.१	११	
	गाउँको औषत आकार (mean rural size) - जनसंख्याको आधारमा	संख्या	२००२६						राजग			६.१.३	१.१	११	
प्रतिफल	नक्सा पास गरी भवन निर्माण	प्रतिशत							ने.ज.स्वा.स.	भौ.पु.वि.म. र मातहतका निकाय		६.१.३	१.१	११	
	सिमेन्ट ढलान सहितका भवन	प्रतिशत	२१.२	२३	२४.७	२६.५	२८.२	३०	ने.ज.स्वा.स.			६.१.३	१.१	११	
	जस्तापाता छाना भएको आवासमा बसोबास गर्ने परिवार	प्रतिशत	३३.७	३१.६	२९.४	२७.३	२५.१	२३	राजग	केतवि		६.१.३	१.१	११	
	आर.सि.सि. छाना भएको आवासमा बसोबास गर्ने परिवार	प्रतिशत	४१.७	४२.४	४३	४३.७	४४.३	४५	राजग	केतवि		६.१.३	१.१	११	
	बत्ती बालन बिजुली प्रयोग गर्ने परिवार	प्रतिशत	८५.७	८८.६	९१.४	९४.३	९७.१	१००	ने.ज.स्वा.स.	केतवि		६.१.३	१.१	११	
	शौचालय सुविधा भएको परिवार	प्रतिशत		१००	१००	१००	१००	१००	ने.ज.स्वा.स.	केतवि		६.१.३	१.१	११	
	सुरक्षित नागरिक आवास निर्माण	संख्या										६.१.३	१.१	११	
	शहरी गरीब आवास एकाई निर्माण	संख्या	-									६.१.३	१.१	११	
	बस्ती स्थानान्तरणका लागि पूर्वाधार सहितको एकीकृत बस्ती विकास	संख्या	-	-	१	१	१	२				६.१.३	१.१	११	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	एकीकृत सहरी सेवा केन्द्र निर्माण	संख्या	-	१	१	२	२	३				६.१.३	१.१	११	
	सहरी पार्क/उद्यान निर्माण तथा सुधार	संख्या	-	४०	५०	६०	७०	८०				६.१.३	१.१	११	
	स्मार्ट सिटीका रूपमा शहरको विकास	सङ्ख्या (क्रमागत)	०	०	१	१	१	२				६.१.३	१.१	११	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरु: योजनाको परिच्छेद ६ को ६.१ को प्रमुख कार्यक्रमहरुमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.२२ सडक तथा यातायात व्यवस्था

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा यातायात क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत											१.१		
असर	आधा घण्टाको पैदल यात्रामा यातायातको पहुँच भएको जनसंख्या	प्रतिशत	८६	८९	९२	९५	९८	१००	GIS नक्सा, वेब साइट, वा.प्र.प्र.	भौ.पू.वि.म.		६.२.१	१.१		
	३० मिनेटको पैदल दूरीमा बजार केन्द्रको पहुँच पुगेको परिवार	प्रतिशत	५७.५	६३.६	६९.७	७५.८	८१.९	८८	दिविल	रायोआ		६.२.१	१.१	१	
	३० मिनेटसम्मको दूरीमा कृषि उपज बिक्रीका लागि बजार उपलब्ध भएका कृषक परिवार	प्रतिशत	३२.६	३७	४१.४	४५.८	५०.२	५४.६	नेजीस	केतवि		६.२.१	१.१		
	सडक घनत्व	कि.मि. प्रति १०० वर्ग कि.मि	८३	८५	८७	८९	९१	९२	व्यसुप्र.	स्था.पू.वि		६.२.१	१.१		
	वर्षभरि सडक यातायातमा आवद्ध स्थानीय तहका केन्द्र	संख्या	५३	७०	८२	९८	१०७	११९	GIS नक्सा, वेब साइट,	भौ.पू.वि.म.		६.२.१	१.१		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
									वा.प्र.प्र.						
	विद्यमान सडकको वर्षभरि यातायात सुचारू हुनेगरी स्तरोन्नति	कि.मि.							व्यसूप्र	भौ.पु.वि.म.		६.२.१	१.१		
												६.२.१	१.१		
प्रतिफल	कालोपत्रे सडकमा स्तरोन्नति	कि.मि.	२६२६	२७४६	२८६६	२९८६	३१०६	३२२६	व्यसूप्र	भौ.पु.वि.म. र मातहतका निकाय		६.२.१	१.१		
	खण्डास्मिथ सडकमा स्तरोन्नति	कि.मि.	२९३६	३४३६	३९३६	४४३६	४९३६	५४३६	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	स्थानीय तहको केन्द्र जोड्ने सडक निर्माण	कि.मि.	-	१०	३५	५२	५२	५२	व्यसूप्र	भौ.पु.वि.म. र मातहतका निकाय		६.२.१	१.१		
	सडक पुल निर्माण	संख्या	-	२५	५०	७५	१००	१२५	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	सडक फुटपाथ निर्माण	कि.मि.							व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	रज्जु मार्ग निर्माण	संख्या	-	-	१	२	३	४	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	झोलुङ्गे पुल निर्माण	गोटा	-	-	५०	१००	१५०	२००	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	ग्राभिटि केबुलकार	संख्या	१	-	-	-	-	-	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	ट्राफिक पोष्ट स्थापना	गोटा							व्यसूप्र	भौ.पु.वि.म. र मातहतका निकाय		६.२.१	१.१		
	साइकल लेन	कि.मि.							व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	ट्राफिक लाईट (क्रसरोड)	संख्या	-	१५	३०	४५	६०	७५	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	विद्युतीय चार्ज स्टेशन सहितको सवारी साधन पार्किङ स्थल निर्माण	संख्या	-	२	७	१७	२७	३७	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	निर्माण गुणस्तर परीक्षण प्रयोगशाला	संख्या	१	२	३	४	५	६	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	ट्रायल सेन्टर निर्माण	संख्या	-	१	२	३	४	४	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	सवारी मर्मत केन्द्र जोडिने	संख्या	-	१	२	३	४	५	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	भार परीक्षण केन्द्र	संख्या	-	१	२	३	४	५	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	प्रदुषण परीक्षण केन्द्र	संख्या	-	१	२	३	४	५	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	सडकको मर्मत सम्भार	कि मि	-	१२००	२५००	३०००	३५००	४०००	व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	यातायात प्रणालीलाई विद्युतीय प्रणालीमा आवद्धता	प्रतिशत							व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	यातायात कर्मचारी, ट्राफिक प्रहरी लगायतलाई तालिम	वटा	-	-					व्यसूप्र			६.२.१	१.१		
	सडक सुरक्षा तालिम	वटा							व्यसूप्र			६.२.१	१.१		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ६ को ६.२ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.२३ जलविद्युत

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा ऊर्जा क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत											१.१	७	
बसर	प्रतिव्यक्ति विद्युत खपत	किलोवाट घण्टा							ने.वि.प्रा.			६.३.१	१.१	७	
	विद्युतमा पहुँच प्राप्त जनसंख्या	प्रतिशत	८५.७	८८.६	९१.४	९४.३	९७.१	१००	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		६.३.१	१.१	७	
	जलविद्युत उत्पादन जडित क्षमता	मेगावाट	३४०.३	४१५	९१५	१११५	१३१५	१५५०	व्य	उर्जा जलस्रोत तथा सिंचाइ मन्त्रालय		६.३.१	१.१	७	
	विद्युत चुहावट (उत्पादनमा)	प्रतिशत	१९.०	१८.०	१७.०	१६.०	१५.०	१४.०				६.३.१	१.१	७	
	यातायातमा विद्युतीय सवारी साधनको हिस्सा	प्रतिशत	-	५.०	८.०	११.५	१५.५	२०.०				६.३.१	१.१	७	
प्रतिफल	निर्माण सम्पन्न जलविद्युत आयोजना	संख्या										६.३.१	१.१	७	
	निर्माणाधीन जलविद्युत आयोजना	संख्या								उर्जा जलस्रोत तथा सिंचाइ मन्त्रालय		६.३.१	१.१	७	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	निर्माण चरणमा जाने जलविद्युत आयोजना	संख्या								उर्जा जलस्रोत तथा सिंचाइ ४मन्त्रालय	६.३.१	१.१	७		
	प्रसारण तथा वितरण लाइन निर्माण										६.३.१	१.१	७		
	प्रसारण लाइन (६६ के.भि.तथा सो भन्दा माथिका)	स.कि.मि.	४९४								६.३.१	१.१	७		
	प्रसारण लाइन (१३२ के.भि.तथा सो भन्दा माथिका)	स.कि.मि.	१६०१								६.३.१	१.१	७		
	वितरण लाइन (२०० के.भि.)	स.कि.मि.	१४३२								६.३.१	१.१	७		
	वितरण लाइन (४०० के.भि.)	स.कि.मि.	७८								६.३.१	१.१	७		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ६ को ६.३ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.२४ सिंचाइ

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	सिंचाईयोग्य कृषि भूमिमध्ये वर्षेभरि सिंचाइ सुविधा पुगेको भूमि	प्रतिशत	३२.०	३२.४	३३.०	३३.७	३४.७	३६.१	वार्षिक प्रतिवेदन	तथ्यांक, विभाग,	६.५.१	१.१	२		
असर	सिंचाईयोग्य कृषि भूमिमा कुल सिंचित क्षेत्रफल	प्रतिशत	५८.८	५९.०	६२.०	६४.०	६६.०	६९.०		सिंचाइ डिभिजनहरू	६.५.१	१.१	२		
	कृषक व्यवस्थित सिंचाइ प्रणाली सुदृढीकरण	हेक्टर	-	२५००	३५००	४०००	५०००	५५००		सिंचाइ डिभिजनहरू	६.५.१	१.१	२		
	खेतियोग्य जमिन मध्ये	प्रतिशत	४३	४३	४३	४३	४३	४३	वार्षिक	कृ.प.सिं.म	६.५.१	१.१	२		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	सिंचित जमिन								प्रतिवेदन						
	वर्षभरी सिंचाई हुने खेतियोग्य जमिन	प्रतिशत	२८.४	३२.३	३६.२	४०.१	४४.१	४८	वार्षिक प्रतिवेदन	कृ.प.सिं.म		६.५.१	१.१	२	
प्रतिफल	मझौला सिंचाइ आयोजना (२००-२००० हे.)	संख्या	-	७	९	१२	१६	२०	वार्षिक प्रतिवेदन	भौ.पु.वि.म. र मातहतका निकाय		६.५.१	१.१	२	
	मझौला सिंचाइ आयोजना (नयाँ प्रविधीमा आधारित, टार र लिफ्ट सिंचाइ) (१०-२०० हे.)	संख्या	-	१८०	२३०	२९०	३५०	४००	वार्षिक प्रतिवेदन			६.५.१	१.१	२	
	भूमिगत सिंचाइ (स्यालो तथा डिप टयुनेल)	संख्या	-	३०	५०	८०	९०	११०	वार्षिक प्रतिवेदन			६.५.१	१.१	२	
	सिंचाई व्यवस्थापन											६.५.१	१.१	२	
	सरकार व्यवस्थित	हेक्टर	८६००	८६००	८६००	८६००	८६००	८६००				६.५.१	१.१	२	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ६ को ६.५ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.२५ खानेपानी तथा सरसफाइ

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	आधारभूत खानेपानी पुगेको जनसंख्या	प्रतिशत	९४.१	९५.१	९६.१	९७	९८	९९	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		६.७.१	१.१	६	
असर	सुधारिएको सरसफाइ सुविधा पुगेको जनसंख्या	प्रतिशत	६४	६९.२	७४.४	७९.६	८४.८	९०	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		६.७.२	१.१	६	
	धारा पाइपवाट खानेपानी पुगेको जनसंख्या	प्रतिशत	६७.२	७३.६	७९.९	८६.३	९२.६	९९	राष्ट्रिय जनगणना	केतवि		६.७.१	१.१	६	
	झाडापखालाबाट प्रभावित ५	प्रतिशत	९.०	७.४	५.८	४.२	२.६	१	HMIS	स्वास्थ्य सेवा		६.७.२	१.१	६	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	वर्षमुनिका बालबालिका									विभाग					
	खुला दिशामुक्त स्थानीय तह	प्रतिशत	-	१००	१००	१००	१००	१००	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म/ भौ.पू.म		६.७.२	१.१	६	
	शौचालय सुविधा उपलब्ध भएको परिवार	प्रतिशत	-	१००	१००	१००	१००	१००	राष्ट्रिय जनगणना	केतवि		६.७.२	१.१	६	
प्रतिफल	पूर्ण सरसफाइ सुविधा पुगेका स्थानीय तहका वडा	प्रतिशत	-	९५	१००	१००	१००	१००	वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म		६.७.२	१.१	६	
	नयाँ खानेपानी आयोजना	संख्या	-	१५	३५	५५	७५	९०				६.७.१	१.१	६	
	सार्वजनिक शौचालय निर्माण	संख्या	२०	४०	६०	८०	१००	१२०				६.७.२	१.१	६	
	खानेपानीको गुणस्तर परिक्षण सम्बन्धी प्रयोगशाला	सङ्ख्या	-	-	१	१	२	२	वार्षिक प्रतिवेदन	भौ.पू.वि.म.		६.७.२	१.१	६	
	ढल निर्माण	कि.मि.	-	२	५	८	११	१४	कार्यालय अभिलेख	भौ.पू.वि.म.		६.७.२	१.१	६	
	ढल प्रशोधन प्रणाली	संख्या	१	१०	१२	१५	१७	२०	कार्यालय अभिलेख	भौ.पू.वि.म.		६.७.२	१.१	६	
	फोहोर व्यवस्थापन प्रणाली सहितको स्यानिटरी ल्याण्डफिल साइट	संख्या										६.७.२	१.१	६	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ६ को ६.७ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.२६ प्रकोप व्यवस्थापन

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	जल उत्पन्न प्रकोपबाट प्रभावित परिवार	संख्या							प्रोफाईल, तथ्यांक, विभाग, डिभिजनहरू			६.८.१	१.१		
असर	जल उत्पन्न प्रकोप न्यूनीकरण (जमिन उकास)	हेक्टर										६.८.१	१.१		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/ रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	जल उत्पन्न प्रकोप न्यूनीकरण (जमिन बचाउ)	हेक्टर										६.८.१	१.१		
	निर्मित तटबन्ध (पहिरो रोकथाम समेत)	कि.मि		३०	३६	५१	६८	९६		भौ.पु.वि.म. र मातहतका निकाय		६.८.१	१.१		
	जोखिम नक्सांकन	संख्या		५	९	२०	४०	४५				६.८.१	१.१		
	बाढीबाट जोखिममा भएका बस्तीको संरक्षण	वटा		-								६.८.१	१.१		
प्रतिफल	बाढी तथा नदी नियन्त्रणका लागि कुल खर्चमा बायो इन्जिनियरिङ लगायत स्थानीय प्रविधिको उपयोग खर्चको अंश	प्रतिशत		५	५	५	५	५				६.८.१	१.१		
	प्रकोप जोखिम सचेतना अभियान संचालन	संख्या		१०	४०	६०	८०	१००				६.८.१	१.१		
	प्रमुख नदीमा बाढी पूर्व सूचना प्रणालीको स्थापना	संख्या		-	५	१५	२०	२५				६.८.१	१.१		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरु: योजनाको परिच्छेद ६ को ६.८ को प्रमुख कार्यक्रमहरुमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.२७ सौर्य तथा नवीकरणीय ऊर्जा

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/ रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	ऊर्जा उपभोगमा सौर्य तथा अन्य नवीकरणीय ऊर्जाको अनुपात	प्रतिशत	४.३	५.३	६.३	७.३	८.३	९.३	वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन	भौ.पु.वि.म.		७.२.१	१.१	७	
असर	ऊर्जा उपभोगमा नवीकरणीय ऊर्जा उपभोग	परिवार संख्या	५४६४४.३	६७३५२	८००६०	९२७६८	१०५४७६	११८१८४				७.२.१	१.१	७	
	घरेलु सौर्य बत्ति	संख्या		५००	१५००	२०००	२५००	३५००	वार्षिक प्रगति			७.२.१	१.१	७	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
									प्रतिवेदन						
	सुधारिएको चुलो (फलामे चुलो सहि)	संख्या		५००	१५००	२०००	२५००	३०००	वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन			७.२.१	१.१	७	
	सोलार सडक बत्ति	स्थान		१००	५००	१०००	१५००	२०००	वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन			७.२.१	१.१	७	
	भूमिगत मझौला टारमा सौर्य लिफ्ट सिंचाइ र खानेपानी	संख्या			३०	६०	८०	१००	वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन			७.२.१	१.१	७	
प्रतिफल	लघु जलविद्युत उत्पादन	कि.वा.	-	-	३००	६००	९००	१२००	वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन			७.२.१	१.१	७	
	सौर्य ड्रायर तथा कुकर जडान	संख्या										७.२.१	१.१	७	
	वायोग्यस जडान (घरायसी, सामुदायिक तथा संस्थागत र शहरी तथा व्यावसायिक)	संख्या (हजारमा)		७५०	२२५०	२५००	२५००	२५००				७.२.१	१.१	७	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ६ को ६.३ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.२८ वन तथा जैविक विविधता

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	वन क्षेत्रले ओगटेको क्षेत्रफल	प्रतिशत	५३.७	५३.७	५३.७	५३.७	५३.७	५३.७				७.१.२	२.३	१२ र १५	
असर	संरक्षित क्षेत्रले ओगटेको क्षेत्रफल	प्रतिशत	२९.९८	२९.९८	२९.९८	२९.९८	२९.९८	२९.९८				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	समुदायबाट व्यवस्थापन	हेक्टर	४३३.२	४३३.२	४३३.२	४३३.२	४३३.२	४३३.२				७.१.२	२.३	१२ र	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/ रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	भएको वनको क्षेत्रफल	हजारमा												१५	
	वन क्षेत्रबाट प्राप्त अनुमानित राजस्व रकम	रु. करोड	७८.८	८५	९०	१००	११०	१२०	सम्बन्धित मन्त्रालय	समुदायमा जाने रकम कुल गाईस्थ्य उत्पादनमा गणना हुने व्यवस्था मिलाउनु पर्ने		७.१.२	२.३	१२ र १५	
	उच्च मूल्यका जडीबुटी र गैरकाष्ठ वन पैदावारको उत्पादन	मे. टन	६६०.०	७००	७५०	८००	८५०	९००				७.१.२	२.३	१२ र १५	
प्रतिफल	वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन भएको क्षेत्रफल	हेक्टर	१७९१४.२	३००००	४५०००	६००००	७५०००	९००००				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	वैज्ञानिक वन व्यवस्थापन र उपयोगमा समुदायको पहुँच	समूह संख्या	६२	८०	९८	११६	१३४	१५२				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	काठको उत्पादन र आपूर्ति	घन फिट लाखमा	१६.४	१७	१८	१९	२०	२१				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	काठ प्रशोधन उद्योगको स्थापना र संचालन (Saw Mills/Veneer)	संख्या										७.१.२	२.३	१२ र १५	
	जडीबुटी प्रशोधन र भण्डारण उद्योग	संख्या	३०	३५	४०	४५	५०	६०				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	प्रशोधित जडीबुटीको निर्यात परिमाण	मे. टन										७.१.२	२.३	१२ र १५	
	काठमा आधारित लघु उद्यम तथा उद्योगहरूको प्रवर्द्धन	संख्या	५९.०	१००	१५०	२००	३००	४००				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	सामुदायिक वन	संख्या	४५०९.०	४५५०	४६००	४६५०	४७००	४७५०				७.१.२	२.३	१२ र १५	
		क्षेत्रफल	४१६५२६.०	४२००००	४२५०००	४३००००	४३५०००	४४००००				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	निजी वन	संख्या	५८९.०	६२०	६३०	६४०	६५०	६६०				७.१.२	२.३	१२ र १५	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/ रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	विगत विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
		क्षेत्रफल	३६०.०	३७२	३७८	३८४	३९०	३९६				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	धार्मिक वन	संख्या	३३.०	३७	३८	३९	४०	४१				७.१.२	२.३	१२ र १५	
		क्षेत्रफल	२०५.४	२१०	२१३	२१६	२१९	२२२				७.१.२	२.३	१२ र १५	
प्रतिफल	कबुलियती वन	संख्या	३१२५.०	३१३५	३१४५.०	३१५५	३१६५.०	३१७५				७.१.२	२.३	१२ र १५	
		क्षेत्रफल	१६४६३.०	१६५३८	१६६१३.०	१६६८८	१६७६३.०	१६८३८				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	संरक्षित वन	संख्या	१	१	१	१	१	२				७.१.२	२.३	१२ र १५	
		क्षेत्रफल	१०४६६.०	१०४६६.०	१०४६६.०	१०४६६.०	१०४६६.०	१२४६६				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	लोपोन्मुख, संकटापन्न र जोखिममा परेका वनस्पति प्रजातिहरूको संरक्षण योजना कार्यान्वयन	प्रजाति										७.१.२	२.३	१२ र १५	
	लोपोन्मुख, संकटापन्न र जोखिममा परेका वन्यजन्तु प्रजातिहरूको संरक्षण योजना कार्यान्वयन											७.१.२	२.३	१२ र १५	
	रेड पान्डा	योजना सङ्ख्या										७.१.२	२.३	१२ र १५	
	हिम चितुवा	योजना सङ्ख्या										७.१.२	२.३	१२ र १५	
	कस्तुरी	योजना सङ्ख्या										७.१.२	२.३	१२ र १५	
	सालक	योजना सङ्ख्या		१	१	१	१	१				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	वृक्षरोपण गरिएको क्षेत्रफल	हेक्टर	३३०.०	४५०	५००	५५०	६००	६५०				७.१.२	२.३	१२ र १५	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	बिरुवा उत्पादन	गोटा (लाख)	१५.७	१८	२०	२२	२४	२६				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	उच्च प्रविधियुक्त वन नर्सरी	संख्या	१.०	२	२	३	३	३	मन्त्रालयको कार्यक्रम र बजेट सीट			७.१.२	२.३	१२ र १५	
	वन क्षेत्रको अतिक्रमण हटाइएको क्षेत्रफल	हेक्टर	४९.०	१००	२००	३००	४००	५००				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	वन अनुसन्धानको लागि स्थायी नमुना प्लटहरुको सरक्षण	संख्या										७.१.२	२.३	१२ र १५	
	एकीकृत जलाधार व्यवस्थापन	संख्या	८	१४	२६	२६	३९	३९				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	पानी मुहान	गोटा	१३	४८	५०	५३	५६	६०				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	पोखरी संरक्षण, सिमसार क्षेत्र व्यवस्थापन	गोटा	९	३५	४०	४५	५२	६०				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	पहिरो, गल्छी उपचार	गोटा	२८	७३	७७	८०	८५	९०				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	खहरे खोला नियन्त्रण, नदी किनार संरक्षण	स्थान	२४	५४	५५	५८	६५	७०				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	बायो इन्जिनियरिड गरेको क्षेत्रफल	हेक्टर	४५	६४	७०	७७	८५	१००				७.१.२	२.३	१२ र १५	
	वातावरणीय सेवाको भुक्तानी (Payment for Ecosystem)	रु. लाखमा										७.१.२	२.३	१२ र १५	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरु: योजनाको परिच्छेद ७ को ७.१ को प्रमुख कार्यक्रमहरुमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.२९ वातावरण र जलवायु परिवर्तन

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	जलवायुमैत्री दिगो विकास संचालनमा स्थानीय तहसँग सहकार्य	सङ्ख्या										७.२.१/ ७.३.१	२.३	१३	
असर	हरित गृह रयास उत्सर्जन (यातायात तथा उद्योग क्षेत्र)	प्रतिशत										७.२.१/ ७.३.१	२.३	१३	
प्रतिफल	वायुप्रदुषणको मात्रा (पि एम २.५)	µg/m3								उ.प.व.वा.म. र मातहतको निकाय		७.२.१/ ७.३.१	२.३	१३	
	वनले ढाकेको क्षेत्रफल	प्रतिशत	५४	५४	५४	५४	५४	५४				७.२.१/ ७.३.१	२.३	१३	
	वाणिज्य क्षेत्रबाट हरितगृह रयास उत्सर्जन	प्रतिशत										७.२.१/ ७.३.१	२.३	१३	
	कृषि क्षेत्रबाट हरितगृह रयास उत्सर्जनको परिमाण	गेगाजुल										७.२.१/ ७.३.१	२.३	१३	
	जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी पठनपाठन हुने विद्यालय	प्रतिशत							रा.यो.आ.			७.२.१/ ७.३.१	२.३	१३	
	जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी तालिम प्राप्त जनशक्ति	सङ्ख्या							मन्त्रालयको वार्षिक प्रतिवेदन			७.२.१/ ७.३.१	२.३	१३	
	अनुकूलन योजना तयार भई कार्यान्वयन भएका स्थानीय तह	सङ्ख्या								उ.प.व.वा.म. र मातहतको निकाय		७.२.१/ ७.३.१	२.३	१३	
	जलवायु परिवर्तन शिक्षा प्रदान गर्ने विद्यालय	प्रतिशत	१३५५									७.२.१/ ७.३.१	२.३	१३	
	जलवायु परिवर्तन अनुकूलन सम्बन्धी स्थानीय तहका योजनामा काम गर्ने तालिम प्राप्त व्यक्ति	जना										७.२.१/ ७.३.१	२.३	१३	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ७ को ७.२ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.३० विपद व्यवस्थापन

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	कुल गार्हस्थ्य उत्पादनमा विपद्बाट भएको क्षतिको अनुपात	प्रतिशत	०.८१									२.२	१		
असर	विपदका घटनाबाट मृत्यु भएका जनसंख्या	प्रति लाख	४१७	३७४	३३०	२८७	२४३	२००	कार्यालय अभिलेख	DoHA (2017)		७.४.२	२.२	१	
	हराइरहेका र विपद्को कारण प्रभावित भएका व्यक्तिहरू	प्रति १ लाख जनसङ्ख्यामा	०.००४	०.००४	०.००३	०.००२	०.००२	०.००१	कार्यालय अभिलेख	DoHA (2017)				१	
प्रतिफल	विपदका घटनाबाट प्रभावित परिवार संख्या	प्रति हजार										७.४.२	२.२		
	विपद्बाट सम्पतिमा भएको क्षति	रु. करोडमा										७.४.२	२.२		
	कुल बजेटमा विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापनमा भएको सरकारी खर्चको अनुपात	प्रतिशत										७.४.२	२.२		
	जोखिमयुक्त बस्ती संरक्षण	संख्या										७.४.२	२.२		
	एकीकृत बस्ती विकास	संख्या										७.४.२	२.२		
	विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापन योजना तर्जुमा भएका स्थानीय तह	संख्या										७.४.२	२.२		
	विपद् पूर्व सूचना प्रणाली स्थापना	संख्या								आ.मा.का.म. र मातहतका निकाय		७.४.२	२.२		
	विपद् जोखिम नक्सामा	संख्या										७.४.२	२.२		
	विपद् जोखिम बिमामा आवद्ध जनसंख्या	संख्या										७.४.२	२.२		
	विकास आयोजना सञ्चालनमा विपद् जोखिम परीक्षण	प्रतिशत								आ.मा.का.म. र मातहतका निकाय		७.४.२	२.२		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	स्थानीय तहसँग विपद् व्यवस्थापनमा सहकार्य	संख्या										७.४.२	२.२		
	विपद्बाट क्षतिग्रस्त सरकारी एवम् सुरक्षा निकायका भवन पुनर्निर्माण	प्रतिशत										७.४.२	२.२		
	जोखिममा परेका बस्ती स्थानान्तरण	सङ्ख्या										७.४.२	२.२		
	विपद् प्रतिकार्य केन्द्र स्थापना र संचालन	सङ्ख्या										७.४.२	२.२		
	विपद् जोखिम न्यूनीकरण तथा व्यवस्थापन सम्बन्धी तालिम प्राप्त जनशक्ति	संख्या										७.४.२	२.२		
	विपद् व्यवस्थापन सम्बन्धी नागरिक शिक्षा	प्रतिशत										७.४.२	२.२		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरु: योजनाको परिच्छेद ७ को ७.४ को प्रमुख कार्यक्रमहरुमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.३१ श्रम तथा रोजगार

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	श्रमशक्ति सहभागिता दर	प्रतिशत	४७.१	५०	५३.१	५६.५	६०	६४	श्रम शक्ति सर्वेक्षण	सा.वि.म. र मातहतका निकाय		८.१.२	१.४	८	
	बेरोजगारी दर	प्रतिशत	७	६.८	६	५.८	५.७	५.४	श्रम शक्ति सर्वेक्षण	सा.वि.म. र मातहतका निकाय		८.१.२	१.४	८	
असर	श्रमको उत्पादकत्व	रु. हजारमा	१८४*	१९०	२००	२१०	२२५	२३५	श्रम शक्ति सर्वेक्षण	* national Data		८.१.२	१.४	८	
	रोजगारीमा औपचारिक	प्रतिशत	४८.२	४९.५	५१	५३	५६	६०	श्रम शक्ति			८.१.२	१.४	८	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/ रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	क्षेत्रको हिस्सा								सर्वेक्षण						
	वैदेशिक रोजगारीबाट प्राप्त विप्रेषण	रु. अर्ब	N/A							केतवि		८.१.२	१.४	८	
प्रतिफल	रोजगारमूलक तालिम	जना वार्षिक हजारमा	३.०	४.५	६.०	७.५	९.०	१२.०	सम्बन्धित मन्त्रालयको प्रतिवेदन	सा.वि.म. र मातहतका निकाय		८.१.२	१.४	८	
		प्रतिशत	२५						15th Plan			८.१.२	१.४	८	
	यूवा स्वरोजगार सम्बन्धी तालिम	जना वार्षिक हजारमा	२.१	२.५	३.०	३.४	३.९	४.५	प्रतिवेदन	सा.वि.म. र मातहतका निकाय		८.१.२	१.४	८	
	रोजगारीमा औपचारिक क्षेत्रको हिस्सा	प्रतिशत										८.१.२	१.४	८	
	रोजगारी लैङ्गिक असमानता	अनुपात	२.०४	२.०	१.७५	१.६	१.५	१.४	श्रम शक्ति सर्वेक्षण	प्रदेशमन्त्रालयहरु		८.१.२	१.४	८	
	श्रमिकको योगदानमा आधारित सामाजिक सुरक्षा कोषमा सहभागिता	प्रतिशत							वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म. र मातहतका निकाय		८.१.२	१.४	८	
	वैदेशिक रोजगारीबाट प्राप्त विप्रेषण											८.१.२	१.४	८	
	पूर्व अभिमुखीकरण तालिम प्राप्त गर्ने व्यक्ति	प्रतिशत	१८%	२१%	२४%	२८%	३५%	४०%	वै. रो. वि. वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म. र मातहतका निकाय		८.१.२	१.४	८	
	सीपमूलक तालिम प्राप्त गर्ने व्यक्ति	प्रतिशत	१३%	१५%	१८%	२४%	२९%	३५%	वै. रो. वि. वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म. र मातहतका निकाय		८.१.२	१.४	८	
	सीप प्रमाणीकरण गर्ने संस्था	सङ्ख्या	३	३	३	३	३	४	वै. रो. वि. वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म. र मातहतका निकाय		८.१.२	१.४	८	
	वार्षिक रोजगारी सिर्जना	सङ्ख्या हजारमा	१४०	१५०	१६०	१७०	१८०	१९०	वै. रो. वि. वार्षिक प्रतिवेदन	सा.वि.म. र मातहतका निकाय		८.१.२	१.४	८	
	वित्तीय साक्षरता तालिम	प्रतिशत							वार्षिक			८.१.२	१.४	८	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	प्राप्त गर्ने व्यक्ति								प्रतिवेदन						

वै. रो. वि. = वैदेशिक रोजगार विभाग

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरु: योजनाको परिच्छेद ८ को ८.६ को प्रमुख कार्यक्रमहरुमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.३२ गरिवी र असमानता न्युनिकरण

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	बहुआयामिक गरिवीमा रहेको जनसङ्ख्या	प्रतिशत	१२.२	१०.८	९.३	७.९	६.४	५	MPI	रा.यो.आ		८.२.२	२.१		
	गरिवीको रेखामूनी रहेको जनसङ्ख्या	प्रतिशत	-	१५.	१३.	१२.	१०.	८				८.२.२	२.१		
	गरिवीको विषमता	प्रतिशत	-									८.२.२	२.१		
	गरिवीको गहनता	प्रतिशत	-									८.२.२	२.१		
असर	मानव विकास सूचकाङ्क	सूचकाङ्क	०.५४३	०.५८९	०.६०३	०.०६२	०.६४	०.६५	मा.वि.सू. २०१४	रा.यो.आ		८.२.२	२.१		
	सम्पत्तिमा आधारित असमानता जनाउने Gini coefficient	Coefficient (0-1)	०.२५	०.२५	०.२५	०.२४	०.२४	०.२३	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		८.२.२	२.१	१०	
	आम्दानिमा माथिल्लो १० र तल्लो ४० प्रतिशत जनसङ्ख्याको अनुपात (PALMA Ratio)	अनुपात	१.४५	१.४४	१.४३	१.४१	१.४०	१.३९	दिविल	के.त.वि.		८.२.२	२.१	१०	
	रोजगारी प्राप्त गर्ने कुल व्यक्तिहरूमध्ये प्रतिदिन १.२५ अमेरिकी डलरभन्दा कम प्राप्त गर्ने व्यक्तिहरू	प्रतिशत	१४	१२.८	११.६	१०.४	९.२	८	NLSS-WB estimate	के.त.वि.				१	
	आर्थिक दृष्टिकोणले जनसङ्ख्याको तल्लो पञ्चमक (Bottom quintile) को राष्ट्रिय	प्रतिशत	५.६	५.२	४.८	४.४	४	३.६	NLSS-WB estimate	के.त.वि.				१	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	उपभोगमा हिस्सा														
प्रतिफल	५ वर्षमूनिको बाल मृत्युदर (प्रति हजार जीवित जन्ममा)	संख्या	३६.०	३२.४	२८.८	२५.२	२१.६	१८.०	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		८.२.२	२.१		
	आधारभूत तहको खुद भर्नादर (NER)	प्रतिशत	३६.०	३२.४	२८.८	२५.२	२१.६	१८.०	नेपालको शैक्षिक तथ्यांक	शिक्षा विभाग		८.२.२	२.१		
	बत्ती बालन बिजुली प्रयोग गर्ने परिवार	प्रतिशत	८५.७	८८.६	९१.४	९४.३	९७.१	१००	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		८.२.२	२.१		
	शौचालय सुविधा भएको परिवार	प्रतिशत	-	१००	१००	१००	१००	१००	ने.ज.स्वा.स.	स्वास्थ्य सेवा विभाग		८.२.२	२.१		
	बेरोजगारी दर	प्रतिशत	७.००	६.५०	६.००	५.५०	५.५०	५.००	नेपाल श्रम शक्ति सर्वेक्षण	के.त.वि		८.२.२	२.१		
	सामाजिक सुरक्षा तथा संरक्षणका कार्यक्रममा आवद्ध जनसङ्ख्या	प्रतिशत	१७	२८	३८	४९	५९	७०	दि.वि.ल./रा.यो.आ.	सा.वि.म.		८.२.२	२.१		
	प्रादेशिक बजेटमा सामाजिक सुरक्षामा भएको खर्च	प्रतिशत	११.३	११.८	१२.४	१२.९	१३.५	१४	आमयोम	सा.वि.म.		८.२.२	२.१		
	तल्लो पञ्चांशका गरिवको उपभोग अंश	प्रतिशत							नेपाल जीवनस्तर सर्वेक्षण	के.त.वि		८.२.२	२.१		
	कुल उपभोगको दुई-तिहाइभन्दा बढी खानामा खर्च गर्ने जनसङ्ख्या	प्रतिशत	२०	१९.२	१८.४	१७.६	१६.८	१६	प्रतिवेदनहरू	भू.कृ.स.म.		८.२.२	२.१	२	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ८ को ८.६ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.३३ सुशासन र क्षमता विकास

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	सुशासनमा आधारित	सूचकाङ्क	-०.७४	१.०	१.४	१.८	२.२	२.५	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	नतिजामुखी प्रशासन सूचकाङ्क (+)	(-२.५ देखि २.५ सम्म)													
असर	कानुनी शासन सूचकांक (+)	सूचकांक										८.३.३	२.४		
	भ्रष्टाचार अनुभूति गर्ने जनसंख्याको अनुपात (-)	प्रतिशत	१३	११.०	९.०	७.०	५.०	३.०	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	भ्रष्टाचार न्यूनता अनुभूति सूचकाङ्क (+)	सूचकाङ्क (० देखि १०० सम्म)	३१	४१.०	५५.०	७०.०	८५.०	१००.०	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	उत्तरदायित्व, पारदर्शीता र भ्रष्टाचार न्यूनिकरण सूचकाङ्क (+)	सूचकाङ्क (१ देखि ६)	३	३.६	४.२	४.८	५.४	६.०	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	कार्य सम्पादन सम्झौता लागू भएका प्रदेशका सार्वजनिक निकायहरू	प्रतिशत	०	५.०	२५.०	४५.०	६५.०	१००.०	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
प्रतिफल	सेवा प्रवाह गर्ने कार्यालयहरूमा कार्य सम्पादनमा आधारित प्रोत्साहन व्यवस्था	संख्या	०						मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	कुल खर्चमा बेरुजुको अंश	प्रतिशत										८.३.३	२.४	१६	
	सार्वजनिक सेवाको मापदण्ड तयारी र कार्यान्वयन	सङ्ख्या	०						मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	अनुगमन तथा प्रगति प्रतिवेदनको अनलाइन प्रणाली स्थापना	सङ्ख्या	०	१.०	१.०	१.०	१.०	१.०	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	व्यवस्थापन परीक्षण (जम्मा)	संख्या	०	१०.०	२०.०	३०.०	४०.०	५०.०				८.३.३	२.४	१६	
	सार्वजनिक सुनुवाई (प्रदेश तहमा)	संख्या	२	३.०	३.०	३.०	३.०	३.०	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	विद्युतीय बोलपत्र (E-	प्रतिशत	१००	१००	१००	१००	१००	१००	प्रविधिर	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	bidding) बाट सार्वजनिक खरीद								संघीय कानून						
	गुनासोको फछ्यौट	प्रतिशत	१००	१००	१००	१००	१००	१००	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	प्रदेश सरकारका पदाधिकारीको क्षमता विकास (१ पटक २० जना)	पटक		२.०	२.०	२.०	२.०	२.०	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	प्रदेशमा कार्यरत कर्मचारीको क्षमता विकास (१ पटक ३० जना)	पटक	२	६.०	६.०	६.०	६.०	६.०	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	स्थानीय तहका पदाधिकारीको क्षमता विकास (तालिम) (१ पटक २० जना)	पटक	१	३.०	३.०	३.०	३.०	३.०	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	स्थानीय तहका कर्मचारीको क्षमता विकास (तालिम) (१ पटक ३० जना)	पटक		३.०	३.०	३.०	३.०	३.०	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	प्रदेशको प्रशासकीय भवन निर्माण	संख्या										८.३.३	२.४	१६	
	स्थानीय तहको प्रशासकीय भवन निर्माण	संख्या										८.३.३	२.४	१६	
	प्रदेश सभा सदस्यहरूको क्षमता विकास कार्यक्रम	सहभागी सदस्य संख्या		१०२	१०२	१०२	१०२	१०२	संसद सचिवालय	प्रदेश सभा		८.३.३	२.४	१६	
	प्रदेश सभामा दर्ता भएका विधेयक सम्बन्धी सरोकारवालासंग छलफल तथा अन्तरक्रिया	संख्या		३०	३०	३०	३०	३०	संसद सचिवालय	प्रदेश सभा		८.३.३	२.४	१६	
	प्रदेश कानून तर्जुमा तथा संशोधन	संख्या							संसद सचिवालय	प्रदेश सभा		८.३.३	२.४	१६	
	संसद सचिवालयका कर्मचारीको क्षमता अभिवृद्धि तालिम	संख्या		१२	१२	१२	१२	१२	संसद सचिवालय	प्रदेश सभा		८.३.३	२.४	१६	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	निर्माण सामग्री प्रयोगशालाको स्थापना र सञ्चालन	सङ्ख्या		१	६०	८०	१००	१२०		भौपूविम		८.३.३	२.४	१६	
	आचार संहिता पालनासम्बन्धी अनुगमन प्रणालीको स्थापना र सञ्चालन	सङ्ख्या			१				मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	प्रदेश सरकारको सङ्गठन तथा व्यवस्थापन सर्वेक्षण अनुसार सङ्गठनात्मक पुनर्संरचना	पटक			१	१			मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	
	स्थानीय तहका लागि कार्यसम्पादनमा आधारित प्रोत्साहन अनुदान प्रणालीको व्यवस्था	सङ्ख्या		१					मु.म.प.का.	मु.म.प.का.		८.३.३	२.४	१६	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरु: योजनाको परिच्छेद ८ को ८.३ को प्रमुख कार्यक्रमहरुमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.३४ मानव अधिकार, शान्ति सुरक्षा तथा सुव्यवस्था

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	नागरिक सन्तुष्टि अनुभूतिको सूचकाङ्क	सूचकाङ्क	४.७	५.०	५.३	५.६	५.९	६.२	मु.म.प.का.	मु.म.प.का.			२.४	१६	
असर	दर्ता भएका अपराध उजुरीको फछ्यौट	प्रतिशत							मु.म.प.का.	मु.म.प.का.			२.४	१६	
	मानव अधिकार उल्लङ्घनका घटना	सङ्ख्या							वार्षिक प्रतिवेदन	आमाकाम			२.४	१६	
	शान्ति सुरक्षाका लागि प्रतिव्यक्ति बजेट	रूपैया							वार्षिक प्रतिवेदन	आमाकाम			२.४	१६	
	स्थानीय तहमा गरीब तथा असहायलाई कानूनी सहायता	सङ्ख्या	११६	११९	११९	११९	११९	११९	वार्षिक प्रतिवेदन	आमाकाम			२.४	१६	

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	अभियान														
	फैसला कार्यान्वयन	प्रतिशत											२.४	१६	
प्रतिफल	स्थानीय तहबाट भएका मेलमिलाप	संख्या							वार्षिक प्रतिवेदन	आमाकाम			२.४	१६	
	मानव अधिकार सम्बन्धी जनचेतना अभिवृद्धि अभियान संचालन भएका जिल्लाहरू	सङ्ख्या	३	६	८	१०	११	१३	वार्षिक प्रतिवेदन	आमाकाम			२.४	१६	
	विद्युतीय सुरक्षा निगरानी (CCTV) प्रणाली स्थापना भएका स्थानीय तह	संख्या		४	४५	८०	१००	११९	वार्षिक प्रतिवेदन	आमाकाम			२.४	१६	
	प्रहरी भवन/चौकी निर्माण	संख्या		४८					वार्षिक प्रतिवेदन	भौ.पू.वि.म.			२.४	१६	
	सवारी साधन प्राप्त गरेका प्रहरी ईकाई	संख्या		१८					वार्षिक प्रतिवेदन	आमाकाम			२.४	१६	
	उपकरण सहयोग प्राप्त गरेका प्रहरी कार्यालय/चौकी	संख्या							वार्षिक प्रतिवेदन	आमाकाम			२.४	१६	
	प्रदेश सरकार तथा तोकिएका पदाधिकारी विरुद्धका मुद्दाहरूमा प्रतिरक्षा सफलता	प्रतिशत	१००	१००	१००	१००	१००	१००	वार्षिक प्रतिवेदन	मन्याका			२.४	१६	
	कानून सम्बन्धी जनचेतना कार्यक्रम	संख्या	०	७	१०	१२	१५	१८	प्रतिवेदनहरू	मु.न्या.का.			२.४	१६	
	प्रहरीलाई कानुनी सचेतना तालिम	संख्या	०	५	५	५	५	५	प्रतिवेदनहरू	मु.न्या.का.			२.४	१६	
	कैदीबन्दीलाई क्षमता विकास तालिम	जना		२००	५००	५००	५००	५००	वार्षिक प्रतिवेदन	आमाकाम			२.४	१६	
	कैदीबन्दीलाई मनोपरामर्श सेवा	सङ्ख्या	०	०	२००	२००	२००	२००	वार्षिक प्रतिवेदन	आमाकाम			२.४	१६	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ८ को ८.३ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.३५ सूचना तथा सञ्चार

नतिजा	नतिजा सूचक	एकाइ	लक्ष्य	सूचनाको	जिम्मेवार	अनुमान	प्रादेशिक	दीर्घकालीन	दिगो	कैफियत
-------	------------	------	--------	---------	-----------	--------	-----------	------------	------	--------

स्तर				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१	स्रोत	निकाय	तथा जोखिम	लक्ष्य/रणनीति संकेत	राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	विकास लक्ष्य संकेत	
प्रभाव	प्रदेश गार्हस्थ्य उत्पादनमा सञ्चार तथा सूचना प्रविधि क्षेत्रको योगदान	प्रतिशत							राष्ट्रिय लेखा	केतवि			२.१		
बसर	सञ्चार क्षेत्रबाट रोजगारी सिर्जना	संख्या हजारमा										८.४.२	२.१		
	टेलिफोन (सबै प्रकारका) घनत्व	प्रतिशत										८.४.२	२.१	१७	
	प्रसारणमा पहुँच प्राप्त जनसंख्या	प्रतिशत										८.४.२	२.१	१७	
	टेलिभिजन प्रयोग गर्ने परिवार	प्रतिशत							दि.वि.ल.	दूरसंचार प्राधिकरण र निजी क्षेत्र		८.४.२	२.१	१७	
	रेडियो प्रयोग गर्ने परिवार	प्रतिशत							दि.वि.ल.			८.४.२	२.१	१७	
प्रतिफल	मोबाइलमा पहुँच पुगेको जनसंख्या	प्रतिशत							दि.वि.ल.			८.४.२	२.१	१७	
	इन्टरनेट प्रयोगकर्ता	प्रतिशत							दि.वि.ल.			८.४.२	२.१	१७	
	डिजिटल साक्षरता	प्रतिशत							प्रगति प्रतिवेदन			८.४.२	२.१	१७	
	इन्टरनेट सेवा प्रदायक	संख्या							प्रगति प्रतिवेदन			८.४.२	२.१	१७	
	अप्टिकल फाइबर	स.कि.मि.							प्रगति प्रतिवेदन			८.४.२	२.१	१७	

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ८ को ८.४ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.३६ विज्ञान तथा प्रविधि

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	विज्ञान र प्रविधिको व्यावसायिक उपयोग	सङ्ख्या							वार्षिक प्रतिवेदन	उ.प.व.वा.म. र नेपाल विधि विज्ञान		८.५.२	१.२		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
										प्रयोगशाला					
असर	वैज्ञानिक अनुसन्धानमा शैक्षिक संस्था तथा अनुसन्धान केन्द्रहरूसँग सहकार्य	सङ्ख्या							प्रगति प्रतिवेदन	उ.प.व.वा.म., ने.वि.वि.प्र. र मातहतका निकाय		८.५.२	१.२		
प्रतिफल	अनुसन्धान केन्द्र स्थापना तथा स्तरीकरण	सङ्ख्या							प्रगति प्रतिवेदन	उ.प.व.वा.म., ने.वि.वि.प्र. र मातहतका निकाय		८.५.२	१.२		
	उच्च शिक्षामा विज्ञान प्रयोगशाला	सङ्ख्या							प्रगति प्रतिवेदन			८.५.२	१.२		
	विज्ञान र प्रविधिको व्यावसायिक उपयोग	सङ्ख्या							वार्षिक प्रतिवेदन	उ.प.व.वा.म. र नेपाल विधि विज्ञान प्रयोगशाला		८.५.२	१.२		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ८ को ८.५ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।

९.२.३७ योजना प्रणाली, अनुगमन तथा मूल्याङ्कन र तथ्याङ्क व्यवस्थापन

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
प्रभाव	नतिजामुखी योजना प्रणाली स्थापना	संख्या	०	५०	१२०	१२०	१२०	१२०	योजना दस्तावेज	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		
असर	प्रदेशका आधारभूत तथ्याङ्क उपलब्धता	प्रतिशत	६०	८०	१००	१००	१००	१००	तथ्याङ्क दस्तावेज	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		
प्रतिफल	ठुला आयोजनाहरूको नतिजामुखी अनुगमन तथा मूल्याङ्कन	प्रतिशत	०	३०	१००	१००	१००	१००	प्रदेश अनुगमन तथा मूल्याङ्कन प्रतिवेदन	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आधार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	प्रदेश तथ्याङ्क सङ्कलन, संग्रह र प्रकाशनका लागि सूचना प्रणालीको स्थापना	वटा							प्रगति प्रतिवेदन	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		
	प्रदेशको वार्षिक खण्डीकृत तथ्याङ्क प्रतिवेदन तयारी	वटा	०	१	१	१	१	१	प्रगति प्रतिवेदन	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		
	स्थानीय तहको वस्तुगत विवरण तयारी	संख्या	६०	१००	११९	११९	११९	११९				८.६.२	२.४		
	विषय क्षेत्रगत गुरुयोजना तर्जुमा	संख्या							योजना दस्तावेज	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		
	स्थानीय तहको आवधिक योजना तर्जुमा	संख्या	०	५०	११९	११९	११९	११९				८.६.२	२.४		
	प्रदेश तथा स्थानीय तहको मध्यमकालीन खर्च संरचना तर्जुमा	संख्या	०	१२०	१२०	१२०	१२०	१२०				८.६.२	२.४		
	संघ र स्थानीय तहसँग तथ्याङ्कको विद्युतीय सञ्जालीकरण	स्थानीय तह सङ्ख्या	१	४	४५	१२०	१२०	१२०	प्रगति प्रतिवेदन	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		
	योजना तथा तथ्याङ्क व्यवस्थापन सम्बन्धी क्षमता विकास तालिम	संख्या	१	१५	१५	१५	१५	१५	प्रगति प्रतिवेदन	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		
	स्थानीय तहहरूसँग योजना प्रक्रियामा सहजीकरण	संख्या	०	६०					प्रगति प्रतिवेदन	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		
	परियोजना बैंक स्थापना र संचालन	संख्या	१	४	२५	४६	१२०	१२०	प्रगति प्रतिवेदन	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		
	प्रादेशिक विकास समस्या समाधान	संख्या	०									८.६.२	२.४		

नतिजा स्तर	नतिजा सूचक	एकाइ	आघार वर्ष २०७५/७६	लक्ष्य					सूचनाको स्रोत	जिम्मेवार निकाय	अनुमान तथा जोखिम	प्रादेशिक लक्ष्य/रणनीति संकेत	दीर्घकालीन राष्ट्रिय लक्ष्य संकेत	दिगो विकास लक्ष्य संकेत	कैफियत
				२०७६/७७	२०७७/७८	२०७८/७९	२०७९/८०	२०८०/८१							
	समितिको बैठक														
	प्रादेशिक आयोजनाहरूको अनुगमन	प्रतिशत							प्र.यो.आ.	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		
	विषयगत अध्ययन अनुसन्धान	संख्या							प्र.यो.आ.	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		
	बहुपक्षीय पोषण कार्यक्रमको सहजीकरण	संख्या							प्र.यो.आ.	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		
	प्रदेश आवधिक योजनाको मध्यावधि मूल्यांकन	संख्या	०	०	०	१	०	०	प्र.यो.आ.	प्र.नि.यो.आ.		८.६.२	२.४		

प्रमुख कार्यक्रम/परियोजनाहरू: योजनाको परिच्छेद ८ को ८.६ को प्रमुख कार्यक्रमहरूमा उल्लेख गरिएको छ।